सरगम की साधना

संपादक

डॉ. प्रणव पण्ड्या

प्रकाशक

श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट,

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रथम संस्करण–2012 मूल्य–150=00

प्रकाशकीय

युगऋषि ने संगीत के माध्यम से जन-जन में सद्प्रेरणाएँ भरने की विधा को जीवन भर बहुत महत्व दिया है। प्रवचनों में लोगों का आकर्षण तभी होता है जब कोई बहुत प्रतिष्ठित संत, राजनेता या लोकसेवी के माध्यम से दिये जायें। किन्तु संगीत अपने आप में अपनी सरसता के कारण जन आकर्षण का केन्द्र बन जाता है। उसके माध्यम से उच्चस्तरीय प्रेरणाएँ बड़ी सहजता से जन सामान्य तक पहुँचाई जा सकती है।

इस दिशा में युगऋषि ने नये आयाम खोले। भक्ति गीतों में प्रार्थनाओं और सहगान कीर्तनों के नये-नये प्रयोग कराये। मनुष्य की गरिमा, संस्कृति निष्ठा, समाज निष्ठा, व्यक्ति, परिवार एवं समाज निर्माण के लिए विभिन्न प्रकार के गेय गीतों की रचनायें करवाई। उनके सरस प्रस्तुतिकरण के लिए प्रेरणा एवं प्रशिक्षण देने की व्यवस्थाएँ बनवाई।

उनकी कृपा से यह विधा सफलतापूर्वक चल निकली। विभिन्न संगठनों ने भी इस क्रम को सहज अपना लिए। फलस्वरूप सार्थक गीतों की माँग बढ़ने लगी। 'युग निर्माण अभियान' के अंतर्गत इस हेतु अनेक गीत संग्रह प्रकाशित किये गये हैं। उसी क्रम में प्रस्तुत संग्रह **"सरगम की साधना"** प्रस्तुत किया जा रहा है। विषयों के अनुसार गीतों का वर्गीकरण कर देने से समय एवं परिस्थितियों के अनुरूप गीतो के चयन में प्रयोगकर्त्ताओं को सुविधा रहेगी।

आशा की जाती है कि अन्य गीत संग्रहों की तरह यह भी लोकप्रियता प्राप्त करेगा।

-संपादक

विषय सूची

गीत **पृष्ठ**

अ

अगर चाहते हो निज रक्षा.. 27
अपना देश बनाने वाले.. 28
अब युग बदल रहा है... 29
अपने दुःख में रोने वाले... 30
अंधेरे की चिन्ता को अब.. 30
अंगार दहकते लाये हैं... 31
असुर तत्व हावी है.. 32
अवतरण हो गया.. 33
अपने अन्तर की कथा... 34
अपने आजाद भारत की... 34
अगर तुम्हें ठीक लगे.. 35
अगर अभाव मिटाना है... 36
अपने पैरो पर खड़ी हो... 37
अपना सर्वस्व लुटा साथी... 38
अपने जीवन से लिख देगें... 39
अपने किशोर वय में मानव (राधे.)... 499
अनुभवी वृद्धजन ही घर में (राधे.)... 503
अभिभावक अपने बच्चों को (राधे.).. 507
अभिभावक के धन से श्रम से (राधे.).. 515
अपने पैतृक संस्कारों से (राधे.)... 516

आ

आए-आए हैं सारे देव हमारे... 40
आरती अति पावन पुराण की.. 41
आज कर दो कृपा मातु... 42
आईये सुने लगाकर ध्यान.. 43

गीत	पृष्ठ

आओ सब मिल सुने.. 44
आनन्द मंगल करूँ आरती.. 44
आपके अवतरण को हुए... 45
आँखे निहारती है गुरुवर.. 46
आँखे खोलो समय आ गया.. 47
आया देवदूत धरती पर.. 48
आखरी वक्त है करलें... 49
आप हिम्मत बँधाकर हमें... 50
आज साधना की बेला में.. 51
आज मेरा मन तुम्हारे.. 52
आप आये विभा फूटने.. 53
आज कमर कसकर आये.. 54
आज करें साकार कल्पना.. 55
आपकी चेतना में सदा रम सके.. 56
आओ मिलकर भारत को... 57
आत्म दीपक यह प्रभो.. 58
आप ही माँ धड़कन हैं... 59
आधी जन संख्या नारी है (राधे.)....................................... 501
आधार मित्रता का शाश्वत् (राधे.)..................................... 506
आदर्शयुक्त मर्यादायें (राधे.).. 512
आदर्शहीन जन-जीवन में.. 517

इ ई

इस विराट जीवन पथ.. 60
इतने अमूल्य मानव.. 61
इस आँवलखेड़ा की रज.. 62
इतना प्यार करेगा कौन.. 63
इन्सान से यदि मिल पाये.. 64

गीत **पृष्ठ**

इस तरह से अंधेरा.. 65
ईश के सन्तान सोते न रहो.. 66
इतना चिन्तन किया तुम्हारा... 67
इस देश को न हिन्दू... 68
इस धरती के फूलों में... 68
इसी में मानव का कल्याण... 69
इस शराब ने किये हजारों... 69
इस योग्य हम कहाँ हैं... 70
इन्सान कहाने वालों क्यों... 71
इक्कीसवीं सदी है शुभ... 72
ईश्वर प्रदत्त सुविधायें (राधे.).. 496
ईश्वर महान है मानव को (राधे.)....................................... 507
इस युग का असुर अनास्था (राधे.)................................... 509

उ-ऊ

उन चरणों को पूजो.. 73
उठो जवान देश के... 74
उठ जाग मुसाफिर भोर भई.. 74
उमड़ी है विश्व भर में... 75
उठो तरूणाई ! अब जौहर... 76
उमा रमा ब्रह्माणी तू ही.. 77
उठ पड़े हाथ लेकर मशाल... 78

ए-ऐ

एक दीपक से तमस हटाओ.. 79
एक बेटी विदा हो रही.. 80
ऐसा जीवन जीयें.. 82
एक समिधा जली मैं... 83

गीत	पृष्ठ

ऐसी लगन लगाये.. 84

ओ-औ

ओ सविता देवता.. 85
ओ मानव तेरे जीवन का.. 86
ओ ईश्वर के अंश आत्मा.. 87
ओ नारी महतारी तू.. 88

क

काया में तुम बँधे नहीं.. 89
कथा प्रज्ञा पुराण की सुनो... 90
कर रहा मनुज पाप.. 91
करते जो सहकार... 92
करेंगे प्रज्ञा से सहकार... 93
कल्याण हमारे जीवन का.. 94
क्या तन माँजता है रे.. 95
क्यों करता अभिमान... 96
करें छात्र निर्माण धरा को.. 97
कुछ कहा ना सुना... 98
करो साधना जीवन में.. 99
किसी दिन देख लेना.. 100
क्या हो गया प्रकाश पुत्र को... 101
काम जब तुम्हारा अधूरा.. 102
करें पात्रता विकसित... 103
क्या न इतनी कृपा... 104
करनी है यदि हमको सेवा... 105
करते जिसका ध्यान रात-दिन.. 106
कैसे बिसरायें उन गुरु को.. 107
कृपा दृष्टि अब कहाँ मिलेगी... 108

गीत	पृष्ठ

कोई मत दे साथ तुम्हारा........ 109
क्यों मोह है उन्हीं से........ 110
किनारा ढूढ़ता है तू........ 111
कर्म वृक्ष बन लहराता है........ 112
करना है जग का सुधार........ 113
कोटि–कोटि नवयुवक........ 114
कहेगा कहानी जगत अब........ 114
कण–कण में छा रही........ 115
कर्म सभी का जन्म सिद्ध........ 116
कर्म कैसे करोगे........ 117
करो संकल्प कुछ बढ़कर........ 118
कीमत हमने बहुत चुकाई........ 119
कण–कण में समाये हो........ 120
कुटिल चाल कलिकाल........ 121
क्रांति के तेवर अरे........ 122
करले युग निर्माण........ 123
काँच न हैं हम जो टूटेंगे........ 124
काल चक्र बढ़ता जाता है........ 125
करना है नवनिर्माण अगर (राधे.)........ 500
केवल शब्दों से नहीं यहाँ (राधे.)........ 503
कोई जीवन को संयम से (राधे.)........ 508
करना है उचित विवाह तभी (राधे.)........ 513
कामेच्छा प्रचलित परम्परा(राधे.)........ 513
कर्त्तव्य भाव के पालन हित (राधे.)........520

ख

खोलो मन की द्वार........ 126
खुन के सरहदों पर........ 127

गीत **पृष्ठ**

ग

गुरु की नज़रें करम का....... 128
गुरुजी की महिमा अपरम्पार....... 129
गुरु अपना तप देकर....... 130
गुरुवर अब थामों पतवार....... 131
गुरु चरणन की लगन....... 132
गुरु चरणों को नमन....... 133
गुरुवर तुमने दिया हमें....... 134
गुरु ने बाँह हमारी थामी....... 135
गँवा दिया हमने जीवन में....... 136
गुरुवर अपनी नाँव बिठा लो....... 137
गुरुदेव जब पास खड़े....... 138
गँवाओ व्यर्थ मत होता....... 138
गंगा गायत्री दोनों का....... 139
गुरुवर कोई नहीं है....... 140
गुरु तेरे चरणों में....... 141
गुरु चरण में जब....... 141
गायत्री की पुण्य जयन्ती....... 142
गुरु का शक्ति-प्रवाह बह रहा....... 143
गुरुवर के अनुपम अनुदानों....... 144
गुरुदेव नये युग का....... 145
गुरुवर का चिंतन छाया....... 146
गुरु ऐसी शक्ति हमें दो....... 147
गुरुवर चरणों में मन मेरे....... 148
गुरुवर महान गुरुवर सुजान....... 149
गंगाजल बहता उतर से....... 150
गुरु चरणन मन भाये....... 151
गंगा बन्दी थी सुरपूर में....... 152

गीत पृष्ठ
गायत्री गुरु मंत्र सनातन........ 153
गृहस्थ धर्म का परिपालन (राधे.)........ 502

च

चलना सिखा दिया है........ 154
चारो दिशा में फैलाय दियो रे........ 155
चलो गुरु ज्ञान का दीपक........ 156
चलो रे भाई दीपक........ 157
चलनी में दूध लगाता है........ 158
चुभन सहकर भी उगाने........ 159
चैन आता नहीं प्यार........ 160
चोट पर चोट अब और........ 161
चिंतन जिनका अतिशय पावन........ 162
चलें शहीदों के पथ हम........ 163

छ

छाती तोड़ महान परिश्रम........ 164
छोड़ दो छोड़ दो वासना........ 165
छोटे क्षेत्रों में विकास (राधे.)........ 505

ज

जिसने मरना सिख लिया है........ 166
जगत में चिन्ता मिटी है........ 167
जहाँ सत्संग होता है........ 168
जय जय जय गायत्री माता........ 169
जिसको सुनकर बने राह फिर........ 170
जिसने जीवन ज्योति जलाई........ 171
जिसने दीप जलाये जग में........ 172
जीवन के देवता का अपमान........ 173
जिन्दगी चार दिन की........ 174

गीत	पृष्ठ
जाग पहरूबे सुहानी भोर है	175
जो बोले सो हो जाये अभय	176
जिन्हें देखकर जग सहज	177
जिसको प्रभु से सद्बुद्धि	178
जागरण देखो नयन उघार	179
जागो युग राष्ट्र पुरोहित	180
जितना तुमने दिया ना उतना	181
जियेंगे न अब हम अपने लिए	182
जग-जननी जगदम्ब भवानी	183
जो औरों के लिए जिन्दगी	184
जिसकी तरफ निहारा	185
जब-जब भी प्रबुद्ध जन	186
जो जुड़ गये हैं प्रभु से	187
जिसने भी जीवन में	188
जिनके तप ने दिया मिशन को	189
जनहित के लिए समर्पित	190
जागो जागो भारत नारी	191
जा बेटी ससुराल में (छत्तीसगढ़ी गीत)	192
जय जय राष्ट्र महान	193
जब की हम भटके हुए थे	194
जल में थल में जड़चेतन में	195
जब हम दीप जलायेंगे	195
जागो भारत विश्व राष्ट्र	196
ज्योतिपुञ्ज की ही प्रतिमा	197
जय-जय मंगलकारी	198
जब-जब जाग उठी तरूणाई	199
जन्म दिन है हमने मनाया	200
जन्म लिया फिर भागीरथ ने	201

गीत पृष्ठ

जीवन अर्पण का तुमको डर.. 202
जयती जय जय-जय गौमाता(गौमाता कीआरती)................... 203
जो बनाता अखिल विश्व का.. 204
जैसे चलनी में दूध (राधे.).. 494
जिनके चिन्तन पुरूषार्थ (राधे.)..496
जीवन प्रत्यक्ष देवता है (राधे.).. 498
जो दिखते आज मात्र पौधे (राधे.)................................ 501
जो परम्परायें कभी बनी थी (राधे.)................................ 502
जो नहीं कमा सकते पैसा (राधे.)................................504
जीवन में दीर्घ आयु पाकर (राधे.)................................ 504
जो नहीं सोचने योग्य अरे (राधे.)................................506
जब जैसी स्थिति होती है (राधे.)................................509
जागो भारत की बहनों (राधे.).. 510
जैसे चन्दा सूरज नित ही (राधे.)................................ 510
जैसे ईंटों से घर बनता है (राधे.)................................511
जो कुसंस्कारिता में ढलकर (राधे.)................................ 512
जो भी है आस्थाहीन अरे (राधे.)................................ 517
जिनमें है दूर दृष्टि पावन (राधे.)................................519

झ

झन झना दे चेतना के.. 205

त

तुम हमारे थे दयानिधि.. 206
तुम्हारी शरण में हम आये..207
तेरी करूण कराह हमारे.. 208
तुम मुझे दे दो सरस स्वर.. 209
तुमने अमृत दिया है.. 210
तुम्हारे सूत्र जीवन में.. 211

गीत	पृष्ठ

तपोभूमि की तप ऊर्जा को.. 212
तुम्हीं हो प्राण हम सबके.. 213
तुम्हारा हर निमिष का साथ.. 214
तुम्हारे हैं हम तुम्हारे.. 215
तप के बल पर आ जाते हैं.. 216
तुम करूणा सागर हो.. 217
तोड़े हम आगे बढ़कर.. 218
तपकर तुम्हीं दोबारा.. 219
त्याग और तप के बल पर.. 220
तुमने बंधन क्यों स्वीकारा.. 221
तु नहीं पीता बीड़ी.. 222
तुम तो यहीं कहीं.. 223
तेरी महिमा की यशगाथा.. 223
तूफान आ रहे हैं तेवर.. 224
तीस वर्ष की क्वाँरी कन्या.. 225
तुम न घबराओ.. 226
तप–तपाकर निज.. 227
तजकर परमारथ ओछा नर (राधे.).. 496
तजिए ताहि कोटि बैरी सम (राधे.).. 521

थ

थे सामने तो लखकर.. 227
थाली भर मैं लाई रे खींचड़ो.. 228
थोड़ी सी साँसें पायी है.. 229

द

देव मानवों उठो तुम्हीं पर.. 231
देव–संस्कृति विश्व विद्यालय.. 232
देव पुरूष आया तब.. 233

गीत	पृष्ठ

दुसरों की बहुत बात करते.. 234
देश की ग़मगीन हालत.. 235
देश धर्म जाति का गौरव.. 236
दर्द का पीकर हलाहल.. 237
दुनियाँ बिगड़ गयी है.. 238
द्रवित जब पीर से उर.. 239
दिव्य अनुदान देने खड़े.. 240
दर्शन बहुत किये गुरु के.. 241
दीप चाहिए ऐसे जो.. 242
दीप मन के जलाओ.. 243
द्वार सफलता आती है.. 244
देश तो लूट गया शराब.. 245
देव-संस्कृति संदेशों को.. 246
देश हमारा सबसे प्यारा.. 247
दोष-दुर्गुणों को जब.. 248
दुर्भाव बढ़े दुष्कर्म बढ़े.. 249
दीपकों की कमी कुछ.. 250
दीजिए गुरुवर हमें निज.. 251
दरबार में सच्चे सद्गुरु.. 252
दीपयज्ञ की दीप ज्योति.. 253
दूर होगा अंधेरा जो.. 253
दु:ख निराशा के समय.. 254
दूध दही के मंथन से (राधे.).. 495
दस सूत्र धर्म के होते हैं (राधे.).. 500
दैवी अनुदानों को सदैव (राधे.).. 507
दिखता तूफान नहीं लेकिन (राधे.).. 509

गीत	पृष्ठ

दैवी संस्कृति का अनुशासन (राधे.).. 522

ध

ध्यान से सुनलो प्रज्ञा पुराण.. 252
धर्म की स्वर ध्वजायें उड़ाओ नहीं.. 255
धधक उठी तन–मन में.. 256
धर्म से हम नहीं रख सके.. 257
ध्वँस में लग गई यदि.. 258
धरती से ऊँचा पर्वत है.. 259
धन्यभूमि है यह पुण्य.. 260
धन्य आपका जन्म दिवस.. 261
धन साधन भोजन, जर जमीन (राधे.).. 494

न

नीव के पत्थरों से यह.. 262
नित सत्संग करो मेरे भइया.. 264
नवयुग की निर्माण.. 265
नौजवानों उठो अब करो.. 266
नर तन मिलता कभी–कभी.. 267
नक्षत्रों के बीच चाँद से.. 268
नवयुग के गीता के गायक.. 269
नवयुग आना है, आना है.. 270
नशा नशावै तन मन धन.. 271
नहालो चाहे सारे तीर्थ.. 272
नम है आँखे आज याद में.. 273
निराशा हो कभी मन में.. 274
नहीं माँगते राज्य स्वर्ग सुख.. 275
नौजवानों भारत की तकदीर.. 276
न कोई दे पाये साथ.. 276

गीत पृष्ठ

नाम है तेरा माँ गायत्री.. 277
निर्धन या धनवानों की.. 278
नव प्रभात है नव प्रकाश है.. 279
नशा न करना मानलो कहना.. 280
नारी को दैवी कहा गया (राधे.)... 498
नर–नारी दोनो मिलकर (राधे.).. 499
नारी की क्षमता अद्भुत है (राधे.)... 499

प

प्रज्ञा पुराण पावन... 281
पास रहता हूँ तेरे... 282
पूज्यवर गुरुदेव की चतुरंगिनी सेना.. 283
प्रज्ञा पुराण सुनिये.. 284
प्यार लुटाया तुमने गुरुवर.. 285
पूज्य गुरुदेव थे त्याग–जप.. 286
प्रेम से जपलो प्रभु का नाम.. 287
पुरूषार्थ की कहानी... 288
पत्थर मत मारो.. 289
प्रेमी भर तु प्रेम में.. 290
प्यार तो है हमें जिन्दगी... 291
प्राणी आजा शरण गुरु की.. 292
पाप हारिणी दु:ख निवारिणी.. 293
प्यार तुम्हारा ही तो माँ... 294
प्रभु अब दो ऐसा वरदान... 295
पिछले युग की बातें... 296
पैसे के बदले सदाचार.. 297
प्रेम का अमृत पिया जो.. 298
परमार्थ है जहाँ पर.. 299
पीड़ा पुकारती है... 300

गीत	पृष्ठ

प्रभु का ही दर्शन हो.. 301
पथ के कष्ट सहकर.. 302
पीर की बेचैनियों में.. 303
प्रतिभाओं तुमको क्रांति.. 304
पगले दृष्टि बदल यदि.. 305
प्रभु चरण तुम्हारे पड़े जहाँ.. 306
पुकार प्राण–प्राण को.. 307
प्रभु से साझेदारी करलो.. 308
पूरब–पश्चिम उत्तर–दक्षिण.. 309
प्रतिष्ठा महाकाल की.. 310
प्रभुता की चाह बड़ी भारी (राधे.).. 496
पाँचो युग्मों में पंच कोष (राधे.).. 500
परिवार राष्ट्र का लघु स्वरूप (राधे.).. 502
प्यार सहकार में करामात है (राधे.).. 511
पहली सीढ़ी जिससे मानव (राधे.).. 511
परिपक्व आयु जब हो जाये (राधे.).. 518

फ

फुट पड़े यदि हृदय से.. 311
फैल रहा अज्ञान.. 312
फैली है दुनियाँ में बिमारी.. 313

ब

बुढ़ापा आ गया कैसे.. 314
बात कोरी न केवल करो.. 315
बिछड़े हुए मिलायें..316
बनों एक सब मिल.. 317
बरस रहे अनुदान साधकों.. 318
बीती विषयों में उमरिया.. 319

गीत पृष्ठ
बल प्राण प्रकाश सभी........ 320
बहिनों दीपयज्ञ है आज........ 321
बुने रे मन क्यों ताना बाना........ 321
बुला रही है भारत माता........ 322
बहनों अपनी शक्ति........ 323
बोल रहे राखी के धागे........ 324
बहुत विकल देखे नर-नारी........ 325
बेटा-बेटी में भेद करे (राधे.)........ 501
बनते विवाह शुभ संस्कार (राधे.)........ 518

भ

भटक रहा है जनम-जनम से........ 326
भरी भीड़ में एकाकी हम........ 327
भर-भर आये नयन हमारे........ 328
भीड़ की तो कमी है कहाँ........ 329
भारत माता प्रश्न पूछती है........ 330
भारत का भाग्य जगायेंगी........ 331
भजले प्यारे शाम सबेरे........ 332
भगवान का अमर सुत........ 333
भिन्नता प्राणियों के जन-जन (राधे.)........ 521

म

माँ शरण में आये हैं........ 333
मेरा मेरी करते-करते........ 334
महाकाल के अब तो दोनों........ 335
मन तू राम नाम गुण गाले........ 336
मिलकर करें प्रयास........ 337
मन का मैल अगर ज्यों........ 338
मंगलमयी गायत्री माता........ 339

गीत	पृष्ठ

मन के गहरे अंधियारे में.. 339
मुखरित गायत्री हर स्वर में.. 340
महाक्रांति अनिवार्य हो चुकी.. 341
महाकाल के अवतारी तुम.. 342
मैंने जीवन त्याग तितिक्षा.. 343
मेरा परिचय क्या पूछ रहे.. 344
माँ पीड़ित बच्चों ने.. 345
माँग रही है देवसंस्कृति.. 346
मातृ स्वरूपा नारी है.. 347
माँ की सेवा को निकले.. 348
माँ ने आज निमन्त्रण भेजा.. 349
मन करता है इस धरती पर.. 350
माँ प्रज्ञा अवतरित हुई.. 351
मैं तुम्हारी साधना का.. 352
मानव जीवन की गरिमा को.. 353
माँ गायत्री रही पुकार.. 354
मन मंदिर में सदा विराजे.. 355
माँ जीवन संगीत सुनादे.. 356
माँ हमें शक्ति दो वह.. 357
माँ हृदय में बस तुम्हारे.. 358
मन में कुछ उमड़ा.. 359
मधुर मंगलमय तुम्हारा.. 360
मानव को उच्च बनाना है (राधे.).. 516
माहौल घरों का बच्चो पर (राधे.).. 505
मानव ही क्या पशु–पक्षी भी (राधे.).. 509
मानव में आयु बुद्धि के संग (राधे.).. 513
मन से शरीर से (राधे.).. 514

गीत पृष्ठ

मक्खी मच्छर की तरह (राधे.)... 520

ट

टिकेगा कहाँ तक धरा पर.. 230

य

युग दृष्टा की सिद्ध लेखनी.. 360

ये नर तन तुझे जो मिला है.. 361

यह कन्या रूपी रत्न तुम्हें.. 362

युग के विश्वामित्र नमन.. 363

ये क्या कर रहे हो.. 364

याचकों की भीड़ है.. 365

यह न समझो की ज्योति.. 366

ये दहेज का दानव.. 367

यह परीक्षा की घड़ी है.. 368

युग का तो परिवर्तन होगा.. 369

यह घड़ी है निर्माताओं की.. 370

यह राग, द्वेष का समय नहीं.. 371

युग-युग से इतिहास बताता.. 372

यज्ञ हुआ प्रारम्भ भाईयों.. 373

युग के राम विकल है.. 374

यही है कामना अपनी.. 375

यदि स्वर्ग है कहीं पर.. 375

युग की पीर बुलाये.. 376

ये वक्त न ठहरा है.. 377

यूँ घबराओ नहीं कि तुम.. 378

युग ने आज पुकारा.. 379

युगों-युगों से तार रहा जग.. 380

याद आ रही है हर क्षण.. 381

गीत	पृष्ठ

युगऋषि का साथ निभाने........ 382
युगऋषि की जीवनशैली........ 383
यदि आत्मज्ञान को पाना है (राधे.)........ 495
योगाभ्यासी समदृढ़ रहकर (राधे.)........ 502
यह जीव अनेक योनियों में (राधे.)........ 504
यह भी है रूप सत्य का ही (राधे.)........ 508
यह दृष्टि बनी है पदार्थ के (राधे.)........ 512
यदि वे कुमार्गगामी (राधे.)........ 514
यदि आत्मज्ञान का है अभाव (राधे.)........ 520
यह विचार कर देवर्षि (राधे.)........ 523

र

रघुनन्दन राघव, राम हरे........ 384
रह न साधना जाय अधूरी........ 385
रहन सहन में खान पान में........ 386
राष्ट्र घिरा हो विपदाओं से........ 387
राष्ट्र देवता ने भेजा है........ 388
राम फिर से ले लो अवतार........ 389
रहे न नाम निशान........ 390
राखी के हर धागे में (अ)........ 391
राखी के हर धागे में (ब)........ 392
राखी का त्यौहार सुहावन........ 393
राखी बँधवालो भइया........ 394
रक्षा बन्धन विमल स्नेह........ 395
रावण ने और विभीषण ने (राधे.)........ 508
रावण ने अत्याचार किया (राधे.)........ 508
राक्षस या देव बनाने में (राधे.)........ 513

गीत पृष्ठ

ल

लो संकल्प करो निर्माण.. 396
लागी है लगन माता... 397
लो साथ हमारा छूट रहा.. 398
लेना कभी मत दहेज.. 399
ले चला सन्त बन.. 399
लोकमंगल के लिए खुद.. 400
लोकरंजन के समर्पित.. 401
ले देव-संस्कृति का प्रसाद (राधे.).. 512

व

व्यक्तित्व को हमारे... 402
विश्व मंदिर में विराजी... 403
विषयों से नहीं फुरसत जिनको.. 404
वन्दना के इन स्वरों में.. 404
व्यसन हमारी सभी शक्तियाँ... 405
वीणा वादिनी वर दे.. 405
विश्व की सत्प्रेरणा की स्रोत... 406
विमल भावना भर भाषा में.. 407
विश्व व्यापी सघनतम... 408
विश्व धर्म का झण्डा लहरा.. 409
विश्व सोया रहा... 410
विद्यालय में पढ़कर बच्चे (राधे.)... 517
व्यवसाय और विज्ञान आदि (राधे.)...................................... 518
वानप्रस्थ, डाली पर कभी न रूकता (राधे.)........................... 522

श

शक्ति साधना बिना बनता.. 411
शांति और संतोष छोड़... 412
शांतिकुंज बन गया छावनी.. 413

गीत	पृष्ठ

शूरवीर उठो! जागकर.. 414
शंख घंटियाँ गूँज रही है.. 415
शुद्ध किया भगवन ने.. 416

स

सत्संग वो गंगा है.. 416
सत्संग है ज्ञान सरोवर.. 417
सुनों कथा प्रज्ञा पुराण की.. 418
सुनो कथा यह कान लगाकर.. 419
सुनो हृदय पट खोल.. 420
सत्संग ने कई का जीवन.. 421
सभी के दिल दिमाग.. 422
समय से कदम मिलाओ साथी.. 423
संसार के लोगों से.. 424
सप्त महाव्रत धारण करके.. 424
सर पे तेरे घड़ा है.. 425
समय ही होता है बलवान.. 426
सुनों नारियों भारत माता.. 427
समय बड़ा बलवान रे.. 428
सफल हुआ है उन्हीं का.. 428
सृजन हम करें.. 429
स्वीकार करेगा तू एक दिन.. 429
सोना नहीं तपा तो.. 430
समय को साधने वाले.. 431
सारी जगती जन्मभूमि है.. 432
सच्ची राहें खोजना है यदि.. 433
सुनों परावाणी गुरुवर की.. 434
सूर्यदेव आप अनवरत.. 435

गीत	पृष्ठ

समय की पुकार है.. 436
सत्संगति अति प्यारी... 437
सत्संग की सुधा से जीवन... 437
सुनों यह छात्र जीवन.. 438
सबसे करना प्रेम जगत.. 439
स्वर्ग लोक के गीत नहीं... 440
सुबह का बचपन हँसते देखा... 440
सावधान युग बदल रहा है.. 441
सदा मन हमारा रहे... 442
सूर्य की पहली किरण... 443
सागर से भी गहरा वन्दे.. 444
सबमें अंश तुम्हारा.. 445
सभी जन्म से शुद्र किन्तु.. 446
समता मैत्री भाई चारा.. 447
सारे जग के जीवन प्राण... 447
स्वीकारिये शुभ कामनायें.. 448
सुनों-सुनों बहिन-भाईयों.. 449
सुधरे हमारा परिवार... 450
सत्शिव सुन्दर भावों की.. 450
सद्ज्ञान की खान हो... 451
संस्कार की परम्परा... 452
सब भाव पूर्ण आज.. 453
स्वार्थ का ही सगा है... 454
साधक वह है जिसके... 455
सदुगुरु युग ऋषि है.. 456
साधना से शक्ति का.. 457
सबसे अच्छा सबसे प्यारा... 458

गीत	पृष्ठ

संस्कार शुभ अन्नप्राशन........ 458
स्वागतम् स्वागतम्........ 459
समय विषम है डगर........ 460
संयम, संतोष उन्हें भाता (राधे.)........ 495
संगति से जिनकी नर पशु भी (राधे.)........ 497
सामान्य रूप से मानव में (राधे.)........ 497
संतान सुयोग हो जाने पर (राधे.)........ 503
संस्कार जगाने हेतु जिम्मेदारी (राधे.)........ 503
संस्कार जगाने गढ़ने की (राधे.)........ 505
संकीर्ण स्वार्थ परता (राधे.)........ 506
संतति के कर्म शुभाशुभ भी (राधे.)........ 510
सहकार वृत्ति की महाशक्ति (राधे.)........ 515
सेवक साथी अध्यापक (राधे.)........ 518
सच्चे शिक्षक विद्यालय में (राधे.)........ 520
संतान श्रेष्ठ जब हों समर्थ (राधे.)........ 522

ह

हमें सद्गुणों का खजाना........ 461
हे माँ ऐसी आत्मशक्ति दो........ 462
हम सब बालक हैं........ 463
हे प्रभु हम सबसे प्रेम करें........ 464
हे भगवान हमारे देश को........ 464
हे माता भगवती तुम्हारी........ 465
हमें परखने का तरीका........ 465
हम मोड़ने चले हैं युग को........ 466
हम धनी न चाहें हों........ 467
हर तरफ अँधेरा है........ 467
हम युग संदेश सुनाते हैं........ 468

गीत	पृष्ठ
हे सृजन शक्ति नारी	469
हम तो छोड़ चले घरबार	470
हुआ समर्पण मिटी चाह	471
हे मेरे गुरुदेव कृपा सागर	472
हुये विकारों से शापित	473
हृदय–हृदय को भरे पुलक	474
हो व्यक्तित्व विकास	475
हम भारत के सच्चे सेवक	476
हे गुरुवर शक्ति हमे दो	477
हार बैठे अगर आप	478
हम बदरी बन छायेंगी	479
हम तुम्हारे लिए हैं	480
हे श्रीराम तपोनिष्ठ	481
हे प्रभु मानव हृदय को	482
हे श्रीराम तुम्हें प्रणाम	483
हम हैं संताने युग ऋषि की	484
हो पूज्य गुरुदेव तुम हमारे	485
हर बहना को भाई की	486
है प्रथम पितृऋण जिसमें (राधे.)	519
है मोह विकार प्रेम का ही (राधे.)	494
है अहंभाव तो अंदर का (राधे.)	494
है धर्म जगत में सर्वश्रेष्ठ (राधे.)	497
हे तात पराक्रम करना है (राधे.)	519
हर मानव को उस परमपिता ने (राधे.)	514
है मेरूदण्ड इस संस्कृति का (राधे.)	516
है काम, क्रोध अरू लोभ (राधे.)	519
है पुत्र या पुत्री (राधे.)	515
है सदगृहस्थ के लिए उचित	521

गीत	पृष्ठ

है लाभ अनेक असाधारण.. 521

ज्ञ

ज्ञान गंगा का हुआ अवतरण.. 487
ज्ञान कर्म और भक्ति का (राधे.)... 510

ॐ

ॐ है परम पिता का नाम.. 488

श्र

श्रद्धा प्रज्ञा निष्ठा से जो.. 489
श्री मन नारायण... 490
श्री राम आया है.. 490
श्रद्धा और समर्पण.. 491
ऋषियों की धरती यह.. 492
श्रीराम के चरणों में.. 493

ऋ

ऋषि बोले प्रजनन आश्यक है (राधे.)...................................... 514
ऋषि धर्म तंत्र के प्रहरी (राधे.).. 498
ऋषियों ने चार आश्रमों में (राधे.)... 504

अगर चाहते हो निज रक्षा

अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुणगान करो।
नित्य शुद्ध एकान्त भूमि में, जग-जननी का ध्यान करो॥

दु:ख काट कर भक्तों का, माता रक्षा करती है।
सुख सौभाग्य बढ़ा देती है, शांति सुधा रस भरती है॥
नदी समुद्र सरोवर के तट, शांत भाव से खड़े-खड़े।
गायत्री का जप करते थे,जब द्विज पुँगव बड़े-बड़े॥

बाल्यकाल में ही जिनको, यह मंत्र सुनाया जाता है।
आलस दम्भ प्रमाद न उनकी, संतानो में आता है॥
सब मनुष्य तप में प्रवृत्त, नित गायत्री का जाप करो।
पार करो जीवन की नैय्या, दूर सकल अभिशाप करो॥

शक्ति पुंज और सच्चा पथ में, शास्त्र सदा से गाता है।
मनुज मात्र की रक्षा करती, श्री गायत्री माता है॥
गायत्री को नहीं जानता, संध्या कभी न करता जो।
ऐसा कर्म हीन अपने को, फिर क्यों ब्राह्मण कहता है॥

है यह दु:ख की बात मनुज जब, गायत्री को भूल गया।
निज सुख साधन विषय भोग तक, अपने को सीमित किया॥
फल स्वरूप परिवार बिखरते, अपने पन का भाव नहीं।
पिता पुत्र पति पत्नी भाई, माँ बेटे विश्वस्त नहीं॥

देख दु:ख परिवारों का जब, युगऋषि का मन द्रवित हुआ।
हरने को दु:ख दैन्य मनुज का, उनने है संकल्प किया॥
औ कठोर तप से युग ऋषि ने, गायत्री को सिद्ध किया।
मनुज मात्र की सुख समृद्धि हित, अपने तप का अंश दिया॥
शक्ति शांति यदि है पाना तो, गायत्री का जाप करो॥

अपना देश बनाने वाले

अपना देश बनाने वाले हम बच्चे।
नव निर्माण रचाने वाले हम बच्चे॥

हम बेटे भारत माता के, सपनों को महकाते हैं।
विपदाओं को चीर-चीरकर हम आगे बढ़ जाते हैं॥
मन के फूल खिलाने वाले हम बच्चे॥

हम हैं हिन्द महासागर से, खुशियों में लहराते हैं।
और हिमालय पर्वत जैसी, ऊँचाई अपनाते हैं॥
नदियों से मिल जाने वाले हम बच्चे॥

हम हैं जो खुशहाली लाते, खेतों को सरसाते हैं।
युद्ध काल में या अकाल में, हम बादल बन जाते हैं॥
सोया देश जगाने वाले हम बच्चे॥

हम संस्कृति की लाज बचाने, भगतसिंह बन जाते हैं।
हम बच्चे प्रहलाद ध्रुव बन, भक्ति अटल कर जाते हैं॥
कुल की लाज बचाने वाले हम बच्चे॥

लक्ष्मी बाई बन अनीति का, गर्व चूर कर जाते हैं।
हर विपदा में पन्ना के सम, निज सुत बलिकर जाते हैं॥
दुश्मन मार भगाने वाले हम बच्चे॥

अब युग बदल रहा है

अब युग बदल रहा है, बदलना जरूर है।
वे अब भी बदल जाये कि जिनको गुरूर है॥

क्यों हँस रहा है पापी, माया बटोर कर।
जाना तुम्हें जरूर है, दुनियाँ को छोड़कर॥
जब तुमको पटक देंगे, चिता पे मरोड़कर।
संगी साथी चले जायेंगे जलता ही छोड़कर॥
ईमान और धर्म से, जो कोसों दूर है॥

जो ब्याज में खाते हैं, सदा दूध मलाई।
और सैकड़ों के कर्ज में, जायदाद दबाई॥
वे मुँह के बड़े मीठे हैं, पर दिल के कसाई।
दुखियों का खून पीके, करते हैं भलाई॥
लालच में फँस रहा है जो, माया में चूर है॥

मृत्यु के बाद वे न देवदूत बनेंगे।
नहीं वे किसी घर के सपूत बनेंगे॥
या तो किसी खण्डहर के भूत बनेंगे।
या किसी शमशान के मरदूत बनेंगे॥
करनी किया गलत तो, फल मिलना जरूर है॥

जीना है अगर जग में, तो कुछ काम करले।
श्रीराम के कामों में, कुछ हाथ बटाले॥
बिखरे हुए संसार को अब, फिर से सुधारे।
युग निर्माण का संकल्प फिर से निभाले॥
यही युग धर्म है करना जरूर है॥

अपने दुःख में रोने वाले

अपने दुःख में रोने वाले, मुस्कराना सीख ले।
दूसरों के दर्द में आँसू, बहाना सीख ले॥

जो खिलाने में मजा, ओ आप खाने में नहीं।
सेवा में भगवान है तू, दर्श पाना सीख लें॥

कर गरीबों का भला औ, बे नसीबों पर रहम।
जिन्दगी में तू किसी के, काम आना सीख लें॥

कर्म तेरा हो भलाई, धर्म तेरा प्रेम हो।
प्रभु कृपा का मर्म यह, जीवन में लाना सीख लें॥

अंधेरे की चिन्ता को अब

अंधेरे की चिन्ता को अब छोड़ करके, उजाला का कोई दीप जलाएँ।
बहुत हो चुका गुनगुनाते हुए, चलो जागरण का नया गीत गाएँ।।

विचारों में फैली हुई गन्दगी है, मनों में उदासी निराशा भरी है।
अभी कालिमा है दिलो में समाई, हृदय में कुटिलता-कुहासा भरा है।।
प्रबल संगठन शक्ति लेकर बढ़ें हम, औरों को बढ़ करके अपना बनाएँ।।

लाना है सतयुग न पीछे रहें हम, कदम से कदम को मिलाते चलें हम।
प्रखर प्रेरणा के प्रबल गीत गाकर, नई चेतना को जगाते चलें हम।।
बनेगी धरा स्वर्ग विश्वास दृढ़ है, कर्म और कौशल अपना लगाएँ।।

सभी के हृदय में पले प्रीति पावन, मशालें जले ज्ञान की हर नगर में।
गुरुवर का साहित्य पहुँचे सभी तक, देवत्व जागे हर एक घर में।।
हृदय में जगे शुभ संकल्प का बल, अपनत्व देवत्व उर में जगाएँ।।

अंगार दहकते लाये हैं

अंगार दहकते लाये हैं, यह महाकाल ने पहुँचाये।
जिसको लेने में लाभ दिखे, वह मूल्य चुकाये ले जाये॥

है प्रबल स्वार्थ की शीत लहर, ठिठुरी बैठी है मानवता।
मानवता को कमजोर देख, इठलाती फिरती दानवता॥
मानवता को गर्मी दे दो, वह फिर से कर्मठ हो जाये।
फिर मानवता के धक्के से, दानवता पीछे हट जाये॥

कुविचार, कुकर्मों का कूड़ा, जन जीवन में है भरा हुआ।
निष्ठुर कुरीतियों-व्यसनों से, देखो सारा जग घिरा हुआ॥
ले लो-ले लो अनमोल आग, जिससे यह कचरा जल जाये।
आसुरी वृत्तियों का कुचक्र, इसकी गर्मी से जल जाये॥

इनमें प्रज्ञा की ज्योति प्रखर, पावन श्रद्धा है सुलग रही।
है दिव्य चेतना की ज्वाला, प्रिय दिव्य भावना दहक रही॥
ईमान सेक लो इसमें तो, वह तपकर पक्का हो जाये।
मानव की अन्तर आत्मा को, खोया हक फिर से मिल जाये॥

इन अंगारों की गर्मी से, दूषण सारे गल जायेंगे।
संस्कार श्रेष्ठतम जीवन के, अति सुन्दर फिर ढल जायेंगे॥
इनको भर लो संकल्पों में, तो प्रतिभा श्रेष्ठ उभर आये।
ऋषि पुत्रों की प्रतिभा पावन, फिर स्वर्ग धरा पर ले आये॥

यदि लेना है तो आ जाओ, श्रम, समय जरा सा दे जाओ।
प्रतिभा, कर्मठता, निष्ठा का, कुछ अंश नया कर ले जाओ॥
कंजूसी मत करना कोई, यदि बात समझ में आ जाये।
यदि हाट उठ गयी दुविधा में, तो क्या होगा फिर पछताये॥

असुर तत्व हावी है

असुर तत्व हावी है सब पर, कैसे तुम्हें सुहाता है।
वीरभूमि की ओ संतानों, युगऋषि तुम्हें बुलाता है॥

आज चुनौती मिली शौर्य को, उसको तुम स्वीकार करो।
अपने तन मन में रग रग में, नया शक्ति संचार भरो॥
पुनः दिखा दो बलिवेदी पर, तुम्हें जूझना आता है॥

आज अरक्षित हैं जन-जन क्यों, वीरजनों की छाया में।
ज्ञानवान के रहते क्यों सब, भटक रहे हैं माया में॥
अपने पुत्रों की दुर्गति पर, माँ को रोना आता है॥

धनवानों का धन शोषण में, या व्यसनों में भटका है।
लोक सेवियों का दल देखो, निपट स्वार्थ में अटका है॥
जन-जन शंका में डूबा, विश्वास सिमटता जाता है॥

बहन-बेटियों की इज्जत पर, गिद्धों से मँडराते हैं।
नेग-दहेज और फैशन से, उनको डसते जाते हैं॥
असुर भाव उदण्ड हो रहा, देव भाव शरमाता है॥

राणा, पूँजा आगे आओ, ओ हकीमखाँ जाग उठो।
आहुति देने भामाशाहों, झालाओं फिर मचल उठो॥
देखे दुनियाँ तुमको कैसी, ज्वाल जलाना आता है॥

अवतरण हो गया

अवतरण, अवतरण, अवतरण हो गया।
स्वर्ग से आपका आगमन हो गया॥

हो रही थी अभावों ग्रसित जब धरा,
और अज्ञान से लोकमानस घिरा।
थी अँधेरी सी छाई हुई हर तरफ,
अवतरण जब कृपा की किरण हो गया॥

सूखती भूमि को फिर हराकर दिया,
बन पतित पावनी पाप सब हर लिया।
हर सगर सुत हुआ मुक्त अभिशाप से,
तर गया आपकी जो शरण हो गया॥

ज्ञान गंगा बनी वेद माता बनी,
और अज्ञान से मुक्ति दाता बनी।
फिर न सोया रहा कोई अज्ञान में,
सुप्त देवत्व का जागरण हो गया॥

ज्ञान गीता मिली प्राण के पार्थ को,
राह सर्वार्थ की मिल गई स्वार्थ को।
सत्य के पक्षधर पाण्डवों की विजय,
क्रूरता कौरवों का मरण हो गया॥

आपका अवतरण युग बदलने लगा,
देवता हर मनुज का मचलने लगा।
सामने दिख रहा है खुली आँख से,
स्वर्ग का इस धरा पर सृजन हो गया॥

अपने अन्तर की कथा

अपने अन्तर की कथा कहो।
मेरे करुणा के स्रोत बहो, अपने अन्तर की कथा कहो॥

जग की पीड़ा के सागर में, गहरे तक अन्दर जाना है।
श्रम, सदाचार की सीपी से, समता के मोती लाना है॥
औरों को बाँटो निज थाती, तुम स्वयं अकिंचन आज रहो॥

अपने दो हाथ मिला दो तुम, जग के सहस्रतम हाथों में।
हो पंख तुम्हारे प्रगतिशील, अभिनव सुधार की राहों में॥
हो सबका ही कल्याण जहाँ, तुम ऐसी ही बस राह गहो॥

जब दर्द बाँट दोगे अपना, मन हल्का हो ही जायेगा।
पाथेय बना लोगे साहस, हर काम सरल हो जायेगा॥
अब करो प्रज्ज्वलित ज्ञान ज्योति, तम में अब डूबे नहीं रहो॥

अपने आजाद भारत की

अपने आजाद भारत की हमको कसम।
जान दे देंगे प्यारे वतन के लिए॥

पूज्य गाँधी व नेहरू के कर्त्तव्य से।
औ भगतसिंह के जोशीले एहसास से॥
रोशनी के लिए जग पे छा जायेंगे॥

दुर्गा, पद्मावती और लक्ष्मीबाई का।
खून रगों में हर एक रूतवाई का॥
बढ़के हम दुश्मनों से टकरा जायेंगे।
सिर कटा देंगे प्यारे वतन के लिए॥

अगर तुम्हें यह ठीक लगे

अगर तुम्हें यह ठीक लगे तो, बहनों राखी बाँध दो॥

फिर से आज महाभारत की, सेना सजती है भारी।
अवतारी के साथ चल पड़े, अपनी है यह तैयारी॥
मोह ग्रस्त होकर ना बैठे, माँ ऐसा सद्ज्ञान दो।
सद्विचार के धागे बटकर, बहनों राखी बाँध दो॥

एक ओर कौरव सेना का, बिगुल बज रहा स्वार्थ भरा।
योगिराज ने पाण्डव दल से, यज्ञ भाव भर दिया खरा॥
जो अनीति को मिटा सके माँ, उस साहस का दान दो।
कर्मठता का तिलक लगाकर, बहनों राखी बाँध दो॥

मानव को हम मानवता से, दूर नहीं होने देंगे।
सद्भावों का साथ छोड़कर, क्रूर नहीं होने देंगे॥
हर मन में सद्भाव जगा दो, माँ ऐसा अनुदान दो।
ममता से मुँह मीठा करके, बहनों राखी बाँध दो॥

चलना है उज्ज्वल भविष्य तक, बिना रुके बढ़ जायेंगे।
मिले सफलता या कि शहीदी, हम मंजिल पा जायेंगे॥
हमसे तप करवालो माता, जन-जन को कल्याण दो।
ऋषि कन्याओं ऋषि पुत्रों को, तुम भी राखी बाँध दो॥

अगर अभाव मिटाना है

अगर अभाव मिटाना है, सद्भाव बढ़ाओ रे।
सत्प्रवृत्तियों की पूंजी ही, अरे कमाओ रे॥

ऐसे अनगिन है जिनको, सद्भाव नहीं मिलता।
प्यार बिना जिनकी खुशियों का, फूल नहीं खिलता॥
जिनको सब ठुकराये उनको, भी अपनाओ रे॥

उनको हिम्मत दो जो अपनी, हिम्मत हारे हैं।
अपना सुख बाँटो उनको जो, दुःख के मारे हैं॥
जो निराश हो चुके उन्हें कुछ, धीर बँधाओ रे॥

जो पथ में भटके हैं जिनकी, मंजिल बाकी है।
उनको थोड़ा बहुत सहारा, भर ही कॉफी है॥
मंजिल तक पहुँचाने वाली, राह दिखाओ रे॥

जो एकाकी हैं सिखलाओ, श्रम, सहयोग उन्हें।
सिखलाओ साहस संकल्पों, का संयोग उन्हें॥
गिरा मनोबल उठा तनिक, पुरुषार्थ जगाओ रे॥

सद्प्रवृत्ति की पूंजी को कब, चोर चुरा पाते।
जिन्हें बाँटते हैं वे कभी भी, कब निर्धन रह जाते॥
सद्प्रवृत्तियाँ बढ़ा देश, धनवान बनाओ रे॥

अपने पैरों पर खड़ी होना

अपने पैरों पर खड़ी होना ओ बहना मेरी।
पर दहेज के लोभी से ब्याह मत रचाना चाहे–क्वारी रह जाना॥

खाली होते ममता से लोभ से भरे मन वाले।
बाहर से दिखते उजले पर मन के होते काले॥
मन से उस घर का कोई स्वप्न न सजाना–ओ बहना मेरी।
स्वप्न मत रचाना चाहे क्वारी रह जाना–ओ बहना मेरी॥

तेरी शिक्षा सज्जनता उसे नहीं भायेगी फिर।
उनकी निर्ममता तुझको रात–दिन रूलाएगी फिर॥
यूँ जीवन भर आँखों से नीर मत बहाना–
ओ बहना चाहे क्वारी रह जाना॥

रात–दिन भिखारी से वे माँगते रहेंगे हरदम।
मर्यादा कि हर सीमा लाँघते रहेंगे हरदम॥
ऐसे घर में जीवन को नर्क मत बनाना ओ बहना मेरी॥

नित्य नई माँगे अपनी मैके भिजवायेंगे।
माँगे न पूरी होगी तब तुझको सतायेंगे॥
कञ्चन सी काया अपनी राख मत बनाना ओ बहना मेरी॥
राख मत बनाना चाहे क्वारी रह जाना–ओ बहना मेरी॥

अपना सर्वस्व लुटा साथी

अपना सर्वस्व लुटा साथी, सींचो जगती की फुलवारी।
कण–कण में ज्योति बाँटो, हरना है युग की अँधियारी॥

अब और प्रपंचो में जीने की, साध्य कला न चली जाये।
सदियों के आंगन में भावों की, सीता फिर न छली जाये॥
दुर्लभ मानव का जीवन है, चूको न समय कुछ काम करो।
निज स्वार्थ साधना में सतत्, यह जीवन मत बदनाम करो॥
उलझो मत विश्व उलझनों में, दुखियों के तुम हो दुखहारी॥

मत हरो किसी का धन धरती, गिरतों को जरा सहारा दो।
प्राणों का प्रत्यावर्तन कर, बहते को थाम किनारा दो॥
पौरुष के मधुबन महक उठे, मरु में रस का सागर लहरे।
घर–घर में जन गण मंगलहित, नित प्रेम पताकायें फहरे॥
नव सृजन तुम्हारा लक्ष्य रहे, पर बनो न छद्म वेशधारी॥

केवल संग्रह का भूखा जो, मानव को क्या पहचानेगा।
महलों का प्रेमी कुटिया का, दुःख दर्द भला क्या जानेगा॥
कुछ लोग मखमली गद्दों पर, जीवन का स्वर्ग बिताते हैं।
क्या दीन जनों का जीना भी, चिथड़ों में लाज छिपाते हैं॥
इस छोर असहाय विषमता के, तुम बनो कभी मत व्यापारी॥

दुःख लेकर स्वयं दूसरों को, सुख देना ही शुभ कर्म यहाँ।
विष पीकर सुधा पिलाना ही, मानवता का है धर्म यहाँ॥
अधिकार और पद के लालच में, मन को मत बहकाना तुम।
आँधी तूफानों में हँसते, श्रद्धा के दीप जलाना तुम॥
सेवा को तजकर मेवा का, मत बन जाना तुम अधिकारी॥

अपने जीवन से लिख देंगे

अपने जीवन से लिख देंगे, युग निर्माणी जीवन गाथा।
गुरुवर ने रच दी है फिर से, त्याग समर्पण की परिभाषा।।

भोगवाद की भीषण आँधी में भी ज्योतित सदा हुए।
प्रखर साधना करके गुरुवर, परम प्रफुल्लित सदा हुए।।
नई सदी में प्यार लुटाने वाले, गुरुवर ही बस आशा।।

गायत्री को गुरुवर ने ही शाप मुक्त करवाया है।
पाखण्डों में बंधे यज्ञ को घर-घर तक पहुँचाया है।
स्वतंत्रता के महासमर में, पलट दिखा दी जिनने पासा।।

इस शुभ अवसर पर गुरुवर को, यह श्रद्धाञ्जलि दे पायें।
युग निर्माणी संकल्पों को जन-जन तक पहुँचा पायें।।
नित्य झुकायें गुरु चरणों में, शिष्यों श्रद्धा से सब माथा।।

श्रेष्ठ विचारों की गरिमा को, प्रखर शक्ति को पहचानों।
प्यार भरा संगठन बनाओ, स्नेहपूर्ण तुम व्रत ठानों।।
हम बदलेंगे युग बदलेगा, होगी नवयुग की परिभाषा।।

मुक्तक-
युग निर्माण योजना ही, गुरुवर की राम कहानी।
सुनें हृदय के द्वार खोल, प्रज्ञा पुत्रों की वाणी।।

आए! आए हैं सारे देव!

आए! आए हैं सारे देव! विराजे कलशों में।
सारे देवों का हो गया वास, हमारे कलशों में।।

कटि में द्वीप और सब सिंधु, मूल में ब्रह्मा, मुख में विष्णु।
कंठ में हैं महादेव, हमारे कलशों में, आए! आए हैं सारे देव!...

ब्रह्मा देंगे सृजन की शक्ति, और विष्णु भावमय भक्ति।
जग पालन संदेश, हमारे कलशों में,आए! आए हैं सारे देव!..

महाकाल नवयुग निर्माता, युगऋषि के संकल्प विधाता।
युग निर्माणी उद्घोष हमारे कलशों में, आए! आए हैं सारे देव!..

विकृति का विध्वंस करेंगे, संस्कृति का उन्मेष करेंगे।
है सद्चिंतन परिवेश हमारे कलशों में,आए! आए हैं सारे देव!..

व्यक्ति का निर्माण हो रहा, संस्कारित परिवार हो रहा।
हुआ जाग्रत देश, हमारे कलशों में, आए! आए हैं सारे देव!..

है समाज सब नर और नारी, लिंग भेद की हो गई ख्वारी।
ऊँच-नीच नहीं शेष, हमारे कलशों में, आए! आए हैं सारे देव!..

भाग्यवान कलशों को धारो, अपने में देवत्व उभारो।
सजकर वासन्ती वेश, हमारे कलशों में, आए! आए हैं सारे...

निकल रही है देव सवारी, दर्शन को आओ नर-नारी।
युग परिवर्तन संदेश हमारे कलशों में,आए! आए हैं सारे देव!..

आरति अति पावन पुराण की

आरति अति पावन पुराण की,
धर्म-भक्ति विज्ञान-खान की॥

महा पुराण भागवत निरमल।
शुक, मुख, विगलित निगम, कल्प फल॥
परमानन्द, सुधा, रसमय कल।
लीला, रति रस-रस निधान की॥ आरति अति.... ॥

कलिमल, मथनि त्रिताप निवारिनि।
जन्म-मृत्युमय भव-भय हारिनि॥
सेवत सतत सकल सुख-कारिनि।
सुमहौषिधि हरि चरित गान की॥ आरति अति.... ॥

विषय, विलास, विमोह, विनाशिनि।
विमल विराग विवेक विकाशिनि॥
भगवत तत्व रहस्य प्रकाशिनि।
परम ज्योति परमात्म ज्ञान की॥ आरति अति.... ॥

परमहंस, मुनि-मन उल्लासिनि।
रसिक-हृदय रस-रास विलासिनि॥
भक्ति, मुक्ति, रति, प्रेम सुधासिनि।
कथा अकिञ्चन प्रिय सुजान की॥ आरति अति.... ॥

आज करदो कृपा मातु

आज करदो कृपा मातु वरदायिनी।
स्वच्छ शालीन अन्तः करण हो सके॥
दोष, दुर्भाव, दुष्कर्म का हो क्षरण।
और सद्वृत्तियों का वरण हो सके॥

बुद्धि दो, हम सुपथ का चयन कर सकें।
फिसलनों पर स्वयं संतुलन कर सकें॥
खाइयों के निकट हम, संभल कर चलें।
छाँह अमराइयों की, न हमको छलें॥
विघ्न बाधा ढलानों भरे मार्ग पर।
एक पल भी न डगमग चरण हो सके॥

मातु इतना विपुल धन न देना हमें।
स्वार्थ से पूर्ण जीवन न देना हमें॥
प्राप्त कर हम जिसे भूल जायें विनय।
लोक कल्याण को मिल न पाये समय॥
मोह संकीर्णता से न मन भर सके।
सिर्फ सद्वृत्ति का जागरण हो सके॥

दृष्टि में प्यार हो पर प्रलोभन न हो।
जिन्दगी में जरा भी प्रदर्शन न हो॥
प्यार से छल छलाता हृदय दो हमें।
कंठ में सौम्यता दो, विनय दो हमें॥
भाव संवेदना पूर्ण व्यवहार दो।
विश्व का स्वस्थ, वातावरण हो सके॥

माँ हमें विश्व परिवार का भाव दो।
लोक हित के लिए नित नया चाव दो॥
द्वेष दुर्भावना से न हम भर सके।
दूसरों की गहन पीर कम कर सके॥
कर्म से आत्म संतोष पायें सदा।
आचरण का सहज अनुकरण दो हमें॥

आइये सुने लगाकर ध्यान

आइये सुने लगाकर ध्यान, कथा यह मंगलकारी है।
महाप्रज्ञामय प्रज्ञा पुराण, कुमति नाशक सुखकारी है॥

मिले जिससे सद्ज्ञान महान, करे जो दूर मोह अज्ञान।
करे श्रोता का जो उत्थान, भरा है ज्ञान और विज्ञान॥
हरे अभिमान करे कल्याण, कथा यह अति हितकारी है॥

श्रवण से आत्म बोध होगा, सृजन का पथ प्रशस्त होगा।
हृदय में भक्ति भाव होगा, भ्रमों का जाल नष्ट होगा॥
बढ़े सद्भाव, मिटे दुर्भाव, कलुष कलिमल संहारी है॥

सुधारें व्यक्ति और परिवार, सँवारे जन-जन का व्यवहार।
धवल गंगा की निर्मल धार, स्नेह सिंचन का दे उपहार॥
करें उपचार अनेक प्रकार, आज की जो बीमारी है॥

आओ सब मिल सुने

आओ सब मिल सुने औ समझे, करले जीवन का उद्धार।
है यह युग ऋषि की दिव्य वाणी, हटा दे जीवन का संताप॥

जब-जब पाप बढ़ा धरती पर, औ धरती अकुलाई।
किया मान मर्दन असुरों का, मिटने लगी तबाही॥
ऐसे हुए है दस अवतार, हरने को धरती का भार॥

आज विचारों में विकृति है, हाहाकार मचा है।
युग ऋषि ने प्रज्ञावतार बन, सुन्दर कार्य रचा है॥
इससे होगा जन उद्धार, ऐसे हुए है दस हजार॥

आनन्द मंगल करूँ आरती

आनन्द मंगल करूँ आरती, जय गायत्री माता।
चारों वेद की जननी तू, महामंत्र की दाता॥

तेरी महिमा है निराली, तू सबकी करे रखवाली।
भूले भटके लोगों को, सन्मार्ग दिखाने वाली॥
ज्ञान की देवी है तू माता, सबकी भाग्य विधाता॥

तो तेरी शरण में आए, वो खाली हाथ न जाए।
तू अपनी दया की दृष्टि से, भक्तों के कष्ट मिटाए॥
शक्ति भरा तेरा मंत्र जपे वह, मन वान्छित फल पाता॥

है तेरी अनुपम माया, जिसका कोई पार न पाया।
है कोटि-कोटि सूर्यों का, तुझमें अद्भुत तेज समाया॥
तेरे तेज की एक किरण से, मन उज्ज्वल हो जाता॥

आपके अवतरण को हुए

आपके अवतरण को हुए सौ बरस,
वह धरा धाम के हेतु गर्व बन गया।
राष्ट्र की चेतना बन्धनों में कसी,
आपका अवतरण मुक्ति पर्व बन गया॥

विश्व माँ पर लगे कई प्रतबंध थे,
एक ही वर्ग के मानो अनुबंध थे।
अब मिला प्यार माँ का मनुज मात्र को,
पुत्र गायत्री का विश्व भर बन गया॥

था मनुज का सृजन यज्ञ के साथ ही,
था मनुज के लिए यज्ञ परमार्थ ही।
यज्ञ पर भी शिकंजा कसा वर्ग का,
यज्ञ सबके लिए अब सुलभ बन गया॥

आप आये लिए साथ में क्रांतियाँ,
दूर करने हर एक क्षेत्र की भ्रातियाँ।
लिंग का, रंग का, जाति का, धर्म का,
भेद टूटा मनुज मात्र सम बन गया॥

थी कुरीति, कुरूढ़ि, शिकंजा कसे,
अंधविश्वास आडम्बरों में फँसे।
ज्वार ऐसा उठाया विचार क्रांति का,
जूझने लोक चिन्तक प्रखर बन गया॥

लोक नायक शताब्दि के तुमको नमन,
हो रहा युग सृजेता, नया युग सृजन।
है समर्पण सृजन सैनिकों का तुम्हें,
युग नायक ही संकल्प स्वर बन गया॥

आँखे निहारती है गुरुवर

आँखे निहारती है, गुरुवर डगर तुम्हारी।
सूनी है आपके बिन, मन वेदिका हमारी॥

भावों की ईंट चुनकर, मन वेदिका बनाई।
अपने हृदय की उस पर, है आसनी बिछाई॥
आओ प्रभु हमारे, शिव के स्वरूप धारी॥

जप, तप नहीं है हममें, होता न ध्यान पूजा।
नयनों को आपके बिन, भाये न और दूजा॥
अविलम्ब आ पधारो, सुन प्रार्थना हमारी॥

श्रद्धा के फूल चुनकर, थाली में हैं सजाये।
उल्लास दीप भगवन, स्वागत में हैं जलाये॥
उज्ज्वल भविष्य दाता, हे रोग शोकहारी॥

जीवन ये चल रहा है, सब आपके सहारे।
संचार शक्ति करना, बालक तुम्हें पुकारे॥
हाथों में आपके प्रभु, अब लाज है हमारी॥

मुक्तक–

गुरुवर हमें उबारिए, हे! करुणा के धाम।
जीवन सफल बनाइये, हे! युग ऋषि श्रीराम॥

आँखे खोलो समय आ गया

आँखे खोलो समय आ गया, भारत की महिलाओं।
अपने जौहर अपने कौशल, दुनियाँ को दिखलाओ॥

घोड़े पर चढ़ गई युद्ध में, रानी लक्ष्मीबाई।
दुर्गादेवी ने भी लड़ते-लड़ते जान गँवाई॥
रण चण्डी बन करके तुम भी, युद्धभूमि में आओ॥

इन चूड़ी वाले कोमल हाथो में देख कटारी।
कुछ न कर सके आपके आगे, गुण्डे अत्याचारी॥
अबला नहीं बनो तुम सबला, दुष्टों का दिल दहलाओ॥

निर्भय होकर कूद पड़ी रण में, यों रूप की नारी।
अकर्मण्य बन बुला रही, तुम निर्मलता बीमारी॥
अपनी इस दयनीय दशा पर, अब तो मत शरमाओ॥

बनो कमल सा रंग, सरोजिनी लक्ष्मी की हम जोली।
चल दो कर में झण्डा लेकर, बना-बना कर टोली॥
दीन दु:खी है भारत माँ तुम, उनको सुखी बनाओ॥

बहुत गा चुकी लेकिन अब मत, गीत रसीले गाओ।
भरे वीरता के भावों से ऐसे गीत सुनाओ॥
जिनसे एक क्रान्ति की ज्वाला, भारत में सुलगाओ॥

आया देवदूत धरती पर

आया देवदूत धरती पर, स्वर्णिम सृष्टि बसाने।
तम से लड़ने ज्योति सुतों को, फिर झकझोर उठाने॥

हिमगिरि सा जो आदर्शों के, लिए रहा दृढ़ अविचल।
ज्ञानगंग की सुरसरि जिससे, हुई प्रवाहित छल-छल॥
संस्कृति के इस युग प्रहरी में, महाकाल ही हँसते।
प्रेम, दया, करुणा के निर्मल, स्रोत जहाँ से झरते॥
तत्पर था जो मानव हित में, ही निज सत्व गलाने॥

क्षमताओं के महासिन्धु की, बिन्दु थाह कब पाते।
ऋद्धि, सिद्धि, वैभव, विभूति, जिसके तल में गहराते॥
अंतरिक्ष सा जो विराट, ब्रह्माण्ड रूप दिखलाता।
विश्व व्यवस्था, पालक, हंता, सर्व शक्ति उद्गाता॥
भारत भू पर हुआ अवतरित, इसका मान बढ़ाने॥

था जीवन प्रखर प्रज्ञा जो, तप में सविता सुत था।
युग का व्यास, ज्ञानगंगा का, भागीरथ वह खुद था॥
बनकर बुद्ध रोक दी जिसने, बुद्धिवाद की आँधी।
त्याग-तितिक्षा, तप, सेवा की, सतत् साधना साधी॥
किया विनिर्मित नया संगठन, युग प्रवाह पलटाने॥

युग सृष्टा के चरणों में, शुचि श्रद्धाञ्जलि समर्पित।
तन, मन, धन सर्वस्व सभी,अब है उस प्रभु को अर्पित॥
हिमगिरि का कहता प्रतीक, तुम दृढ़ संकल्प जगाना।
कहता उपवन नन्दन वन सा, वसुधा को महकाना॥
संकल्पों का पर्व बनें यह, नव इतिहास रचाने॥

उठो पुरोहित बन तेजस्वी, सोया राष्ट्र जगाओ।
ब्रह्मकमल से ब्रह्मबीज की, गरिमा को दर्शाओ॥
ब्रह्मतेज से चमक उठे फिर, भारत देश हमारा।
और विश्व को आत्मज्ञान का, फिर से मिले उजाला॥
मेरे ब्रह्मकमल ने खिलकर, नव संकल्प जगाया॥

आखरी वक्त है कर ले

आखरी वक्त है कर ले गुरु कार्य तू।
मौत आने का कोई ठिकाना नहीं॥
आज है जिन्दगी कल रहे ना रहे।
जिन्दगानी का कोई ठिकाना नहीं॥

ना चले संग में ना चलेंगे कोई,
अंत तक कोई भी साथ देता नहीं।
आज है पास दौलत कल रहे ना रहे,
ऐसी दौलत का कोई ठिकाना नहीं॥

जो समझते हैं अपनी गरज से गरज,
जिनको मतलब है अपने ही बस काम से।
जिनको मतलब है अपने ही आराम से,
ऐसे लोगों का कोई ठिकाना नहीं॥

हुस्नवालों से कह दो ना इतरा चलें,
ये जवानी सदा साथ देती नहीं।
नूर चेहरे का एक दिन ढल जायेगा,
नव जवानी का कोई ठिकाना नहीं॥

आप हिम्मत बँधाकर हमें

आप हिम्मत बँधाकर हमें चल दिये,
किन्तु! सामीप्य की, याद तो आयेगी।
पास हमको बिठा, प्यार देते रहे,
वह कृपा दृष्टि, कैसे न याद आयेगी॥

जब समस्या उठी, दौड़ हम आ गये,
आपसे हर समाधान, हम पा गये।
दर्द जो भी हुआ, आपने पी लिया,
घाव को स्नेह के सूत्र से सी दिया॥
अब विलखता हुआ छोड़कर चल दिये,
अब कहो! पीर किससे कही जायेगी॥

गोद माँ की हमारे लिये रह गई,
वह स्वयं भी विरह-वेदना सह रही।
किन्तु माँ ने हृदय से लगाया हमें,
हर तरह प्यार अब तक पिलाया हमें॥
स्नेह से स्नात माँ की मृदुल गोद में,
सुधि पिता की सहज ही न क्यों आयेगी॥

आँख से आप ओझल हुए हैं मगर,
सूक्ष्म से प्राण, मन में गये हैं उतर।
प्राण में, प्रेरणा बन, उछलने लगे,
कर्म में भावना बन मचलने लगे॥
आपकी चेतना, विश्व व्यापी हुई,
वह हमें क्यों नहीं नित्य दुलरायेगी॥

हम ऋणी आपके ही रहेंगे सदा,
आपकी राह पर ही चलेंगे सदा।
ज्ञान की जो मशालें थमाई हमें,
लोकपथ में प्रकाशित रखेंगे उन्हें॥
तम मिटाते रहेंगे धरा धाम का,
कोई आंधी न इनको बुझा पायेगी॥

आज साधना की बेला में

आज साधना की बेला में, ऐसी ज्योति जले।
मानव ममता की आँखों में, पावन प्रीति पले॥

बीहड़ अनजानी राहों में, पशुता की नंगी बाहों में।
भोली मानवता न कराहे, दीन-हीन दुर्बल आहों में॥
त्याग, तपस्या की प्रतिमा को, दानवता न छले॥

तम का रहे न ऊँचा मस्तक,जीवन पुस्तक चरे न दीमक।
द्वार-द्वार पर कुण्ठित मन को, छाया कभी न देवे दस्तक॥
जीवन बाती की ऊष्मा से, मन का मैल गले॥

टूटे सदियों की तम कारा, मानव मन न बने बन्जारा।
प्राण दीप की दिव्य ज्योति से, फैले अब जग में उजियारा॥
ज्ञान विहान उदय हो अभिनव, तम की रात ढले॥

भौतिकवादी नाग विषैला, मन गंगा को करे न मैला।
तम के चक्रव्यूह को भेदे, शक्तिपुञ्ज अभिमन्यु अकेला॥
विषय-वासना के प्रेतों की, कभी न दाल गले॥

आज मेरा मन तुम्हारे

आज मेरा मन तुम्हारे, गीत गाना चाहता है।
शुष्क जीवन में पुनः, नव रस बहाना चाहता है॥

चाहता हूँ मैं तुम्हारी दृष्टि, का केवल ईशारा।
डूबते को बहुत होता, एक तिनके का सहारा॥
अब हृदय में प्यार का तूफान आना चाहता है॥

चाहता थककर दिवाकर, चन्द्र नभ का शान्त कोना।
सह सकेगी अब न वृद्धा, भूमि सबका भार ढोना॥
जीर्ण जग फिर से नयी, दुनियाँ बसाना चाहता है॥

एक योगी चाहता है बाँधना, गति विधि समय की।
एक संयोगी भुलाना चाहता, चिन्ता अनय की॥
पर वियोगी आग पानी में लगाना चाहता है॥

व्यंग करता है मनुज की, श्रेष्ठता पर क्षुद्र जीवन।
हंस रहा जग की जवानी की, उमंगो पर लड़कपन॥
किन्तु कोई साथ सबके, मुस्कराना चाहता है॥

नरक लज्जित हो रहा है, स्वर्ग की लखकर विषमता।
आज सुख भी रो रहा है, देखकर दुःख की विवशता॥
इन्द्र का आसन तभी तो, डग-मगाना चाहता है॥

आप आये विभा फूटने

आप आये विभा फूटने सी लगी,
और तम मय निशा टूटने सी लगी॥

आपके संग आशा पुलकने लगी,
साथ के शौर्य के वह किलकने लगी।
कल्पना को मिला आपका साथ तो,
स्वर्ग के स्वप्न वह गूंथने सी लगी॥

देख विकसित, हिमालय स्वयं आ गया,
और अनुकूल सहचर सहज पा गया।
आपने तप किया हिम शिखर रीझकर,
ज्ञान-गंगोत्री फूटने सी लगी॥

मानवों पर विकृति जन्य अभिशाप था,
थे दुखी देव संस्कृति सन्ताप था।
बन गये आप प्रज्ञा पतित पावनी,
और कलुष कालिमा, छुटने सी लगी॥

लहलहाने लगी मानवी चेतना,
छलछलाने लगी, भाव संवेदना।
श्रेष्ठ चिन्तन मनुज में हुआ अंकुरित,
ऋतु बसन्ती मजा लुटने सी लगी॥

युग बसन्ती बहारों का आ गया,
रंग वैचारिक क्रांति का छा गया।
क्रांति के गीत गाने लगी हर दिशा,
सप्त क्रांति लहर सी उठने लगी॥

आज कमर कसकर आए

आज कमर कसकर आए, हम राष्ट्र के निर्माणी।
बहुत हो चुकी और न होने देंगे, हम मनमानी॥

धन के लिए वासनाएँ, भड़काने वालों सुनलो।
दुराचार अपराधों को, उकसाने वालों सुनलो॥
केबिल टी.बी.और सिनेमा, में सुधार अब होगा।
वरना दोनों का सामाजिक, बहिष्कार अब होगा॥
यह विनाशकारी शैली अब, हमें नहीं अपनानी॥

जो किशोर मन को भड़काए, नहीं मनोरंजन है।
जो अपराधों को उकसाए, नहीं मनोरंजन है॥
लुट-पाट हिंसा हत्याएँ, इसीलिए होती है।
दुराचार की घृणित क्रियाएँ, इसीलिए होती है॥
यही महामारी समाज की, जड़ से हमें मिटानी॥

घर-घर जो अश्लील चित्र है, उसे जलायेंगे हम।
बच्चों को भड़कीले वस्त्र, नहीं पहनायेंगे हम॥
बुकस्टाल पर जहरीला, साहित्य न बिकने देंगे।
मानवीय मूल्यों के आगे, इन्हें न टिकने देंगे॥
कहीं न रहने देंगे कोई, कुत्सित कथा कहानी॥

पत्र-पत्रिकाओं में फिर प्रेरक, गाथाएँ होगी।
अपराधों के लिए प्रमुखता, की न प्रथाएँ होगी॥
सहज विधेयात्मक होगी फिर, दृष्टि कलाकारों की।
उन्हें न होगी चिन्ता केवल, धन या बाजारों की॥
माँ की खोयी हुई प्रतिष्ठा, हो उन्हें बढ़ानी॥

फिल्में नैतिक मूल्यों को, उकसाने वाली होंगी।
कविताएँ नारी का मान, बढ़ाने वाले होंगी॥
कहीं न होंगे मादक धुन पर, नृत्य सिहरने वाले।
मानव चिन्तन में धीमा-धीमा, विष भरने वाले॥
पुनः प्रतिष्ठापित करनी है, गरिमा वही पुरानी॥

आज करें साकार कल्पना

आज करें साकार कल्पना, नवयुग के निर्माण की।
आओ गरिमा प्रकट करें हम, धरती के भगवान की॥

मिटी गरीबी नहीं किसी की, आज तलक तो भीख से।
हम अपना दारिद्र दूर, करना सीखें श्रम सीख से॥
हाथ पसारें क्यों हम अपने, किसी देव के सामने।
गढ़ें, कहानी आओ अपनी, बाहों के अनुदान की॥

ऋद्धि, सिद्धियाँ भरी पड़ी हैं, विश्वासों की बाहों में।
मिलती है हर एक सम्पदा, संकल्पों की राह में॥
हर स्वर्गिक वैभव अर्पित, हो जाता है पुरुषार्थ को।
बढ़कर मंजिल अगवानी, करती है मनुज के आँगन की॥

श्रम के कल्पवृक्ष हम रोपे, हर अभाव के आँगन में।
साहस के हम सुमन खिलायें, जन मन के नन्दन वन में॥
नवयुग का निर्माण करें हम, अपनी बाहों के बल पर।
स्वर्ग स्वयं बन सकती है, फिर यह दुनियाँ इन्सान की॥

आपकी चेतना में सदा

आपकी चेतना में सदा रम सकें,
अंग अवयव हमें वह बना दीजिए।
आखिरी श्वाँस तक हम सदा जल सकें,
दीप ऐसा हृदय में जला दीजिए॥

आपकी है ऊँचाई हिमालय शिखर,
आपकी लेखनी है सजलता प्रखर।
जमाने की धारा सहज मोड़ दी,
ज्ञान गंगा जो बहती है अविरल लहर॥
आपके सद्विचारों को पहुँचा सकें,
वेदवाहक भगीरथ बना दीजिए॥

आपकी वह तपस्या प्रखर तेजमय,
सूर्य ऊष्मा को जिससे चुनौति मिली।
स्नेह ऐसा बहा प्यार की धार बन,
प्यार नवनीत को भी चुनौति मिली॥
आपकी उस प्रखरता के वाहक बनें,
उस तपस्या में हिस्सा दिला दीजिए॥

यज्ञमय जिन्दगी को बनाया स्वयं,
लोकहित में सभी सम्पदा होम दी।
वेदना से पुकारा माँ गायत्री को,
मातु की राह को आपने मोड़ दी॥
यज्ञमय जिन्दगी हम सहज जी सकें,
मातु के भक्त हमको बना दीजिए॥

आज गंगा दशहरा का पावन दिवस,
पूज्यवर याद तुमको हैं करते सदा।
प्राण अर्पित करेंगे तुम्हारे लिए,
ध्यान हर क्षण तुम्हारा करेंगे सदा॥
बाँसुरी बन सकें आपके हाथ में,
होंठ से हमको गुरुवर लगा लीजिए॥

आओ मिलकर भारत को

आओ मिलकर भारत को, हम सुन्दर देश बनाएँ।
गाँधी, नेहरू, लाल बहादुर, जैसे फूल खिलाएँ॥

कौन है हिन्दू कौन है मुस्लिम, कौन है सिक्ख ईसाई।
सब हैं भारत माँ के बेटे, सब हैं भाई-भाई॥
आओ मिलकर नील गगन में, गीत खुशी के गाएँ॥

सपने हो साकार सभी के, भारत माँ हो राजी।
चैन शांति मिले सभी को, पण्डित हो या काजी॥
खुशहाली लहराये धरा पर, ऐसा बाग सजाएँ॥

अपने वतन के खातिर हम तो, अपना खून बहाएँ।
अमर सदा के लिए वीर ओ, दुनियाँ में हो जाएँ॥
आज वतन के खातिर हम भी, अपना खून बहाएँ॥

आत्म दीपक यह प्रभो!

आत्म दीपक यह प्रभो! तुमने जलाया जल रहा है।
कर्म का जो पथ दिखाया प्राण उस पर चल रहा है॥

पूज्यवर! तुमने कहा था, अंश अपना दे रहा हूँ।
कष्ट में घबरा न जाना, पक्षिणी सा से रहा हूँ॥
साथ हो हरदम वही विश्वास अब तक पल रहा है॥

हम जहाँ जाते वहीं जयघोष करते सुदृढ़ मन से।
त्याग दो दुष्वृत्तियाँ साथी! रहो सुख औ अमन से॥
भौतिकी का रूप आकर्षण सभी को छल रहा है॥

है जहाँ ऐसा अन्धेरा, हम वहीं रवि बन गये हैं।
बाँटने जीवन स्वयं संजीवनी बन घन गये हैं॥
मेट देंगे वह कलुष, विषवृक्ष, बन जो फल रहा है॥

है सक्रिय संजीवनी जो हमे दीक्षा में पिलायी।
जल रही है ज्योति जो इस प्राण में तुमने जलायी॥
लालिमा दिखने लगी है तमस् निशि का ढल रहा है॥

मार्ग जो तुमने बताया हम सतत् चलते रहेंगे।
दी जगह अपने निलय में, तो सदा पलते रहेंगे॥
तेल क्या, बाती तलक जल जाय, हृदय मचल रहा है॥

आप ही माँ धड़कन हैं

आप ही माँ धड़कन हैं, आप ही माँ त्राण हैं।
आप ही माता हमारी, हम सभी सन्तान हैं॥

मारगों में दौड़ता जो, आप ही का रक्त है।
आपका स्वर मुखर होता, श्वांस में हर वक्त है॥
आपके स्नेहिल स्वरों में, सुन रहे हम तान है॥

आपका आँचल सुखद,लगता अधिक माँ स्वर्ग से।
आपकी गोदी हमें प्रिय, है अधिक अपवर्ग से॥
भाव संवेदन जगाते, आप ही के गान है॥

आपका संस्पर्श जैसे, छू लिया हो फूल ने।
आपका बाहें सहारा, ज्यों दिया दो कूल ने॥
आपकी बाहें हमें तो, अभय का वरदान है॥

माँ बताओ आपको फिर, छोड़कर जायें कहाँ।
और ऐसा स्नेह संवेदित, हृदय पावे कहाँ॥
क्या पता हमको कहीं भी, और क्या भगवान है॥

वक्त आने पर लजायेंगे, नहीं माँ दूध को।
आप पायेंगी सदा सद्कर्म रत निज पूत को॥
आप पर सब हों समर्पित, सब यही अरमान है॥

इस विराट जीवन पथ

इस विराट जीवन पथ को मत, निज लघुता से तोलो।
पाना है यदि लक्ष्य पथिक! तो पंख हृदय के खोलो॥

इतने आकर्षण! मन उनकी, ओर दौड़ सकता है।
इतनी भ्रान्ति! सगा भी तेरा, साथ छोड़ सकता है॥
इतनी धूल भरी आँधी में, देता कुछ न दिखायी।
फिर क्यों इस मेले में तूने, अंधी दौड़ लगायी॥
मन जीवन के अमृत कलश में, तृष्णा के विष घोलो॥

साँसों का सिलसिला अन्त तक, साथ न चलने वाला।
खड़ा मिलेगा कुछ ही दूरी पर, वह विषधर काला॥
जिसके सर्पदंश से अब तक, कोई नहीं बचा है।
अविनाशी ने ही विनाश का, शाश्वत सत्य रचा है॥
साँसे साथ छोड़ दें इससे, पहले ही मन धोलो॥

आज नहीं कल की हलचल में, जीवन चला न जाये।
ऐसा कहीं न हो तू रोये, हाथ मले पछताये॥
साँस रोक क्षण भर, अथाह अम्बर में दृष्टि लगा तू।
कहीं काल के क्रूर हाथ में, जाये नहीं ठगा तू॥
विभुता को बाँधे बैठे वह, मन के बन्धन खोलो॥

रंग ढंग तो क्या? न यहाँ के अँग सँग कुछ अपने।
देख रहा फिर भी आँखे, मूँदे मायावी सपने॥
हर अगला पग अंधकार की, ओर बढ़ा जाता है।
जीवन का हर कर्म काल का, कौर बना जाता है॥
जगा आत्म विश्वास! ज्योति पथ पर एकाकी हो लो॥

इतने अमूल्य मानव

इतने अमूल्य मानव जीवन को, नाच नचायेगा क्या क्या॥

कुल चार दिनों का जीवन था, दो काट चुके दो कटने हैं।
दो दिन के बाकी जीवन में, संसार दिखायेगा क्या क्या॥

खुद जान बुझकर ही जिसने, काटों में पैर बढ़ाया हो।
उसको काटों से बचने की, तरकीब बतायेगा क्या क्या॥

अनुमान लगाने बैठूँ तो, सचमुच सिर चकरा जायेगा।
मैंने थोड़े से जीवन में, खोया क्या क्या पाया क्या क्या॥

सब भले बुरे की परिभाषा, ही बदल जाएगी क्षण भर में।
यदि तुम्हें बताने बैठूँ मैं, देख है भला बुरा क्या क्या॥

हर चीज मुझे जब हासिल थी, मिलता था मगर एक तू ही नहीं।
क्या तुझको बताए तेरे बिना, इस दिल का तमाशा था क्या क्या॥

मैं तो पहचान नहीं पाया, तू ही जाने तेरी माया।
जीवन के इन व्यापारों में, मेरा क्या क्या तेरा क्या क्या॥

इस आँवलखेड़ा की रज को

इस आँवलखेड़ा की रज को, सबका बारम्बार प्रणाम।
जन्मे जहाँ जगत् उद्धारक, युग सर्जक गुरुवर श्रीराम॥
धन्य वायु औ नीर यहाँ का, जिसको पी वे बड़े हुए।
धन्य धूल यह जिसमें, घुटनों-घुटनों चलकर खड़े हुए॥
धन्य वृक्ष वे जिनके नीचे, सहज किया होगा आराम॥

यहीं कहीं तो गूँजी होगी, 'ताई जी' की स्नेह पुकार।
खेल चुके बेटा! अब आओ, देखो भोजन है तैयार॥
समय-समय पर खेलो जीभर, पुनः सम्भालो अपने काम॥

इस गृह के दीपक को सूरज, बना दिया निज तप बल से।
यहीं पढ़े क,ख,ग जो, लेखन में हैं मुक्ताहल से॥
यहीं हुई प्रारम्भ साधना, वर्षों चली सुबह और शाम॥

फूल यहाँ का बीज बन गया, फैल गया सारे जग बीच।
करो नमन उस पावन जल को, जिसने उसे बढ़ाया सींच॥
ब्रह्मकमल बन गया फूल वह, महकाया संसार तमाम॥

मानव क्या यह मानवता का, उद्धारक बन कर आया।
पूज्य हुई यह भूमि यहाँ का, पुत्र मसीहा कहलाया॥
काया छोड़ गये वे लेकिन, रूके न उनके कोई काम॥

महाशक्ति हुई जीवन संगिनी, मातु भगवती पावन नाम।
इस कुल की कुल वधु कहायीं,यहीं सम्भाला अपना धाम॥
जगजननी कहलायीं वे ही, करता गर्व समूचा ग्राम॥

महायज्ञ हो रहा यहाँ की, शक्ति स्वर्ग तक जाएगी।
और वहाँ के अनुदानों को, खींच यहाँ तक लाएगी॥
दुनियाँ को दे रहा शक्ति यह, दिव्य पुरूष का पावन धाम॥

इतना प्यार करेगा कौन

इतना प्यार करेगा कौन, जितना माँ करती है।
बेटा जब परदेश को जाये, माँ रोया करती है॥

बेटा जब परदेश को जाये, सब कहे कुछ लेकर आये।
माँ कहे कुछ लाये न लाये, लाल मेरा वापस आ जाये।
इनता धीर धरेगा कौन-३ जितना माँ धरती है॥

बेटा जब विपदा में आये, सब कहे विपदा टल जाये।
माँ कहे मेरी जान ही जाये, लाल मेरे पर आँच न आये।
इतना कष्ट सहेगा कौन-३ जितना माँ सहती है॥

माँ की ममता बड़ी बताई, वेद पुराणों में भी गाई।
जिसने माँ की रहमत पाई, उसके कमी कोई न आई।
इतना त्याग करेगा कौन-३ जितना माँ करती है॥

बेटा जब दानव बन जाये, माँ का हिय चिर दिखलाये।
माँ का दिल फिर भी ये चाहे, लाल मेरे पर आँच न आये।
इतना माफ करेगा कौन, जितना माँ करती है॥

इन्सान से यदि मिल पाये

इन्सान से यदि मिल पाये नहीं, भगवान से क्या मिल पायेंगे।
अपना यह लोक बना न सके, तो क्या परलोक बनायेंगे॥

जगदीश्वर का पूजन करते, इत जग को शोषण करते हैं।
विश्वंभर का सुमिरन करते, पर विश्व की सम्पत्ति हरते हैं॥
श्रीराम के भक्त कहाते हैं, रावण नीति अपनाते हैं।
परधन परनारी तकने में, निज मन को रोक न पाते हैं॥
मन को यदि निर्मल कर न सके, क्यों मन मोहन मिल जायेंगे॥

मिलते भगवान सुकर्मों से, हमने कुकर्म अपनाये हैं।
सद्भावों में निवास प्रभु का, हमने कुभाव पनपाये हैं॥
देखा कुभाव दुर्योधन का, छप्पन भोजन बिसराये हैं।
सद्भाव भरे विदुरानी के घर, साग सलौने खाये हैं॥
यदि भाव शुद्ध शबरी से हैं, प्रभु स्वयं खोजते आयेंगे॥

उस परमपिता परमेश्वर के, सुत हैं यहाँ प्राणी मात्र सभी।
सुत को दुःख देने वाले से, होते प्रसन्न नहीं पिता कभी॥
प्रभु की प्यारी जग बगिया को, जो निशिदिन सींचा करते हैं।
ऐसे ही प्रेमी भक्तों पर, प्रभु प्रेम उलीचा करते हैं॥
परहित में जुटे जटायू ज्यों, प्रभु स्वयं गोद बैठायेंगे॥

भगवान से यदि मिलना चाहो, उनके विधान से प्यार करो।
कर दूर वासना तृष्णा को, सद्भावों का विस्तार करो॥
श्रीराम काज में जुट जाओ, होगें प्रसन्न भगवान तभी।
आतम संतोष मिलेगा तब, मिल जाय दैवी अनुदान सभी॥
करें प्रेमामृत को पान जभी, हरि उनको हृदय बसायेंगे॥

इस तरह से अंधेरा

इस तरह से अंधेरा घिरा है, अब तो दीपक जलाना पड़ेगा।
काम चलना न खामोश रहकर, राग दीपक सुनाना पड़ेगा॥

देखिये तो अंधेरे की हिम्मत, झोपड़ी से महल तक खड़ा है।
पैर तल में जमाते-जमाते, देखलो चोटियों तक चढ़ा है॥
हर जगह रोशनी को पहुंच कर, मोर्चे अब जमाना पड़ेगा॥

हर गलत काम का सिर उठाना, बहुत मुमकिन अंधेरे गदर में।
गलतियों के लिए रास्ता वह, खोलता जंगलों में शहर में॥
इसलिए रोशनी का सिपाही, हर जगह ही बिठाना पड़ेगा॥

देखिए आज अज्ञान का तम, क्या कहां पर नहीं कर रहा है।
व्यक्ति,परिवार पर,राष्ट्र पर वह, दांव पर दांव जो धर रहा है॥
धर्म संस्कृति,कला हर विधा को, आज इससे बचाना पड़ेगा॥

हैं अभावों ग्रसित इस समय हम, और अज्ञान भी छा रहा है।
टूटती जा रही आस्थाएं, और विश्वास बल खा रहा है॥
दीप यज्ञों का युग धर्म अब तो, भावनामय बनाना पड़ेगा॥

प्राण के दीपकों को जलाकर, थाल में दीपकों को सजायें।
भीतरी,बाहरी तम हटाकर, रोशनी के सिपाही बिठायें॥
दीपकों ज्ञान की भी मशालें, आज तुमको उठाना पड़ेगा॥

ईश के सन्तान सोते न रहो

ईश के सन्तान सोते न रहो, समय यह दुबारा कहाँ आये।
ओऽऽऽ युग के सृजेता गुरु, युग वानरों को जगाओ॥

गुरु की गरिमा को पहचानों, भ्रम के बन्धन तोड़ो।
अगुंलिमाल, अम्बपाली, बन बुद्ध से नाता जोड़ो॥
शिवा समर्थ से जागे, नरेन्द्र गुरु से जागे।
अनाचार को मिटाने, परशुराम आते आगे॥
ओऽऽऽ वानरों से सेतु बाधें, ग्वालों से गोवर्धन उठवाऐ॥

हरने को अज्ञान हमारी, ज्ञान की दीप जलाई।
प्रज्ञायुग अवतरण कराने, नई योजना बनाई॥
लिया ताप का सहारा, युग की बदलेंगे धारा।
लाखों कष्ट जो उठा के, मैले हीरों को निखारा॥
सबके लिए वो तपे ओऽऽऽ भटके को राह दिखाऐ॥

महानाश के लिए मनुज नित, लगे हैं ब्यूह रचाने।
रावण, कंस और कौरव दल, चले हैं ध्वजा फहराने॥
राम, हनुमान आओ कृष्ण, अर्जुन कहाँ हो।
महाकाल ने पुकारा दौड़े, आओ तुम कहाँ हो॥
ओ संस्कृति की सीता रहे ओऽऽऽ धर्म की ध्वजा फहराऐ॥

इतना चिन्तन किया तुम्हारा

इतना चिन्तन किया तुम्हारा, तुमसे इतना प्यार हो गया।
तजकर अपना रूप तुम्हारा, मैं पावन आकार हो गया॥

एक एक मिल दो होते हैं, यह तो है इतिहास पुराना।
एक एक मिल एक हो गया, गणित भला यह किसने जाना॥
हम तुम मिलकर एक हो गये, यह अद्‍भूत व्यापार हो गया॥

जब तक दूर रहे तुम तब तक, द्वैत भाव ने मन को घेरा।
ज्योति तुम्हारी पड़ी दिखाई, अजब अव्दैत ने किया बसेरा॥
अब तक निराकार था जो, वह नयनों में साकार हो गया॥

भव-बन्धन ने मुझको बाँधा, माया ने प्रतिपल भरमाया।
इस संस्कृति को जानूँ कैसे, जब कि स्वयं को जान न पाया॥
अपने को पहचान सका तब, जब मन का अधिकार हो गया॥

सभी कलाओं में संगीत कला का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। मानवीय हृदय को तरंगित करने में इसके जादुई प्रभाव से सभी परिचित हैं। उच्चभावनाओं के साथ जोड़ने पर इसे मनोरंजन के साथ लोक मानस के परिष्कार के रूप में प्रभावी ढ़ग से प्रस्तुत किया जा सकता है।

-(अखण्ड ज्योति अक्टूबर-2000, पृष्ठ-13)

इस देश को न हिन्दू

इस देश को न हिन्दू न मुसलमान चाहिए।
हर मजहब जिसको प्यारा, वो इन्सान चाहिए॥
ये जाँत–पाँत के गहने, हम ऐसे भी न पहने।
एक दूजे से टकराकर, लगे खून की धारा बहने॥
हर आदमी को एकता का ज्ञान चाहिए॥
ये खान पान पहनावा, यह तो है सिर्फ दिखावा।
हर मन है प्यार का प्यासा, यह सच्चाई का दावा॥
हर मन को सच्चे प्यार की पहचान चाहिए॥
गीता ने कर्म सिखाया, नानक ने कहा अहिंसा।
जीवों से प्रेम करो तुम, कहते थे हज़रत ईसा॥
कुरान ने कहा सच्चा ईमान चाहिए॥

इस धरती के फूलों में

इस धरती के फूलों में, जो सबसे फूल महान।
नाम है हिन्दुस्तान उसी का, नाम है हिन्दुस्तान॥
इसका मन इतना पावन है, जितनी पावन गंगा।
फहर फहर फहराता, इसकी शान तिरंगा॥
रहें गूँजते हर पग पग पर, मातृभूमि के गान॥
फैली मन भावन हरियाली, शस्यश्यामला माटी।
धरती का जो स्वर्ग कहाती, है कश्मीर घाटी॥
धवल हिमालय सुना रहा है, जग को गीता ज्ञान॥
जन जन को सिखलाया इनने, जन्मभूमि पर मरना।
शांति, अहिंसा के खातिर, निज जीवन अर्पित करना॥
दोहराता नित बच्चा बच्चा, जन मन गण के गान॥

इसी में मानव का कल्याण

(तर्ज-इतने रत्न दिये हैं कैसे)

इसी में मानव का कल्याण।
हम सब मिलकर रहें, एकता की गरिमा लें जान।
सभी मनुज हैं भाई-भाई, यह सब धर्मों की सच्चाई।
आदि पिता भगवान एक है, पंच तत्व निर्माण एक है॥
लाल सभी का रक्त, यह बात लें अब भी पहचान॥
सुख में सब हो जाते विह्वल, दर्द सभी को करता घायल।
प्रेम तृप्ति है सभी जनों की, प्रेम दवा है दुःखी मनों की॥
एक दूजे का दर्द एक हो, एक प्रेम का गान॥
जब-जब यह एकता भुलाई, तब-तब हमने पीड़ा पाई।
है इसका इतिहास साक्षी, मनुज बन गया मानव भक्षी॥
रहें एक घर में नानक, ईसा व राम रहमान॥

इस शराब ने किये हजारो

इस शराब ने किये हजारों क्या लाखों ही घर बरबाद।
चलो बन्धु इससे करवाएँ, हम परिवारों को आजाद॥
पहले तो समझाएँ ही यह, सुरापान विष के सम है।
धन व बुद्धि का नाश करे, सुख शांति स्वतः होती कम है।
नहीं माने तो बंद दुकाने, करें छोड़ दो पूर्ण जिहाद॥
उन बहनों का कष्ट मिटे, बच्चों का बनें भविष्य महान।
पालन-पोषण में रूचि लें, कर्त्तव्यों का जग जाए ज्ञान।
खुद ही बीमारी से भी बचें, जहर को न पीये रखें याद॥
अपना है अभियान नशा, कैसा भी नही करें कोई।
सबकी प्रज्ञा जागे, मेधा भी नहीं रहे सोई।
घर-घर अलख जगाना है, लाएँ न इसमें तनिक प्रमाद॥

इस योग्य हम कहाँ हैं

इस योग्य हम कहाँ हैं, गुरुवर तुम्हें रिझायें।
फिर भी मना रहे हैं, शायद तु मान जाये॥

जब से जनम लिया है, विषयों ने हमको घेरा।
छल और कपट ने डाला, इस भोले मन पे डेरा॥
सद्बुद्धि को अहं ने, हरदम रखा दबाये॥

निश्चय ही हम पतित हैं, लोभी हैं लालची हैं
तेरा ध्यान जब लगायें, माया पुकारती है॥
सुख भोगने की इच्छा, कभी तृप्त हो न पाये॥

जग में जहाँ भी जायें, बस एक ही चलन है।
एक-दूसरे के सुख में, खुद को बड़ी जलन है॥
कर्मों का लेखा जोखा, कोई समझ न पाये॥

जब कुछ न कर सके तो, तेरी शरण में आये।
अपराध मानते हैं, झेलते सब सजायें॥
अब ज्ञान हम को दे दो, कुछ और हम ना चाहें॥

"गुणात् प्रवर्तते ज्ञानं दोषं चैव निश्च्यते"

अर्थात्-गुणों से ज्ञान आगे बढ़ता है और दोषों (अर्थात् अवगुणों से) कम होता है। -(नाट्यशास्त्र)

इन्सान कहाने वालों क्यों

इन्सान कहाने वालों क्यों, शैतान से रिश्ता जोड़ लिया।
विज्ञान बढ़ाया ठीक किया, ईमान भला क्यों छोड़ दिया॥

ऊँचे पद यश धन के खातिर, सब दांव लगाते जीवन भर।
भूले मानवता के रस्ते, सब स्वार्थ साधते जी भरकर॥
नेकी भूली तो बढ़ी-बढ़ी, हालात हुए बद से बदत्तर।
सब मिला मगर ना मिली शान्ति, जीवन ढोते हैं रो-रोकर॥
मन में नेकी की फसल उगे, वह हुनर अरे क्यों छोड़ दिया॥

मंदिर,मस्जिद हर जगह बने, पूजा सिज़दा सब करते हैं।
कहलाते हैं बन्दे उसके, लेकिन मनमानी करते हैं॥
बातों से भले सभी बनते हैं, कर्मों में नहीं उतरते हैं।
उससे ही राह माँगते हैं, लेकिन चलने से डरते हैं॥
जिसके बन्दे कहलाते हैं, क्यों मार्ग उसी का छोड़ दिया॥

क्यों समझदार इन्सान अरे, कुविचार मनों में भरता है।
कुविचार हजारों दुःख रचते, उनमें नर खपता रहता है॥
आँखो वाला होकर भी क्यों अंधों सी हरकत करता है।
कर अहित दूसरों का देखो, निजहित की आशा करता है॥
सबने छल करना सीख लिया, क्यों राह दिखाना छोड़ दिया॥

परिवर्तन का युग आया है, अपना दुर्भाग्य मिटाने रे॥
युगदेव बुलाता हे सुन लो, सोया सौभाग्य जगालो रे॥
दाता देने को आतुर है, अपनी झोली फैला लो रे।
यदि उसके ढंग से खर्च करो तो, चाहे जितना पालो रे॥
हो गये धन्य उनके जीवन, जिनने यह रिश्ता जोड़ लिया॥

इक्कीसवीं सदी है शुभ

इक्कीसवीं सदी! है, शुभ आगमन तुम्हारा।
युग-साधना, प्रखर से, शुभ अवतरण तुम्हारा॥

भू-पर तुम्हें उतारा, युगऋषि की कल्पना ने।
तुम को सतत सँवारा, सतयुग की कामना ने॥
'उज्ज्वल-भविष्य' लाया, गतिमय चरण तुम्हारा॥

आया समय सुहाना, देवत्व जगाने का।
आलस्य त्यागने का, असुरत्व त्यागने का॥
सद्भावना से पुलकित, अन्तःकरण तुम्हारा॥

सद्बुद्धि का सुचिन्तन, चन्दन महक रहा है।
उत्कृष्ट-आचरण को, जन-मन ललक रहा है॥
'आदर्श' कर रहे हैं, अब अनुकरण तुम्हारा॥

सहकार स्नेह सेवा, सद्वृत्तियाँ उभरतीं।
मानव में 'देव' भू-पर, है 'स्वर्ग' को सँवरती॥
'वसुधैव कुटुम्बकम्' है, सद्वृत वरण तुम्हारा॥

गहराई में उतरो तुम्हें हर पदार्थ के अन्तरंग में एक दिव्य संगीत उभरता दिखाई देगा। -कार्लाईल

उन चरणो को पूजो

उन चरणों को पूजो जिनने, राहें नयी बनाई है।

चरण जो कि ठोकर खाकर भी हर दम आगे बढ़ते हैं।
चरण जो कि घायल होकर भी, गिरि शिखरों पर चढ़ते हैं।
उन चरणो को पूजो जिनने, अनगिन ठोकर खाई हैं॥

चरण जो कि राहों में भटके, जो दुनिया में घूमें हैं।
चरण जो कि धूली में लिपटे, जिनने कांटे चूमें हैं।
उन चरणो को पूजो जिनकी, गहरी फटी बिवाई हैं॥

चरण कि जिनने सघन बनों में, अपनी राह बनायी है।
चरण कि जिनने पत्थर में भी, सोती पीर जगाई है।
उन चरणो को पूजो जिनने, मंजिल नई दिखायी है॥

चरण अभय के चिन्ह बनाते, जो कि हवा में उड़ते हैं।
चरण जो कि बिन सीढ़ी के ही,आसमान पर चढ़ते हैं।
उन चरणो को पूजो जिनने, नभ तक राह बनाई है॥

हर व्यक्ति को संगीत का अभ्यास होना चाहिए भले ही उसका कण्ठ कितना ही कठोर या रूखा क्यों न हो।

वाङ्मय-१९ पृ. ६. २७

उठो जवान देश के

उठो जवान देश के वसुन्धरा पुकारती।
देश है पुकारता पुकारती माँ भारती॥

रगों में तेरे बह रहा है खून राम श्याम का।
जगत गुरु गोविन्द और राजकों की शान का॥
तू चल पड़ा तो चल पड़ेगी साथ तेरे भारती॥

तोड़कर धरा को फोड़ आसमां की कालिमा।
जगादो सुप्रभात तू फैला दे अपनी लालिमा॥
तेरी शुभ्र कीर्ति विश्व संकटों को तारती॥

शत्रु दनदना रहा चहुँ दिशा में देश की।
पता बता रही हमें किरण किरण दिनेश की॥
हो चक्रवर्ती विश्वजय, मौत को निहारती॥

उठ जाग मुसाफिर

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो खोवत है॥

उठ नींद से अँखियाँ खोल जरा, और अपने प्रभु का ध्यान लगा।
यह प्रीति करने की रीति नहीं, प्रभु जागत है तू सोवत है॥

जो कल करना सो आज करले, जो आज करना है सो अब करले।
जब चिड़ियों ने चुग खेत, फिर पछताये क्या होवत है॥

नादान भुगत करनी अपनी, रे पापी पाप में चैन कहाँ।
जब पाप की गठरी शीश धरी, तब शीश पकड़ क्यों रोवत है॥

उमड़ी है विश्व भर में

उमड़ी है विश्व भर में,विष की विशाल धारा।
ऐसे में है मनुज को, गुरुदेव का सहारा॥
ऋषि युग्म का सहारा॥

लहरें प्रबल प्रलय सी, हर पल डरा रही है।
नीवें हरेक भवन की, अब चरमरा रही है॥
कुछ सर्वनाश जैसा, हर ओर है नजारा॥

तुम ईश चेतना थे, जन्में शरीर बनकर।
गुरु रामदास बनकर, जन्में कबीर बनकर॥
फिर रामकृष्ण बनकर, तुमने जगत संवारा॥

धरती गगन तुम्हारी, दुहरा रहे कहानी।
तन से न कह सके जो, कहती परोक्ष वाणी॥
हर मोड़ पर तुम्हारा, मिलता हमें इशारा॥

गुरु की अजस्र वाणी, हमने सदा सुनी है।
उनकी डगर इसी से, हमने स्वयं चुनी है॥
बढ़ते सतत् रहेंगे, संकल्प है हमारा॥

हो ताप शीत वर्षा, प्रण से न हम टलेंगे।
संजीवनी सुधा को, हम बाँटते रहेंगे॥
दुष्वृत्तियाँ न जिससे, पनपे यहाँ दुबारा॥

उठो तरूणाई अब जौहर

उठो तरूणाई! अब जौहर दिखाने का समय है।
राष्ट्र की अस्मिता अब तो बचाने का समय है॥

जवानी जगी ऋषियों की, उछाला आत्मबल को।
सँवारा तप, तितीक्षा, त्याग, के प्रेरक क्षणों को॥
ऋचाएँ हो गई मुखरित जवानी के स्वरों में।
जगत्गुरु बन गया भारत जगत् के चिन्तकों में॥
सुलभ युगदेव का चिन्तन बनाने का समय है॥

तरूण थे राम-लक्ष्मण, यज्ञ की रक्षा करी थी।
जवानी पाप से अन्याय से, तनकर लड़ी थी॥
जवानी की उमंगो ने, महाभारत रचा था।
रगों में ज्वार अर्जुन की, जवानी का उठा था॥
कुकर्मी कौरवों को फिर, छकाने का समय है॥

जवानी! शील, संयम, शौर्य की ही साधना है।
जवानी! दुर्गुणों से दुर्व्यसन से जूझना है॥
जवानी को कुरीति, रूढ़ियों से मुक्ति पानी।
पतन से पराभव से राष्ट्र की संस्कृति बचानी॥
जवानी! सप्त क्रान्ति में लगाने का समय है॥

जवानी तीर्थकंर बुद्ध बनकर के उभरती।
जवानी शिवा, राणा, मौर्य का निर्माण करती॥
भगतसिंह, वीर सावरकर, सुभाष, आजाद, उभरते।
कि जिनके तेवरों को देख, थे अंग्रेज डरते॥
जवानी! बस वही तेवर दिखाने का समय है॥

राष्ट्र अन्याय से आतंक से अब तो त्रसित है।
और अपसंस्कृति से राष्ट्र जनमानस ग्रसित है॥
इस समय मौन रहना, राष्ट्रीय अपराध होगा।
और इतिहास पर तरूणाई के यह दाग होगा॥
इरादे ध्वंस के अब तो मिटाने का समय है॥

उमा रमा ब्रह्माणी तू ही

उमा, रमा, ब्रह्माणी तू ही, भारत भाग्य विधाता है।
त्यागमयी भारत की नारी, तू धरती की माता है॥

तूने ही अवतार दिये, तूने ही पुरुष महान दिये।
तुलसी, सूर, कबीर से तूने, अजर-अमर वरदान दिये॥
जो तेरा सम्मान करे ,वो पुरुष महान कहाता है॥

बरसाने की तू ही राधिका, जनक दुलारी सीता तू।
राजस्थान की तू है मीरा, गिरधर की परिणीता तू॥
तू गीता, तू वेद ऋचा, तू ही गायत्री माता है॥

अलख निरंजन की माया, शक्ति अखिल ब्रह्माण्ड की।
प्रखर किरण तू ही सूरज की, शीतल आभा चाँद की॥
संकट में संकटमोचनी, तू अक्षय सुखदाता है॥

अनुसुइया बन तू त्रिदेव को, अपना पुत्र बनाती है।
अरुन्धती बन तू तप बल से, सप्तर्षि पद पाती है॥
जो भी हैं महान नर जग के, तू उन सबकी माता है॥

उठ पड़े हाथ लेकर मशाल

उठ पड़े हाथ लेकर मशाल, आवाज दे रहा महाकाल।
जय महाकाल, जय-जय महाकाल॥ 7 बार

निद्रा छोड़ो, तन्द्रा तोड़ो, बढ़ते मद-नद की गति मोड़ो।
उच्छृंखलताओं के प्रवाह, समता से सन्मति से जोड़ो॥
फोड़ो दुर्गति के घट कराल, आवाज दे रहा महाकाल॥

तुम यज्ञवीर, तुम कर्मवीर, मत हो हताश, मत हो अधीर।
तुम महाबली, तुम सिंह सुवन, रख दो कलुषों के वक्ष चीर॥
क्यों जीते हो बनकर श्रृंगाल ? आवाज दे रहा महाकाल॥

संस्कार हीन, संसार दीन, अपने में ही जो रहा लीन।
अब स्वयं खोजना चाह रहा, सुख और शान्ति के पथ नवीन॥
प्रज्ज्वलित करो चेतना ज्वाल, आवाज दे रहा महाकाल॥

प्राणों में ले संकल्प शक्ति, मानवता के प्रति अचल भक्ति।
तुम चढ़ो ध्येय के शिखरों पर, इन्द्रिय सुख से लेकर विरक्ति॥
भेदो कुण्ठाओं के कपाल, आवाज दे रहा महाकाल॥

भटकाव विश्व का और न हो, दुःख का कोई भी ठौर न हो।
दुश्चिन्तन अथवा दुराचार, सुविधाओं का सिरमौर न हो॥
बेधो छल-बल के विकट व्याल, आवाज दे रहा महाकाल॥

एक दीपक से तमस हटाओ

एक दीपक से तमस हटाओ रे॥
घर-घर जाकर दीप जलाओ रे॥

आत्मबोध जो कर ना पाये।
अब तक जो लिख पढ़ ना पाये॥
इनके दिल में शिक्षा की एक ज्योति जलाओ रे॥

नेग दहेज से तोड़ो नाता।
जो सबको बेईमान बनाता॥
इससे बचने की वर-वधुओं शपथ उठाओ रे॥

वायु प्रदूषण से हम मारे।
संकट में है प्राण हमारे॥
हरियाली को फैलाकर यह, जहर गलाओ रे॥

मद्यपान और धुम्रपान से।
तन मन कंकाल होता दोनों से॥
नशा विरोधी आन्दोलन, अभियान चलाओ रे॥

संगीत भारत का उत्पति केन्द्र है। यहाँ के अधिकांश देवी देवता संगीत उपकरणों से सुसज्जित हैं।

(वाङ १९ पृ. ६.२३)

एक बेटी विदा हो रही

एक बेटी विदा हो रही हो कहीं,
उर नयन द्वार से छल-छलाने लगे।
हो रही हो कई बेटियाँ जब विदा,
क्यों न करुणा कि क्रन्दन मचाने लगे॥

मातृ ममता मधुर रस पिलाया तुम्हें,
स्नेह समतामयी ने खिलाया तुम्हें।
लाड़ से प्यार से हो दुलारा गया,
स्नेह शिल्प से हो संवारा गया॥
भावना उर्भिमा ही विदा ले अगर,
क्यों न ममतामयी छटपटाने लगे॥

बेटियाँ दे रही भाव भीनी विदा,
पर रहेगी हृदय में बसी सर्वदा।
है विवशता की तुमको विदा कर रहे,
हैं बिछुड़ते हुए यह नयन झर रहे॥
किस तरह रोक लूँ मैं तुम्हें बेटियों,
जब कि कर्त्तव्य तुमको बुलाने लगे॥

लो सुकोमल हृदय दे रही हूँ तुम्हें,
वक्ष की पीर कुछ कह रही हूँ तुम्हें।
मानवी है द्रवित पीर पहचानना,
और उसके कि हर दर्द को जानना॥
स्नेह संवेदना ले पहुँचना वहाँ,
अश्रुधारा विवशता बहाने लगे॥

तुम बड़ों को सम्मान देना सदा,
बाँटना शील सौजन्य की ही सुधा।
स्नेह संवेदना धैर्य करुणा क्षमा,
हृदय में भरो शील से हरीतिमा॥
त्याग, तप और बलिदान की भावना,
प्रेम पीयूष सबको पिलाने लगे॥

बेटियाँ हैं विवश आज नारी बहुत,
हो रही नारियों की ख्वारी बहुत।
नारियों का तन कैद मन कैद है,
आज आकाश पाताल सा भेद है॥
विश्व की जननियों के लिए आज तुम,
नर्क का द्वार नर ही बनाने लगे॥

सीख दी जो तुम्हें भूल जाना नहीं,
और नारित्व गरिमा घटाना नहीं।
कष्ट में मुस्कराना पड़ेगा तुम्हें,
स्वर्ग घर को बनाना पड़ेगा तुम्हें॥
जागरण गीत गाना पड़ेगा तुम्हें,
हो न ऐसा तुम्हें ही सुलाने लगे॥

"गीतं वाद्यं नर्तनं च त्रयं संगीत मुच्यते।"
अर्थात्- गाना, बजाना और नाचना तीनों को संगीत कहते हैं।

वाङमय १९ पृ. ६.४५

ऐसा जीवन जीयें

ऐसा जीवन जीयें, हमारा जीवन ही पूजा बन जाये।
पूजन की पवित्रता जैसी, जीवन में पावनता आये॥

वाणी में इतनी मिठास हो, शब्द शब्द हो मधु–सा मीठा।
अपने शब्दों के मिठास से, रस छलके हो स्वाद अनूठा॥
जन–मन के विष की ज्वाला को,शांत करे वाणी का अमृत।
वाणी सुधा पिलायें सबको, यह मिठास ही भोग लगायें॥

नित्य भावना प्रभु से जोड़ें, वह क्रम ही सच्ची पूजा है।
सद्विचार जग में फैलायें, पुण्य नहीं इस सम दूजा है॥
जनहित ही सब करे, साधन सौंपे वह सच्चा जन है।
वही भक्ति के, ज्ञान–कर्म के, शुभ संगम में नित्य नहाये॥

आत्म जागरण की विधि द्वारा, हम अपना भगवान जगायें।
धोकर मन के दुर्भावों को, प्रभु को हम स्नान करायें॥
हम अपने दैनिक जीवन में, सदाचार की करें साधना।
सदाचार की दिनचर्या ही, ईश्वर का परिधान कहायें॥

हर व्यक्ति को संगीत का अभ्यास होना चाहिए भले ही उसका कण्ठ कितना ही कठोर या रूखा क्यों न हो।

–वाङ्मय–१९ पृ. ६. २७

एक समिधा जली

एक समिधा जली, मैं हवन हो गया।
आत्म ज्योति जगी, मन सुमन हो गया॥

एक ऐसी तपन प्राण पायें, होम दी तो तरलता मिली।
राग के मंत्र ऐसे उच्चारे, अमृत होकर गरलता मिली॥
एक श्रद्धा जगी, मैं हवन हो गया॥

साँस चन्दन हुई मौन दहकी, गन्ध से भर गई हर दिशा।
ज्योति ऐसी जगी चेतना की, भोर में ढल गई हर निशा॥
एक सूरज उगा, मैं गगन हो गया॥

एक आहुति हुई उम्र सारी, कालिमा बन धुआँ उड़ गई।
मुक्ति सी तृप्ति वातावरण में, हर क्रिया त्याग से जुड गई॥
एक बन्धन हंसा, मैं वरण हो गया॥

पूजात् कोटि गुणं स्त्रोतं, स्त्रोतात्कोटि गुणो जपः।
जपात् कोटि गुणं गानं, गानात्परतरं न हि।।

पूजा से कोटि गुना फल स्त्रोत के पाठ से होता है, स्त्रोत पाठ से कोटि गुना फल जप से, जप से कोटि गुना फल गायन से होता है। गायन से बढ़कर ईश्वर प्राप्ति का साधन दूसरा नहीं।

ऐसी लगन लगायें

ऐसी लगन लगायें, गुरु चरणों में हम ।
रहें दूर कभी न , गुरु चरणों से हम॥

श्रद्धा भक्ति कि ज्योति उर में जलती रहे ।
सद्ज्ञान कि गंगा मन में बहती रहे॥
ऐसे आशीष मांगे पूज्य गुरुवर से हम॥

कर खुद कि सुधार औरों को भी सुधारें।
गुरु संदेश को जन-जन जक पहुँचायें ॥
प्रेरणा गीत गाते चलें गुरुवर के हम ॥

दीन दुखियों को भी विश्वास दिलायें ।
सत्य पथ से भटकते जनों को राह दिखायें ॥
करें लोक सेवा निर्मल भाव से हम ॥

गुरु चरणों में हम बन फूल खिलें ।
दु:ख दर्दों में भी हंसते-हसाते रहें॥
कभी हिम्मत न हारें नव सृजन पथ में हम॥

शबरी केवट गवालों जैसे प्रेम जगायें ॥
जटायु हनुमान अंगद जैसे साहस जुटायें॥
समर्पण भाव जगायें विवेकानन्द से हम ॥

साधक बन कर रहें शक्ति अर्जित करें ।
शक्ति संगठित कर असुर नाश करें ॥
देवत्व उतारें धरती स्वर्ग बनायें हम॥

ओ सविता देवता

ओ सविता देवता! संदेशा मेरा तुम ले जाना।
जहाँ कहीं हो गुरुवर उन तक, सुनो! इसे पहुँचाना॥
कष्ट दिया तुमको कि तुम्हारी ही, सब जगह पहुँच है।
मिले सहारा हमें तुम्हारा, यह हम सबका हक है॥
हम लाखों बच्चों के हित तुम, इतना कष्ट उठाना॥
कह देना अपने बच्चों पर, आप भरोसा रखना।
बचा कार्य हम पूर्ण करेंगे, दृष्टि बनाये रखना॥
रहो कहीं हमको बढ़ने का, साहस देते जाना॥
कह देना दुःख में भी हमने, क्षण भर नहीं गँवाया।
आँसू पीकर भी हर पग पर, अनुशासन दुहराया॥
तन-मन में बन प्राण विचरना, प्रभु यह मत बिसराना॥
लक्ष्य पूर्ति हित साथ तुम्हारा, हम हरदम पायेंगे।
सिसकेगा तो हृदय मगर, यह कहकर समझायेंगे॥
बन विराट् प्रभु सतत् साथ हैं, रे मन मत घबराना॥
तुम केवल मानव कब थे, प्रभु तुम तो थे अवतारी।
युग निर्माण योजना रच दी, नवल सृजन हित न्यारी॥
इसमें मिला सही जीवन, जीने का विशद् खजाना॥
सत्य लोक में तुम्हें मिलेंगे, वे हम सबके प्यारे।
आत्मशक्ति पायेंगे सुनकर, यह संकल्प हमारे॥
लिया बहुत हम सबने, अब है फर्ज निभाना॥

मुक्तक–सविता के द्वारा संदेशा, भेज रहे हैं तुम तक गुरुवर।
यद्यपि पीर हमारी तुमसे, छुपी नहीं है अब तक गुरुवर॥
हमें शक्ति देना हम सह लें, विरह वेदना और न टूटे।
पहुँचाते रहना हर क्षण सह लें, प्रखर प्रेरणा हम तक गुरुवर॥

ओ मानव तेरे जीवन का

ओ मानव तेरे जीवन का, आधार रहेगा कितने दिन।
इस तन में चलती साँसों का, यह तार रहेगा कितने दिन॥

धन माल कमाया भी तूने, संसार बसाया भी तूने।
तू खाली हाथ ही जायेगा, अधिकार रहेगा कितने दिन॥

क्यों ऐंठ ऐंठकर चलता तू, किस मद में फूला फिरता तू।
ये नशा चढ़ा है जो तुझ पर, ये नशा रहेगा कितने दिन॥

मात–पिता या पत्नि हो, पुत्र हो चाहे भाई हो।
अपना कहने वालों का, यह प्यार रहेगा कितने दिन॥

लख चौरासी योनि में तू, भटक–भटक कर आया है।
इस नाशवान दुनियाँ का, आधार रहेगा कितने दिन॥

काल निरंजन की माया, तीनों लोक पसारा है।
उस अकाल पुरूष की छाया से, तू दूर रहेगा कितने दिन॥

सद्गुरु की खोज तू कर प्यारे, निजधाम तुझे ले जायेंगे।
तू बूँद है अमृत सागर की, पर बूँद रहेगा कितने दिन॥

जब बूँद मिलेगी सागर से, तू खुद सागर बन जायेगा।
आसार है यह संसार को, भव पार करेगा तू एक दिन॥

मुक्तक–

संसार के नश्वर सुखों का, तू भोग करेगा कितने दिन।
फिर न मिले अवसर ऐसा, यह मानुष चोला कितने दिन॥
तू अजर अमर अविनाशी है, तू देह भाव में पड़ा हुआ।
ईश्वर अंश है आत्मा, भ्रम फाँस रहेगा कितने दिन॥

ओ ईश्वर के अंश आत्म

ओ ईश्वर के अंश आत्म विश्वास जगाओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

दीन-हीन बन करके तुम क्यों साहस खोते हो।
क्यों आशक्ति, अज्ञान अभावों को ही रोते हो॥
जगा आत्म-विश्वास दीनता दूर भगाओ रे॥

आत्मबोध के बिना, सिंह शावक सियार होता।
आत्मबोध होने पर वानर सिन्धु पार होता॥
आत्मशक्ति के धनी न कायरता दिखलाओ रे॥

नेपोलियन उसी बल पर आल्पस से टकराया।
जिसके बल पर था प्रताप से अकबर घबराया॥
उसके बल पर अपनी बिगड़ी बात बनाओ रे॥

सेनापति के बिना न सेना लड़ने पाती है।
सेनापति का आत्म-समर्पण हार कहाती है॥
गिरा आत्म-बल, जीती बाजी हार न जाओ रे॥

आत्म मनुज अनगिन साधन,बल का अधिकारी है।
बिना आत्म-विश्वास मनुजता किन्तु भिखारी है॥
अरे! आत्मबल की पारसमणि तनिक छुवाओ रे॥

अडिग आत्म-विश्वास, मनुज रूप निखारेगा।
उसके बल पर मनुज धरा पर स्वर्ग उतारेगा॥
इसके बल पर जो भी चाहो कर दिखलाओ रे॥

ओ नारी तू महतारी तू

ओ नारी तू महतारी, तू है करूणा अवतार।
तेरा ही पय पीकर पलता, ये सारा संसार॥

तेरे हृदय हिमालय से माँ, ममता की गंगा बहती।
अनुदानों की पावन यमुना, दान शीलता सी झरती॥
विद्या धर्म शील सेवा की, शक्तियाँ साकार॥

पड़ा मचलता प्यारा बचपन, मेरी गोदी की पलना।
गूँगे को वाणी देती माँ, लूले को फिरना चलना॥
सृष्टी का आधार है तेरा, त्यागमयी व्यवहार॥

कदम कदम पर जीवन पथ में, बिछे हुए है काँटें शूल।
किन्तु तेरे श्रम स्वेद को पीकर, बन जाते वे ही सब फूल॥
तेरी विनम्रता गागर में, सदा छलकता प्यार॥

माथे पर टीका कलंक का, परदा चार ये दीवारी।
और अशिक्षा गले की फँासी, बनी हुई है तेरी॥
गहनों जेवर से न सजाओ, बहनों का श्रृंगार॥

ओ रण चण्डी दुर्गा काली, दमन करो दानवता का।
सीता सावित्री का जीवन, दर्शन सार मनुजता का॥
तू ही विद्या तू ही शिक्षा, सरस्वती अवतार॥

काया में तुम बँधे नहीं

काया में तुम बँधे नहीं, शाश्वत विचार हो तुम।
एक शब्द में परिभाषित अनवरत प्यार हो तुम।।

ज्ञान रूप है केवल लघु-सा अंश तुम्हारा।
अखिल विश्व में फैला अपना वंश तुम्हारा।।
एक सहज अपनेपन को आधार बनाया।
प्यार बाँटकर एक बड़ा परिवार बनाया।।
अगणित सुमनवृंद से सुरभित कण्ठहार हो तुम।।

जिसे तुम्हारी मिली प्यार-ममता की छाया।
निज जीवन में अभयदान उसने है पाया।।
अनायास ही शौर्य, शक्ति, साहस वह पाता।
पूर्ण आत्मविश्वास, आत्मबल से हो जाता।।
मिथ्या भय से मुक्ति दिलाते सिंहद्वार हो तुम।।

नहीं मिलोगे कहीं प्रदर्शन-ऐश्वर्यों में।
विस्मित करते चमत्कार या आश्चर्यों में।।
पल-पल प्रेरक होता है सान्निध्य तुम्हारा।
शब्द-शब्द से मिलता जीवन-लक्ष्य हमारा।।
प्राणशक्ति के अंतहीन अक्षय प्रसार हो तुम।।

अस्थि-चर्म के तुम न आवरण हो अस्थाई।
नहीं शिरा-संचरित रक्त की हो अरुणाई।।
तुम कारण सत्ता से हो सुनियोजन करते।
अन्तरिक्ष से सबका सतत् नियंत्रण करते।।
जो कुछ है उत्कृष्ट, उसी के सघन सार हो तुम।।

कथा प्रज्ञा पुराण की सुनो

कथा प्रज्ञा पुराण की सुनो, ज्ञान की पावन धारा है।
मिटेगा जीवन से अज्ञान, यही विश्वास हमारा है॥

रचियता हैं इसके युग व्यास, ज्ञान का जिनने किया प्रकाश।
हो रहा आलोकित आकाश, मिट रहा सकल अंध विश्वास॥
प्राण का हो अभिनव संचार, दिया वह अमृत धारा है॥

सम्मुनत बने व्यक्ति परिवार, परस्पर बढ़े स्नेह सहकार।
स्वस्थ तन, मन से उच्च विचार, उर्ध्वगामी हों दूर विकार॥
जगत में जितने सुख के सूत्र, समाहित इसमें सारा है॥

कथा में गंगा, गायत्री, कथा में राम और सीता।
समाहित सविता सावित्री, पिरोये कृष्ण और गीता॥
करे निर्मल मति विमल सुजान, बढ़ाती भाई चारा है॥

कथा में मीरा की श्रद्धा, भरा है तुलसी का विश्वास।
संत गुरु नानक और कबीर, भक्ति के पुञ्ज भक्त रैदास॥
सभी के जीवन शिक्षण का, अलौकिक संगम न्यारा है॥

नाद के बिना ज्ञान नहीं होता। वादन के बिना शिव नहीं होता। परम ज्योति नादरूप ही है। स्वयं विष्णु नादरूप हैं।

–वाङ्मय–१९

कर रहा है मनुज पाप

कर रहा है मनुज पाप किसके लिए।
जिन्दगी है अरे चार दिन के लिए।।

तृप्त होती कभी भी न ये इन्द्रियाँ।
चाट जाती सभी भोग सामग्रियाँ॥
ये न छकती भले सौ बरस ही जिएँ॥

लाड़ले पुत्र थे लाड़ली पुत्रियाँ।
और अनुचित उचित माँग की पूर्तियाँ॥
व्यर्थ कोल्हू बने आप उनके लिए॥

एक दिन शक्ति का स्रोत चुक जायेगा।
साँस का सिलसिला जबकि रूक जायेगा॥
फूक देंगे जियें आप जिनके लिए॥

यह मनुज जन्म क्या इसलिए ही मिला।
भोग का वासना का चले सिलसिला॥
क्या विचारा कभी एक क्षण के लिए॥

और भी हैं कोई चाहते प्यार जो।
चाहते आपकी स्नेह की धार जो।
बूंद भी क्या नहीं दीनजन के लिए॥

दीन को आपका यदि सहारा मिले।
डूबते को सहज ही किनारा मिले।
अंश ही दान दो युग सृजन के लिए॥

करते जो सहकार

करते जो सहकार, सफलता उनकी चेरी है।
सफल नहीं वे हुए जिन्होंने, शक्ति बिखेरी है॥

मुँह खाता है किन्तु पेट को, वह देता जाता।
और पेट रस रक्त बनाने, आगे पहुँचाता॥
हृदय बाँटता रक्त लगाता, स्वयं न ढेरी है॥

अलग-अलग लकड़ियाँ टूटती, गट्ठा टूट न पाता।
खाद और जलवायु मिले तो, वृक्ष बड़ा हो जाता॥
जली दिवाली दीपों की, कब टिकी अँधेरी है॥

राम और हनुमान मिले, लंका को जीत लिया।
शिवा-समर्थ मिले तो अपने, युग को बदल दिया॥
विजय सदा संगठन शक्ति की, करती फेरी है॥

हम भी साधन समय शक्ति, श्रम व्यर्थ नहीं खोवें।
युग सृष्टा के संगी साथी, सहयोगी होवें॥
नवयुग के आने में देखो, रही न देरी है॥

संगीत, साहित्य और कला से रहित मनुष्य बिना पूँछ का साक्षात् पशु है। -वाङ्मय १९ पृ.५.९

करेंगे प्रज्ञा से सहकार

करेंगे प्रज्ञा से सहकार, उठायेंगे मिल-जुलकर भार।
कि इस भू-पर-२ फिर से एक नया संसार बसायेंगे॥

सागर सूरज तपे साथ में, भाप बने सहकार।
बादल बनकर बरस गये, फिर सुखी हुआ संसार॥
बढ़ी है फिर धरती की प्यास, हुआ जन मानस आज उदास।
कि-हिल मिलकर ही हम, स्नेह भाव की वर्षा लायेंगे॥

अपनी-अपनी स्वार्थ सिद्धि में, हुआ आज बिखराव।
राग द्वेष बढ़ रहा-बढ़ रहा, मानव बीच तनाव।
भूलकर जनहित वाला त्याग, गा रहे अपना-अपना राग॥
कि लड़-लड़कर कर हम आपस में ही क्या कट-मिट जायेंगे॥

लड़ना है तो लड़े अनय से और करें प्रतिकार।
मन्यु जगायें जो अनीति को दे पाये ललकार॥
मिलायें राम और हनुमान, कृष्ण का शंख पार्थ के बाण।
कि युग संकट-२ से हम त्रस्त, मनुज के प्राण बचायेंगे॥

भामा को प्रताप से फिर से, करना है सहकार।
चन्द्रगुप्त चाणक्य एक हों, बदले युग की धार।
जुटाकर शक्ति और सहयोग,ब्रह्मबल और छात्र बल योग।
कि हम युग की-२ उलटी धार, पलट करके दिखायेंगे॥

कल्याण हमारे जीवन का

कल्याण हमारे जीवन का, भगवान न जाने कब होगा।
जिससे भय भ्रांति मिटा करती,वह धन्य न जाने कब होगा॥

जिससे निज दोष मिटा करते, पापी अपराधों से डरते।
इस सद्विवेक का मानव में, सम्मान न जाने कब होगा॥

अच्छे दिन बीते जाते हैं, गुरुजन बहु विधि समझाते हैं।
योगी पद तक भोगी मन का, उत्थान न जाने कब होगा॥

शीतलता जिससे आती है, सारी अशांति मिट जाती है।
वह नित्य प्राप्त है प्रेम सुधा, पय पान न जाने कब होगा॥

चिन्तायें और वासनायें फिर कुछ भी नहीं सताती है।
जिससे प्रभु तेरे दर्शन हो, वह ध्यान न जाने कब होगा॥

मुक्तक–
प्रभो! तज दोष दुर्गुण, दुर्व्यसन कल्याण कब होगा।
विकारों वासनाओं से, ग्रसित का त्राण कब होगा॥
बनेंगे सद्विवेक कब, करेगे शांति कब धारण।
पतित पावन पतित को तारने पर ध्यान कब होगा॥

क्या तन माँजता है रे

क्या तन माँजता है रे, एक दिन माटी मे मिल जाना।

बना ठना घूमा जीवन भर, तन को खूब सजाया।
नाशवान को सब कुछ माना, सत्य समझ ना पाया॥
क्रूर काल झपटा तब रोया, साथ नही कुछ जाना॥

आत्मा का संतोष न खोजा, खोजा सुख काया का।
अन्त समय तक समझ न आया, चक्कर यह माया का॥
कितना भी हो मोह लाश से, होगा उसे जलाना॥

पुण्य साथ जा सकता था पर, यह तो नही कमाया।
लक्ष्य न समझा भ्रम में भटका, हीरा जन्म गँवाया॥
माटी के टुकड़ों में बेचा, यह अनमोल खजाना॥

मुक्तक :-
बीत गई सो बात गयी, तकदीर का शिकवा कौन करे।
जो तीर कमान से निकल गया, फिर उसका पीछा कौन करे॥

संगीत तीन भागों में विभक्त हैं–गायन, वादन और नृत्य। ये तीनों ही शरीर, मन और आत्मा को प्रभावित करते हैं।

क्यों करता अभिमान

क्यों करता अभिमान देह का, यह माटी की ढेरी रे॥

दर्पण में हर समय देह की, तूने छटा निहारी।
तन तो धोया मगर न तूने, मन की धूल बुहारी॥
जरा रोग से घिरी देह ने, किसका साथ निभाया-
सत्कर्मों की राह पकड़ ले, करता अब क्यों देरी रे॥

पंचतत्व से बना हुआ तन, बड़े भाग्य से पाया।
यह धन है अनमोल कहाँ पर, तूने इसे लगाया॥
पुण्यों का आलोक मिला तो, होगा सुखद सबेरा-
दुष्कर्मों की रात समझ ले, होगी बहुत अँधेरी रे॥

किया न जप तप तूने मन से, केवल किया दिखावा।
साधुवृत्ति ना हुई, पहनकर सन्तों का पहनावा॥
तिलक लगाकर ऐंठा निष्ठुर, बनकर समय बिताया-
अहंकार से भरकर तूने, माया बहुत बिखेरी रे॥

नगर गाँव में नहीं निभाया, तूने भाईचारा।
असहायों को कभी किसी पल, तूने नहीं दुलारा॥
सही गलत का बिल्कुल तुझको, ध्यान नहीं रह पाया-
अपने हित में करी अनेकों, तूने हेरा फेरी रे॥

अपनी चिन्ता छोड़ सभी की, खैर मनानी होगी।
जनमंगल की राह हमें, अब तो अपनानी होगी॥
गाँव घिरा लपटों में, तब कैसा सिंगार सजाना-
झुलस रही सारी धरती है, क्या तेरी क्या मेरी रे॥

मुक्तक–

आदमी का जिश्म क्या है, जिसपे सैदा है जहाँ,
एक मिट्टी की इमारत, एक मिट्टी का मकाँ।
खून का गारा बना है, ईंट जिसमें हड्कीयाँ,
चंद साँसों पर खड़ा है, ये खयालें आसमां॥

करें छात्र निर्माण धरा

करें छात्र निर्माण, धरा को स्वर्ग बनाना है।
इन ईंटों पर ही नवयुग का, भवन उठाना है॥

छोड़ बड़प्पन का फूहड़पन, गुरुता वरण करें।
निष्ठुर नहीं बने मानव हैं, सद्आचरण करें॥
रामराज्य का सपना पूरा, कर दिखलाना है॥

त्याग, तपस्या की भट्टी में, व्यक्ति ढला करते।
स्वस्थ शरीर स्वच्छ मन में ही, देव पला करते॥
विकृत मन को भस्मासुर सा, वर न दिलाना है॥

तप नरेन्द्र को ढाल, विवेकानन्द बना देता।
और मूल शंकर तप से ही, दयानन्द होता॥
उसी पुरातन परम्परा को, प्रखर बनाना है॥

युग प्रज्ञा ने फिर दहकाई, लो तप की भट्टी।
जहाँ देवता बन सकती है, मानव की मिट्टी।।
प्रज्ञायुग का भवन उठाने, ईंट पकाना है॥

कुछ कहा ना सुना

कुछ कहा न सुना, तृप्त मन कर दिया।
सद्गुरु! आपने धन्य ही कर दिया॥

सद्गुरु! है अनूटी कृपा आपकी,
शिष्य की हैसियत देखते ही नहीं।
अन्यथा हम अकिंचन जनों पर प्रभो!
आँख कोई नजर फैंकती ही नहीं॥
जब नहीं था कोई भी सहारा प्रभो।
तब हमें आपने नाथ अपना लिया॥

स्वार्थ के ही सगे हैं सहारा सभी,
स्वार्थ की सिद्धि ही है कसौटी जिन्हें,
किन्तु हित शिष्य का ही जिसे इष्ट है,
है मिली वह कृपा दृष्टि दुर्लभ हमें,
आपकी उस कृपा दृष्टि ने ही प्रभो,
हर समय, हर तरह हित हमारा किया॥

आपकी हैसियत से मिली हैसियत,
बिन दिए दक्षिणा शिष्य हम बन गए,
गण बना ही लिया है महाकाल ने,
बस इसी गर्व से वक्ष भी तन गये,
किन्तु गुरुदेव! इस दिव्य अनुदान से।
भार हम पर बहुत ही बड़ा धर दिया॥

लोकहित में समयदान धनदान दे,
हम करेंगे सुखों में कटौती प्रभो,
ज्ञानयज्ञ की मशालें लिए हाथ में,
देंगे अज्ञानतम की चुनौति प्रभो।
कर सकें लोग युगऋषि के शिष्यत्व,
लोकसेवी का हमने है जीवन दिया॥

करो साधना जीवन में

करो साधना जीवन में, साधन भरे मनुज तन में॥

मानव देह कठिन है भाई, बड़ें भाग्य यह पाई।
भोगों में ही नहीं खप जाये, घिसती जाती क्षण में॥

सद्कर्मों में इसे लगाओ, फंसो नहीं माया में।
दीन-दु:खी के काम आ सको, प्रभु को देखो मन में॥

देव-संस्कृति विलख रही है, अश्रु भरे नैनन में।
युग-ऋषि ने आवाज लगाई, क्या सोच विचारे मन में॥

शारीरिक अवयवों को प्रभावित करने वाली संगीत से बढ़कर कोई दूसरा वस्तु नहीं है।
- डॉ. लीक

किसी दिन देख लेना

किसी दिन देख लेना, तुझको ऐसी नींद आयेगी।
तू सोया फिर न जागेगा, तुझे दुनियाँ जगायेगी॥

तुझे संसार के खूंटे से, जिसने बाँध रक्खा है।
तेरे सोते ही वो ममता की, रस्सी टूट जायेगी॥
तेरे घरवाले जिस सूरत से इतना प्यार करते हैं।
यही सूरत उन्हें फिर भूत बनकर के डरायेगी॥

तेरी हस्ती को जिस दुनियाँ ने पस्ती में गिराया है।
वही बेकदर दुनियाँ तुझे झुककर उठायेगी॥
तू आँखे फेरेगा तो दुनियाँ भी मुँह फेर जायेगी।
जो आँखों पर बिठाती थी वही आँखे दिखायेगी॥

जो कहते थे मरेंगे साथ उनका मोह मत करना।
तेरा दम टूटते ही उनकी तिकड़म टूट जायेगी॥
जिन्हें समझा है तुमने साथ अपने वो भी लौटेगें।
तेरी नेकी बदी ही अंत में तेरे साथ जायेगी॥

वेदमंत्रों के गान की संज्ञा 'साम' है। न केवल मंत्र पाठ को ही 'साम' माना जा सकता है, और न सिर्फ गाने को ही, बल्कि इन दोनों के मिश्रण को ही 'साम' कहा गया है।

क्या हो गया प्रकाश पुत्र

क्या हो गया प्रकाश पुत्र को, अंधकार स्वीकार कर लिया।
तम से समझौता कर डाला, तम को नातेदार कर लिया॥

हर प्रकाश का पुत्र सुना है, अंधकार को पी लेता है।
फिर प्रकाश का पुत्र किस तरह, अंधकार में जी लेता है॥
कैसी है विडम्बना तम को, जीवन का आधार कर लिया॥

तम का बन्दी बने जनों को, मुक्ति दिलाने चल पड़ता था।
वैसे भी तम के घेरे में जो, अनवरत जला करता था॥
तम का बन्दी बनने से फिर, क्यों न स्वयं इन्कार कर दिया॥

जो अथाह तम में डूबों को, बाहर ले आया करता था।
तम के तूफानों से जिसका, साहस टकराया करता था॥
तम से हार मान बैठा क्यों ? क्यों तम को मझधार कर लिया॥

जो प्रकाश बाँटा करता था, उसके घर आँगन में तम है।
फिर कैसे हर घर आँगन में, तम ने क्यों अधिकार कर लिया॥
प्रकाश के घर आँगन में, तम ने अब अधिकार कर लिया॥

ओ प्रकाश के पुत्र हृदय की, ज्योति तनिक उकसाकर देखो।
अपने कंधो से अनचाहे, अंधकार का जुआ फेंको॥
तुमने घोर अमावश में भी, तो तम का प्रतिकार कर लिया॥

स्नेह भरो मन के दीपक में, जलने दो जीवन की बाती।
जन–जन को प्रकाश फिर बाँटे, जीवन ज्योति सहज मुस्काती॥
क्या कर लेगा अंधकार अब, जल मरना स्वीकार कर लिया॥

काम जब तक तुम्हारा

काम जब तक तुम्हारा अधूरा पड़ा,
हम रूकेंगे नहीं एक पल चैन से।
शूल अनगिन भले ही चुभें पाँव में, उफ़ कभी कर सकेंगे नहीं बैन से॥

दर्शनों की लिए लालसा सर्वदा,
आपके ही लिए हम तरसते रहे।
छवि नहीं आपकी जब दिखी तो विवश,
नैन बस मोहवश ही बरसते रहे॥
किन्तु अब आपकी देह के मोह में, डूबकर हम फिरेंगे न बेचैन से॥

प्रेरणा हर निमिष दे सकेगा हमें,
आपका स्वर यहाँ की हवा में मिला।
बस उसी का सहारा लिये लक्ष्य की,
राह बढ़ता रहेगा सदा काफ़िला॥
अब वही रूप अनुभव करेंगे जिसे, देख पाए नहीं हम खुले नैन से॥

आप निस्सीम बन विश्वभर के हुए,
आप से हम सतत् आत्मबल पा सकें।
कामना है कि पावन उजाला लिये,
एक नवयुग, नई भोर हम ला सकें॥
जो तिमिर और तूफान से हो भरी, हम डरें अब न ऐसी किसी रैन से॥

मुक्तक–
भार जो सौंप कर चल दिये पूज्यवर, हम सपूतों सरीखे उसे ढोयेंगे।
तुम कभी भी न यह सोचना, हम उसे छोड़कर नींद में एक पल सोयेंगे॥

करें हम पात्रता विकसित

करें हम पात्रता विकसित, यही दो भावना गुरुवर।
लगन हो श्रेष्ठ कार्यों में, यही है कामना गुरुवर॥

नहीं विचलित कभी होवें, हमें वह बुद्धि दे देना।
हमारे आप रक्षक हैं, हमें विश्वास यह देना॥
हृदय हो प्रेम का सागर, यही है कामना गुरुवर॥

लगन हो कार्य में, एकाग्रता पाते चले जाएँ।
कृपा से आपकी हम, श्रेष्ठता लाते चले जाएँ॥
बना दो बुद्धि को निर्मल, यही है कामना गुरुवर॥

न धन सत्ता का लालच है, न पद वैभव की इच्छा है।
न इस भौतिक जगत में, नाम पा जाने की इच्छा है॥
सभी के दुःख बँटा पाएँ, यही है कामना गुरुवर॥

बहुत जन्मों में भटके हैं, तुम्हें ढूँढ़ते गुरुवर।
मिली है आत्मा को तृप्ति, अब पाकर तुम्हें ऋषिवर॥
मिटा दो सब कलुषता को, यही है प्रार्थना गुरुवर॥

तुम्हारे पुत्र-पुत्री बन, सदा शुभ मार्ग अपनाएँ।
सजलता माँ से पाने को, सदा से मन मचल जाए॥
रहे सानिध्य में हर पल, यही है कामना गुरुवर॥

मुक्तक-

ढूँढ़ रहे हैं तुमको गुरुवर, हर कण-कण में आठों याम।
हृदय गुहा में दरश दिखाकर, धन्य बना दो हे सुखधाम॥

क्या न इतनी कृपा अब

क्या न इतनी कृपा, अब करेंगे प्रभो,
आपके हाथ के उपकरण बन सकें।
शेष जो भी बचे, नाथ कण और क्षण,
लोकहित में समर्पित सभी हो सकें॥

मोह में लोभ में ये, अभी तक खपे,
व्यक्ति परिवार में ही बँधे रह गये।
जिन्दगी घिस गई बस इन्हीं के लिए,
स्वार्थ में ही अभी तक सधे रह गये।
किन्तु होकर द्रवित आप करूणा करें,
तो क्षरित प्राण तन की शरण बन सकें॥

यह सही है कि तन पात्र तो है नहीं,
भोग में, वासना में, घिसी अस्थियाँ।
और यह भी सही है कि, समिधा कहाँ,
जो यजन में, बनें स्वर्ग की सीढ़ियाँ॥
आपके हाथ, यदि साध लें प्यार से,
तो सुनिश्चित है फिर, ये हवन बन सकें॥

लोकमंगल महायज्ञ जो चल रहा,
बस उसी में हमें, सम्मिलित कीजिए।
आप ब्रह्मा बनें हैं महायज्ञ के,
नाथ! मन, प्राण, पावन बना दीजिए॥
क्यों न पावन बने,आपके सुत सभी,
आप हो यदि द्रवित,आचमन बन सकें॥

आप सृष्टा बने हैं नये विश्व के,
स्वर्ग का इस धरा पर सृजन कर रहे।
सुप्त देवत्व को, मानवों में जगा,
आप उज्ज्वल भविष्यत् सृजन कर रहे॥
आपके शिल्प की ही कृपा दृष्टि से,
क्यों न अनगढ़, सुगढ़ आचरण बन सकें॥

मुक्तक–जब पतंगों की देखी कलाबाजियाँ,
बाँसुरी की सुनी श्रेष्ठ स्वर लहरियाँ।
तो लगा प्रभु कि जीवन तुम्हें सौंप दें,
कुछ नया फ़न दिखाये तेरी उँगलियाँ॥

करनी है यदि हमको सेवा

करनी है यदि हमको सेवा, अपने इस संसार की।
करनी होगी आत्मसाधना, हमको आत्मसुधार की।।

हम सुधरेंगे–युग सुधरेगा, यही सूत्र अपनाएँ हम।
लक्ष्य भेद की करें साधना, जीवन धन्य बनाएँ हम।।
सबको दें सम्मान अहनिर्श, करें साधना प्यार की।।

ज्ञान आचरण में जो उतरे, वही ज्ञान उपयोगी है।
स्वाध्याय, संयम जीवन का, परम मित्र सहयोगी है।।
करें उपासना हम चिन्तन की, सेवा शुभ व्यवहार की।।

करें प्रेम व्यवहार सभी से, दुर्गुण दूर भगाएँ हम।
श्रेष्ठ संगठन शक्ति साथ ले, स्वर्ग धरा पर लाएँ हम।।
सोच–समझकर करें साधना, खान–पान आहार की।।

करते जिसका ध्यान रातदिन

करते जिसका ध्यान रातदिन, सुर नर मुनि मति प्राण।
गायत्री वेदों की जननी, करती जग कल्याण॥

गायत्री की गरिमा भारी, सत्य सनातन मंगल धारी।
ब्रह्मतेज को देने वाली, गायत्री की ज्योति निराली॥
जिसका नाम मात्र लेने से, पुलकित होते प्राण॥

दोषों का परिमार्जन करती, विषम वासना दुर्गुण हरती।
मंत्र मुकुटमणि माला धारी, मंगल मृदुल मोद मन हारी॥
ऋद्धि-सिद्धि समृद्धि अलौकिक करती सदा प्राण॥

गायत्री सम मंत्र न दूजा, जड़-चेतन सब करते पूजा।
सुख सुहाग की पावन प्रतिमा, गाते देव तुम्हारी महिमा॥
शेष शारदा नत-मस्तक हो, गाते हैं गुणगान॥

ज्ञान स्रोत गायत्री माता, आत्मशक्ति नव जीवन दाता।
महिमा अपरम्पार तुम्हारी, जपते जिसे देवव्रत धारी॥
जिसके आगे शीश झुकाते, ज्ञान और विज्ञान॥

ऊँच नीच का भेद न करती, जीवन रिक्त ज्ञान घट भरती।
जो आते हैं शरण तुम्हारी, खिल जाती जीवन फुलवारी॥
गायत्री माँ मुक्त हस्त से, देती है अनुदान॥

कैसे बिसराये उन गुरु को

कैसे बिसरायें उन गुरु को॥

भूले भटके इस जीवन को, जिनने दिया अपार सहारा।
तम से मुक्त कराने हमको, जिनने तोड़ी तम की कारा॥

जकड़े थे बन्धन माया के, पकड़े थे पिंजड़े काया के।
दिशाहीन हो निरालम्ब हो, भटक रहे थे ज्यों बंजारा॥

तम की लहरें थीं तूफानी, तब भी करते थे नादानी।
तब प्रकाश बन हाथ बढ़ाया, चीरी गहरे तम की कारा॥

खींचा हमको मझधारों से, बाँध लिया स्नेहिल तारों से।
डूब रहे को तिनके का क्या, नैय्या का मिल गया सहारा॥

दिव्य पिता का प्यार मिला फिर, माँ का मधुर दुलार मिला फिर।
थे अनाथ पहिले लेकिन अब, वसुधा है परिवार हमारा॥

महाप्राण की सुन गुरु वाणी, प्राणों को मिल गई जवानी।
गुरु के गीत गुन-गुनाता अब, क्षण-क्षण साँसों का एक तारा॥

नाचना गाना और बजाना मनुष्य समाज की सुखद कलायें हैं, यदि यह न हो तो मनुष्य जीवन जैसा नीरस और कुछ न रह जायेगा।

-(वाङ १९ पृ. ६.१९)

कृपा दृष्टि अब कहाँ मिलेगी

कृपा दृष्टि अब कहाँ मिलेगी, सोच सोच छाती फट जाती।
और कहाँ मिल पायेगी अब, माँ वाली करुणा की छाती॥

कृपा दृष्टि के वरद हस्त बिन, मस्तक अब सूना सूना है।
करुणा के अभिसिंचन के बिन, दिल का दर्द हुआ दूना है॥
बाँह पिता की, गोदी माँ की, पाये बिन अब चैन न आती॥

कौन बताये अब पथ सीधा, मन उलटे पथ पर जाता है।
करुणा की धारा के बिन तो, मन का मैल न छूट पाता है॥
पग-पग पर है गर्त पतन के, पग-पग पर है दुर्गम घाटी॥

जग में अपनी संतानों को, क्या अनाथ ही रहने दोगे।
और चिढ़ाने वाले जग को, क्या मनमाना कहने दोगे॥
माता पिता बिना यह दुनियाँ, करती है उपहास चिढ़ाती॥

लौट नहीं सकते हो तन से, भावभरा निज मन तो दे दो।
बाँहे और गोद दुर्लभ हैं, अन्तर संवेदना तो दे दो॥
मन समझा लेंगे इतने में, पगले! यह है उनकी थाती॥

भाव ले चलेंगे सद्पथ पर, संवेदन निर्मल कर देगा।
'संरक्षक ऋषि युग्म हमारा' यह विश्वास हृदय कर लेगा॥
सूक्ष्म और कारण सत्ता तो, और अधिक करुणा छलकाती॥

मुक्तक-

प्यार पिता का माँ की करुणा, जाये कैसे अरे भुलाई।
जिनने जीवन के हर क्षण में, अपनी करुणा धार पिलाई॥
ढूँढ़ रहा मन उन स्रोतों को, अपने प्यासे अधर सँजोये।
क्या न आप तक, विकल प्राण ने, अधरों की पीड़ा पहुँचायी॥

कोई मत दे साथ तुम्हारा

कोई मत दे साथ तुम्हारा, हम तो साथ तुम्हारे हैं।
तुमको क्या मालूम कि बच्चों, कब से आप हमारे हैं॥
प्रतिफल प्रतिक्षण हर पग-पग पर, यह विश्वास दिलाते हैं।
यह सम्बन्ध नहीं टूटेगा, हम संकल्प उठाते हैं॥

आगे बढ़ो सुदृढ़ कदमों से, संकल्पित मन होवे।
युग के नव निर्माण सृजन में, मत कोई साहस खोवे॥
बनो सजग प्रहरी नवयुग के, क्यों अतीत झुठलाते हो॥
शान्तिकुञ्ज के कर्णधार के, कन्धों पर विश्वास करो।
मन के कल्मष, कलुष, कुचिन्तन,की चादर को राख करो॥
निर्भय हो सद्भाव बेल को, हम दिन रात बढ़ाते हैं॥

जब भी कहीं थकोगे मग में, साथ तुम्हारा हम देंगे।
ठंडी-ठंडी वायु-वारि बन, प्यास तुम्हारी पी लेंगे॥
जग के तीनों ताप तुम्हारे, तप को देख लजाते हैं॥
समय नहीं अब और गँवाओ, मन के कलुषित भावों में।
सद्चिन्तन चरित्र में लाओ, भटको नहीं अभावों में।
यज्ञ-पिता गायत्री माता, का आँचल पकड़ाते हैं॥

औसत मानव जीवन जी, सद्बुद्धि वरण करना सीखो।
मन के दूषित भाव मिटा, सद्भाव स्नेह पीना सीखो॥
गायत्री के महामंत्र ही, जीवन प्राण बढ़ाते हैं।
अरुणोदय की प्राण सभा सम, प्रज्ञापुंज ज्योति बनना।।
सुमन गंध बनकर जन-जन, पीड़ा व्यथा त्रास हरना॥
सूरज की लाली से सविता, बन सुगन्ध मंडराते हैं॥

क्यों मोह है उन्हीं से

क्यों मोह है उन्हीं से, जिनने हमें मिटाया।
घोंटा गला जिन्होंने, उनको गले लगाया॥

घातक कुरीतियों ने, क्या कुछ नहीं किया है।
उन क्रूर रूढ़ियों ने, बरबाद कर दिया है॥
क्या बात है कि उनसे, पीछा नहीं छुड़ाया॥

क्यों कर फिजूल खर्ची, करते हैं शादियों में।
क्यों मोह भाव वर के, बढ़ते हैं शादियों में॥
पुरुषार्थ के धनी को, क्यों माँगना सिखाया॥

क्या मृतक भोज मरने पर काम आ सकेगा।
क्या भोज कर्मफल से उसको बचा सकेगा॥
परिवार रो रहा है तब जाके कैसे खाया॥

आडम्बरों में हम क्यों, जकड़े पड़े हुए हैं।
क्यों अन्ध मान्यता के, झगड़े खड़े हुए हैं॥
अज्ञान में पड़े क्यों, क्यों ज्ञान को भुलाया॥

हमको मिटा रहे जो, उनको चलो मिटायें।
छोड़े कुरीतियों को, बरबादियाँ बचायें॥
हमको विवेक ने अब, सद्मार्ग है बताया॥

किनारा ढूढ़ता है तू

किनारा ढूढ़ता है तू, किसी का खुद किनारा बन।
सहारा ढूँढ़ता है तू, किसी का खुद सहारा बन॥

निखरता क्या परखता क्या, दु:खों को जो स्वयं झेले।
वही है आदमी जो कष्ट से, संघर्ष से खेले॥
सहे जो कष्ट औरों के, पिये गम से भरे प्याले।
उन्हें राहत दिला कुछ, और उनके घाव सहलाले॥

भुला दे दर्द अपना, दूसरों की पीर के सम्मुख।
सभी को बाँटकर ममता, जगत का प्राण प्यारा बन॥

गया पथ भूल तो क्या बात है, थककर बैठना कैसा?
थके यदि पाँव तो क्या बात है? पथ से रूठना कैसा?
वहाँ भी ढूँढ़ ऐसे पग, फटी जिनकी बिवाई हो।
वहाँ भी ढूँढ़ ऐसे पग, दिशा जिनने गवाई हो॥

जहाँ हो और जैसे भी रहे, कर बात औरों की।
किसी को राह ने दिखलाई, गगन का वह सितारा बन॥

दुनियाँ को मरने से बचाने के लिए संगीत ही सबसे बड़ा संरक्षण हो सकता है। मार्टिंगलूथर का यह कथन भी प्रख्यात है कि मनुष्य जाति को भगवान द्वारा दिये गये सबसे भव्य वरदानों में से एक संगीत भी है।

–विश्व विख्यात संगीत मर्मज्ञ –पाब्लोकासाल्स

कर्म वृक्ष बन लहराता है

(तर्ज–उठो सुनो प्राची से उगते)

कर्म वृक्ष बन लहराता है, चिन्तन का ही बीज।
चिन्तन पर दें ध्यान, न आये फिर कर्मों पर खीज॥

दुश्चिंतन के कारण ही, दुष्कर्म किये जाते।
सदचिन्तन के अंकुश से, सद्कर्म जन्म पाते हैं॥
चिन्तन के ऊपर निर्भर है, क्रम उत्थान पतन का।
क्षुद्र महान स्वरूप निखरता, इससे ही जीवन का॥
यही गिराते पतन गर्त में, और स्वर्ग क्या चीज॥

अन्य वस्तुओं के अभाव से, क्षति शरीर की होती है।
किन्तु अभाव ज्ञान का हो तो, कष्ट आत्मा ढोती है॥
बिना ज्ञान नर पशु बन जाते, तब मानव तनधारी।
किन्तु ज्ञान का पारस छू, वे देवों के अधिकारी॥
चिन्तन में यदि संवेदन हो, जाता हृदय पसीज॥

चिन्तन प्रेम भरत को, कौरव को लड़ना सिखलाता।
सद्चिन्तन से दुश्चिंतन से, यह अन्तर हो जाता॥
इसने ही गौतम गाँधी को, करना प्रेम सिखाया।
इसके कारण ही हिटलर ने, कत्लेआम मचाया॥
क्रूर इसी से रावण बनते, राम इसी से रीझ॥

जब दस्तक दे रही द्वार पर, युग विभीषिका भाई।
और विसंगति दे समाज में, जब कि भ्रान्ति फैलाई॥
युग के दृष्टिकोण में ऐसा, परिवर्तन लाना है।
जिन उत्कृष्ट विचारों द्वारा, युग बदला जाना है॥
दुश्चिंतन का रोग नष्ट हो, होवे स्वस्थ मरीज॥

करना है जग का सुधार

करना है जग का सुधार, सुधार मेरी बहनों।
गढ़ना है नया संसार, संसार मेरी बहनों॥

राग, द्वेष की होली जलाओ, प्रेम प्यार का गुलाल उड़ाओ।
दीन दलित को गले लगाओ, आपस में सदभाव बढ़ाओ॥
ऐसा मनाओ त्यौहार, त्यौहार मेरी बहनों.... ॥

अनाचार को दूर भगाओ, अन्ध-मान्यताएँ विष हटा दो।
जीवन की रूढ़ियाँ मिटा दो, कुप्रथाओं की नींव हिला दो॥
कर दो कुमति पर प्रहार, प्रहार मेरी बहनों.... ॥

नयाज्ञान विज्ञान रचो तुम, और नया इतिहास लिखो तुम।
नये पर्व त्यौहार रचो तुम, नये रीति-रिवाज गढ़ो तुम॥
जीवन को लो तुम संवार,संवार मेरी बहनों.... ॥

भोली बनकर भार बनी हो, जीत त्याग कर हार गई हो।
अबला कहकर तुम्हें डराया, सबला हो तुम जान न पाया॥
दुर्गा की तुम हो अवतार, अवतार मेरी बहनों.... ॥

साहित्य, संगीत, कला विहीनाः।
साक्षात् पशुः पुच्छ विषाण हीन।।

साहित्य, संगीत और कला से हीन व्यक्ति बिना सींग, पूछ वाले पशु के समान है। (भर्तृहरि)

कोटि कोटि नवयुवक

कोटि कोटि नवयुवक, विश्व के मंगल हेतु चले।
बढ़ा अतीव उत्साह कि फिर से, बुझते दीप जले॥

जीवन सरिता हुई तरंगित, हुआ मनुज समर्पित।
भावपूर्ण प्रेमाज लिखे अब, हों देव, पितृ, ऋषि, तर्पित॥
काँप उठी यह सोच असुरता, दिन आपको न भूले॥

अब अशक्ता दूर हुई है, शक्ति पुनः भरपूर हुई।
काल पुरुष से सन्निकर्ष से, अहंकारिता चूर हुई॥
घोर भयंकर भ्रम के बादल, देखो तभी टले॥

क्रांति विचारों में आयेगी, शांति घटा बनकर छायेगी।
युग निर्माण योजना निश्चित, सफल हमारी हो जायेगी॥
पंथ प्रकाशित रहे प्रतिक्षण, ज्योति अखण्ड जले॥

कहेगा कहानी जगत

कहेगा कहानी जगत अब उन्हीं की,
परमार्थ में जो समयदान देंगे।
चिन्तन बनायेंगे जो श्रेष्ठ अपना,
समय और साधन का जो दान देंगे।।

चिन्तन में विकृति बहुत बढ़ गई है,
समस्याएँ नूतन नित उठ रही है।
प्रखर प्रज्ञा पुत्रों का सम्मान होगा,
ज्ञान क्रान्ति में जो प्रचुर दान देंगे।।

स्वाध्याय संयम व सेवा बढ़ाओं,
साधक बनों और साधक बनाओ।
सघन साधना शक्ति ही काम देगी,
जो शुचिता सहित ज्ञान दान देंगे।।

शताब्दी पूज्यवर की मनायें, प्रतिभा
व साधन सब मिलकर लगायें।
अनुदान-वरदान उनको मिलेगा,
जो युगधर्म हित आत्म बलिदान देंगे।।

कण-कण में छा रही

कण-कण में छा रही है, महिमा ओ माँ तुम्हारी।
कर ध्यान मातु सुन ले, यह वन्दना हमारी॥

दीप चन्दन थाली से सदा आरती उतारूँगा।
सुमन श्रद्धा नहलाकर, तुम्हें निशदिन चढ़ाऊँगा॥
एक बार आओ मैया, कर हंस की सवारी॥

जिसे अपना बनाया माँ, उसी ने हमको ठुकराया।
बहे कितने मेरे आँसू, तरस तुझको नहीं आया॥
मेरे लिए तू मैया, काहे को करे तू देरी॥

भूल हो जाय अगर कोई,क्षमा माँ हमको तुम करना।
लेकर त्रिशूल जगदम्बे, दर्द दुखियों के तुम हरना॥
नयनों में छा रही है, माँ की छबि निराली॥

कर्म सभी का जन्म सिद्ध

कर्म सभी का जन्म सिद्ध, अधिकार मेरे भाई।
फल की चिन्ता करना है, बेकार मेरे भाई॥

अपना-अपना कर्म सभी का, अपना ही फल पाता।
जो जैसा करता है उसको, वैसा ही मिल जाता॥
धर्म यही है करले पर, उपकार मेरे भाई॥

बहना ही है बस नदी का, धर्म निरन्तर होता।
यही समझकर ही किसान है, बीज खेत में बोता॥
नियति चक्र के बस में, यह संसार मेरे भाई॥

सुख पाना चाहे तो, सुख औरों को देना होगा।
शांति अगर चाहे तो जग को, शांत बनाना होगा॥
होता फल रूप तभी, साकार मेरे भाई॥

अभी कैदी सा जीवन जीता, मन का स्वामी बन जा।
अपनी दसों इन्द्रियों पर, तू कस मजबूत शिकंजा॥
हो जायेगा जीवन का, उद्धार मेरे भाई॥

गायन-वादन का प्रभाव मनुष्यों तक ही सीमित नहीं है, वरन उसे पशु-पक्षी भी उसी चाव से पसन्द करते और प्रभावित होते हैं। -सामवेद

कर्म जैसे करोगे

कर्म जैसे करोगे, फल भी वैसे मिलेंगे।
नीम बोने वालों को, आम कैसे मिलेंगे॥

है ये दुनियाँ का मेला, सारा कर्मों का खेला।
कर्म ही इस जगत में, सदा करता झमेला॥
पाप और पुण्य जैसे वैसे, सुख-दुःख मिलेंगे॥

कोई सोता है भूखा, कोई खाए न सूखा।
कर्म ये भेद डाले, कर्म का खेल अनोखा॥
ये नचायेंगे जैसे, वैसे हम नाच लेंगे॥

है जो कर्मों से बचना, मोह माया को तजना।
भावना शुद्ध करके, प्रभु की भक्ति में लगना॥
प्रभु के द्वार पर जा, पाप सब ही कटेंगे॥

संगीत विश्व का नैतिक विधान है, वह विश्व को दिव्य सौन्दर्य प्रदान करता है। मानव मस्तिष्क में नवीन रंग भरता है और भावनाओं में रंगीन उड़ान, गायनाभिराम सुषमा एवं निराशा के प्रांगण में आनन्द का प्रपात प्रवाहित करता है तथा विश्व के प्रत्येक पदार्थ में जीवन और उत्साह के अभिनव स्फूरणों को मुखरित करता है।

–(मार्टिन लूथर)

करो संकल्प कुछ बढ़कर

करो संकल्प कुछ बढ़कर, घड़ी वह आज आई है।
मुबारक जन्म दिन तुमको, बधाई है बधाई है॥

बधाई है कि तुमने स्वार्थ, सुख को व्यर्थ समझा है।
बधाई है कि तुमने जिन्दगी का अर्थ समझा है॥
लगे तुम मानने परमार्थ ही, सच्ची कमाई है॥

बधाई है कि छोड़े तुम, दुर्गुणों बुराई वाला।
बधाई है कि पहनी आज, सद्गुणों की सुमन माला॥
सुरभि सत्कर्म की आचरण में अब समाई है॥

बधाई है कि भूले ईर्ष्या और द्वेष जीवन के।
बधाई है हृदय में प्यार घुँघरू मधुर समझ के॥
बदलता है मनुज ही बात यह जग को सिखाई है॥

बधाई है कि तुमने व्रत लिया है लोक मंगल का।
बधाई है कि समझा मूल्य जीवन के हर इक पल का॥
करो शुभ लक्ष्य जीवन का दुवा हमने मनाई है॥

अनाहत नाद के रूप में अलौकिक संगीत का एक दिव्य प्रवाह समूची सृष्टि में सतत् संचरित होता रहता है।

–माता भगवती देवी शर्मा

कीमत हमने बहुत चुकाई

कीमत हमने बहुत चुकाई, आजादी तब हमने पाई।

माताओं ने लाल दिये हैं, माँ चरणों में डाल दिये हैं।
बहिनों ने दे डाले हैं भाई॥

त्याग पत्नियों का है भारी, पति से अधिक वस्तु क्या प्यारी।
आजादी पर वही चढ़ाई॥

तरुणाई फाँसी पर झूली, बुढ़ों ने भी चूमी शूली।
बच्चों ने भी गोली खाई॥

जाति धर्म का भेद नहीं था, क्यों गुलाम हैं खेद नहीं था।
सबने मिलकर की फर्ज अदाई॥

भेद भाव की बात चलाकर, आपस में नफरत फैलाकर।
क्यों आपस में करे लड़ाई॥

अब अखण्डता और एकता, सबका ही हो एक देवता।
भारत माँ है हम सब भाई॥

कण-कण में समाये हो

कण–कण में समाये हो, तुम्हें हमने पहचाना है।
मिलने को प्रभु तुमसे, हुआ यह मन बेगाना है॥

कर्त्तव्यों के व्यस्त पलों पर, भूले थे हम याद।
आ ना सका था मुख पर, मन के भावों का अनुवाद॥
जाना है वहीं जिसकी शरण में, ठौर ठिकाना है॥

पूर्ण करेंगे शीघ्र रहे जो, शेष तुम्हारे काम।
हर प्यासे मन को भर देंगे, ममता से अविराम॥
व्याकुल मानवता का हमें, दुःख दर्द बँटाना है॥

करना है साकार तुम्हारा, नवयुग का अनुमान।
कोष तुम्हारे से देने हैं, इस जग को अनुदान॥
हर बन्जर धरती पर, जल–सा सावन सरसाना है॥

पहले पीछे छूटे हुओं को, करना है आहवान।
हमें अभी संगवाना जो भी, बिखरा है सामान॥
दायित्व निभाना है सफर पर, तब ही जाना है॥

दुधारू पशु को दुहते समय यदि संगीत की ध्वनि होती रहे तो वे अपेक्षाकृत अधिक दूध देते हैं।

–पशु मनोविज्ञानी डॉ. जार्जकेर विल्स

कुटिल चाल कलिकाल

कुटिल चाल कलिकाल चल रहा, युग की गति पहिचानों।
क्रूर-ध्वंस का साज सज रहा, चेत उठो दीवानों॥

इसीलिए तो महाकाल ने, चौदह वर्ष तपाया।
और साधना की भट्टी में, हमको सतत गलाया॥
क्या लोहा सोना बन पाया, इतना तो अनुमानो॥

जिनने बदल लिया अपने को, वे ही टिक पायेंगे।
महाकाल के वीरभद्र भी, वे ही कहलायेंगे॥
महाकाल के गण जैसा, ही अपना सीना तानों॥

महाशक्ति भी द्रवित हुई है, देख ध्वंस की चालें।
महाकाल भी कुपित हुआ है, भरने लगा उछालें।
युग परिवर्तन होना ही है, इसे सुनिश्चित जानों॥

अपनी सृष्टि न मिटने देंगे, युग सृष्टा संकल्पित।
सृजन सैनिकों को करती है, युग प्रज्ञा आमंत्रित॥
करो सृजन-संकल्प और अब, नये सृजन की ठानों॥

संगीत की गरिमा असीम है। उसे नाद ब्रह्मशब्द कहकर भगवान के समतुल्य ठहराया गया है।

क्रान्ति के तेवर अरे!

क्रान्ति के तेवर अरे! अब क्रान्ति के हैं।
एक क्षण भी नहीं विश्रान्ति के हैं॥

साधना अब औपचारिकता न होगी।
निठल्ली निष्प्राण कायरता न होगी॥
धर्म अब गोली नहीं होगी नशे की।
अब न क्षण आध्यात्मिक दिग्भ्रान्ति के हैं॥

अब न अक्षर काला होगा भैंस जैसा।
अब न शिक्षा का रहेगा रूप वैसा॥
शिक्षितों में अब प्रखर प्रज्ञा जगेगी।
शिक्षा के स्वर आज नैतिक-क्रान्ति के हैं॥

अब परावलम्बन न आएगा किसी को।
स्वावलम्बन रास आएगा सभी को॥
अन्नपूर्णा अब तो गौ माता बनेगी।
राष्ट्र के स्वर गौ-संवर्धन-क्रान्ति के हैं॥

प्रदूषण विष अब न जनमानस पीयेगा।
वृक्ष पूजक, हरीतिमा बिन क्यों रहेगा॥
तुलसी, पीपल, वट, अशोक दें प्राणवायु।
उभरते संकल्प हरीतिमा-क्रान्ति के हैं॥

कुरीति की जड़ उखाड़ी जायेगी अब।
तरूण पीढ़ी दुर्व्यसन दफनायेंगी अब॥
कुरीति, दुर्व्यसन मुक्त समाज होगा।
अन्त अब तो आत्मघाती-भ्रान्ति के हैं॥

ज्वार आया है कि नारी जागरण का।
नारियों द्वारा कि सद्साहस वरण का॥
नारियाँ कर रहीं नारी-युग तैयारी।
क्योंकि नारी युग सुनिश्चित शान्ति का है॥

कर ले युग निर्माण

कर ले युग निर्माण रे वन्दे, फिर अवसर नहीं पाएगा।
कर अपना निर्माण रे, वन्दे, फिर पीछे पछताएगा॥

हीरे सा मानव जीवन यह, मिट्टी मोल गँवा डाला।
भव सागर की इस नौका पर, बोझ पाप का भर डाला॥
स्वर्णिम स्वाति वृष्टि सा क्षण जो, सोकर व्यर्थ गँवाएगा॥

भेद रहा कथनी करनी में फिर, भी गुरु अनुदान मिला।
करता तोड़-फोड़ के धंधे, फिर भी तुझे सम्मान मिला॥
कालनेमि सा कर्म तेरा अब, स्वयं तुझे खा जाएगा॥

यह परिवर्तन की बेला है, तू भटका संसार में।
युग प्रज्ञा की चीख न सुनी, व्यस्त रहा घर-बार में॥
अब न बचेगा महाकाल से, यदि तू बदल नहीं जाएगा॥

ज्योति विचार क्रान्ति की फैली,तुम भी आलोकित करलो।
बहती ज्ञान गंगा की धारा, डुबकी एक लगा तुम लो॥
आज ज्ञान की गंगोत्री में, जो न स्वयं नहाएगा॥

काँच न हैं हम जो टूटेंगे

काँच न हैं हम जो टूटेंगे और बिखर जाएँगे।
जितनी अग्नि परीक्षा लोगे, और निखर जाएँगे।।

तुमने कहा अंग अवयव हैं हम गुरुदेव! तुम्हारे।
संग तुम्हारा मिला, भला क्यों ढूँढें और सहारे।।
पात कल्पतरु के पतझर में कैसे झर जाएँगे।।

हम हैं दूब जुड़ी हैं तुमसे गहरी जड़ें हमारी।
बार-बार हरियाए जब-जब मिली फुहार तुम्हारी।।
जेठ तपेगा जितना, उतने और सँवर जायेंगे।।

बार-बार चोट करी पर भीतर बहुत सहेजा।
यूँ संकेत दिया क्यों हमको गया धरा पर भेजा।।
दिशा प्राप्त कर पल-पल होते और प्रखर जायेंगे।।

हम सबके सम्मुख रखेंगे युगऋषि! रूप तुम्हारा।
जिसने गंगाजल पारस सा सबको सहज सँवारा।।
हम महकेंगे जहाँ तुम्हारे चन्दन स्वर जायेंगे।।
सभी व्यक्ति भीतर-बाहर से स्वयं सुधर जायेंगे।।

मुक्तक-
जिस पर कृपा गुरु की होती, वही निखर जाता है।
तप-तपकर कुन्दन सा उसका, जन्म सँवर जाता है।।

काल चक्र बढ़ता जाता है

कालचक्र बढ़ता जाता है, महाकाल की चाल से।
सृजन-सैनिकों! ठिठक न जाना, उड़ती धुल-धमाल से॥

प्रकृति प्रकम्पित और दिशाएँ पदचापों से डोलतीं।
ताप बढ़ रहा अन्तरिक्ष का, जल धाराएँ खौलतीं॥
धरा थरथरा रही,काँपती,यत्र-यत्र भूचाल से॥

महाकाल की दृष्टि वक्र है, केवल मात्र अनीति पर।
अनाचार पर भोगवाद की अतिवादि इस रीति पर॥
गेहूँ के संग घुन पिस सकता है, इस कुपित उछाल से॥

किन्तु सैनिकों सा साहस ले, हमें अनय से जूझना।
विकृतियों पर और अशिव पर, रूद्रगणों-सा टूटना॥
अब तो खुलकर लड़ना होगा, विपदा से क्या काल से॥

महाकाल के इस ताण्डव संग, जो निज कदम उठायेंगे।
महाकाल के संरक्षण में, हर बाधा सह जाएँगे॥
मुक्त रहेंगे भोगवाद के, लोभ, मोह के जाल से॥

जो आलस्य प्रमाद करेंगे, पीछे ही रह जाएँगे।
महाकाल की सेना में, वे कायर कब टिक पाएँगे॥
सावधान वे ताल न हों हम, इस ताण्डव की ताल से॥

खोलो मन के द्वार

(तर्ज–सावधान हो जाओ)

खोलो मन के द्वार, कि कोई आता है।
सुनी नहीं आवाज, कपाट बजाता है॥

काम, वासना ने पहरे, ऐसे बिठाये।
उनका विरोधी कोई आने न पाये॥
ऐसे में कोई भी आये तो कैसे आये रे।
बार बार आये द्वारे, आकर लौट जाये रे॥
अन्दर तक संदेश, नहीं जा पाता है॥

स्वागत करने वाले द्वारे ऐसे बिठा दें।
स्‌दभावों के साथ उन्हें, अन्दर पहुँचा दें॥
कर ले अपने मन की, सद्‌भावों से सफाई रे।
निश्छल मन से कर ले, स्वागत की तैयारी रे॥
छल प्रपंच का भाव न, प्रभु को भाता है॥

अभिनन्दन करने को, मन का थाल सजा लें।
और आरती करने ज्ञान का, दीपक जला लें॥
प्यारा है प्रभु प्रेम भाव, मेरे भाई रे।
भाता न प्रभु को दिखावा, मेरे भाई रे॥
दुर्योधन को छोड़, विदुर घर खाता है॥

सादा जीवन उच्च विचार अपना बना लें।
मेरा कुछ भी नहीं भाव यह, मन में जगा लें॥
पायेगा प्रभु का प्यार, कोई मेरे भाई रे।
बाँटेगा सबको वही फिर, प्यार मेरे भाई रे॥
जन सेवक से ही प्रभु, रखता नाता है॥

खून के सरहदों पर

खून के सरहदों पर जलाओ दिये।
फूल बन जाओ अपने वतन के लिये॥
तुम वतन के हो सच्चे सिपाही अगर।
जान कुरबान कर दो वतन के लिये॥

प्यार की झोली में एकता के कमल,
है खिलाना तुम्हें दिल में ये सोच लो।
देश में जन्म लेगी सहकारिता,
फिर न तरसेगा कोई कफन के लिये॥

हाथ हिन्दू है और है मुसलमान दिल,
पांव सिक्ख और ईसाई है इस देश का।
एक इन्साँ के जैसा है हिन्दोस्तां,
चारों कौमे हैं इसके बदन के लिये॥

तुम खुदा को पुकारो या भगवान को,
गॉड को दो सदा या कि रहमान को।
एक है अगर एक धारा बनो,
और बह जाओ गंगा जमन के लिये॥

जन्म वीरों को देती है वो कोख से,
देती हैं कुर्बानियाँ शौक से।
दिल के माथे पे बिंदियाँ लगाती है दो,
एक वतन के लिये एक सनम के लिये॥

देश आजाद हैं और ना आजाद हम,
दुनियाँ को मिन्नत का पैगाम हम।
जब कलम हम उठायेंगे अपना ए ईश,
गीत लिख देंगे अपने वतन के लिये॥

गुरु की नज़रे करम

उनकी नज़रे करम का असर देखिये।
प्यार देता हुआ हर बशर देखिये॥

देखती तक न थी जिसको कोई नजर।
बेकरार देखने हर नजर देखिये॥

उनकी नजरें करम छा गई है जिसे।
उसको बढ़ता हुआ हर कदर देखिये॥

उनने सोना बनाया है लोहे को छू।
वह दमकता दीखेगा, जिधर देखिये॥

उनकी नजरें करम पर जिसे फक्र है।
उसको भटका इधर न उधर देखिये॥

प्यार देता दिखेगा सभी को अरे।
प्यार से छल छलाता जिगर देखिये॥

देखियेगा उसे अपना सुख बाँटते।
दु:ख बँटाने को नजरों को तर देखिये॥

बस यही है फरिस्तों की पहचान भी।
वो जिधर जाये जन्नत उधर देखिये॥

मुक्तक–

गुरु अनुशासन पाल के शिष्य होत है धन्य।
कृपा पात्र गुरु के बने, सच्चे भक्त अनन्य॥

गुरुजी की महिमा अपरम्पार

गुरुजी की महिमा अपरम्पार, कोई पावे न पार।
पावे न पार कोई पावे न पार, गुरुजी...... ॥

जन्म लिया आँवलखेड़ा में, भरती हुए राष्ट सेवा में।
जेल गये कई बार, कोई पावे न पार॥

लिखा पढ़ा स्कूल में थोड़ा, अधिक ज्ञान स्वाध्याय से जोड़ा।
रची पुस्तकें तीन हजार, कोई पावे न पार॥

मालवीय जी ने दीक्षा दीन्हीं, दादा गुरु से प्रतिभा लीन्हीं।
किये अनन्त उपकार, कोई पावे न पार॥

भेदभाव बिलकुल तज दीन्हाँ, भंगिनी कि सेवा खुद कीन्हाँ।
कियो पूर्ण उपकार, कोई पावे न पार॥

चौबीस बरस तपस्या कीन्ही, विश्वामित्र की पदवी लीन्हीं।
भयो शक्ति संचार, कोई पावे न पार।।

शान्तिकुञ्ज से मिशन बढ़ाया, जग में नव प्रकाश फैलाया।
भयो मिशन विस्तार, कोई पावे न पार॥

वीणा वादन तत्वज्ञः, श्रुति जाति विशारदः।
तालज्ञश्चाप्रयासेन, मोक्ष मार्ग नियच्छति।।

जो व्यक्ति गीत, वाद्य, श्रुति, जाति, ताल आदि में विशारद होता है, उसके लिए ही मोक्ष प्राप्ति संभव है।

–(महर्षि याज्ञवल्क्य)

गुरु अपना तप देकर

गुरु अपना तप देकर करते आये, शिष्यों का निर्माण।
वही शक्ति पाकर शिष्यो ने, किये जगत में कार्य महान॥

यम ने नचिकेता को आत्मा की, महानता बतलाई।
अनुशासित शिष्यत्व निभाया, तभी तत्व की निधि पाई॥
है दुर्लभ अन्यत्र जगत में, ऐसा आत्मा का विज्ञान॥

गढ़ा राम को गुरु वशिष्ट ने, हुआ असुर रावण का नाश।
सांदिपनि का तेज कृष्ण में, गीता का कर दिया प्रकाश॥
बदले काल इन्होंने पाकर, अपने सद्गुरु से अनुदान॥

थे चाणक्य बुद्धि के स्वामी, उन्हें चाहिए थे दो हाथ।
चन्द्रगुप्त में क्षमता पायी, लिया देशहित उसका साथ॥
राजनीति का क्षेत्र जगाया, किया राष्ट्र भर का उत्थान॥

एक बार फिर घिरा घनों से, प्यारे भारत का आकाश।
प्राणनाथ ने छत्रसाल में फूँकी नव जागृति की श्वाँस॥
रामदास ने गढ़ा शिवाजी, हुआ देश का तब कल्याण॥

रामानन्द मिले तो अनुदान, ज्ञान कबीरा ने पाया।
मीरा ने रैदास शरण पा, कृष्ण प्रेम का गुण गाया॥
नर हरिदास मिले तुलसी को, उनने किया राम गुणगान॥

फिर से महाकाल ने ऐसा, ब्रह्मकमल उपजाया है।
जिसका सविता जैसा तेजस्, भू-मण्डल पर छाया है॥
आओ धारण करें उसे हम, और करें नवयुग निर्माण॥

गुरुवर अब थामो पतवार

गुरुवर अब थामो पतवार,
सारी दुनियाँ बीच भँवर में, कौन लगावे पार॥

भवसागर की तेज धार है, और नाव में बहुत भार है।
कैसे नाव बचायें अपनी, पीछे पड़े विकार॥

लोभ मोह का बोझा भारी, काम क्रोध ने टक्कर मारी।
खेते-खेते हार गये हम, डूब रहे मझधार॥

ऐसे में अज्ञान अंधेरा, डाल रहा है अपना घेरा।
कुछ भी देता नहीं दिखाई, करो तुम्हीं उद्धार॥

मिले ज्ञान पतवार तुम्हारी, बच जायेगी नाव हमारी।
ज्ञान मशाल जला दो गुरुवर, तो हो बेड़ा पार॥

नाव बची तो गुण गायेंगे, सबको ये विधि बतलायेंगे।
हमें पार लगते देखेंगे, होंगे सभी सवार॥

यदि गायक के गले में लोच हो और वह उचित मुर्छना, आरोह, अवरोह का विचार कर साम गान करे, तो मंत्रार्थ न जानने पर भी भावों की दिव्य अनुभूति हुए बिना नहीं रहती।

-सामवेद (पृ.16)

गुरु चरणन की लगन

गुरु चरणन की लगन मोहे लागी।
गुरु चरणन की नित दरशन की॥

बीती रैन बिखर गये बादल, रे पंछी उठ जाग चला चल।
बिछ गई पथ पर ये ज्योति किरण की॥

तज दे ममता तोड़ दे बन्धन, कर दे तन मन प्रभु को अर्पण।
साध यही है तेरे जीवन की॥

आया शरण में दे दो शरण, चरण कमल सब दरपण की।
जैसे बन में पपीहा मन में, आस करे नित बसन की॥

हे दुःखहारी जग हितकारी, वह शक्ति दो भव तरणन की।
विश्व विधाता संकट त्राता, विनय सुनो अब दीनन की॥

दोहा–सेवा अपना धर्म है, सेवा ही आधार।
सद्गुरु की वाणी यही, कर दे बेड़ा पार॥

यदि गायन सुन्दर हो तो, श्रेय उन्हीं को मिलना चाहिए, जिन्होंने इनका भाषानुवाद प्रारम्भ में किया और दुबारा करने का आदेश मुझे दिया।

–परम वन्दनीया माताजी

गुरु चरणों को नमन

गुरु चरणों को नमन करें हम, गुरुसत्ता सुखधाम है।
गुरु चरणों से जीवन गति को, मिलती दिशा ललाम है॥

गुरु के चरण दिखाते राहें, भटकावों के बीच में।
गुरु के चरण बनाते राहें, अटकावों के बीच में॥
गुरु के चरण न लेने देते, क्षण भर भी विश्राम है॥

गुरु चरणों की शक्ति मिले तो, हर ठोकर बल देती है।
गुरु चरणों की शक्ति शूल के, पथ पर भी चल लेती है॥
गुरु के चरण शक्तियों का ही, अरे! अनूठा नाम है॥

चलने में लड़खड़ा रहे जो, उनमें शक्ति जगायें हम।
बढ़ने में हिचकिचा रहे जो, हिम्मत उन्हें दिलायें हम॥
गुरु के चरण प्रेरणा देते, रुकने का क्या काम है॥

गुरु चरणों में ऐसी गति है, प्रगति सिखाती रहती है।
और वही उज्ज्वल भविष्य की, ओर बढा़ती रहती है॥
गुरु के चरण सफलताओं का, उद्घोषित पैगाम है॥

जिन्हें मिला गुरु चरणों का बल, अरे! काल की गति मोड़ी।
गुरु चरणों में थिरका करती, शक्ति और शिव की जोड़ी॥
गुरु चरणों में महाकाल की, गतियों का आयाम है॥

मुक्तक-

गुरु चरणों से प्रीति बढ़ाकर, चरण बढ़ाना यदि आ जाये।
तो भटके अटके मानव का, प्रगति पन्थ फिर से खुल जाये॥
एक चरण पूरा होते ही, नये चरण को अपनायें हम।
तो इस छोटे से जीवन में, लक्ष्य अनश्वर पा जायें हम॥

गुरुवर! तुमने दिया हमें

गुरुवर! तुमने दिया हमें, 'उज्ज्वल भविष्य' का नारा।
डूब रही मानवता को यूँ तुमने आज उबारा॥

जब-जब मानवता पर बादल संकट के गहराए।
परमेश्वर मानव-तन धरकर, इसी भूमि पर आए॥
छँटे सभी घनघोर मेघ, कुछ ऐसी हवा चलाई।
यूँ अधर्म का नाश किया, फिर धर्म ध्वजा फहराई॥
परमेश्वर को राम, बुद्ध तक, जिस स्वरूप में पाया।
उसी रूप में फिर भक्तों ने गुरुवर तुम्हें निहारा॥

कर प्रयोग तन-मन पर तुमने, सब रहस्य पहचाने।
है शरीर अनमोल इसी में वैभव भरे खजाने॥
तन तो साधन है केवल, यह भेद हमें समझाया।
रहा अभागा जिसने जीवन अपने लिए गँवाया॥
तुमने जो कुछ कहा, स्वयं करके सबको दिखलाया।
कभी नहीं भूलेगी धरती, यह उपकार तुम्हारा॥

उमड़ अनास्था की आँधी ने घेरा इन्सानों को।
सिहर उठी थी मानवता लख भीषण तूफानों को॥
संस्कार से हीन हुए थे, घर परिवार हमारे।
दिशाहीन सब भटक रहे थे, बिल्कुल बिना सहारे॥
संस्कारों की परिपाटी फिर तुमने यहाँ चलाकर।
बचा लिया मिटने से प्रभुवर, यह अस्तित्व हमारा॥

भरी भीड़ में एकाकी, से सभी स्वयं को पाते।
रहे शेष धरती पर केवल क्षुद्र स्वार्थ के नाते॥
अनय और शोषण ने अपनी महाज्वाल फैलाई।
लोभ, मोह, मद ने मानव के बीच बना दी खाई॥
हे करुणा सागर हर मन में संवेदना जगाकर।
मरुथल बीज बहाई तुमने गंगा-सी रस धारा॥

मुक्तक-

जर्जर हुई मनुजता को प्रभु, तुमने फिर दे दी तरुणाई।
पथ के कांटों, अवरोधों में, ज्ञान क्रान्ति की आग लगाई॥
राह बना उज्ज्वल भविष्य की, सबको पावन लक्ष्य दिखाया।
कोटि-कोटि प्राणों ने उस पर, चलकर जीवन धन्य बनाया॥

गुरु ने बाँह हमारी थामी

गुरु ने बाँह हमारी थामी, साथ चलाने, मंजिल पाने॥

राह कठिन थी बाधाएँ थी, पग-पग पर ही विपदाएँ थी।
हारे हुए की हिम्मत बढ़ाने॥

लोभ, मोह के मोड़ कई थे, भटकाने के ठौर कई थे।
इन सबसे ही पीछा छुड़ाने॥

बीच राह में ही लुट जाते, भोग वासना से पिट जाते।
पाप-पतन से हमें बचाने॥

बाँह हमारी छोड़ न देना, आश लगी है तोड़ न देना।
जन-मंगल मंजिल तक जाने॥

गँवा दिया हमने जीवन में

गँवा दिया हमने जीवन में, धर्म और ईमान।
मिलेंगे फिर कैसे भगवान, मिलेंगे फिर कैसे भगवान॥

हमको दिया बहुत ईश्वर ने हमने नहीं सहेजा।
भूल गये किसलिए प्रभु ने, हमें धरा पर भेजा॥
कभी न मन से यहाँ सँवारा, ईश्वर का उद्यान।
किया इकट्ठा हमने केवल, अपना सुख सम्मान॥

पाई सुन्दर देह की जैसी, नहीं किसी प्राणी की।
सत्कर्मों की कभी न हमने, इससे अगवानी की॥
नहीं किसी पल आया हमको, किसी दु:खी का ध्यान।
दिया न तन से कभी किसी को, सुख सेवा का दान॥

बिन सोचे सर्वदा स्वार्थ में, अपना समय गँवाया।
धन तो बहुत कमाया लेकिन, सुख संतोष न पाया॥
लिया कष्ट में नाम राम का, किया न उसका काम।
भाग दौड़ में यहाँ बिताये, हमने आठों याम॥

श्रम का कोई अंश न बिल्कुल काम किसी के आया।
श्रम सेवा का पन्थ न हमने, कभी यहाँ अपनाया॥
किया यहाँ जो कुछ भी उसमें भरा रहा अभिमान।
नहीं सहज ही दिया किसी को, स्नेह और सम्मान॥

अपने हित चिन्तन में जीवन अब न बिताओ भाई।
तुम्हें मिली जो बुद्धि करो, अब उसमें पुण्य कमाई॥
परहित की दे हमें प्रेरणा वही श्रेष्ठ सद्ज्ञान।
है कुबुद्धि वह जिससे होता नहीं लोक कल्याण॥

गुरुवर अपनी नाव

गुरुवर अपनी नाव बिठा लो।
बिना नाव हम तर ना सकेंगे, डूब न जायें पार उतारो॥

अतल सिन्धु की है गहराई, है अदृश्य उसकी लम्बाई।
उफनाता भव सिन्धु देखकर, अपनी हिम्मत तो चकराई॥
अब जीवन का भार सम्भालो, गुरुवर अपनी नाव बिठा लो॥

षड विकार की भारी गठरी, छोड़ी नहीं जा रही फिर भी।
बोझा भी कम साथ नहीं है, लाद रखा है मन ने फिर भी॥
तुम तो अपनी नाव चढ़ा लो, गुरुवर अपनी नाव बिठा लो॥

तुम तो निर्विकार हो गुरुवर, फिर विकार से तुमको क्या डर।
ये सब अपने आप मरेंगे, कृपा कटाक्ष आपके पाकर॥
इन पर कोप दृष्टि तो डालो, गुरुवर अपनी नाव बिठा लो॥

बिना तुम्हारे डूब मरेंगे, जनम-जनम तक नहीं तरेंगे।
उतराई में गठरी ले लो, पार लगा दो याद करेंगे॥
सारे दुर्गुण दोष निकालो, गुरुवर अपनी नाव बिठा लो॥

नाम तुम्हारा सुनकर आये, तुमने अनगिन पार लगाये।
घाट-घाट पर हम भटके हैं, अब तो घाट आपके आये॥
शरण पड़े अब पार लगालो, त्राहिमाम्! गुरुदेव बचा लो॥

गुरुदेव जब पास खड़े

गुरुदेव जब पास खड़े, मैं आस करूँ किसकी किसकी।
जब बाँह गही गुरुदेव मिले, तब बाँह गहूँ किसकी किसकी॥

जब नाथ मेरे दिलदार मिले, मैं खोज करूँ किसकी किसकी।
जब रूप अनूप छटा उनकी, छवि और लखूँ किसकी किसकी॥

जब प्रीति अपार लखी उनकी, फिर प्रीति चहूँ किसकी किसकी।
जब बाँकि अदा ही सदा उनकी, फिर प्रीति चहूँ किसकी किसकी॥

जब दासि भई शरणे उनकी, फिर शरण गहूँ किसकी किसकी।
जब चरण शरण गुरुदेव मिले, फिर शरण चहूँ किसकी किसकी॥

गँवाओ व्यर्थ मत होता

गँवाओ व्यर्थ मत होता, समय अनमोल है साथी॥

इसे सोकर गुजारो मत, इसे रोकर गुजारो मत।
दुःखों से आँसुओं से, जिन्दगी धोकर गुजारो मत॥
लड़े, संघर्ष से जो काट दे, दुःख से भरी रातें।
उसी की आँकती दुनियाँ, सदा ही मोल है साथी॥

बढ़े जाओ कटीली राह पर, मंजिल बुलाती है।
जगाती आज तुमको लो, नये युग की प्रभाती है॥
समय के साथ चलने में, सदा ही सार्थकता है।
धरा के श्रेष्ठ पुरुषों के, यही तो बोल है साथी॥

गंगा गायत्री दोनों का

गंगा गायत्री दोनों का पतित, पावनी नाम है।
कोटि–कोटि जन का दोनों को, बारम्बार प्रणाम है॥

सगर सुतों के हित भागीरथ, गंगा भू पर लाये थे।
जन हित में सहयोगी बनने, शिवजी आगे आये थे॥
जन पीड़ा हरने को हिमनग, गलता आठो याम है॥

गंगा दशमी को गायत्री का भी, उर द्रवित हुआ।
जन मानस अज्ञान ग्रसित था, तब ज्ञानामृत स्त्रवित हुआ॥
आज ज्ञान गंगा के भगीरथ, गुरुवर श्रीराम है॥

भागीरथ सा तप गायत्री की, करुणा को पिघलाया।
और ज्ञान गंगा को घर–घर, जिनके तप ने पहुँचाया॥
मानवता को मुक्ति दिलाने, जिसका तप निष्काम है॥

गायत्री के चिर साधक ने, इस दिन महाप्रयाण किया।
सुक्ष्म और कारण सत्ता ने, लेकिन यह विश्वास दिया॥
जब तक स्वर्ग न बनता वसुधा, शान्तिकुञ्ज ममधाम है॥

वेद है ज्ञान साम है गान। गान का सीधा–सीधा सम्बन्ध भाव संवेदना से है। –सामवेद

गुरुवर कोई नहीं है

गुरुवर कोई नहीं है, जो हमको दे सहारा।
तेरे सिवा जगत में, कोई नहीं हमारा॥

मेरे ही प्राण हो, मेरे ही स्वांस तुम हो।
मेरे ही कर्म तुम हो, मेरे ही धर्म तुम हो॥
भटका हुआ मैं कब से, खोजा करूँ दुआरा॥

इन द्रुत गति क्षणों में, किसको समय कहाँ है।
पल पल में धोखा देकर, बढ़ता कौन कहाँ है॥
ऐसे भ्रमित क्षणों में, दे दो मुझे सहारा॥

सुख के क्षणों में सब हैं, रावण सभी यहाँ हैं।
लेकिन दुखित क्षणों में, साथी कोई नहीं है॥
मूर्छित पड़ी है दुनियाँ, उसका करो उद्धारा॥

न पद की हो चिन्ता, न धन की हो चिन्ता।
धन-पद ही तो सब कुछ, भवसागर में नचाता॥
इस कुचक्र से लड़ने का, मेरा बनो सहारा॥

संगीत न केवल विद्या है वरन् एक महाशक्ति भी है।
वाङ्मय १९ पृ. ६.३९

गुरु तेरे चरणों में

गुरु तेरे चरणों में, सत्-सत् नमन।
कृपा दृष्टि आपकी मिले हरदम॥
जब से मैं दुनियाँ में आया झमेला-झमेला।
गुरु महिमा सुना तो, दौड़ा चला आया॥
काँटे भरी डगर है, खिला दे सुमन॥
तुम्हें पाकर प्रभु जी, कहाँ अब मैं जाऊँ।
अपने दिल की व्यथा को, किसे मैं सुनाऊँ॥
महाकाल के अवतार, मिटा दे पीड़न॥
शान्ति शीतल मिलते है, गुरुदेव के नाम में।
लगन आपका लगाया तो, बैठा मिला पास में॥
बस हाथ थाम लें, सफल हो जीवन॥

गुरु चरण में जब

गुरु चरण में जब मेरा मन होगा।
तब ही सफल मेरा जीवन होगा॥
बचपन बीता खेल में, जवानी में तू फूला रे।
माया का गुलाम बना, राम को तू भूला रे॥
आयेगा बुढ़ापा नहीं सुमिरन होगा॥
यह तन का नहीं कोई भी ठिकाना रे।
आज नहीं तो कल सबको है जाना रे॥
यह तन चिता का, जलावन होगा॥
प्रेम से पुकार करो हरि को अपना लो रे।
गुरु जी को अपने हृदय में बसालो रे॥
लगन बिना नहीं दर्शन होगा॥

गायत्री की पुण्य जयंती

गायत्री की पुण्य जयंती, यूँ इस बार मनाएँ।
जाग जाएँ जिससे जन-जन, में नव उमंग-आशाएँ।।

आज विसंगतियाँ फैली हैं, भारी हुई हवाएँ।
घिरी समस्याओं से दुनियाँ की अब सभी दिशाएँ।।
युगऋषि द्वारा दिये गये हम सूत्र उन्हें समझाएँ।।

जिनके तप ने गायत्री को जन-जन तक पहुँचाया।
मुक्त कराकर उस विद्या को सबको सुलभ बनाया।।
सर्वसुलभ शिक्षाएँ उनकी, हम सब भी अपनाएँ।।

पहले हम प्रामाणिक बनकर, स्वयं सामने आएँ।
तेजोमय हो सभी हमारे, चिंतन -भाव क्रियाएँ।।
गायत्री विद्या को अपना सब आधार बनाएँ।।

जन्मशताब्दी में विद्या का भाव समाहित होगा।
तब समाज में स्वतः परिष्कृत प्राण प्रवाहित होगा।।
दूर सभी होंगी दुनियाँ में व्याप्त विषम विपदाएँ।।

मुक्तक-
गायत्री की आज जयंती, गंगा का अवतरण दिवस है।
गुरुवर का यह ध्यान पर्व डूबा, जिसमें तन, मन सर्वस्व है।।

गुरु का शक्ति-प्रवाह बह

गुरु का शक्ति–प्रवाह बह रहा, अब इससे जुड़ जाएँ हम।
करें भगीरथ के जैसा तप–उन जैसे बन जाएँ हम।।

भागीरथी और गायत्री का अवतरण हुआ इस दिन।
थी मृतप्राय मनुजता, प्राणों का संचरण हुआ इस दिन।।
सुधा–बिन्दु पाकर उनसे फिर प्राणवान बन जाएँ हम।।

ऋषि ने तप से किया मुक्त, गायत्री रही न बन्धन में।
पहुँची देश–देश, घर–घर में, संपन्नों में निर्धन में।।
इस प्रभाव को शेष जनों तक भी निश्चित पहुँचाएँ हम।।

करें साधना हो सशक्त, ठहरें न कहीं बाधाओं में।
दृष्टि स्वच्छ हो, जिससे पल भर भ्रमित न हों भटकावों में।।
सर्वप्रथम व्यक्तित्व स्वयं का पावन प्रखर बनाएँ हम।।

ऋषि का शक्ति–प्रवाह हमें हर कोने तक पहुँचाना है।
युग के महत्कार्य में जनसहयोग सभी से पाना है
इसके लिए सशक्त संगठन मिलकर अभी बनाएँ हम।।

मुक्तक–
गुरुवर ने तप धार बहाई, हम उसमें स्नान करें।
गुरु की परम्परा अपनाकर, सफल दिव्य अभियान करें।।

गुरुवर के अनुपम अनुदानों

गुरुवर के अनुपम अनुदानों का वह ही अधिकारी है।
गुरु को अर्पित जीवन जिसका, और इच्छाएँ सारी है॥

लिए सुदृढ़ साहस गुरुकार्यों हित जो बढ़ता ही जाता।
लक्ष्य करने पूर्ण गुरु का, जो तूफानों से टकराता॥
पथ गुरु का दुर्गम चलने की, जिसने की तैयारी है॥

सुख सुविधा पद नाम यश से हुई न इच्छा यदि पूरी।
है समर्पण कहाँ गुरु को? श्रद्धा भी रह गई अधूरी॥
रहती गुरु से दूरी जब तक पीर न जग की प्यारी है॥

अनुदानों की शर्त यही है, हो अनुशासित जीवन अपना।
दर्द गुरु का बँटा सके जो पूर्ण करे उनका हर सपना॥
आदर्शों के हित मिट जाने का जो भी व्रतधारी है॥

ज्यों होती है पोली बंशी रिक्त स्वयं को कर लें हम।
कर समर्पित हृदय की वीणा शाश्वत स्वर फिर भर लें हम॥
पाने शक्ति गुरु की करनी, हमें यही तैयारी है॥

करुणा के सागर हैं वे भवरोगों के उपचार भी।
योगक्षेम वाहक हैं गुरुवर खेयेंगे पतवार भी॥
अर्पित उनके हाथों में जीवन की नाव हमारी है॥

मुक्तक–

तन मन जीवन सब कुछ गुरु का जिसने मन में ठान लिया।
स्वर्ग मुक्त का सच्चा पथ तब उस साधक ने जान लिया॥

गुरुदेव! नये युग का

गुरुदेव! नये युग का, प्रहरी हमें बनाना।
निर्माण के सुपथ पर, आगे हमें बढ़ाना॥

कठिनाइयों, दु:खों की, हम होलिका जला दें।
लें साँस चैन की सब, ऐसा चलन चला दें।
सबको सुखी बनाये, गुरुमन्त्र वह सिखाना॥

रह पाये ना अन्धेरा, संसार में या मन में।
हम सूर्य बन के चमकें, अन्तर में औ गगन में।
जीवन का ध्येय हो बस, फैला तिमिर हटाना॥

हम दे सकें सभी को, धन सत्य विचारों का।
यों पथ बुहार दें हम, बढ़ आज हजारों का।
इस हेतु तुम हमारी, प्रज्ञा प्रभो जगाना॥

सन्देश हम तुम्हारा, पहुँचायें घर-डगर में।
देवत्व जगा दें हम, बढ़कर हरेक नर में।
ऐसा सशक्त प्रतिनिधि, अपना हमें बनाना॥

तालो घन प्रोक्ताः कला-पात-लयन्तितः।
कलास्तस्य प्रमाणं वै, विज्ञेयं तालयोक्तृभिः।।

अर्थात् कला, पात और लय से युक्त जो काल का विभाग या परिमाणात्मक प्रमाण जो घन वाद्य के वर्ग में आता है, ताल कहलाता है।

गुरुवर का चिंतन छाया है

परिवर्तन का समय आ गया, जोश भरा जन–जन में।
गुरुवर का चिंतन छाया है, धरती और गगन में।।

गुरुवर ने हम सबका जीवन, धोया और सँवारा।
हम सब मिलकर कार्य करेंगे, अनुशासन में सारा।।
फूल खिलायेंगे खुशियों के, हम सब जग उपवन में।।

कदम नहीं अब हटेंगे पीछे, 'लाल मशाल' लिये हैं।
दुष्प्रवृत्तियाँ दूर करेंगे, संजीवनी पिये हैं।।
ज्ञानयज्ञ की ज्योति जल रही, वसुधा के कण–कण में।।

चिंतन और चरित सुधरेगा, आत्म–सुधार करेंगे।
गाँव–नगर हर शहर–डगर में, चिंतन दीप जलेंगे।।
ज्ञान–कर्म का संगम होगा, पावन जन–जीवन में।।

कलाकार, कवि, गायक, वक्ता, सृजन करेंगे मिलकर।
अह्लादित होगी धरती, आयेगा स्वर्ग उतरकर।।
ऋषियों के आदर्श दिखेंगे, घर–घर, हर आँगन में।।

नकारः प्राणानामानं दकारमनलं विदुः।
जातः प्राणाग्नि संयोगात्तेन नादऽभिधीयते।।

(संगीत रत्नाकर)

गुरुवर ऐसी शक्ति हमें दो

गुरुवर ऐसी शक्ति हमें दो, सच्चे शिष्य कहाएँ हम।
नवयुग के इस नए सृजन में, सहयोगी बन जाएँ हम॥

हमने किया प्रचार अभी तक, नगर गाँव-गलियारों में।
यज्ञ और गायत्री पहुँचे घर-आँगन-चौबारों में॥
यह था पहला चरण वंन्दिनी माँ पहुँची सन्तानों तक।
ऐसी दो सामर्थ्य कि पहुँचे, हम अगले सोपानों तक॥
महाकाल के महाकार्य के, उपयोगी बन जाएँ हम॥

ऐसी देना दृष्टि न पल भर, लक्ष्य आँख से ओझल हो।
हर सूखी धरती पर झरता, भावों का गंगाजल हो॥
ऐसी देना शक्ति कि साहस, कभी नहीं चुकने पाए।
देख विघ्न अवरोध पाँव की, गति न कहीं रूकने पाए॥
कहीं सघन शीतल अमराई, देख नहीं ललचाएँ हम॥

ऐसा भरना भाव कि जग का, मन कृतज्ञ बनता जाए।
सारा जीवन बने साधना, कर्म यज्ञ बनता जाए॥
हम पदार्थ की आहुति से, सुख की आहुति देना सीखें।
हम समाज के अगणित मनकों में, हीरे जैसे दीखें॥
प्रभु की अनुकम्पा से सागर, पर पत्थर तैराएँ हम॥

गायत्री की शरणा गति से, कायाकल्प हमारा हो।
मन का मंगलमय विचार तब, दृढ़ संकल्प हमारा हो॥
रोम-रोम में, मन प्राणों में, उसका तेज झलकता हो।
वह चरित्र चिन्तन में बनकर, स्वर्णिम सूर्य दमकता हो॥
उसका सही स्वरूप मनुजता को, साक्षात दिखाएँ हम॥

गुरु चरणों में मन मेरे

गुरु चरणों में मन मेरे, पायेगा विश्राम।
सद्गुरु चरण धाम हैं सुख के, परम दिव्य अभिराम॥

गुरु के वचन अमृत हैं, रख अटूट विश्वास।
अपना सद्गुरु हर पल प्यारे, रहता अपने पास॥
सद्गुरु की स्मृति अति पावन, पावन सद्गुरु नाम॥

सद्गुरु अपने स्वजन–सनेही, सद्गुरु जीवन प्राण।
कौन दिलाये बिन सद्गुरु के, हमें दुःखों से त्राण॥
सद्गुरु ने ही सदा बनाये सारे बिगड़े काम॥

दिव्य प्रेरणा देकर सद्गुरु, पूरी करते चाह।
ज्ञानामृत का पान कराकर, वही दिखाते राह॥
सद्गुरु का चिन्तन करने से ही मिलता आराम॥

तनिक विचारो अपने सद्गुरु, कैसे परम उदार।
माता–पिता और सद्गुरु, तीनों का देते प्यार॥
स्नेह लुटाकर नित्य, निरन्तर हरते कष्ट तमाम॥

गुरु पूर्णिमा आज शिष्यों में, भरती गुरु की भक्ति।
गुरु के पद्चिन्हों पर चलने की देती है शक्ति॥
गुरु के लिए समर्पित रहकर कर्म करें निष्काम॥

गुरुवर महान गुरुवर सुजान

गुरुवर महान, गुरुवर सुजान, गुरु स्वयं बन गये महाकाल।
गुरुपूर्ण मुक्ति, गुरु दिव्य शक्ति, ब्रह्माण्ड गुरु के दिव्य भाल॥
जय महाकाल, जय महाकाल॥

गुरु का हृदय बहुत कोमल है, भाव शिष्य में भरते हैं।
कड़े हाथ अन्दर रखकर के, शिष्यों को गुरु गढ़ते हैं॥
गुरुवर कुम्हार, गुरुवर लुहार, गुरु से चलती है सृष्टि चाल।
गुरु राम रूप, गुरु कृष्ण रूप, गुरु शिष्यों की बनते हैं ढाल॥

गुरु चरणों में ध्यान जो धरते, शिष्य धन्य हो जाते हैं।
गुरु कसौटी में कसकर वे, आत्मा को चमकाते हैं॥
गुरुवर सुनार, गुरुवर लुहार, गुरुवर पहनाते विजय माल।
गुरु सूर्य रूप, गुरु सत्य रूप, गुरु शिष्यों के रक्षक विशाल॥

पूर्ण समर्पण जो करते हैं, दु:ख को गुरु हर लेते हैं।
राह दिखाते हर पल, हर क्षण, चरणों में रख लेते हैं॥
गुरु शान्तिकुञ्ज, गुरु सूर्यपुञ्ज, गुरु कष्ट मिटाते बन कराल।
गुरु रामकृष्ण, गुरुवर कबीर, गुरु सृष्टिगान की दिव्य ताल॥

गुरु के निर्देशों में जीवन, शिष्य नहीं जो जीते हैं।
मुक्ति दूर कोसों रह जाती, कष्ट अनेकों सहते हैं॥
गुरु स्वर्ग लोक, गुरु दिव्य लोक, गुरु वक्र दृष्टि के महाकाल।
गुरु चरण स्वर्ग, गुरु चरण मुक्ति, गुरुवर भक्तों के महाकाल॥

मुक्तक–

गुरु की पावन महिमा को जो हर पल, हर क्षण ध्यान धरे।
जीवन लक्ष्य उसे मिल जाये वह जग का कल्याण करे॥

गंगाजल बहता उत्तर से

गंगाजल बहता उत्तर से, पूरब तक सीमाओं में।
नवयुग की गंगत्री का जल, बहता दसों दिशाओं में॥

किया भगीरथ ने भारी तप गंगा भू पर लाने को।
सगर-पुत्र निष्प्राण पड़े थे, उनमें प्राण जगाने को॥
प्रश्न उठा-गंगा की तूफानी गति कौन संभालेगा।
ध्वंस हुआ यदि प्रबल वेग से, कौन उसे तब टालेगा॥
सुरसरिता को मिला सहारा,शिव की जटिल जटाओं में॥

युगऋषि ने तप किया शुष्क मानव-मन को सरसाने को।
मरणासन्न मनुजता में फिर प्रखर प्राण लहराने को॥
शंकर बनकर स्वयं ज्ञान-गंगा का वेग सँभाला था।
कोटि-कोटि मन की माटी को नए रूप में ढाला था॥
जादू जैसा असर भरा गुरुसत्ता की शिक्षाओं में॥

उत्तर से दक्षिण तक इसकी पावनता लहराई है।
पूरब से पश्चिम तक इसने जन-चेतना जगाई है॥
मानवता मूर्च्छित न रहेगी कहीं किसी भी कोने में।
नहीं गँवाएगा कोई भी समय जिंदगी ढोने में॥
नया जोश-उल्लास भरा है जाग्रत जिजीविषाओं में॥

ऋषि चिंतन की सुधा-धार का जन-जन में संचार हुआ।
अखिल विश्व की सीमाओं तक गायत्री परिवार हुआ॥
तपन अछूती रह न सकेगी अब इसकी शीतलता से।
घुटनभरा मन अधिक न रह पाएगा घिरा विकलता से॥
आशा की दामिनी निरंतर चमकी घोर घटाओं में॥

गुरु चरणन मन भाये

गुरु-चरणन मन भाये, गुरु चरणन ही सुहाये।
उठत-बैठत, सोवत-जागत, गुरु छवि सदा सुहाये॥

अंग-अंग के रोम-रोम में, गुरुवर छवि हर्षाये।
गुरु भक्तों की रक्षा करने, गुरु बादल बन छाये।
गुरु चरणन मन भाये॥

शांतिकुंज के ध्यान में डूबूँ, गुरु सागर लहराये।
गुरुमय है यह जगत ये दुनियाँ, गुरु अंत में समाये।
गुरु चरणन मन भाये॥

गुरु हमारे पिता बंधु सब, गुरु माता संग आये।
जो समझो इस गूढ़ ज्ञान को, जन्म सुफल होई जाये।
गुरु चरणन मन भाये॥

गुरु चरणन में ब्रह्मज्ञान है, गुरु भक्तों को उठाये।
निर्मल मन हो जिन शिष्यों का, गुरु ही हृदय लगाये।
गुरु चरणन मन भाये॥

गुरु के चरण प्रखर प्रज्ञा है, श्रद्धा सजल कहाये।
गुरु पूर्णिमा महापर्व में, श्रद्धा सुमन चढ़ायें॥
गुरु चरणन मन भाये॥

गंगा बन्दी थी सुरपुर में

गंगा बन्दी थी सुरपुर में, भागीरथ ने मुक्त कराया।
भागीरथ का ही प्रचण्ड तप, मृत्युलोक में सुरसरि लाया॥

गंगा बन्धन मुक्त हो गई, राजा, रंक सभी को तारा।
पतित और पावन दोनों के लिए, खुल गया उसका द्वारा॥
इतना ही क्यों, निज प्रवाह को कोटि-कोटि जन तक पहुँचाया॥

पतित पावनी गायत्री भी, कीलित ही मानी जाती थी।
कुछ विशिष्ट लोगों द्वारा ही बना ली गई निज थाती थी॥
पर गुरुवर के प्रचण्ड तप ने, जन-जन को उपलब्ध कराया॥

अब 'गायत्री' विश्वव्यापिनी, आदिशक्ति होती जाती है।
ऊँच-नीच का भेद भुला करके, पातक धोती जाती है॥
गुरुवर श्रीराम शर्मा ने, युग भागीरथ का यशपाया॥

आओ! नमन करें गंगा के, गायत्री के भागीरथ को।
श्रद्धा सुमन चढ़ाएँ आओ! कोटि-कोटि जन उद्धारक को॥
उनको गायत्री जयन्ती पर, गायत्री ने गले लगाया॥

नाद के "आहत" और "अनाहत" दो भेद हैं। आघात या घर्षण से उत्पन्न प्रत्यक्ष सुनाई देने वाला नाद "आहत" और स्वम्भू या अन्तर में अनुभव किया जाने वाला नाद "अनाहत" है। इसमें अनुकरण युक्त रंजक "आहत नाद" ही संगीतोत्पत्ति का मूल कारण है।

गायत्री गुरु मंत्र सनातन

गायत्री गुरु मंत्र सनातन, गुरु गायत्री रूप है।
युगऋषि की माँ गायत्री की, महिमा अकथ अनूप है॥

प्राण और काया का संगम, ही जीवन कहलाता है।
प्राण भटक जाए तो जीवन, भार रूप हो जाता है॥
है गायत्री विद्या जो प्राणों का त्राण कराती है।
भटके अनगढ़ जीवन को भी, देवो तुल्य बनाती है॥
जो जीवन का मर्म न समझे, वही कूप मण्डूक है।

गुरु सत्ता भी साधक को, जीवन लक्ष्य दिखाती है।
जो मानें अनुशासन उसका, मंजिल तक पहुँचाती है॥
दोनों का है कार्य अनूठा, प्राणों को सद्गति देना।
जो बाधा बनकर आते हैं, उन दोषों को हर लेना॥
जो साधें इनका अनुशासन, सच्चा वही सपूत है॥

गुरुवर ने जीवन भर सबको, गायत्री से जोड़ा है।
साधक पथ की बाधाओं को, निज तपबल से तोड़ा है॥
गायत्री विद्या को पाया, साधा और पचाया है।
जो जीवन रस निकला उसको,जन-जन तक पहुँचाया है॥
भवरोगों की औषधि दी जो, रोचक और अचूक है॥

जीवन को मथ दिया इष्ट में, जैसे चन्दन में पानी।
खुद तप कर जग का हित साधा, जीवन नीति यही मानी॥
माँ के चरणों तक सब पहुँचें, मार्ग अनूठा बना गए।
माता के अवतरण दिवस पर, खुद भी उनमें समा गए॥
ज्यों सविता का तेज सुपावन, उनका वही स्वरूप है॥

चलना सिखा दिया है

चलना सिखा दिया है, गलना सिखा दिया है।
घनघोर आँधियों में, जलना सिखा दिया है॥

हमको मिला हुआ है, गुरुदेव का महाबल।
माँ ने हमें दिया है, अपना पुनीत आँचल।
इस प्यार के सहारे, ढलना सिखा दिया है॥

सुख–दु:ख यहाँ है दोनो, मैदान और दल–दल।
संसार एक पथ है, जिसमें न फूल केवल।
काँटों भरी डगर में, चलना सिखा दिया है॥

चारों तरफ पड़े हैं, छल–छद्‌म पाँव डाले।
आस्तीन में छिपे हैं, अपने ही नाग काले।
उनकी चुनौतियों को, दलना सिखा दिया है॥

फूलों की सेज के तो, इच्छुक सभी यहाँ पर।
लेकिन प्रकाश के कण, दिखते नहीं कहीं पर।
भीषण अभाव में भी, पलना सिखा दिया है॥

साधन भरे पड़े हैं, पर साधना नहीं है।
भगवान तो वही हैं, आराधना नहीं है।
अपनी उपासना को, फलना सिखा दिया है॥

मुक्तक–

जीवन कला सिखाई हमको, कैसे जीवन को जीना है।
चलते रहना है सद्‌पथ पर, संघर्षों का विष पीना है॥
केवल सुख ही नहीं यहाँ पर अनचाहे दु:ख भी मिलते हैं।
साहस के धागों से जीवन की फटती चादर सीना है॥

चारो दिशा में फैलाये दियो रे

चारो दिशा में फैलाये दियो रे, युग निर्माण ऐसा।

हरिजन को मंदिर में जाना मना था,
मुस्लिम के हाथों का खाना गुनाह था।
तो घर-घर को मंदिर बनाय दियो रे, गढ़ा भगवान ऐसा॥

नारी को अबला कहा जा रहा था,
मासुमियत को ठगा जा रहा था।
उसी देवी की शक्ति दिखाय दियो रे, रचा अभियान ऐसा॥

ये धरती रसातल को जा रही थी,
धरा खण्ड खण्ड बँटी जा रही थी।
मानवता का बाँध बनाय दियो रे, खोजा विज्ञान ऐसा॥

चलो हम सभी इस कड़ी को बढ़ायें,
ऋषि संतान है सत्य करके दिखायें।
क्योंकि दुनियाँ की आन बचाय दियो रे, दिया बलिदान ऐसा॥

''बसन्तः प्राणायनो गायत्री बासन्ती।''
गायत्री वह है जो बसन्त में गायी जाती है। और गाने वाले की रक्षा करती है। वाङ्मय १९ पृ. ३.२५

चलो! गुरु ज्ञान का दीपक

चलो! गुरु ज्ञान का दीपक, हमें घर–घर जलाना है।
अँधेरे से डरें हैं जो, उन्हें हिम्मत बँधाना है॥

अन्धेरी रात पा करके, निराशा ने जिन्हें घेरा।
निराशा में जमाना चाहते, पीड़ा पतन डेरा॥
नहीं वे सोच पाते हैं लड़ें कैसे अन्धेरे से।
निकल पाते निराशा के, न जब तक क्रूर घेरे से॥
करिश्मा ज्ञान की शुभ ज्योति का उनको बताना है॥

अरे! क्यों हारते हिम्मत, अँधेरा कब सदा रहता।
सुबह की ही प्रतिक्षा में, इसे संसार सह लेता॥
कहीं सूरज निकलने की, सुनिश्चित ही तैयारी है।
सुनों हरदम अँधेरा ही न, किस्मत में तुम्हारी है॥
तिमिर से जूझने की भोर तक, हिम्मत दिखाना है॥

न घबराओ! पतन पीड़ा, पराभव से तनिक भाई।
समय इनका निकट है, अन्त होने की घड़ी आई॥
कि युग ऋषि ने पुनः देवत्व मानव का जगाया है।
दनुजता को मिटाने का, अरे बीड़ा उठाया है॥
निराशा छोड़ दो मन में तुम्हें आशा जगाना है॥

नयायुग आ रहा है, फिर निराशा टिक न पायेगी।
नगर में, गाँव में, घर में, अँधेरी दिख न पायेगी॥
उदय होगा नये दिनमान का पथ जगमगायेगा।
यही दीपक, हमें गुरु ज्ञान, सूरज से मिलायेगा॥
यही है, सूर्य का प्रतिनिधि इसे, साथी बनाना है॥

चलो रे भाई दीपक

चलो रे भाई दीपक यज्ञ करें॥

नगर-नगर में गाँव-गाँव में, चलकर धूम मचा दें।
युग निर्माण योजना की, आवश्यकता समझा दें॥
दीपयज्ञ की ज्योति निराली, घर घर में बिखरें॥

अपना सभी सुधार करें तो, सुधर जाय जग सारा।
घर-घर दीप जले, मिट जाये घर-घर का अंधियारा॥
दीप से दीप जलाकर भाई, दीपक दान करें॥

तन चाहे श्रम से मैला, पर न रहे मन मैला।
फैलायें सद्‌भाव प्रेम से, छोड़ प्रपंच झमेला॥
ऊँच-नीच का भेद छोड़कर, सबसे प्रेम करें॥

छोड़ अंध विश्वास रूढ़ियाँ, आगे कदम बढ़ायें।
कुरीतियों और कुप्रथाओं से, पीछा सभी छुड़ायें॥
बुद्धि उचित समझें जिसकी, उसका सम्मान करें॥

मिल जुलकर पुरुषार्थ करें और, बिगड़ी दशा सुधारें।
सब ही मिलकर भारत माँ को, स्वर्ग समान बनायें॥
दीपयज्ञ में देववृत्ति का, शंखनिनाद करें॥

चलनी में दूध लगाता है
(धुन-नर से नारायण)

चलनी में दूध लगाता है, तो दूध सभी बह जाता है॥

कैसा भी तन हो कसा हुआ, भोगों में हो पर फँसा हुआ।
तो गन्ने सा पिल जाता है, ...चलनी में दूध लगाता है।।

कितना ही धन हो पास मगर, बरबादी का हो आदि अगर।
खर्चा अजगर बन जाता है, ...चलनी में दूध लगाता है।।

कितना ही लम्बा जीवन हो, आलस्य, प्रमादों का क्रम हो।
जाता है, जैसा आता है, ...चलनी में दूध लगाता है।।

आता जिसको व्यवहार नहीं, पाता है वह तो प्यार नहीं।
घर में भी उपेक्षा पाता है, ...चलनी में दूध लगाता है।।

पढ़ लिखकर भी कड़वी वाणी, जैसे हो सागर का पानी।
जो गले उतर ना पाता है, ...चलनी में दूध लगाता है।।

दोषों के रहते व्यर्थ मनुज, कर सकता घोर अनर्थ मनुज।
दुर्गुण राक्षस कहलाता है, ...चलनी में दूध लगाता है।।

हम दोष, दुर्गुणों को छोड़े, अपने को सद्गुण से जोड़े।
देवत्व उदय हो जाता है, ...चलनी में दूध लगाता है।।

चुभन सहकर भी उगाने

चुभन सहकर भी उगाने फूल, पथ पर जो चला है।
पास उसके ही सुखद जीवन, बिताने की कला है॥

जो किया करता उपेक्षा, खन्दको वाली घुटन की।
औ नहीं परवाह करता, जो कसौटी की तपन की॥
स्वर्ण बन संसार में वह, धैर्यशाली ही ढला है॥

जो किया करता सतत् संघर्ष, पथ की उलझनों से।
और भरता माँग जीवन, की अपेक्षित साधनों से॥
दर्प बाधा विघ्न का उस, आदमी ने ही दला है॥

हर सफलता के लिए, व्यवधान आते राह में हैं।
जीत उनको ही मिले, आनन्द ऐसी चाह हैं॥
साहसी के मार्ग का हर विघ्न, भय खाकर टला है॥

यों सुकृत कर जिन्दगी को, जो मनुज सुन्दर बनाते।
वे विवेकी और पुरूषार्थी, सदा सम्मान पाते॥
आँधियों से जो लड़ा दीपक, सुबह तक वह जला है॥

यों करो कुछ और सबकी, जिन्दगी सुन्दर बनाओ।
प्यार की मृदु गंध वाले, फूल उपवन में खिलाओ॥
जो जिया ऐसे सही ढंग, से वही समझो पला है॥

चैन आता नहीं प्यार

चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना,
क्या करूँ प्यार की धार रूकती नहीं।
कौन कितना अभी तक इसे पी सका,
यह पता तो नहीं किन्तु चुकती नहीं॥

स्नेह के स्रोत से टूटते हर समय,
छल-छलाकर छलक छूटते हर समय।
कोई लूटे न लूटे कहो क्या करूँ,
हम लुटाकर मजा लूटते हर समय॥
जीत ही जीत है बाँटने में सदा,
एक क्षण द्वार पर हाथ रूकता नहीं॥

यह पता है कि प्यासे बहुत हैं अभी,
प्यार के बिन उदासी बहुत हैं अभी।
प्यार के नाम पर लूट ही लूट है,
इस तरह के तमाशे बहुत हैं अभी॥
है जरूरत जहाँ वस्तुतः प्यार की,
प्यार की धार एक बार रूकती नहीं॥

इसलिए प्यार की धार बहती सदा,
हर समय धार हर बार सहती सदा।
यह उतर जाये हर प्यास के पंथ में,
प्यार की धार की साथ रहती सदा॥
देखकर हर तड़पती उन्हीं प्यास को,
प्राण से प्रीति बौछार रूकती नहीं॥

प्यार की धार तो खेलती प्राण पर,
बूँद टिकती नहीं शुष्क पाषाण पर।
प्यास की पीर से जो पिघलने लगे,
क्यों नहीं वह हृदय आज इन्सान पर॥
कोई उर्वर धरा तो न प्यासी रहे,
इसलिए यह द्रवित धार रूकती नहीं॥

चोट पर चोट अब

चोट पर चोट अब और मत दो, हम बहुत चोट खाये हुए हैं।
अब गिरे को न फिर से गिराओ, हम बहुत ही गिराये हुए हैं॥

खोजते-खोजते तुम मिले हो, तुम मिले जिन्दगी मिल गई है।
वह कली जो कि मुरझा गई थी,फूल बनकर के अब खिल गई है॥
तुम बुलाते ही क्यों, इसलिए हम, बिन बुलाये ही आये हुए हैं॥

भीख दे दो भिखारी खड़े हैं, मुस्कुरा दो यही याचना है।
हम तुम्हें पा सकें हर जनम में, बस यही एक आराधना है॥
मत सताये को इतना सताओ, हम बहुत ही सताये हुए हैं॥

बस तुम्हें पूजते ही रहें हम, दान यह माँगते ही रहेंगे।
हमको जो कुछ भी जब भी है कहना,जब कहेंगे तुम्हीं से कहेंगे।
मत लजाये को इतना लजाओ, हम बहुत ही लजाये हुए हैं॥

और कोई न अपना हमारा, हर किसी ने है जीभर के लूटा।
हर कहीं हम सताये गये हैं, भाग्य ही था हमारा जो फूटा॥
हम अभागे पंतगे वही जो, दीपकों के जलाए हुए हैं॥

चिंतन जिनका अतिशय पावन

चिंतन जिनका अतिशय पावन, अतिशय पावन नाम।
शिव स्वरूप उन सद्गुरु को है, बारम्बार प्रणाम।।
सद्गुरु बारम्बार प्रणाम, गुरुवर शत्-शत् तुम्हें प्रणाम्।।

जन्म शताब्दी पर्व, उन्हीं सद्गुरु का है अब आया।
दिव्य स्नेह के अभिसिंचन का, प्यार सभी ने पाया।।
अब कर्त्तव्य हमारा, उनके लिए हमें कुछ करना।
जीना उनके लिए हमें, केवल उनके हित मरना।।
लड़े एकजुट होकर हम सब, आध्यात्मिक संग्राम।

दिव्य ज्ञान की गंगा उनकी, पहुँचाएँ जन-जन तक।
सूर्य विचार-क्रान्ति का चमके, नगर-ग्राम घर-घर तक।।
श्रद्धा-निष्ठा, पूर्ण आस्था से आओ भर जाएँ।
हम अपना सर्वस्व लगाकर, श्रेय अलौकिक पायें।।
उठो! बढ़ो! संकल्पित होकर, करो नहीं विश्राम।

नए सृजन की, नए जोश से, करें नई तैयारी।
जन्मशताब्दी पर्व सफल हो, शक्ति झोंक दे सारी।।
देव संस्कृति के गरिमामय, अमित बनाएँ साधक।
जन-जन में देवत्व जगाएँ, बन तेजस्वी साधक।।
सद्गुरु चरण हृदय में रखकर, करें यही शुभ काम।

प्रेम और सम्मान सहित, कर युवा शक्ति को आगे।
अवसर मिले उन्हें, उनमें भी नई प्रेरणा जागे।।
कर्त्तव्यों का भार, सबल कंधे ही ढो पाएँगे।
वृद्धों के अनुभव, उन सबके बहुत काम आएँगे।।
करे युवाओं का आवाहन, जा-जाकर हर ग्राम।

मुक्तक–अब विचार परिवर्तन की है जन्मशताब्दी आयी।
इससे होगा अखिल विश्व का, जीवन अब सुखदायी।।

चलें शहीदों के पथ हम

रक्षा बन्धन

चलें शहीदों के पथ हम, माँ संकल्प महान दो।
अगर तुम्हें यह ठीक लगे तो, बहनों राखी बाँध दो॥

फिर से आज महाभारत की, सेना सजती है भारी।
अवतारी के साथ चल पड़े, अपनी है यह तैयारी॥
मोह ग्रस्त होकर ना बैठे, माँ ऐसा सद्ज्ञान दो।
सद्विचार के धागे बाँटकर, बहनो राखी बाँध दो॥

एक ओर कौरव सेना का बिगुल बज रहा स्वार्थ भरा।
योगिराज ने पाण्डव दल से यज्ञ, भाव भर दिया खरा॥
जो अनीति को मिटा सके माँ, उस साहस का दान दो।
कर्मठता का तिलक लगाकर, बहनो राखी बाँध दो॥

मानव को हम मानवता से, दूर नहीं होने देंगे।
सदभावों का साथ छोड़कर , क्रूर नहीं होने देंगे॥
हर मन में सद्भाव जगा दे, माँ ऐसा अनुदान दो।
ममता से मुंह मीठा करके, बहनो राखी बाँध दो॥

चलना है उज्ज्वल भविष्य तक, बिना रुके बढ़ जायेंगे।
मिले सफलता या कि शहीदी, हम मंजिल पा जायेंगे॥
हमसे तप करवालो माता, जन-जन को कल्याण दो।
ऋषि कन्याओं ऋषि पुत्रों को, तुम भी राखी बाँध दो॥

छाती तोड़ महान

छाती तोड़ महान परिश्रम, तेरे का परिणाम।
झपट हड़पता रहता है, यह क्रूर विश्व अविराम॥

तू! भूखा, नंगा, रोगी रहता, व्याकुल बेचैन।
पर वह ही–ही हँसता है, लखि तेरे गीले नैन॥

तेरे करुणा पूर्ण दुःखों से, जाता हृदय पसीज।
पर वह झुँझलाता है, उलटा तुझ पर बरबस खीज॥

इस पूँजीमय निर्दय जग का, देख कुटिल व्यवहार।
ज्वाला मुखी! न फट जाना, मिट जायेगा संसार॥

ओ हिमगिरि से श्रमाशील, उपकारी सदय किसान।
देख! शान्त रखना अपना दुःख, पूरित हृदय महान॥

संगीत विश्व का नैतिक विधान है, वह विश्व को दिव्य सौन्दर्य प्रदान करता है। मानव मस्तिष्क में नवीन रंग भरता है और भावनाओं में रंगीन उड़ान, गायनाभिराम सुषमा एवं निराशा के प्रांगण में आनन्द का प्रपात प्रवाहित करता है तथा विश्व के प्रत्येक पदार्थ में जीवन और उत्साह के अभिनव स्फरणों को मुखरित करता है।

–(मार्टिन लूथर)

छोड़ दो छोड़ दो वासना

छोड़ दो छोड़ दो वासना छोड़ दो।
दोष दुर्गुण जनित कामना छोड़ दो॥

दोष दुर्गुण हमें खोखला कर रहे,
जिन्दगी के हरे बाग को चर रहे।
हर कज़ा में मज़ा का वे दम भर रहे,
मर रहे मौत से पर नहीं डर रहे॥
आज भी वक्त है, रास्ता मोड़ दो॥

छोड़ मीठे फलों, सब्जियों घास को,
खा रहे दीन पशुओं के हम मांस को।
पेट दिखता नहीं जीभ के दास को,
मूर्खता ही बताते हैं उपवास को॥
भोग में ही मज़ा है, ये भ्रम तोड़ दो॥

शान ही हम समझते है व्यभिचार में,
मानते हैं बड़प्पन अनाचार में।
लाज आती नहीं भ्रष्टाचार में,
है अहं ही हमारे हर व्यवहार में॥
मान जाओ पतन में नहीं होड़ लो॥

रूढ़ियों के प्रथाओं के पीछे पड़े,
बढ़ गया है जमाना वहीं हम खड़े।
टूटते जा रहे हैं मगर हैं अड़े,
शेखियाँ झाड़ने हम चने पर चढ़े॥
भ्रष्ट चिन्तन तनिक ज्ञान से जोड़ दो॥

जिसने मरना सीख लिया

जिसने मरना सीख लिया है, जीने का अधिकार उसी को।
जो कांटो के पथ पर आया, फूलों का अधिकार उसी को॥

जिसने गीत सजाये अपने, तलवारों के झन झन स्वर पर।
जिसने विप्लव राग अलापे, रिम झिम गोली के वर्षण पर।
जो बलिदानो का प्रेमी है, है जगती का प्यार उसी को॥

हँस-हँसकर एक मस्ती लेकर, जिसने सीखा है बलि होना।
अपनी पीड़ा पर मुस्काना, औरों के कष्टों पर रोना।
जिसने सहना सीख लिया है, संकट है त्यौहार उसी को॥

दुर्गमता लख बीहड़ पथ की, जो न कभी भी रूका कहीं पर।
अनगिनते आघात सहे पर, जो न कभी भी झुका कहीं पर।
झुका रहा है मस्तक अपना, यह सारा संसार उसी को॥

संगीत यदि निर्दोष हो तो उसमें मनुष्य की भावुकता भरी प्रसन्नता थिरकती है और वह नाड़ी समूह में सम्मिलित होकर एक ऐसा पोषण प्रदान करती है जो मन को हलका बनाने और उत्साह को जगाने में विशेष रूप से काम आता है।

–नादब्रह्म शब्दब्रह्म पृ. 5.34

जगत में चिन्ता मिटी है

जगत में चिन्ता मिटी है उनकी,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।
वही हमेशा हरे भरे हैं,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं।।

न पाया राजा वजीर बनकर,
न पाया तुमको फकीर बनकर।
उन्हीं को दर्शन हुए हैं तेरे,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं॥

न पाया तुझको किसी ने बल से,
न पाया तुझको किसी ने छल से।
वही परम पद को पा गये हैं,
जो तेरे चरणों आ चुके हैं॥

किसी ने जग में करी भलाई,
किसी ने जग में करी बुराई।
वही सुमारग पे चल पड़े हैं,
जो तेरे चरणों में आ चुके हैं॥

प्रभु जी विनति सुनो हमारी,
बनाओ बिगड़ी दशा हमारी।
निराश्रितों के हो आसरा तुम,
तुम्हारे चरणों में आ चुके हैं॥

जहाँ सत्संग होता है

जहाँ सत्संग होता है, वहाँ पर नित्य जाओ तुम।
हमें फुरसत नहीं कहकर, ये मौका मत गँवाओ तुम॥

अरे सत्संग करने की ना कोई उम्र होती है।
अमर ये दीप है इसकी कभी बुझती ना ज्योति है।
इसी ज्योति से जीवन की सदा ज्योति जलाओ तुम॥

जरा अनुभव तो कर देखो, कि क्या बदलाव आता है।
कपट सब दूर होता है, हृदय निर्मल हो जाता है।
इन्हीं सत्संगियों के संग में, सदा डुबकी लगाओ तुम॥

करके एकाग्र मन को तुम, जाके सत्संग को सुनना।
होके तल्लीन भावों के, सुनहरे फूलों को चुनना।
इस सत्संग सागर में, सदा डुबकी लगाओ तुम॥

चढ़े एक बार फिर उतरे नहीं, सत्संग का ये रंग।
बिना प्रभु की कृपा मिलता नहीं सत्संगियों का संग।
गुरु संतों की सेवा कर, सदा सान्निध्य पाओ तुम॥

जय जय गायत्री माता

जय जय जय गायत्री माता, माता तुम सद्बुद्धि प्रदाता।।

सुख साधन बढ़ते जाते हैं, फिर भी शान्ति नहीं पाते हैं।
सुविधाओं के ढेर लग रहे, पर अतृप्त हो रह जाते हैं॥
सच्ची तृप्ती हमें दो माता, माता तुम हो शक्ति प्रदाता॥

हम सब राग द्वेष में जलते, हमको औरों के सुख खलते।
नये-नये नित रूप बनाकर, लोभ मोह हमको है छलते॥
हमें मुक्ति दो इनसे माता, माता तुम सद्बुद्धि प्रदाता।।

विष घुल रहा हमारे मन में, घुस बैठा वह ही चिन्तन में।
चिन्तन का जहरीलापन ही, घोल रहा है विष जीवन में।।
जीवन अमृत विष हो जाता, माता तुम सद्बुद्धि प्रदाता।।

माता अब सद्बुद्धि हमें दो, चिन्तन की समृद्धि हमें दो।
सादा-जीवन उच्च-विचारों, वाली जीवन सिद्धि हमें दो॥
जहाँ सुमति सुख सम्पति पाता, माता तुम सद्बुद्धि प्रदाता।।

मनोविकारों के निवारण में संगीत को सफल उपचार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

डॉ. वाल्टर क्यूग

जिसको सुनकर बने राह

जिसको सुनकर बने राह फिर, मानव के उत्थान की।
आओ मिलकर सुनें ध्यान से, दिव्य कथा श्रीराम की॥

इसी कथा में राम और सीता का भी आदर्श है।
हनुमान और लक्ष्मण जी का भी पावन उत्कर्ष है॥
वीर जटायू जैसे योद्धा के महान बलिदान की॥

गीता का सन्देश इसी में, पार्थ धनुर्धर की गाथा।
ऋषियों का सन्देश जहाँ पर, झुकता है सबका माथा॥
कर्म करें पर नहीं विचारें, कभी यहाँ परिणाम की॥

अवतारों की कथा इसी में, जब-जब धरती पर आये।
विकृतियों के दानव से, जब-जब मानवता अकुलाये॥
सुनो कथा पावन सब जन, प्रज्ञावतार महान की॥

संसार मुझसे चित्रों में बात करता है-मेरी आत्मा उसका उत्तर संगीत में देती है।

-रविन्द्रनाथ टैगोर

जिसने जीवन ज्योति जलाई

जिसने जीवन ज्योति जलाई, नवयुग के निर्माण की।
आओ सब मिल महिमा गायें, इस युग ऋषि श्रीराम की॥

आजादी के लिए लड़ा वह, महामानव के साथ रहा।
बापू के संग कदम मिलाकर, मानव के हित सदा जिया॥
साधना जिसने निशिदिन की थी, जन-जन के कल्याण की॥

हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा, हम बदलेंगे-युग बदलेगा।
नर-नारी में समानता होगी, जाति-वंश का भेद मिटेगा॥
जयघोषों के महामंत्र से, ज्योति जलाई ज्ञान की॥

मनुज मात्र को देव बनाने, इस धरती को स्वर्ग बनाने।
बिछड़े हुओ को फिर से मिलाने, दुनियाँ को फिर नई सजाने॥
राह दिखाई जनमानस को, सत्य प्रेम सद्ज्ञान की॥

प्रखर-प्रज्ञा का रूप वही था, शान्तिकुञ्ज का शक्तिपुञ्ज था।
प्रज्ञा युग का निर्माता वह, ज्ञानक्रान्ति का दूत वही था॥
आओ मिलकर करें वन्दना, ऐसे पुरूष महान की॥

जिसने जानी पीर पराई, परहित में निज देह तपाई।
नई चेतना भू-पर लाकर, मानव को नई राह दिखाई॥
याद करें उस परमतत्त्व को, नवयुग के दिनमान की॥

जिसने दीप जलाये जग में

जिसने दीप जलाये जग में, तिल-तिल जलकर ज्ञान के।
सौदागर हम स्वयं बन गये, उस संस्कृति की जान के॥

ऐसी भी कृतघ्नता कैसी, जिसने हमें प्रकाश दिया।
अपनी उस महान संस्कृति का, अपने हाथ विनाश किया॥
ऐसे तो आचरण न होते, समझदार इन्सान के॥

जिसने सुगढ़ बनाया गढ़कर, हम जैसे पाषाण को।
संस्कार दे 'देव' बनाया, इस अनगढ़ इन्सान को॥
काटे हाथ-पैर हमने ही, निर्माता भगवान के॥

विकृतियों के आघातों से, संस्कृति को विद्रूप किया।
संस्कृति की शालीन-सती को, वेश्या जैसा रूप दिया॥
बने दु:शासन, चीर उतारे, संस्कृति के सम्मान के॥

संस्कृति की हत्या करके हम, क्या जीवित रह पायेंगे।
इससे तो हम आत्मघात के, ही दोषी कहलायेंगे॥
शारीरिक भोगों के पीछे, शत्रु बने क्यों प्राण के॥

छोड़े भोगवाद को आओ! त्यागवाद को अपनायें।
कर सम्मान 'देव-संस्कृति' का, जगद्गुरु फिर कहलायें॥
यही सूत्र हैं, इसी धरती पर, आज स्वर्ग निर्माण के॥

'संस्कृति-पुरूष' पुकार रहा है, संस्कृति का सम्मान करें।
हम समाज, परिवार, व्यक्ति का, विकृतियों से त्राण करें॥
अग्रदूत हमको बनना है, नवयुग के अभियान के॥

मुक्तक–संस्कृति निष्ठा के बल पर ही, मानव सच्चा मानव है।
वरना वह पशु बन जाता है, हो जाता वह दानव है॥
दुर्गति से यदि बचना चाहो, संस्कृति का सम्मान करो।
करो अनुगमन ऋषि चरणों का, नवयुग का निर्माण करो॥

जीवन के देवता का अपमान

जीवन के देवता का अपमान हो रहा है।
भगवान का अमर सुत इन्सान रो रहा है॥

पूजा बहुत हुई रे, भगवान के पुजारी।
नित भीख माँगते ही, सब जिन्दगी गुजारी॥
सुख याचना में कैसा दुःख गान हो रहा है॥

है आत्मतोष रोता है तृप्ति दीन प्यासी।
सुख शान्ति देवता को घेरे हुए उदासी॥
संताप शॉप बनकर, वरदान हो रहा है॥

माथा रगड़ रगड़कर नर स्वाभिमान रोया।
पायी विभूतियों का वरदान कोष खोया॥
प्रज्ञा कुबेर का सुत अज्ञान ढो रहा है॥

पीड़ा पतन के फंदे डाले हुए गले में।
जिन्दा न साँस कोई मुर्दार होसले में॥
जीवन का बाग कैसा वीरान हो रहा है॥

सत् की रटन लगाये चलता असत् दिशा में।
आलोक का पुजारी खोया है तम निशा में॥
अमृत पथिक मरण का मेहमान हो रहा है॥

जिन्दगी चार दिन की

जिन्दगी चार दिन की मेहमान है।
फिर भी जाता जुटाता सामान है॥

मोह इतना बड़ा, लोभ में तू पड़ा।
क्या हुआ है तुझे, भूत इतना चढ़ा॥
कौन किसका सगा, क्या यह ध्यान है॥

साथ जायेगा क्या, काम आयेगा क्या?
कौन ले जा सका, आज तक साथ क्या?
व्यर्थ ही तुझको झूठा गुमान है॥

पाप क्यों कर रहा, क्यों घड़ा भर रहा।
स्वार्थ के सब सगे, क्यों नशा चढ़ रहा॥
झूठ को सच कहना ही अज्ञान है॥

मोह ममता को तज! राम का नाम जप।
लोक सेवा से पायेगा, शान्ति सहज।
लोक सेवा ही जीवन की शान है॥

स्वर्गीय सौंदर्य का कोई साकार रूप और सजीव प्रदर्शन है, तो उसे संगीत ही होना चाहिए।

–रविन्द्र नाथ टैगोर

जाग पहरूबे सुहानी भोर

जाग पहरूबे जाग, सुहानी भोर है,
नवयुग का है नया सवेरा।
कहता मन का भोर है, सुहानी भोर है.... ॥

छोड़ चले नीड़ों को पंछी, कर्म क्षेत्र के गाँवों में।
तू अब तक सो रहा, बावरे भोर किरण की छावों में॥
तुझे जगाने को पंछी दल, देख मचाता शोर है॥

कर्मक्षेत्र में पड़ी दरारें, तुझको ही वो भरनी है।
नवयुग की निर्माण शपथ, तुझको ही पूरी करनी है॥
देख कह रही तुझसे, क्या वो गंगा जमुन हिलोर है॥

काम अधिक है जीवन थोड़ा, सोते ही यदि बीत गया।
फिर न मिलेगा स्वर्ग सवेरा, बीत गया सो बीत गया॥
तेरे बिगड़े काज बनाने, को श्रम ही सिर मोर है॥

सबसे प्रथम गान करते हुए परमेश्वर के मुख से जो गीत निकला वही 'गायत्री' है।

–वाङमय१९ पृ.३.२५

जो बोले सो हो जाय अभय

जो बोले सो हो जाय अभय, सद्गुरु की जय सद्गुरु की जय।
बोलो मन से होकर निर्भय, युगऋषि की जय युगऋषि की जय॥

हे गुरुवर हम पर दया करो, हे ऋषिवर! हम पर कृपा करो।
दुर्भावों को प्रभु दूर करो, जागृत मन से सद्भाव भरो॥
हो प्रेम भरा निष्पाप हृदय, सद्गुरु की जय...२

युगऋषि युग का संताप हरो, प्राणों में पावन शौर्य भरो।
ऋषिपुत्र बने सत्कार्य करे, सुविचारों का संचार करे॥
सद्साहस के हो साथ विनय, युगऋषि की जय...२

धन-बल पायें या बुद्धि मिले, पर सदुपयोग की वृत्ति खिले।
सद्कर्म करें अभिमान न हो, सद्ज्ञान बढ़े, अज्ञान न हो॥
दुर्गम दोषों पर मिले विजय, सद्गुरु की जय...२

युग की पीड़ा का भान रहे, शुभ कर्त्तव्यों का ध्यान रहे।
हम अनुशासन में ढल जाये, सच्चे युग सैनिक बन जाये॥
ऋषि गौरव हो फिर से अक्षय, युगऋषि की जय...२

संगीत के पीछे-पीछे खुदा चलता है। -शेखसादी

जिन्हें देखकर जग सहज

जिन्हें देख कर जग सहज मुस्कुराये, दहकती हुई वे मशालें बनें हम।
अँधेरा जिन्हें देखकर थर-थराये, उसी हौसले के उजाले बनें हम॥

मशालें सहज ही दहकती नहीं है,
अनायास लपटें लहकती नहीं है।
उजाला अगर बाँटने की ललक है,
प्रबल ज्वाल मन में जगाते चलें हम॥
जिन्हें देख कर जग सहज मुस्कुराये, दहकती हुई वे मशालें बनें हम॥

लगातार जलने को बेचैन हो मन,
लपट से लिपटने को तत्पर रहें हम।
कहीं मन्द पड़ने न पाये उजाला,
सतत् रक्त का स्नेह डाले चलें हम॥
जिन्हें देख कर जग सहज मुस्कुराये, दहकती हुई वे मशालें बनें हम॥

मशालें जलाना अथक साधना है,
ज्वलन ही जहाँ मात्र आराधना है।
अगर ईष्ट है ज्योति जग को दिखाना,
सतत् ही ज्वलन धर्म पाले चलें हम॥
जिन्हें देख कर जग सहज मुस्कुराये, दहकती हुई वे मशालें बनें हम॥

मशालें जली हैं न जय बोलने से,
मशालें जली है, हृदय खोलने से।
जलायी गई स्वर्ण लंका कि जिस से,
उसी आग की अब मिसालें बने हम॥
जिन्हें देख कर जग सहज मुस्कुराये, दहकती हुई वे मशालें बनें हम॥

जिसको प्रभु से सद्बुद्धि

जिसको प्रभु से सद्बुद्धि मिली,
फिर कुछ वरदान लिया न लिया।

करने को कर्म बहुत जग में,
है आकर्षण भी पग पग में।
जिसने सचमुच परमार्थ किया,
फिर और सुकर्म किया न किया॥

देवों के रुप अनेकों हैं,
पूजा के ढंग अनेकों हैं।
जिन साध लिया निज जीवन को,
कोई देवता सिद्ध किया न किया॥

धन की इच्छा सब करते हैं,
पर मर्म न कोई समझते हैं।
सम्पत्ति गुणों की मिली जिसे,
फिर धन की खान लिया न लिया॥

है दान अनेकों इस जग में,
लेने वाले हैं डग डग में।
प्रभु को निज जीवन सौंप दिया,
उनने कुछ दान किया न किया॥

जागरण देखो नयन उघार

जागरण देखो नयन उघार, जागरण देखो नयन उघार॥

हाथ बाँधकर बहे जा रहे, महा ज्वार के साथ।
धार वेग में दिखा न पाता, कोई अपने हाथ॥
तेज थपेड़ों से टूटे मन, भूले होश हवाश।
बीच भँवर में गोते खाते, डूब रहे मझधार॥

बीन बटोर रहे झोली में, काँच किरच दिन रात।
खिसक रही जाने अनजाने, साँसो की सौगात॥
रोज रोज सहते हैं, शाप ताप आघात।
नहीं पाते खाते हैं, महाकाल की मार॥

कामधेनु बाँधे आँगन में, दाता बने भिखारी।
श्री लक्ष्मी के पूत लजाते, इन्द्राणी महतारी॥
सिंहासन सूना दिखता है, सूनी सिंह सवारी।
दुर्गति झेल रहा है देखो, दुर्गा का परिवार॥

विश्वामित्र वशिष्ठ, व्यास के घर में ज्ञान दुःखारी।
ऋतम्भरा प्रज्ञा मेधा के, कहाँ छुपे अधिकारी॥
यज्ञ याज्ञ की आग बुझी, दहकी अणु की चिनगारी।
सामगान क्रन्दन करता है, तुमको रहा पुकार॥

अमृत उफन रहा है घट से, साधक प्राण सम्हालो।
त्याग तपस्या के हाथों से, कल्प लता को पालो॥
रँभा रही है कामधेनु की, धार कंठ में डालो।
सत्यवान बनके पाओगे, सावित्री का प्यार॥

जागो युग के राष्ट्र पुरोहित

जागो युग के राष्ट्र पुरोहित, करो लोक कल्याण।
जगे राष्ट्र की नई जवानी, लेकर नया उफान।।

संस्कृति सीता सिसक रही है, ढांढस उसे बँधाओ।
दुराचार लंका को मिलकर, जल्दी उसे ढहाओ।।
जागो राष्ट्र के सृजन सैनिकों, प्रबल पराक्रम लेकर।
गाँव-गाँव में, शहर-शहर में ज्ञान मशाल जलाओ।।
ज्ञानयज्ञ की ज्योति जलाकर, करना है निर्माण।।

फूलों सी मुस्कान भरें हम, जन-जन हर्षित होवें।
ऋषियों की वाणी से जग की, शाखाएँ पुष्पित होवें।।
प्रज्ञा का प्रकाश फैलाकर, हरो तमिस्रा युग की।
समयदान के साथ लगायें, जो भी साधन होवें।।
कथनी-करनी भिन्न रहें न, करें नित्य उत्थान।।

अनुशासन अनुबन्ध निभाकर, जीवन श्रेष्ठ बनायें।
नवयुग का सपना पूरा हो, वह पुरूषार्थ दिखायें।।
जगो राष्ट्र के प्रतिभावानों, कलाकार, कवि, गायक।
अपनी क्षमता से हम सब, धरती स्वर्ग बनायें।।
सविता की शाश्वत शक्ति से, होकर उर्जावान।।

अन्तरिक्ष से प्रबल प्रेरणा, अन्तर में छलक रही है।
ईश्वर की पावन अनुकम्पा, कण-कण में छलक रही है।।
जागो युग के कर्णधार अब, संवेदन छलकाओ।
नवयुग की झाँकी अब, सबके मन में छलक रही है।
श्रद्धा सजल-प्रखर प्रज्ञा के, बरस रहे वरदान।।

जितना तुमने दिया न

जितना तुमने दिया न उतना, सारा जग हमको दे पाया।
जब-जब एक बूँद जल माँगा, तब तुमने बादल बरसाया॥

जग ने दिऐ तनाव भरे दिन, रातों में भीषण अँधियारे।
तुमने लौकिक और अलौकिक, काटे सारे कष्ट हमारे॥
हमने केवल किया समर्पण, तुमने अपने शीश चढ़ाया॥

जब हम थे असहाय दे दिया, तुमने सबल सहारा हमको।
हम शापित थे तुमने अपनी, चरण-धूलि से तारा हमको॥
ऐसा प्राण-प्रवाह भर दिया, अब तो अंग-अंग उमगाया॥

इस सूखे मरुस्थल में तुमने, ऐसी संवेदना बहाई।
पल-पल लगने लगी हमें तो, अपनी-सी हर पीर पराई॥
ऐसी कृपा करी जो मन का, हर कोना-कोना सरमाया॥

हमको दिया मनोबल ऐसा, जो चट्टानों से टकराए।
हमें तपाया इतना जिससे, जग में हम कुन्दन कहलाए॥
जो था भार व्यर्थ-सा जीवन, तुमने उसको धन्य बनाया॥

अब तक किया अनुग्रह तुमने, अब कर्त्तव्य निभाएँगे हम।
ऋण का भार शीश पर अपने, कभी न लेकर जाएँगे हम॥
काम तुम्हारा ही करना है, पग न रहेगा अब अलसाया॥

जियेंगे न अब हम

जियेंगे न अब हम अपने लिए ही,
शपथ है हमें, लोकनायक तुम्हारी।
जुटेंगे सतत् लोक-कल्याण में हम,
शपथ है हमें, लोक साधक तुम्हारी॥

चलेंगी न साँसे हमारे लिए अब,
तुम्हीं धड़कनों में धड़कते रहोगे।
हमें लोकमंगल डगर पर चलाने,
हमारे डगों में फड़कते रहोगे॥
छिड़ेगीं हमारी हृदय बीन पर अब,
धुने क्रांति की लोक नायक तुम्हारी।।

बँधेंगे नहीं काल के चक्र में अब,
नहीं मृत्यु की ओर अब हम बढ़ेंगे।
जियेंगे महाकाल के ही लिए अब,
नहीं अब अधम कीटकों सा मरेंगे॥
समयदान क्या? प्राण भी दान देंगे,
शपथ है हमें प्राण-दायक तुम्हारी॥

उपेक्षित न अब देव संस्कृति रहेगी,
इसे विश्व संस्कृति बनाकर रहेंगे॥
लगी है घृणा, द्वेष की आग जग में,
यहाँ स्नेह निर्झर बहाकर रहेंगे॥
पुनः विश्व परिवार देंगे बना हम,
शपथ विश्व में प्रेम पालक तुम्हारी॥

मनुज भूलकर आत्म गरिमा स्वयं ही,
पतन, पाप के गर्त में गिर रहा है।
भटक अब रही है तिमिर में मनुजता,
अँधेरा चतुर्दिक यहाँ घिर रहा है॥
सहेगा नहीं विश्व अब वेदना को,
पियेंगे शपथ शिव सहायक तुम्हारी॥

मुक्तक–

महाक्रांति का लक्ष्य आपने, हमें दे दिया दिव्य महान।
कूद पड़े हम शपथ उठाकर, रच देंगे नूतन अभियान॥

जगजननी जगदम्ब भवानी

जग–जननी जगदम्ब भवानी, वीणा–वादिनी ज्ञान भरो।
ममतामयी माँ, मन प्राणों को, अविरल स्नेह प्रदान करो।।

जीर्ण–शीर्ण प्राचीन हटाकर, नूतन संचार करें।
जन–मानस में सद्भावों की, परिवर्तन रसधार भरें।।
घृणा, द्वेष से मुक्ति दिलाकर, बासन्ती मुस्कान भरो।।

खिले फूल की तरह हंसे जग, ऐसी कृपा दृष्टि कर दो।
हर्षित–पुष्पित और पल्लवित, शाखाएँ हों सृष्टि कर दो।।
देवसंस्कृति के स्वर गूँजे, भावों में प्रबल उफान भरो।।

राष्ट्रधर्म का परिपालन हम, कर पायें सद्भाव जगाकर।
स्वर्ग समान करें यह धरती, अपनी प्रतिभा समय लगाकर।।
तेजस्, ओजस्, वर्चस् देकर, उर को ऊर्जावान करो।।

जो औरों के लिए जिन्दगी

जो औरों के लिए जिन्दगी जीते हैं,
पावन उनके अन्तराल हो जाते हैं।
तब विवेक वे नीर-क्षीर का पाते हैं,
अनजाने वे मन-मराल हो जाते हैं॥

सहज लोक-सम्मान उन्हें मिल जाता है,
जीवन में उत्थान उन्हें मिल जाता है।
जो सेवा, साधना किया करते हरदम,
अनायास भगवान उन्हें मिल जाता है॥
जो औरों के लिए पीसते हैं मेहन्दी,
अनजाने वे हाथ लाल हो जाते हैं॥

स्वार्थ लिप्त के लिए दिव्य वरदान सभी,
भस्मासुर की भाँति शाप बन जाते हैं।
किन्तु लोककल्याण किया करते हैं जो,
गाँधी, बुद्ध समान आप बन जाते हैं॥
मानवता को राह दिखाने की खातिर,
वे मानव जलती मशाल हो जाते हैं॥

होती है जितनी विशालता, उतनी ही,
भर पाती है धार पात्र में पानी की।
सदा पार्थ ही दिव्य धनुष ले पाता है,
सिर्फ शिवा पाता तलवार भवानी की॥
जो औरों के लिए कष्ट सह लेते हैं,
मन उनके नभ से विशाल हो जाते हैं॥

धन्य बनेगा जन्म, भटकते पाँवों को,
अगर कभी हम सही दिशा दे पायें तो।
अगर उफनती धार बह रही नौका को,
उधर कूल तक हम खेकर ले जायें तो॥
मुरझे मुख पर मुस्कान लाने वाले,
महक भरे पावन गुलाल हो जाते हैं॥

जिसकी तरफ निहारा तुमने

जिसकी तरफ निहारा तुमने, वह जीवित मधुमास बन गया।
जिस पर कर दी कृपादृष्टि वह, पूरब का आकाश बन गया॥

तुम थे स्वयं सिन्धु करुणा के, सब जल धाराओं के आश्रय।
पास तुम्हारे आ जायें बस, मानव हो जाता था निर्भय॥
तुम्हें समर्पित हर जीवन, लहरों का चिर उल्लास बन गया॥

जिसको समझा पात्र उसे ही, लोकहितों की दीक्षा दी है।
जिसे बनाया कंचन उसे सौख्य कम, अधिक तितीक्षा दी है॥
जिसने ऐसा ताप पी लिया, वही तुम्हारा खास बन गया॥

और चलाया जिसको अपने, साथ उँगलियाँ पकड़ पकड़ कर।
जिसके प्राणों में भर दिये, साधनायुक्त तपे अपने स्वर॥
उसका क्रिया-कलाप तुम्हारे, संग शाश्वत इतिहास बन गया॥

जब जब भी प्रबुद्ध जन

जब जब भी प्रबुद्ध जन मानस, बुद्धि–भ्रष्ट होता है।
तब तब ही युग गरिमा का, इतिहास नष्ट होता है॥

खड़ी फसल पर पाला पड़ता, फसल नष्ट हो जाती।
बिजली गिरती उतनी धरती, नष्ट भ्रष्ट हो जाती॥
पर इससे सारी फसलों पर, असर न होने पाता।
बिजली का प्रभाव अन्यों के, भवन न ढहने पाता॥
किन्तु बुद्धि पर पाला पड़ता, जब कि प्रबुद्धजनों की।
तब तो पूरी ही मानवता, का अनिष्ट होता है॥

कोई भी हो तंत्रवाद हो, कोई भी सत्ता में।
सबकी ही उन्नति का बीज, निहित बुद्धिमत्ता में॥
बुद्धितंत्र ही सब तंत्रों पर, हो जाता है हावी।
सबकी ही प्रबुद्ध जन मानस, के हाथों में है चाबी॥
करता है प्रबुद्ध जन मानस, अनुभव सबकी पीड़ा।
संवेदित हो विश्व वेदना, में प्रविष्ट होता है॥

जब प्रबुद्ध जन मानस में से, दूर भ्रांति होती है।
तब प्रबुद्ध जन मानस में, विचार क्रांति होती है॥
तभी क्रांति के अजर अमर, इतिहास लिखे जाते हैं।
युग परिवर्तन के जन जीवन, में उभार आते हैं॥
युग भी बदल जाया करता है, परिवर्तन आ जाता।
जब प्रबुद्ध मानस अनीति पर, क्रुद्ध रुष्ट होता है॥

मानवता प्रबद्ध मानस का, आवाहन करती है।
परिवर्तन हित आगे आने, की आशा करती है॥
है प्रबुद्ध मानस के आगे, आने की यह बेला।
अब मानवता से अनीति का, कष्ट न जाता झेला॥
सद्भावों के सद्विचार के, लिए मनुजता तरसी।
अब भी क्या प्रबुद्ध मानस को? नहीं कष्ट होता है॥

जो जुड़ गये हैं प्रभु से

जो जुड़ गये हैं प्रभु से बढ़ना उन्हें पड़ेगा।
अब सृजन पीर बनकर लड़ना उन्हें पड़ेगा॥

अब शंख बज गया है, बस शौर्य दिखाना है।
विचलित न हो किसी क्षण, वह धैर्य दिखाना है॥
हर क्षण कसौटियों पर, चढ़ना उन्हें पड़ेगा॥

कमजोरियाँ मनों की, अब दूर सब भगा दें।
बलिदानियों की इच्छा, अब तो प्रबल बना लें॥
जो हुक्म आ गया वह करना उन्हें पड़ेगा॥

आसान मोर्चा है, गोली नहीं चलेगी।
अब जेल यातना या फाँसी नहीं मिलेगी॥
संकीर्णता से उपर उठना उन्हें पड़ेगा॥

अब महाकाल के संग, साझा किया है जिनने।
युग देवता से वादा निश्चित किया है जिनने॥
तप त्याग की डगर पर चलना उन्हें पड़ेगा॥

जिसने भी जीवन में

जिसने भी जीवन में, सद्पथ को अपनाया।
उसने स्वर्गीय वैभव, जीवन में ही पाया॥

सद्गुण से जीवन का, आओ श्रृंगार करें।
शुचिता, संयम, समता, ममता स्वीकार करें॥
सहयोग, स्नेह, श्रम से, है जीवन लहराया॥

तप, त्याग, तितिक्षा से, जीवन कुन्दन बनता।
संतोष, शांति का सुख, शीतल चन्दन बनता॥
सौजन्य, सदाशयता, नन्दन वन की छाया॥

जन जन की सेवा से, मानव गरिमा बढ़ती।
जनहित में जुटने से, मानव महिमा बढ़ती॥
जन मानस को हरदम, जन सेवक ही भाया॥

धन के बल पर श्रद्धा, विश्वास न मिल पाते।
गुणवानों के उपर, वे सहज बरस जाते॥
देवों से पुजती है, गुण से मानव काया॥

सद्गुण को धारण कर, सद्पथ अपनायें तो।
हम दया, क्षमा, करुणा, को मन में लायें तो॥
ऐसे ही जीवन ने, देवों को ललचाया॥

जिनके तप ने दिया मिशन

जिनके तप ने दिया मिशन को, हृष्ट-पुष्ट जीवन।
उन अनजान जड़ों को अपना, सौ-सौ बार नमन।।
-सबका वन्दन-अभिनन्दन।।

गुरुवर ने जब स्वयं बीज सा, निज सर्वस्व गलाया।
तब हर घटक प्रकृति का आया, निज सहयोग बढ़ाया।।
कोई अंकुर बना, बन गया, डाल सुकोमल कोई।
शाखाओं पर उभरा बनकर, फूल और फल कोई।।
किन्तु जड़ों को देख न पाए, कोई कुशल नयन।।

इसकी फुनगी, फूल-फलों को, सबने बहुत सराहा।
इसकी छाया के सुख को भी, सबने पाना चाहा।।
गंध, मधुरता, शोभा सबने, मान-प्रशंसा पाई।
किन्तु जड़ों की मौन तपस्या देती नहीं दिखाई।।
कभी किसी ने सुना न उनका, कलरव या क्रन्दन।।

आज विश्व तक फैल गई है, इस वट की शाखाएँ।
शांति यहाँ से लेकर उड़ती, हैं हर ओर हवाएँ।।
यहाँ ठहरकर मानव मन को, शीतलता मिल जाती।
हारे मन की थकन निराशा, यहाँ स्वत: मिट जाती।।
इस विशाल वैभव की जो हैं, मौन भूल कारण।।

रहे मिशन में भूल सरीखे, जो परिजन अनजाने।
करी समर्पण सेवा रहकर, सदा बिना पहचाने।।
गुरु की कृपा जन्म-जन्मों तक, वे परिजन पाएँगे।
हर परिजन को देव सहायक, निश्चय हो जाएँगे।।
उनका ऋणी रहेगा सारा, युगनिर्माण मिशन।।

जनहित के लिए समर्पित

जनहित के लिए समर्पित जो, उसको अनुदान मिला करते।
दिन दूने रात चौगुने ही, उसके संकल्प फला करते॥

प्यासी धरती की पीड़ा से, सागर की छाती भर जाती।
धरती की प्यास बुझाने को, उसकी गहराई अकुलाती॥
सागर की बूँदें मचल मचल, जनहित को जाने लगती जब।
तब छोटी छोटी बूँदों में, पावस की क्षमता आ जाती॥
बूँदों के शिव संकल्प धरा पर, अमृत कलश ढला करते॥

पहले साहसकर बीज स्वयं, धरती में जब गड़ जाता है।
जनमंगल का उत्साह लिये, बलिवेदी पर चढ़ जाता है॥
नन्हा सा बीज मिटा देता, जब हँसकर अपनी हस्ती को।
उसको अनुदान मिला करते, उसका वैभव बढ़ जाता है॥
वह एक बीज अगणित होता, कितनों के पेट पला करते॥

तम ग्रसितजनों की मुक्ति हेतु, जब सूरज की किरणें चलतीं।
तब छोटी छोटी किरणें भी, बनकर मशाल जलने लगतीं॥
उनमें क्षमता आ जाती है, तम के घेरों से लड़ने की।
वे छोटी छोटी किरणें ही, तम के हर घेरे को खलतीं॥
जन पथ में फैलाती प्रकाश, मुरझाये फूल खिला करते॥

जब क्षीण काम धाराएँ, भी जन पथ को लक्ष्य बनाती है।
पर्वत की छाती चीर, प्रवाहित होने चरण बढ़ाती हैं॥
अंजुलि भर जल लेकर चलतीं, जब वे शिव को अर्पित करने।
उस धारा में चलते चलते, अनगिन धारा मिल जाती हैं॥
गंगा की गरिमा गति पाती, पथ के व्यवधान टला करते॥

जनमंगल में जो जुटा हुआ, क्या कमी उसे अनुदानों की।
उसमें क्षमता आ जाती है, अनुदानों की वरदानों की॥
उसके संकल्प चला करते, रौंदते हुए बाधाओं को।
गति मोड़ दिया करता है वह, उठने वाले तूफानों की॥
जिस ओर चला करता है वह, साहस अरु शौर्य चला करते॥

जागो-जागो भारत की नारी

जागो-जागो भारत की नारी, भारत पर है विपदा भारी।

तुमने कब से राम न जाये, कब से गोद न कृष्ण खिलाये।
महावीर गौतम को तुमसे, कब से नहीं देश ने पाये॥
शीश उठा है फिर अनीति का, अब तो इसकी करो तैयारी॥

कब नानक निर्माण करोगी, गुरु गोविन्द सिंह कब दोगी।
शिवा प्रताप छिपाये बैठी, बोलो कब तक और रहेगी॥
दया, विवेकानन्द सुतों की, तुम ही महिमामय महतारी॥

भूल गई अपना ही परिचय, अपनी गरिमा पर ही संशय।
तुमने जो अनुदान दिये हैं, उनकी गाथा तो है अक्षय॥
किसी क्षेत्र में भी तो तुमसे, पड़ा नहीं कोई भी भारी॥

नारी फिर से आगे आओ, वैसे ही परिवार बनाओ।
सामाजिक विकृतियों को फिर,तुम चण्डी बन चटकर जाओ॥
दुर्गा का आवाहन करती, सुर संस्कृति विकृति की मारी॥

जा बेटी ससुराल में जाके

(बेटी की विदाई, छत्तीसगढ़ी गीत)

जा बेटी ससुराल में जाके, सुन्दर कमाके खाबे ओ।
दाई–ददा के सुध झन करबे, कुल के लाज बचाबे ओ॥

सास–ससुर के सेवा बजाबे, पतिव्रता बन जाबे ओ।
सती सावित्री, सीता जइसे, दुनियाँ में नाम कमाबे ओ॥
पति परमेश्वर मान के बेटी, पूजा के फूल चढ़ाबे ओ।
जा बेटी ससुराल में जाके, सुन्दर कमाके खाबे ओ॥

पति ला हँसाबे पति ला रिझाबे, तैं आँसू पी जाबे ओ।
पति के सुख में साथ रहिबे, अउ दुःख म हाथ बटाबे ओ॥
पति संगवारी के रहिबे पिछारी, पति ले झन अघुवाबे ओ।
जा बेटी ससुराल में जाके, सुन्दर कमाके खाबे ओ॥

गाँव के छुट ही तोर संगवारी, छुटके अंगना दुवारी तोर।
छुटगे मइया, भाई, बहिनी, छुटगे पिता महतारी तोर॥
झन छुटै तोर सास–ससुर अऊ, जीवन भरके स्वामी तोर।
जा बेटी ससुराल में जाके, सुन्दर कमाके खाबे ओ॥

संगीत आत्मा के ताप को शान्त कर सकता है।

–महात्मा गाँधी

जय-जय राष्ट्र महान

जय–जय राष्ट्र महान, जय–जय राष्ट्र महान॥
देवभूमि धरती का गौरव, अपना हिन्दुस्तान॥

उज्जवल मुकुट हिमालय जैसा, पाँव पखारे सागर।
गंगा, यमुना जैसी नदियाँ, वरद हस्त सा अम्बर॥
मुक्त हृदय से दिये प्रकृति ने, इसे अमित वरदान॥

चन्दन जैसी मिट्‌टी इसकी, जैसे पानी अमृत।
मलया निल के झोंके चलते, ज्यों गुलाब हो सुरभित॥
शाम सबेरे कुमकुम छिड़के, फसलों की मुस्कान॥

इसके आँगन भरी पड़ी है, संस्कृतियों की गाथा।
इसके इतिहासों के सम्मुख, खुद ही झुकता माथा॥
गौतम, गाँधी की जननी यह, बलिवीरों की खान॥

हम इसकी ममता के पोषित, इसके पहरेदार।
दुश्मन आँख उठाये यदि तो, उसको दें ललकार॥
सिर देकर भी ऊँचा रखें, अपना राष्ट्र निशान॥

जब कि हम भटके हुए थे

जब कि हम भटके हुए थे, वह ज़माना याद है।
आपका गुरुदेव! तब, सद्पथ दिखाना याद है॥

देख तक पाते न थे हम, जबकि अपने आपको।
थे समझ बैठे सुखद, संसार के सन्ताप को॥
तब हृदय में ज्ञान का, दीप जलाना याद है॥

पाप जीवन के हमारी, शान्ति को हरते रहे।
आदतें बिगड़ी हुई थीं, गलतियाँ करते रहे॥
गलतियाँ कर माफ, सीने से लगाना याद है॥

प्यार से समझा बुझा, सद्पथ दिखाया आपने।
और निज कर्त्तव्य पर, चलना सिखाया आपने॥
साथ चलकर लड़खड़ातों, को चलाना याद है॥

धर्म संस्कृति के लिए, शुभ भावनाऐं दी हमें।
दीन-दुखियों के लिए, संवेदनाएँ दी हमें॥
प्राण में जन वेदना का, छलछलाना याद है॥

दिख रही है इस निराशा, बीच आशा की किरण।
आप ही गुरुदेव! मेटेंगे-तिमिर का आवरण॥
दीप से दीपक जला, वादा निभाना याद है॥

मुक्तक-

मम् वन्दना सद्गुरु चरण, परम् मृदुल सुकुमार।
जीवों के उद्धार को, धरा मनुज अवतार॥

जल में थल में जड़-चेतन

जल में थल में जड़ चेतन में, गूँज रही झन्कार।
राम की महिमा अपरम्पार,राम की महिमा अपरम्पार॥

फूलों में प्रतिबिम्ब राम का, कलियों में मुस्कान।
मन मोहक खुशबू से सारे, महक रहे उद्यान॥
सागर की उछाल तरंगे, करती हैं मनुहार॥

सोम सूर्य में तेज राम का, तारे है विद्युतिमान।
चरण कमल में नत मस्तक है, ज्ञान और विज्ञान॥
षट ऋतुयें बारी-बारी से, मना रही त्यौहार॥

तन हो सुन्दर, मन हो सुन्दर, सुन्दर हृदय विचार।
नर से नारायण बन जाये, बने स्वर्ग संसार॥
मानव प्रतिमा की पूजा हो, होवे जय-जयकार॥

जब हम दीप जलायेंगे

जब हम दीप जलायेंगे, क्यों ठहरेगा अँधेरा।
हम प्रकाश फैलायेंगे, क्यों ठहरेगा अँधेरा॥

पाव पसारे अंधेरे ने घर में, गली-गली में गाँव नगर में।
जब हम ज्योति बढ़ायेंगे॥

हम प्रकाश के पुत्र कहाते, हम सविता को शीश झुकाते।
जब हम सूर्य उगायेंगे॥

व्यक्ति-व्यक्ति जब दीप बनेगा, हर परिवार प्रकाश करेगा।
गुरुवर स्नेह पिलायेंगे॥

तब समाज कैसे भटकेगा, भ्रम का भूत नहीं फटकेगा।
युग संदेश सुनायेंगे॥

जागो भारत! विश्व राष्ट्र

जागो भारत! विश्व राष्ट्र की करना है अगवानी।
जागो फिर से जगत्गुरु की, गौरवपूर्ण कहानी॥

धर्मधारणा के द्वारा व्यक्तित्व उत्कृष्ट बनाएँ।
और लोकमंगल हित, आध्यात्मिक सद्भाव जगाएँ॥
विश्वधर्म के घटक बनें सब, धर्मों के सम्मानी॥

विद्या का वर्चस्व जगाकर, अंधकार हरना है।
वेदज्ञान की दिव्य ऋचाओं से प्रकाश करना है॥
आग्नेय हो उठे सृजन की पुनः लेखनी वाणी॥

वैज्ञानिक विभूतियाँ फिर से राग-सृजन का गाएँ।
ध्वंस रोककर मनुज, धरा को फिर से स्वर्ग बनाएँ॥
पुनः भाव संवेदन वाली अनुपम सृष्टि रचानी॥

सोने की चिड़िया सा वैभव, फिर भारत में जागे।
अर्थतन्त्र का पौरूष, नैतिकता को कभी न त्यागे॥
शोषण, उत्पीड़न से जगती फिर से मुक्त करानी॥

धर्म-कर्म से विरत हो रही, मानव की क्षमताएँ।
प्रतिभाएँ हो रही संकुचित भोग रहीं सुविधाएँ॥
आध्यात्मिक भारत अब सबको ज्ञान मशाल थमानी॥

ज्योतिपुञ्ज की ही प्रतिमा

ज्योतिपुञ्ज की ही प्रतिमा है, यह मशाल सद्ज्ञान की।
चाल नहीं चलने पायेगी, षड्यन्त्री-अज्ञान की॥

सब प्रकाश-पुत्रों ने मिलकर, आगे बढ़कर थाम लिया।
मिले-जुले अपने कन्धों पर, 'ज्योतिपुञ्ज' का काम लिया॥
सभी लगा देंगे इसके हित, बाजी अपने प्राण की॥

स्वार्थ भाव को त्याग सभी अब, बन बैठे वैरागी हैं।
सबने अपनी तुच्छ कामना, और अहंता त्यागी है॥
सब मिलकर के लाज रखेंगे, 'ज्योतिपुञ्ज' के शान की॥

जिस मशाल को ऋषि-युग्म ने, अपना स्नेह पिलाया है।
तिल-तिलकर अपने तप द्वारा, जिसको लाल बनाया है॥
उसकी शान न घटने देंगे, शपथ हमें दिनमान की॥

इस मशाल को लेकर हम, सब आगे बढ़ते जायेंगे।
गुरुवर का आदेश निभाने, हर तम से टकरायेंगे॥
फिर देखो! धज्जियाँ उड़ेंगी, तम के तने वितान की॥

फिर से आज शपथ लेते हैं, महाकाल के सेनानी।
स्वार्थ सिद्धि में नहीं, फँसेंगे, नहीं करेंगे मनमानी॥
वक्रदृष्टि हो गई अगर तो, राह नहीं फिर त्राण की॥

जय-जय मंगलकारी

गायत्री माँ...३ बार-- बोलो गायत्री माँ..।
जय-जय मंगलकारी, माँ विधाता गायत्री।
तेरी महिमा माता है, प्यारी-प्यारी, माँ गायत्री।।
तेरी लीला सबसे न्यारी-न्यारी, माँ गायत्री॥

हमने देखा यही लगा सारे, जग में बड़ा है दगा ही दगा।
मन में सोचा तो यही लगा फिर, यहाँ पर तेरा कोई न सगा॥
हम तुझ पर जायें बारी-बारी, माँ गायत्री...... ॥

गायत्री परिवार से हमारा, दुनियाँ में सच्चा नाता ही नाता।
गुरुवर के चरणों में हमारा, हरदम शिश है झुका ही झुका॥
माँ हंस पर तेरी सवारी-सवारी, माँ गायत्री...... ॥

गंगा ले आई नये युग का, देख के असुर भागा ही भागा।
ऋषिवर मुनिवर उतारे आरती, जग में सतयुग छाया ही छाया॥
यह भारत की शान बढ़ाई-बढ़ाई, माँ गायत्री...... ॥

संगीत में क्रूर हृदय को भी कोमल बनाने वाला जादू भरा पड़ा है। -जेम्स वाटसन

जब-जब जाग उठी तरुणाई

जब–जब जाग उठी तरुणाई, तब–तब बजी विजय शहनाई।

तरुणाई जागी शंकर की तो, वे भ्रम को दूर कर गये।
तरुणाई जागी समर्थ की, संघर्षो के लिए तन गये॥
जिसने तरुणाई को साधा, उसने सिद्धि अनोखी पाई॥

दयानंद की तरुणाई ने, प्रखर ज्ञान मातण्ड बनाया।
जागी हुई विवेकानंद की, तरुणाई ने रंग दिखाया॥
भारतीय संस्कृति की जग में, उनने धर्म ध्वजा फहराई॥

महारानी लक्ष्मी बाई थी, तरुणाई की अमर कहानी।
भगतसिंह आजाद सरिखे, अजर–अमर वे थे बलिदानी॥
जागी तरुणाई ने इनको, दे उछाल रग–रग कड़काई॥

जागो तरुणाई भारत की, संस्कृति का सम्मान बचाओ।
गौरवमय इतिहास तुम्हारा, उसको फिर से तुम दोहराओ॥
भारत माता ने तुमसे ही, संकट में है आश लगाई॥

संगीत चिकित्सा अपने आप में एक श्रेष्ठ उपचार पद्धति है। –वाङ्मय १९ पृ. ६.२२

जन्म दिन है हमने मनाया

जन्म दिन है हमने मनाया, शान्तिकुञ्ज से आशीष आया।

गुरुवर की महिमा है निराली, माँ भर देती झोली खाली।
दूर कर देते गुरु अंधियारा, माँ देती आंचल का सहारा॥
तुमने दीपयज्ञ करवाया, शान्तिकुञ्ज से आशीष आया।।

जीवन में तुम सदा मुस्कुराना, परहित में ही समय बिताना।
दीन दुखियों की सेवा करना, परमारथ में आगे बढ़ाना॥
सबने आज पुष्प बरसाया, शान्तिकुञ्ज से आशीष आया।।

माता-पिता की सेवा करना, कभी किसी से द्वेष न करना।
सेवा ही हो धर्म हमारा, सत्य मार्ग पर चलते रहना॥
ऋषियों ने हमें यही सिखाया, शान्तिकुञ्ज से आशीष आया।।

जीवन तुम्हारा बने सदाचारी, कभी न सताये भय लाचारी।
सदा तेरी होवे जय-जयकार, जियो तुम भी बरस हजार॥
हो गुरुवर की कृपा छाया, शान्तिकुञ्ज से आशीष आया।।

संगीत से कठोर मन भी द्रवित हो जाता है।
-वाङ्मय-१९

जन्म लिया फिर भागीरथ ने

जन्म लिया फिर भागीरथ ने, ज्ञान गंग सरसाने।
घनीभूत हैं देवतत्व फिर, ज्योति अखण्ड जलाने॥

तेज दिया खुद सविता ने, तप विश्वमित्र से ऋषि ने।
गायत्री ने प्राण पिलाया, शीतलता दी शशि ने॥
धर्म हेतु वीरों की बलि सा, प्रखर हौसला दिल में।
मन में इतना स्नेह कि क्या चिकनाहट होगी तिल में॥
यह आया है व्यथित धरा की अन्तर पीर मिटाने॥

हरिश्चन्द्र सा, सत्य कर्ण सी, है उदारता मन में।
जनहित में लगने दधीचि की लगी हड्डियाँ तन में॥
एक बना था चन्द्रगुप्त तब, इसने लाख बनाये।
आज करोड़ो व्यक्ति स्वार्थ तज, जन सेवा हित आये॥
वे अपने हो गये आज तक, थे जो जन अनजाने॥

लिखा व्यास बन युग साहित्य जिसे यह विश्व पढ़ेगा।
पढ़कर बदलेंगे विचार जिससे, यह युग बदलेगा॥
यह कबीर की साखी इसमें, शिव समर्थ का तप है।
परहहंस ने इस युग का मेटा मानव आतप है॥
रचा भव्य प्रज्ञापुराण विभ्रम, भय, कलुष मिटाने॥

नवयुग के इस महायज्ञ में, बन शाकल्य जला है।
और हमें जीवन जीने की दी अनमोल कला है॥
सारे ऋषियों की साधों को नूतन प्राण मिला है।
शैल श्रृंखलाओं में चिन्मय ब्राह्मी कमल खिला है।
स्वर मुरली के बाण राम के आज रहे न पुराने॥

जीवन अर्पण का तुमको डर कैसा

रंग दे रंग दे रंग दे रंग दे, रंग दे बसन्ती चोला।
रंग दे रंग दे रंग दे, युग बसन्त रंग दे।।
रंग दे रंग दे रंग दे, युग बसन्त रंग दे।।

जीवन अर्पण का तुमको डर कैसा? बढ़ते जाना है, गढ़ते जाना है।
जब कदम बढ़ गये फिर रूकना कैसा? बढ़ते जाना है, गढ़ते जाना है।।

हम बदलेंगे युग बदलेगा, ये सारा जमाना कहता है।
भर जाती सबकी झोली है, खाली न कोई भी रहता है।।
जो युग ऋषि से जुड़ जायेगा, जीवन जगमग हो जायेगा।
दीवाली उसके जीवन में, दीपक बन जल दिखलायेगा।।
सरदार बन गये सर का डर कैसा? बढ़ते जाना है....।।

कष्टों में हँस दिखलाते जो, गुरूवर, को निकट वो पाते हैं।
खपते हैं गुरू के काम में जो, इतिहास पुरूष बन जाते हैं।।
फौलादी जिगर गुरुवर पे नज़र, वह युग सैनिक कहलाता है।
नस-नस में गुरु का नाम लिखा, जीवन जीकर दिखालाता।।
बढ़ गये कदम शिष्यों रूकना कैसा? बढ़ते जाना है....।।

घनघोर निशा भीषण गर्मी, युग सैनिक कदम बढ़ायेंगे।
हो बाड़मेर या कारगील, वासन्ती ध्वज फहरायेंगे।।
जो देखा गुरुवर ने सपना, सच होगा उनका हर सपना।
चाहे अंगारों में कदम पड़े, चाहे पड़े हमें मरना खपना।।
फाँसी के फंदे से डरना कैसा? बढ़ते जाना है....।।

मुक्तक-
तुम हो गुरुवर के युग सैनिक, जीवन अर्पण से क्यों डरते हो।
जब साथ-साथ हैं महाकाल, तूफानों से क्यों डरते हो।।

आरती गौ-माता की

जयति जय-जय-जय गौमाता, जयति जय-जय-जय गौमाता।
भारतीय गौरव की प्रतिमा, जय-जय गौमाता॥ जयति... ॥

रुद्रों की माता वसुओं की, दुहिता कल्याणी। माँ
सर्व देवमय कहती तुमको, ऋषियों की वाणी॥ जयति... ॥

श्रुति-स्मृति-पुराण वेदों ने, नित तेरे गुण गाये। माँ
यदुवंशी बन ईश स्वयं भी, हैं गोपाल कहाये॥ जयति... ॥

विश्व मातु तुम जन गण वंदिता, यज्ञमयी धात्री। माँ
भक्ति-शक्ति दो सेवा करने, जुट जायें नर-नारी॥ जयति... ॥

मातु तुम्हारा गोमय-गोरस, सर्वरोग त्राता। माँ
घृत-दधि-छाछ-पयस् पीकर, मन साधक बन जाता॥

हे माता! तुम सदा विराजो, जन-जन के आंगन में। माँ
स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन सबका, चमके हर आनन में॥

अमृत-पारस-कल्पवृक्ष हो, तुम ही गौमाता। माँ।
सेवा सतत् हमें सिखला दो, स्वर्गिक सुख दाता॥ जयति... ॥

जयति जय-जय-जय गौमाता, जयति जय-जय-जय गौमाता।
भारतीय गौरव की प्रतिमा, जय-जय गौमाता॥ जयति... ॥

-विमला अग्रवाल
शान्तिकुञ्ज हरिद्वार

जो बनाता अखिल विश्व का

(महाकाल वन्दना)

जो बनाता अखिल विश्व का संतुलन।
उस महाकाल को हम सभी का नमन॥

सज्जनों के लिए जो सबल ढाल है।
दुर्जनों के लिए वज्र विकराल है॥
जन्म और मृत्यु जिस शक्ति की हैं शरण।

दूर दिन-रात से है समय से परे।
जोकि है सृष्टि-पालन प्रलय से परे॥
अप्रभावी जिसे हैं शयन जागरण॥

पास जिसके अशिव रह न पाता यहाँ।
है प्रखर प्राण का जो प्रदाता यहाँ॥
रह न सकता शिथिल मानवी आचरण॥

हम महाकाल के श्रेष्ठ सहचर बनें।
उस महासिन्धु के दूत, जलधर बनें॥
ताकि हो विश्व में सतयुगी नव सृजन॥

जो करेंगे सृजन, श्रेय पा जाएँगे।
मानवी जन्म का, ध्येय पा जाएँगे॥
हो सकेगा सहज स्वर्ग का अवतरण॥

झन-झना दे चेतना के

झन–झना दे चेतना के, जड़ विनिद्रित तार को।
माँ! जगा दे आज तो, सोये हृदय के प्यार को॥

राग रंजित प्राण हो अब, रंग कुछ ऐसा चढ़ा।
नेत्र अन्तर के खुले अब, पाठ कुछ ऐसा पढ़ा॥
देख पायें रूप तेरा, पा सकें तव द्वार को॥

ज्ञान आभा बुद्धि में भर, हृदय में शुचि भावना।
कर्म पथ पर पग बढ़े, कर्त्तव्य की हो साधना॥
हम समझलें आज से,प्रतिबिम्ब तव संसार को॥

पीड़ितों को बाँटकर ममता, हृदय की हम खिले।
प्यार का सागर भरे उर में, सभी से हिल मिले॥
खोल दे माँ आत्मा की, रूद्ध सी इस धार को॥

है नहीं कुछ पास पूजा, थाल हम जिससे भरें।
झर चुके सदगुण सुमन, अर्पित तुझे अब क्या करें॥
आज तो स्वीकार ले, आँसू भरी मनुहार को॥

तुम हमारे थे दयानिधि

तुम हमारे थे दयानिधि, तुम हमारे हो।
तुम हमारे ही रहोगे, हे परम गुरुदेव।।
हम तुम्हारे थे कृपानिधि, हम तुम्हारे हैं।
हम तुम्हारे ही रहेंगे, हे परम गुरुदेव॥

बोलो गुरुवर तुम्हें छोड़कर, किसका गहें सहारा।
इस स्वारथ से भरे जगत में, इक विश्वास तुम्हारा।
अब तो अपना बोध करा दो, हे परम गुरुदेव॥

दुनियाँ छूटे तुम ना छूटो, जोड़ो ऐसा नाता।
तुम ही ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर, तुम ही भाग्य विधाता।
अपने अनुशासन में ढालो, हमको हे गुरुदेव॥

तुमको सौंपे अपना आपा, सीख तुम्हारी माने।
चलें तुम्हारे अनुशासन में, जीवन पथ पहचानें।
ज्ञान-भक्ति का, कर्मयोग का, रस दे दो गुरुदेव॥

वेदमूर्ति तुम तपोनिष्ठ तुम, तुम हो ऋषि अवतारी।
बनें तुम्हारे अनुयायी हम, शक्ति झोंक दें सारी॥
बलिदानी वीरों के जैसा, हमें गढ़ो गुरुदेव॥

मुक्तक-

गुरु शिष्य का सम्बन्ध शाश्वत, छूटता है कब?
कृपासिन्धु-बिन्दुओं से, रूठता है कब?
बस हमें अनुकूल अपने, बना लो गुरुवर,
आप जिसको गढ़ें, अनगढ़ छूटता है कब॥

तुम्हारी शरण में आये

तुम्हारी शरण में आये, गुरुवर सुधार लेना।
सन्देश आपका दें, हमको वो शक्ति देना॥

जो व्रत यहाँ लिये हैं, संकल्प जो किये हैं।
उनको निबाह लें हम, हमको वो शक्ति देना॥

जो दीप तुमने पाला, जिससे हुआ उजाला।
वह ज्योति सबको बाँटे, हमको वो शक्ति देना॥

रस ज्ञान का बहाया, अमृत हमें पिलाया।
हम तृप्ति दें सभी को, हमको वो शक्ति देना॥

तुमने ही चेतना का, अन्तर में कमल टाँका।
सद्गन्ध सबको बाँटे, हमको वो शक्ति देना॥

आयी विदा की बेला, पर प्राण कब अकेला।
मन में तुम्हें बसा लें, हमको वो शक्ति देना॥

लोक-नृत्यों से हमें उल्लास मिलता है और यह शिक्षा मिलती है कि जीवन का आनन्द केवल भौतिक पदार्थों की उपलब्धियों में ही नहीं है। -पं.जवाहरलाल नेहरू

तेरी करूण कराह

तेरी करूण कराह हमारे, कानों से टकराई।
वीर देश की माटी हमने, तेरी शपथ उठाई॥

इस माटी को ऋषियों ने, निज तप से कभी सँवारा।
भागीरथ ने इसी भूमि पर, था जाह्नवी उतारा॥
ओ रावी तट की माटी, तूने इतिहास गढ़ा है।
वही प्यार फिर से प्राणों में, बनकर ज्वार चढ़ा है॥
तेरे हर कण में अणुबम की, देती शक्ति दिखाई॥

यह संस्कृति की सेतु विश्व को, जिसने ज्ञान दिया है।
इसने ही मानवी आस्था, को सम्मान दिया है॥
ढेर हड्डियों का जब देखा, उसने क्रोध किया है।
भुजा उठाकर प्रण करने, वालों को जन्म दिया है॥
इस माटी की गौरव-गाथा, जाये नहीं भुलाई॥

बन्दा बैरागी ने इस, मिट्टी को शीश नवाया।
वीर भगत ने इस मिट्टी पर, हँस-हँस शीश चढ़ाया॥
इस हल्दीघाटी माटी पर, जूझ गये बलिदानी।
यही एक अपने गौरव की, बाकी बची निशानी॥
उसे समझकर मृत गिद्धों ने गर्दन आज उठाई॥

धरती के कोने-कोने तक, हम सबको जाना है।
इस माटी की देव संस्कृति, जग में फैलाना है॥
इस माटी के स्वाभिमान की, रक्षा सदा करेंगे।
एक बार की कौन कहे, तुझ पर सौ बार मरेंगे॥
यह निष्ठा की शपथ कभी भी, जाये नहीं भुलाई॥

मुक्तक–

माँग रही है देव संस्कृति, निष्ठावानों से कुर्बानी।
देवभूमि की शपथ उठाकर, आगे बढ़ो वीर बलिदानी॥
शीश चढ़ाकर कभी सपूतों ने, माटी का कर्ज चुकाया।
लोभ–मोह से ऊपर उठकर, आओ बनें सृजन सेनानी॥

तुम मुझे दे दो सरस

तुम मुझे दे दो सरस स्वर, तान ऐसी छोड़ दूँ मैं।
हर हृदय भर जाय रस से, टूटते दिल जोड़ दूँ मैं॥

हाँ! मनुज को हो गया क्या? मनुजता को छोड़ बैठा।
और अनुशासन सभी यह, श्रेष्ठता से तोड़ बैठा॥
हीनता से बचा सबको, दिव्यता से जोड़ दूँ मैं॥

क्षणिक सुख के लिए मानव, शान्ति मन की खो चुका है।
क्रूरता में लिप्त है यह, प्यार मन का सो चुका है॥
मनों को फिर से सरस, संवेदना से जोड़ दूँ मैं॥

देवपुत्रों पर अरे क्यों? स्वार्थ परता छा गयी है।
दिव्य पौरुष सो गया है, या कृतज्ञता भा गयी है॥
शक्ति दो पुरुषार्थ इनका, दिव्य पथ पर मोड़ दूँ मैं॥

देव संस्कृति के पहरुए, खुद असंस्कृत हो रहे हैं।
क्रान्ति वेला द्वार है, हाय अब भी सो रहे हैं॥
गा सरस मंगल प्रभाती, नींद इनकी तोड़ दूँ मैं॥

तुमने अमृत पिया है

तुमने अमृत पिया है, हमको पिला दिया है।
मरते हुए जहाँ को, फिर से जिला दिया है॥

कोई न था ठिकाना असहाय जिन्दगी का।
दु:ख दर्द था फसाँना, निरूपाय जिन्दगी का॥
हारे हुए खुदी से, मारे मरे पड़े थे।
जकड़े जरा मरण से हारे थके खड़े थे॥
हम कौन हैं कहाँ हैं, खुद से मिला दिया है॥

संसार सार वाला, यह साधना का घर है।
हर साँस यज्ञ करती, बलिदान का सफर है॥
निर्माण ज्ञान गंगा, की तारती लहर है।
जलती मशाल थामें, ऋषियों का वंश धर है॥
सविता, उषा उगाकर, जीवन खिला दिया है॥

अकुला उठी गिलहरी, सागर को पाटना है।
दु:ख दर्द गिद्ध को फिर, सीता का बाँटना है॥
कितने कड़े हो जकड़े, हर पाश काटना है।
हारे पवन सुतों को, विश्वास बाँटना है॥
अन्याय का हिमालय, जड़ से हिला दिया है॥

सौगन्ध खा रहे हैं, विषपान हम करेंगे।
मुर्दार जिन्दगी में, फिर प्राण हम भरेंगे॥
हम अग्नि देवता की ले साक्षी चले हैं।
आँधी बुझायेगी क्या, तूफान में जले हैं॥
तम को जड़ा तमाचा, यों तिलमिला दिया है॥

तुम्हारे सूत्र जीवन में

तुम्हारे सूत्र जीवन में नहीं हमने उतारे।
रहे बस खोजते निशिदिन तुम्हारे ही सहारे॥

कभी जब तेज धारों में बहाओं में घिरे हम।
हुये अक्षम पकड़ने में, सभी अक्षम सिरे हम॥
तुम्हीं ने स्नेह-संरक्षण हमें उस क्षण दिया है।
स्वयं दायित्व शिष्यों का, सदा तुमने लिया है॥
कृपा से पा गये हैं हम, सबल अविचल किनारे॥

तनिक सोचें कि हमने किस तरह जीवन जिया है।
किसी के अश्रु पोंछे क्या किसी का दुख पिया है॥
कभी देवत्व का आलोक हममें दीख पाया।
हमारे आचरण ने क्या, किसी का मन लुभाया॥
हमारे प्यार ने कितने यहाँ जीवन सुधारे॥

स्वयं अपनी समीक्षा का रखा क्या ध्यान हमने।
स्वयं परिवार का कितना किया समर्पण हमने॥
किया क्या अन्य का आदर सहज सत्कार हमने।
किया कितने सुझाओं को यहाँ स्वीकार हमने॥
कभी यह प्रश्न जीवन में नहीं हमने विचारे॥

हमें हैं लोकसेवी बन सभी के मध्य जाना।
न छिप सकता कभी गुण-दोष का अपना खजाना॥
तभी जो स्वच्छ रखना है हमें प्रत्येक कोना।
कथन से पूर्व है हमको स्वयं उत्कृष्ट होना॥
जरूरी है कि हर परिजन स्वयं का मन बुहारे॥

मुक्तक-आज शपथ लेते गुरुवर, निर्देशो का ध्यान रखेंगे।
राह हमें जो बतलाई है, उस पर ही कदम धरेंगे॥

तपोभूमि की तप ऊर्जा को

तपोभूमि की तप उर्जा को, आओ वरण करें।
युग-महर्षि की तपस्थली को, आओ नमन करें॥

दुर्वासा के तप की गरिमा, इसके हैं कण-कण में।
गायत्री मंत्रों की महिमा, गुंजित हैं क्षण-क्षण में॥
वातावरण दिव्य है इसका, चिंतन मनन करें॥

हम अपना व्यक्तित्व तपाएँ, तपोभूमि में आकर।
और साधना सफल बनाएँ, यहाँ सिद्धियाँ पाकर॥
और लोकमंगल में अपनी, आहुति हवन करें॥

यहाँ ज्ञान के स्रोत फूटते, जग पावन करने को।
यहाँ ज्ञान गंगा बहती है, जग का तम हरने को॥
जन-जन तक पहुँचाने इसको, हम व्रत वरण करें॥

कर जीवन साधना गढ़ें, व्यक्तित्व साधकों जैसा।
सप्त क्रान्ति में हाथ बटायें, सृजन सैनिकों जैसा॥
कोई मोर्चा शपथ पूर्वक, आओ चयन करें॥

समयदान दें, अंशदान, सक्रिय हम हो जाएँ।
युग-साहित्य को, जन मानस औ घर-घर तक पहुँचायें॥
युग सृष्टा के संकल्पों हित, दृढ़ संगठन करें॥

मुक्तक-

तप से सृष्टि बनी पलती है, तपोनिष्ठ को नमन करें।
तपोभूमि की रज माथे, चलो नया युग सृजन करें॥

तुम्हीं हो प्राण हम सबके

तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम।
हृदय से दूर हों कैसे, हृदय की भावना हो तुम॥

बताओ चेतना कैसे किसी, तन से अलग होगी?
सुकोमल भावना कैसे सरल, मन से अलग होगी?
करें, कैसे विदा वे स्वर तुम्हारी, प्रेरणाओं के?
थकन में जो मिले तुमसे सुखद, झोके हवाओं के?
बिछुड़ सकते, भला कैसे हमारी, कामना हो तुम?

हमारी हर प्रगति हर कर्म में, तुम ही समाये हो।
कि संकट में, सुरक्षा चक्र ले, तुम दौड़ आये हो॥
दिखाया लक्ष्य तुमने ही, तुम्हीं ने, राह बतलाई।
हमें पतवार दी तुमने, जलधि की, थाह बतलाई॥
हमारे साध्य औ, साधन, तुम्हीं हो साधना हो तुम॥

कदम जब डगमगाए थे, तुम्हीं ने, तब सँभाला था।
अँधेरे मोड़ पर हमको मिला, तुमसे उजाला था॥
चलें, चलते रहें यह प्रेरणा, तुमने जगाई थी।
हृदय में धार करुणा की, तुम्हीं ने तो बहाई थी॥
हमारी दृष्टि हो तुम ही सहज, संवेदना हो तुम॥

तुम्हारे स्नेह की सिहरन सदा, अनुभव करेंगे हम।
तुम्हारी प्रेरणा पुलकन सदा, अनुभव करेंगे हम॥
मिलेगी जब कभी उलझन तुम्हें, फिर से पुकारेंगे।
तुम्हारे कार्य-पथ में हम स्वयं, सर्वस्व वारेंगे॥
हमारे हर भविष्यत् की सुखद, संकल्पना हो तुम॥

तुम्हारा हर निमिष का साथ

तुम्हारा हर निमिष का साथ हम कैसे भुलायें?
वरद् आशीष के वे हाथ हम कैसे भुलायें?

भुला दें किस तरह आँखें झुकीं जो लेखनी पर।
बहुत अपनत्व में डूबी सरल वाणी तुम्हारी॥
अपरिचित भी अगर सम्पर्क में आता तुम्हारे।
उसे भी दृष्टि लगती खूब पहचानी तुम्हारी॥
बनी हर पल हमें जो प्रेरणा, उल्लास पावन।
तुम्हारी स्नेह भीगी बात हम कैसे भुलाएँ?

हमारा कंटकों के बीच डरकर डगमगाना।
तुम्हारा दौड़कर हमको तुरत उँगली थमाना॥
शिथिल-असहाय हमको देखकर निर्जन पथों पर।
बहुत भारी पड़े पत्थर स्वयं आकर उठाना॥
कृपा से जो तुम्हारी आज भी मिलती रही है।
सहज अनुदान की बरसात हम कैसे भुलाएँ?

तुम्हीं ने शूल के संग भी हमें हँसना सिखाया।
मिली जो जिन्दगी हम को उसे जीना सिखाया॥
सभी को प्यार औ सहकार का अमृत लुटाना।
जहर विद्वेष-ईर्ष्या का हमें पीना सिखाया॥
सहज संतोष की जो सम्पदा तुमसे मिली है।
बताओ वह अमर सौगात हम कैसे भुलाएँ?

तुम्हारे हैं हम तुम्हारे

तुम्हारे हैं हम तुम्हारे रहेगें, तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेगें।
तुम्हारे लिए हम, सभी कुछ सहेगें॥

हमें स्वार्थ वैभव लुभाता नहीं है।
तुम्हारे बिना कुछ सुहाता नहीं है॥
तुम्हें जो रुचेगा वही हम करेंगे॥

करें स्वर्ग की मुक्ति की कामना क्यों?
करें मान या धन की याचना क्यों?
तुम्हीं प्राण धन हों तुम्हीं को वरेगें?

हमें ज्ञान दो लक्ष्य पहचान पायें।
हमें शक्ति दो तैर कर पार जायें॥
तुम्हारे निकट हम पहुँच कर रहेगें॥

भटकते हुओं को सही हम दिशा दें।
सिसकते हुओं को फिर से हँसा दें॥
यही साधना उम्र भर हम करेगें॥

केले और धान की खेती में संगीत की स्वर लहरियाँ डाली जाये तो उनके वजन और उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती देखी गयी है। –वाङ्मय १९ पृ. ५.६

तप के बल पर आ जाते हैं

तप के बल पर आ जाते हैं, बड़े-बड़े भूचाल।
सूरज को भी हतप्रभ कर देता, तपसी का भाल॥

जब सूरज तपता है,जलनिधि भी जलधर बन जाता।
सूरज के तपने से हिमनद, का भी हिम गल जाता॥
सोने जैसी तपकर काया भी कुन्दन हो जाती।
दूध तपा तो स्वयं मलाई, है उपर को आती॥
तप सम्भव कर देता सब कुछ, तप में बड़ा कमाल॥

आप तपे हैं इतना, तप के ही पर्याय हुए हैं।
अरे तपस्वी! तप ने भी आ तेरे चरण छुए हैं॥
केवल तन मन नहीं तपाये, जीवन, प्राण तपाए।
तेरे तप ने दधीचि से भी, आगे कदम बढ़ाए॥
तप की गाथाएँ बौनी है, इतना हुआ विशाल॥

तेरा तप फिर कैसे, अपना रंग नहीं लाएगा।
अब तेरा संकल्प कौन सा, पूर्ण न हो पाएगा॥
तेरे संकल्पों ने तपसी, हमको शिल्प किया है।
तूने हमको अपने दुर्लभ, तप का अंश दिया है॥
यह कैसे भूलेंगे तूने हमको किया निहाल॥

हम भी निज स्नेह लुटायें, जग की जलन मिटाने।
और मनुजता के घावों को, शीतलता पहुँचाने॥
तेरे हैं इसका परिचय हम देंगे आचरणों से।
जैसे सूरज का परिचय मिलता, उसकी किरणों से॥
देते रहना हमें तपस्वी गरिमा भरी उछाल॥

हम 'उज्ज्वल भविष्य' के आने तक चलते जाएँगे।
और हमारे प्राणों के दीपक, जलते जाएँगे॥
नई सदी के अभिनन्दन में, आगे खड़े दिखेंगे।
दुष्प्रवृत्तियों को उखाड़ने, हम सब खड़े दिखेंगे॥
पहिनाएँगे महाकाल को, सत्कर्मों की माल॥

तुम करुणा सागर हो

तुम करुणा सागर हो, हमें भी प्यार नहीं है कम।
तुम पाल रहे हो हमको, तुम्हें निश्चित पा लेंगे हम॥

लोभ, मोह, संकीर्ण स्वार्थ ने, चक्कर रचे हजार।
तुमसे नेह जुड़ा तो कोई, टिकता नहीं विकार॥
यह नेह डोर पकड़े, तुम्हीं तक जा पहुँचेंगे हम॥

काल बली है, आज चल रहा, टेढ़ी-मेढ़ी चाल।
महाकाल की बात न मानें, ऐसी नहीं मजाल॥
उलटे को उलट दो तुम, तुम्हारे साथ चलेंगे हम॥

कुविचारों, दुर्भावों ने मिल, हमें किया लाचार।
सुविचारों, सद्भावों का दो, हमें नया संचार॥
पा ज्योति दान तुमसे, दिये की भाँति जलेंगे हम॥

तुम समर्थ हो करते रहते, दुनियाँ पर उपहार।
नन्हा सा, पर भावभरा मन, हम देते हैं उपकार॥
जो फ़र्ज हमारा है, उसे मरकर भी निभायें हम॥

तोड़ें हम आगे बढ़कर

तोड़ें हम आगे बढ़कर, अज्ञान तिमिर की कारा।
फैलायें आलोक ज्ञान का, यह युग धर्म हमारा॥

पतझर का तर्पण करके, ऋतु बासन्ति लाना है।
सत्यं, शिवं, सुन्दरम् को, नव–जीवन पहुँचाना है॥
नीति धर्म का भवन गिर रहा, दें हम उसे सहारा॥

दम तोड़ती आस्थाओं में, प्राण भरें हम अपना।
पूरा करें धरा पर स्वर्ग, उतर अपने का सपना॥
हिमखण्डों से वेद ऋचाओं, को फिर जाये उबारा॥

हर युग में प्रज्ञापुत्रों ने, राह दिखाई जग को।
बीने हैं पत्थर औ काँटे, साफ किया है मग को॥
जन सेवक सदैव बन जाता,निज युग का ध्रुव तारा॥

तुलसी और कबीरा ने भी, राग यही गाया था।
हर चौराहे दीप जलाकर, जीवन दमकाया था॥
उस दीपक की रहा देखता, हर बस्ती हर गलियारा॥

आज न केवल दर्पण, दिखलाने से काम चलेगा।
अगर नहीं जड़ काटी तो, घर–घर अपराध फलेगा॥
बनो आज शंकर जिनने, विष पिया जगत का सारा॥

इसके बाद भवन नवयुग का, ऊँचा बहुत बनायें।
जिसके पूजा घर में मानवता, की मूर्ति बिठायें॥
दीप प्रेम का शुचिता समता, का स्वर गूँजे प्यारा॥

तपकर तुम्हीं दोबारा

तपकर तुम्हीं दोबारा, गंगा उतार लाये।
घर-घर डगर-डगर में, सुविचार है बहाये॥

छल छद्म का धरा पर, जब ताप बढ़ रहा था।
युग कंस रावणों की, नवमूर्ति गढ़ रहा था॥
मानव शरीर बनकर, तब-तब तुम्हीं ही आये॥

दुष्वृत्तियाँ हटायी, कुविचार को मिटाया।
अज्ञान का खड़ा गढ़, निज ज्ञान से ढहाया॥
कंटक भरे पड़े जो, शुभ राह से हटाये॥

रवि बन प्रकाश बाँटा, शशि बन अमृत बहाया।
फिर अस्थि जाल अपना, युग ज्वाल में तपाया॥
युग यज्ञ में विहंस कर, निज सुख सुमन चढ़ाए॥

सर्वत्र सृष्टि भर में, सद्‌भाव भर दिए हैं।
सन्मार्गी बदलकर, मस्तिष्क कर दिए हैं॥
जीवन बनें परिष्कृत, वे मार्ग हैं बताए॥

त्याग और तप के बल

त्याग और तप के बल पर ही, चलता है संसार।
जहाँ नहीं तप त्याग तनिक भी, वह जीवन बेकार॥

लिए उदर में शिशु को जननी, तप करती नौमास।
देकर सार भाग निज तन का, करती मनुज विकास॥
जहाँ सृजन है, वही त्याग का, गूँज रहा जयकार॥

तप करता किसान खेतों में, तप करता मजदूर।
तप से ही बनते वैज्ञानिक, विकसे तुलसी–सूर॥
दिया जिन्होंने त्याग स्वर्ग सुख, बने वही अवतार॥

त्यागा अपना रूप बीज ने, तभी वृक्ष बन पाया।
तपकर ही साधारण लोहा, फौलाद कहलाया॥
तपके द्वारा रचा विधाता, ने सारा संसार॥

आदर्शों हित कष्ट सहन ही, बन जाता तप रूप।
सर्वोत्तम उपयोग शक्ति का, बनता त्याग अनूप॥
यही यज्ञ के मूल मंत्र है, संस्कृति के आधार॥

तुमने बन्धन क्यों स्वीकारा

(धुन–जय अम्बें जय जगदम्बें)

तुमने बन्धन क्यों स्वीकारा।
लोहे की हो या सोने की, कारा तो है कारा॥

कैद भोगता है अपराधी, हथकड़ियाँ है जाती बाँधी।
तुमको भी तो बाँध रखा है, क्या अपराध तुम्हारा॥

सोने के बन्धन है पहिने, नाम दिया है उनको गहने।
दास बना डाला भोगों का, तुमने नहीं नकारा॥

तुम भी कैदी बनी हुई हो, दीवारों से घिरी हुई हो।
ऐसी आदत बनीं तुम्हारी, बन्धन भी अब प्यारा॥

क्षमताओं का दम घोंटा है, अब उन पर पहरा होता है।
भोग, वासना का अन्धा मद, प्रतिभा का हत्यारा॥

प्रतिभा को कुण्ठित कर डाला, पिला पिला विषयों का प्याला।
चलती फिरती गुड़िया जैसा, नर ने तुम्हें संवारा॥

तुमने जिनको जन्म दिया है, उनने यह उपहार दिया है।
नारी तेरा उच्च मनोबल, उनसे ही क्यों हारा॥

नारी तो अर्द्धांग्नि कहाती, वह ही नर को पूर्ण बनाती।
नारी नर दोनों ने मिलकर, भू–पर स्वर्ग उतारा॥

तू नहीं पीता बीड़ी

तू नहीं पीता बीड़ी को, बीड़ी तुझको पीती है।
पीकर के यह तुझको भाई, इस दुनियाँ में जीती है॥

इस बीड़ी के कई संबंधी, और रिस्तेदार भी है।
कैंसर,दमा,खाँसी,टी.बी., इसके ताबेदार भी है॥
श्मशान तक पहुँचाना सबको, यही इसकी ड्युट्ी है॥

तेरे पीने से यह पहले, पैसे तेरे खाती है।
समय संकल्प और शांति, सभी लुटते जाती है॥
इन्सान को नहीं जिंदा छोड़ना, यही इसकी नीति है॥

तू निकाले इसका धुँवा, ये तेरा धुँवा निकालेगी।
खटिया पर लेटाकर, आखरी तेरा दम उड़ायेगी॥
अब इसके हाथ जोंड़ दे भाई, झुठी इसकी प्रीति है॥

पीना इसको छोंड़ दे भाई, ज्ञानामृत का काम करो।
बाकी रह समय जो भाई, गायत्री का जाप करो॥
ॐ भूर्भुवः स्वः----------------प्रचोदयात्।
छोड़के इसको आगे बढ़ो तुम, जो बीती सो बीती है॥

संगीत से आत्मा की मलीनता धुलती है। –आवेर वेच

तुम तो यही कहीं

तुम तो यही कहीं गुरुवर, मेरे आस-पास हो।
आते नज़र नहीं पर, मेरे साथ-साथ हो॥
बहते पवन के झोंके, अहसास ये दिलाये।
संग-संग हो हमारे, महसूस ये कराये॥
मधुबन में बाबा आज भी करते निवास हो॥
हमको तो ये यकीं है, तेरे साथ चल रहे है।
तेरी दुआ से बाबा, अब भी पल रहे है॥
बच्चों को अपने प्यार, देते सकास हो॥
आती है हमको आज भी, साकार उपासना।
रोशन तुम्हीं से बाबा, हर दिल की आसना॥
बन करके ज्ञान चन्द्रमा, देते प्रकाश हो॥

तेरी महिमा की यशगाथा

तेरी महिमा की यशगाथा, अखिल विश्व निशिदिन है गाता।
याद तुम्हारी आती माता, स्नेह तुम्हारा भुला न पाता।।

तुमने प्यार दुलार लुटाया, ज्ञानामृतमय पान कराया।।
सविता की शाश्वत शक्ति से, प्रखर प्रेरणा पा मुस्काया।।
निष्ठुर होता मानव जीवन, अगर न जुड़ता तुमसे नाता।।

करूणा दया प्रेम छलकाकर, मानवता की ज्योति जलाकर।
बनी सहचरी वेदमूर्ति की, त्याग, तपस्या शुभ अपनाकर।।
श्रद्धा सजल मूर्ति ममता की, श्रद्धा पूरित जग शीश झुकाता।।

हम सब श्रद्धा सुमन चढ़ाकर, संकल्पों को याद कर रहे।
सूक्ष्म जगत से प्यार लुटाना, हम सब हैं फरियाद कर रहे।।
वही करेंगे मिलकर हम सब, माता सुनों तुम्हें जो भाता।।

तूफान आ रहे हैं तेवर

तूफान आ रहे है तेवर, बदल–बदलकर।
संक्रान्ति का समय है, चलना बहुत सम्भलकर॥

हिमखण्ड टूटने को हर पल मचल रहे हैं।
नदियाँ उफन रही है, और दिल दहल रहे हैं॥
संसार है सशंकित व्याकुल दुःखी बहुत है।
विस्फोट को विकल हर ज्वालामुखी बहुत है॥
बनने लगे न मुख से, लावा पिघल–पिघलकर॥

यह धूल के बवँडर धूमिल डगर करेंगे।
ऊँचे भवन अनेकों खण्डहर स्वयं बनेंगे॥
जड़हीन भव्यताएँ पल भर नहीं टिकेंगी।
छल–छद्म की प्रथाएँ, कल फिर नहीं दिखेंगी॥
हर क्षुद्रता प्रकाशित, होगी निकल–निकलकर॥

अनगिन विटप गिरेंगे और धूल में मिलेंगे।
वटवृक्ष आँधियों में लेकिन नहीं हिलेंगे॥
हम साधना करें जो, हो आस्था अखण्डित।
हर पग सतर्क होवें, हों लोभ से न मण्डित॥
पछता सकें सुबह को, जिससे न हाथ मलकर॥

जो कुछ हुआ, व होगा, है योजना प्रभु की।
'उज्ज्वल भविष्य' की है, संकल्पना प्रभु की॥
संकीर्णता कहीं यदि अवरोध बन अड़ेगी।
तो दिव्य शक्ति उससे हो संगठित लड़ेगी॥
इससे स्वयं मिटेंगी, दुष्प्रवृत्तियाँ कुचलकर॥

कल भोर में तिमिर का, स्वयमेव अंत होगा।
सूरज अनन्त होगा, शाश्वत बसन्त होगा॥
फिर सतयुगी सुहाना वातावरण रहेगा।
सम्पूर्ण विश्व व्याकुल इसकी शरण गहेगा॥
सद्वृत्तियाँ बढ़ेंगी, इसकी ही गोद पलकर॥

तीस बरस की क्वाँरी कन्या

तीस बरस की क्वाँरी कन्या, उठती हूक नई।
इस दहेज के कारण भरी जवानी रूठ गई॥

इसके कारण बनना पड़ा पिता को बेईमान।
तब ही पूर्ण कर सका वह बेटे वालों की माँग॥
फिर भी मिटी न हविश लोभ की सीमा टूट गई॥

रोज-रोज माँग न पूरी कर पाये घर वाले।
तो दु:ख ऐसे दिये बहू को सम्हले नहीं सम्हाले॥
जीवित हाय जलाया मानवता भी छूट गयी॥

युवकों उठो तुम्हीं मेटो इस समाज के कैन्सर को।
चाँदी पर मत बिको, न मरघट बनने दो निज घर को॥
मन का सुख घर की समृद्धि यह कुप्रथा लूट गयी॥

जीवन साथी चुनों गुणों के बल पर प्रतिभावान।
प्यास बुझाओ अमृत से मत करो हलाहल पान॥
नया खरीदो घट दहेज की गगरी फूट गयी॥

तुम न घबराओ

तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ अब।
और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ॥
मैं खुशी के गीत गा–गा कर सुनाऊँगा॥
–गा–गा कर सुनाऊँगा॥

मानता हूँ ठोकरें तुमने सदा खाई,
जिन्दगी के दाँव में हारें सदा पाई।
बिजलियाँ दुःख की निराशा की सदा टूटी,
मन गगन पर वेदना की बदलियाँ छाई॥
पोंछ दूँगा मैं तुम्हारे अश्रु गीतों से,
तुम सरीखे बेसहारों का सहारा हूँ॥
मैं तुम्हारे घाव धो मरहम लगाऊँगा,
मैं विजय के गीत गा–गाकर सुनाऊँगा॥

खा गई इन्सानियत को भूख यह भूखी,
स्नेह ममता को गई पी प्यास यह सूखी।
जानवर भी पेट का साधन जुटाते हैं,
जिन्दगी का हक नहीं है रोटियाँ रूखी॥
और कुछ माँगो, हँसी माँगो खुशी माँगो,
खो गये हो दे रहा तुमको इशारा हूँ॥
आज जीने की कला तुमको सिखाऊँगा,
जिन्दगी के गीत गा–गाकर सुनाऊँगा॥

तपा तपाकर निज

तपा तपाकर निज शरीर को, फैलाया उजियाला।
विश्वम्भर कैसा अद्‌भुत ये, तुमने जादू कर डाला॥
नूतन युग के कर्म योग की, तुमने गीता गाई।
आत्म-ज्योति से जग उठे जग, ऐसी ज्योति जलाई॥
गाऊँ कितनी गाथा जितनी, कहूँ सभी थोड़ा है।
है सर्वज्ञ ऋद्धि तुमने, कैसा नाता जोड़ा है॥
मृतकों के शरीर पर छिड़का, अमृत का नव प्याला॥
राव रंक में भेद कहीं कुछ, ऐसी तेरी माया।
हे प्रज्ञावतार तुममें ही, यह ब्रह्माण्ड समाया॥
ज्ञानयज्ञ की सारे जग में, धूम मचाने वाले।
हे प्रज्ञावतार संस्कृति की, लाज बचाने वाले॥
दुनियाँ पर छाये संकट के, बादल को भी टाला॥

थे सामने तो लखकर

(आँखें निहारती है गुरुवर)

थे सामने तो लखकर, खिलता था कमल मन में।
लेकिन सुदूर जाकर, मधु गंध बन गये हो॥
सुख दुःख सभी क्षणों में, संवेदना पिलाई।
होकर अदृश्य भी तुम, मधु छंद बन गये हो॥
थे सामने तो मन यह, दर्शन ही चाहता था।
प्रभु किन्तु दूर जाकर, उर स्वंद बन गये हो॥
दस लाख साथियों के, मन प्राण में बसे हो।
कुछ महारास जैसे, नंद-नंद बन गये हो॥
सत् का सबक पढ़ाया, चित्त में हुये समाहित।
रख सूक्ष्मरूप गुरुवर, आनन्द बन गये हो॥

थाली भर मैं लाई रे खींचड़ो

थाली भर मैं लाई रे खींचड़ो, उपर घी की वाटकी।
जीमो म्हारा श्याम धणी, जिमावे बेटी जाट की॥

बाबुल म्हारो गाँव गयो है, कुण जाणें कद आवेलो।
ऊँके भरोसे बैठ्यो रेहवे, भूखो ही मर जावेलो॥
आ थाने जिमाऊँ श्याम जी, खाले छाँछ री राबड़ी॥

बार-बार मैं मंदिर जुड़ती, बार-बार मैं खोलती।
क्यूँ ना जीमो क्यूँ ना बोलो, खड़ी-खड़ी मैं रोवती॥
थें जीमो तो जद मूँ जीमूँ ना मानू मैं लाख की॥

परदो करवो भूल गई हूँ, परदो फेर लगायो है।
धावलिया रे ओले बैठकर, श्याम खींचड़ो खायो है॥
भोला सा भक्ताँ सूँ कीनी, श्याम जीनी हाट की॥

भक्ति हो तो कर्मा जैसी, साँवलिया घर आयो है।
सोहनलाल लुहार जाट को, हरक-हरक जस आयो है॥
साँची भक्ति प्रभु से हो तो, मूरत बोले काठ की॥

हमारे साधु-संतों की संगीत साधना का ही यह प्रभाव था कि कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, तुकाराम, नरसी मेहता आदि ऐसी कृतियाँ कर गए जो हमारे और संसार के साहित्य में सर्वदा ही अपना विशिष्ठ स्थान रखेंगी।
—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

थोड़ी-सी साँसें पायी हैं

थोड़ी-सी साँसे पायी हैं, इनको नहीं गँवाना है।
पता नहीं किस पल में बन्दे, तुझे यहाँ से जाना है॥

घर-परिवार समाज त्यागकर, घाट-घाट बन-बन भटका।
तन से किया पलायन, पर मन रहा मोह में ही अटका॥
कर्त्तव्यों का त्याग करे जो, कभी न होता त्यागी है।
कर्म करें, परिणाम प्रभु पर छोड़ें, वह बैरागी है॥
करने हैं सब काम, मगर मन उनमें नहीं रमाना है॥

राम रसायन पिया कि जिसने, वही मस्त होकर झूमा।
नहीं पराया दीखा कोई, जहाँ-जहाँ भी वह घूमा॥
सभी तरफ उसको अपना ही घर-परिवार नजर आया।
हर प्राणी में उसे छलकता प्रभु का प्यार नजर आया॥
मन न राम के रंग न रंगा तो, चोला व्यर्थ रंगाना है॥

कल के लिए न टालो बिल्कुल, जनमंगल की राह चलो।
तपन बहुत फैली है, सेवा की है शीतल छाँह चलो॥
नश्वर सुख के लिए न भागो, यहाँ सुबह से सोने तक।
कर लो तुम सत्कर्म अभी भी, शाम उमर की होने तक॥
पुण्य और परमार्थ कमा लो, सुख का यही खजाना है॥

टिकेगा कहाँ तक धरा पर

टिकेगा कहाँ तक धरा पर अँधेरा।
नई रोशनी ले सुबह आ रही है॥

क्षितिज पर किरण, जाल बिखरा अभी है,
तिमिर के कुहासे ये जलकर रहेंगे।
मेहनत के पुतले ने आशा के पौधे,
पसीने से सींचे हैं उगकर रहेंगे॥
ये संशय के बादल बिखरने लगे हैं,
श्रम की सलौनी जमीं आ रही है॥

सृजन की कहानी अधूरी रही कब,
जहाँ साधना है नहीं दूर मंजिल।
भले राह काँटों भरी हो चुभन हों,
जहाँ चाह है नहीं राह बोझिल॥
निराशा के स्वर अब नहीं टिक सकेंगे,
उमड़ती लहर जोश की आ रही है॥

बढ़ो आज संकल्प लेकर सृजन का,
युगों से जमें इस पतन को भगाओ।
मिटा दो सभी भेद दुर्भाव जग से,
सभी को उठाओ हृदय से लगाओ॥
समय भ्रान्ति का चुक गया आज समझो,
नयी क्रान्ति दौड़ी चली आ रही है॥

देवमानवों उठो! तुम्हीं पर

देवमानवों उठो तुम्हीं पर, सबकी टिकी निगाहें।
ऊँचा मस्तक-चौड़ी छाती, फौलादी हैं बाँहें॥

सृजन शक्ति अद्‍भुत है तुममें, तुम हो युग निर्माता।
कब से तुम्हें पुकार रही है, प्यारी भारत माता॥
आज जागरण की वेला में, लो नूतन अँगड़ाई।
देश समाज माँगता तुमसे, शक्ति, भक्ति, तरुणाई॥
अनय आँधियाँ भी आजमालें, यदि अजमाना चाहें॥

जीवन जल से सींचनी है, मानवता की क्यारी।
मानवता के घर में लाना है, पूनम उजियारी॥
नैतिकता कर्तव्य निभाने, कालकूट पीजाना।
लेकिन बर्बरता के आगे, कभी न शीश झुकाना॥
जीते जी अनसुनी न करना, दीन-हीन की आहें॥

ज्ञान मशाल हाथ में लेकर, आगे बढ़ते जाना।
मन मन्दिर में संकल्पों के, पूजा थाल सजाना॥
अभिनन्दन उज्ज्वल भविष्य का, करने आगे आओ।
जन-मानस में अभिनन्दन को, श्रद्धा कमल खिलाओ॥
जीवन का हो लक्ष्य तुम्हारा, सबसे नेह निबाहें॥

नई विचार क्रान्ति करके तुम, मन की भ्रान्ति भगाओ।
आत्मत्याग,पौरुष,तप-बल से, सोया भाग्य जगाओ॥
जाति-पाँति के ऊँच-नीच के, सारे बन्धन तोड़ो।
रखो मनोबल अपना ऊँचा, विषधारा को मोड़ो॥

देवसंस्कृति विश्व विद्यालय

देव संस्कृति विश्व विद्यालय प्रगति का द्वार है।
साधनों से दूर इसका, साधना आधार है॥

खो दिया हमने बहुत कुछ सभ्यता के नाम पर।
ध्यान कोई दे सका पल भर न दुष्परिणाम पर॥
संस्कृति पर सभ्यता इस भाँति हावी हो गई।
बात आत्मोत्थान की फिर निष्प्रभावी हो गई॥
फिर युवाओं में जगाना सांस्कृतिक सुविचार है॥

यह दिशा देगा स्वयं से ऊबते इन्सान को।
भोगवादी दलदलो में डूबते इन्सान को॥
तब चतुरता को न कोई भी प्रगति कह पाएगा।
तब अनास्था में न कोई आदमी रह पायेगा॥
आज हमको फिर बदल देना वही व्यवहार है॥

आदमी की दृष्टि में बदलाव आयेगा यहाँ।
श्रेष्ठ चिन्तन और सहज सद्भाव आयेगा यहाँ॥
क्योंकि यह संबद्ध है अध्यात्म की उस धार से।
घोर तप हैं फूल जिसके जो प्रवाहित प्यार से॥
युग मनीषी की यही संकल्पना साकार है॥

युग नई पीढ़ी नए अंदाज में फिर आयेगी।
सतयुगी वातावरण की प्रेरणा बन जाएगी॥
छात्र सेनानी बनेंगे सांस्कृतिक सत्क्रांति के।
दास वे होंगे नहीं संशय जनित दिग्भ्रांति के।
उस तरफ ही देखता सारा विकल संसार है॥

देव पुरूष आया तब

देव पुरूष आया तब हमने, हँसकर की अगुवाई।
कार्य पूर्ण कर कह सकते हैं, हमने प्रीति निभाई॥

पुष्पाञ्जलि सच्ची हम सब की तभी कहीं जायेगी।
सेवा की खुशबू जब सबके, कर्मों से आयेगी॥
लोग कहें जन जागृति की महक कहाँ से आई॥

ऐसे ही जो अर्घ्य चढ़े वह, जल हो ममता वाला।
हर प्यासे के मुख तक पहुँचे, प्रेमामृत का प्याला॥
जब-जब प्रेम बढ़ा धरती पर, घृणा सिमटती पायी॥

आज समय वह जब धरती से दुश्चिंतन मिटता है।
और सतोगुण से यह सारा भू-मण्डल पटता है॥
युग परिवर्तन हेतु तभी तो, ज्योति अखण्ड जलाई॥

हम सब उनके शिष्य उन्हीं की दृष्टि श्रेष्ठ हम पायें।
उनकी युग निर्माण योजना वसुधा पर फैलाये॥
जग मानेगा हमने सच्ची श्रद्धाञ्जलि चढ़ाई॥

दूसरों की बहुत बात करते

दूसरों की बहुत बात करते रहे, बात अपनी कभी की गई ही नहीं।
चादरें दूसरों की उधेड़ते रहे, खुद की उधड़ी हुई सी गई ही नहीं॥

बिन बनाये हुए न्याय घर बन गये-
दोष की दृष्टि से दोष देखा करे।
काँच के वस्त्र पहिने हुए जो दिखा-
पत्थरों को उसी ओर फेंका करे॥
दृष्टि का दोष इतना भयंकर हुआ, सूर्य से रोशनी ली गई ही नहीं॥

दोष अपने अगर देख लेते स्वयं-
तो परिवार की राह बनती सहज।
व्यक्ति निर्माण का कार्य करते स्वयं-
प्रेरणास्त्रोत की राह खुलती सहज॥
आचरण को स्वयं के उदाहरण बना,कारगर प्रेरणा दी गई ही नहीं॥

व्यक्ति निर्माण की साधना चल पड़े-
तो स्वयं ही जमाना सुधर जायेगा।
व्यक्ति, परिवार यदि यूँ बदलने लगे-
तो सुनिश्चित है युग भी बदल जायेगा॥
श्रेष्ठ सब क्रान्तियों में विचार क्रान्ति है,बात गंभीर तब ली गई ही नहीं॥

अब मनुजता मनुज से दु:खी हो रही-
यह मनुज के लिए शर्म की बात है।
क्षुद्र से स्वार्थ वश निज अहं तृप्ति को-
अब मनुज पर मनुज कर रहा घात है॥
किस तरह मुक्त हो मानवी पीर से, मानवों पीर यदि पी गई ही नहीं॥

देश की ग़मगीन हालत

देश की ग़मगीन हालत, आज कैसे हो गई।
दीख पड़ता दृश्य मानो, भारतीयता सो गई॥

नष्ट होने जा रही थी, भारतीयता देश में।
तब मची थी क्रान्ति आजादी की सारे देश में॥
लाखों कट मर मिट गये, स्वाधीनता भी आ गई॥

तुमने सोचा था यहाँ, आदर्श हो श्रीराम का।
लोक सेवा में सदारत, रहने वाले श्याम का॥
क्या करें बापू तुम्हारे, मन की मन में रह गई॥

सत्य ही आदर्श था जिस भूमि भारत में कभी।
त्याग, तप, परमार्थ में, जीवन बिताते थे कभी॥
क्या कहें सर्वत्र अब तो, उल्टी गंगा बह गई॥

भ्रष्टाचारी बढ़ रही है, ब्लेक की भरमार है।
बिन मिलावट चीज मिलना, आजकल दुश्वार है॥
स्वार्थ साधन में ही दुनियाँ, हाय पागल हो गई॥

राष्ट्र के उत्थान में कई, योजनाएँ चल रही।
इनके पीछे देश में, अरबों की सम्पत्ति फुँक रही॥
स्वार्थ घुन यहाँ भी लगा, बहुतेक निष्फल हो गई॥

देश में नैतिक पतन है, तीव्रता से बढ़ रहा।
श्याम रोको अन्यथा, यह गर्त में है गिर रहा॥
वृक्ष क्या पनपे भला, जब जड़ में दीमक लग गई॥

देश धर्म जाति का गौरव

देश धर्म जाति का गौरव, हमें बढ़ाना है।
कुम्भकरण जो बने हुए है, उन्हें जगाना है॥

नई क्राँति दो नई चेतना, नये-नये श्रृंगार दो।
धरती के सूखे आँचल को, अपने श्रम का प्यार दो॥
भागीरथ बनकर धरती पर, सुरसरि लाना है॥

कोई भूखा कोई नंगा, दुःखी न हो कोई धरती पर।
नहीं किसी को कोई सताये, त्रस्त न हो कोई धरती पर॥
युग निर्माण हमें करना है, वचन निभाना है॥

आओ प्यारे भाई सब मिलकर आवाहन करें।
अमृत अमृत जग को बाँटे, स्वयं गरल का पान करें॥
आज जलाकर तम का पुतला, रवि चमकाना है॥

मिथ्याचारी, भ्रष्टाचारी, दुष्ट न कोई रहने पाये।
सब मिलकर संघर्ष करें, तो भ्रष्ट न कोई होने पाये॥
इन कालिख के धब्बों का, अस्तित्व मिटाना है॥

हम बदलेंगे-युग बदलेगा, स्वर्ग धरा पर आयेगा।
इन्द्र भवन भी इसके आगे, फीका सा पड़ जायेगा॥
सद्भावों का संदेशा, घर-घर पहुँचाना है॥

दर्द का पीकर हलाहल

दर्द का पीकर हलाहल, मुस्कुराना जिन्दगी है।
बच सके कोई अगर, तो चोट खाना जिन्दगी है॥

है बड़ा उपकार-आशा के, सुनहरे कण लुटाना।
औ किसी की पीर में, हँसते हुए हिस्सा बँटाना॥
जुड़ सके कोई हृदय तो, टूट जाना जिन्दगी है॥

है बड़ा उपकार आस्था का, करूण विक्षुब्ध मन को।
प्यार की विश्वास की है भेंट, सर्वोत्तम स्वजन को॥
मुस्करायें मीत को आँसू बहाना जिन्दगी है॥

है सफल जीवन उसी का, जो पराये हित जिया है।
है अगर वह व्यक्ति,जिसने विश्व हित का व्रत लिया है॥
बच सके नौका अगर तो, डूब जाना जिन्दगी है॥

है ऋषि इतिहास उनका, रक्त जो निजदान करते।
बाँटते अमृत जगत को, खुद हलाहल पान करते॥
विश्व के निर्माण में, खुद को मिटाना जिन्दगी है॥

जीवन को लय-ताल के अनुशासन में आबद्ध करना संगीत के सैद्धान्तिक ज्ञान का लक्ष्य है।

दुनियाँ बिगड़ गयी है

दुनियाँ बिगड़ गयी है, हर व्यक्ति रट लगाता।
लेकिन बिगड़ गया क्या, यह तो समझ न आता॥

धरती वही पुरानी, आकाश भी वही है।
वे ही हैं चाँद सूरज, बदलाव कुछ नहीं है॥
फिर क्या बिगड़ गया जो, हर व्यक्ति रट लगाता॥

जंगल, पहाड़, नदियाँ, झरने वही पुराने।
पशु, पक्षियों, मनुज के, तन भी नहीं बेगाने॥
दुनियाँ बिगड़ गई क्यों, कोई नहीं बताता॥

इसका रहस्य युग की, प्रज्ञा बता रही है।
जड़ आम आदमी को, दिखने न पा रही है॥
ऋषियों का दिव्य चिन्तन, ही मूल देख पाता॥

है तो वही नज़ारे, नजरें बदल गई है।
हैं सिन्धु तो वही पर, लहरें बदल गई है॥
उनका विषाक्त चिन्तन, टकराव है मचाता॥

चिन्तन बदल गया है, विकृत विचारणा से।
हर आम आदमी की, निज स्वार्थ साधना से॥
बोता मनुष्य जो कुछ, वह ही तो काट पाता॥

छल-छद्म ने मनुज का, चिन्तन चरित्र बदला।
विकृत विचार विष से, हर दृष्टिकोण बिगड़ा॥
बस स्वर्ग सी धरा को, यह ही नरक बनाता॥

द्रवित जब पीर से उर

द्रवित जब पीर से उर हो गया, पर पीर पहिचानी।
तपे सर्वार्थ भागीरथ, हिमालय हो गया पानी॥

सुनी पर पीर तो फिर उर, हिमालय का न रुक पाया।
हृदय भागीरथी संवेदना के, संग मचल आया॥
पिघल संवेदना से हो गया, उर मोम पाषाणी॥

कि निर्झर वेदना के हिम हृदय से फूट फिर निकले।
तृषा हरने हिमालय के हृदय के घाव फिर मचलें॥
हृदय से स्रोत फूटा मौन को फिर मिल गई वाणी॥

निनादित हो उठी गंगा पराये पाप धोने को।
अहर्निश बह चली वह वेदना से एक होने को॥
सभी अभिशाप ग्रस्तों की हुई वह सिद्ध वरदानी॥

तृषित सूखी धरा को स्नेह धारा से भिगो डाला।
तड़पती प्यास पर अपने हृदय का रस निचो डाला॥
पतित पावन हुई गंगा हुई सर्वार्थ कल्याणी॥

सगर सुत ताप से हो मुक्त प्रिय जीवन लगे जीने।
जहर सी हो गई थी जिन्दगी अमृत लगे पीने॥
तभी भागीरथी पुरुषार्थ की गरिमा गई जानी॥

पुनः युग हो गया शापित बिना श्रम और साहस के।
मनोबल गिर गया उसका, बिना संकल्प ढाढस के॥
चलो भागीरथी पुरुषार्थ की गंगा हमें लानी॥

पुनः लहरा उठे नूतन सृजन की सुरसरी जग में।
पुनः निर्माण के मंदिर बने भागीरथी मग में॥
पुनः भागीरथी के वंशजों ने ठान यह ठानी॥

दिव्य अनुदान देने

दिव्य अनुदान देने खड़े देवता,
है ललक किन्तु उपकार कैसे करें।
लोभ, मद, मोह की गन्दगी से भरे,
पात्र में वे विमल नीर कैसे भरें?

प्रभु-कृपा की सुगन्धें मिलेगी नहीं,
तीव्र दुर्गन्ध से हो अगर मन भरा।
खिल सकें स्वस्थ कैसे सुमन यदि रहे,
व्यर्थ की घास से पूर्ण उपवन भरा॥
कंकड़ों-पत्थरों का लिए बोझ हम,
अब उफनता हुआ ज्वार कैसे तरें॥

हम घिरे कामनाओं भरी भीड़ से,
हर समय नर्क की यातना सह रहे।
लोक-कल्याण की भावना के बिना,
एक विकराल दावाग्नि में दह रहें॥
सिर्फ अपने दुःखों से दुःखी जो रहें,
अन्य की वे हृदय पीर कैसे हरें॥

दिव्य अनुदान पाना अगर चाहते,
स्वच्छ पहले करें पात्र मन का स्वयं।
लोकहित के प्रबल ताप में हम सभी,
स्वार्थ अपना गला दें, मिटा दें अहं॥
स्वार्थ में श्रेष्ठ प्रतिभा सनी देखकर,
दीन असहाय अब धीर कैसे धरें॥

दर्शन बहुत किये गुरु

दर्शन बहुत किये गुरु मुख के, गुरु चरणों की ओर निहारो।
सुनते सुनते कभी न हारे, तो गति से भी तो मत हारो॥

गुरु मुख थका सुनाकर अब तक,हमने सुनने का सुख पाया।
इससे सुन उससे की बाहर, दो कानों का लाभ उठाया॥
दर्शन श्रवण किये गुरु दर्शन, कितना समझे तनिक विचारो॥

बीत चलो बिसारें अब तो, गुरु चरणों का ध्यान करें हम।
जो मंजिल गुरु गति ने नापी, अपने डग उस डगर धरें हम॥
अपने को अपने पथदर्शक के, पथ पर अविलम्ब उतारो॥

महापुरुष जिस पथ पर चलते, वह ही पथ उत्तम होता है।
जितने तर्क कुतर्क उभरते, उतना ही पथ भ्रम होता है॥
चरण पादुकाएँ कहती है, चलने का उत्साह उभारो॥

सत्पथ पर चलने वाले ही, चरण सदा पूजे जाते हैं।
सच्चे अनुयायी चरणों से, दिव्य प्रेरणाएँ पाते हैं॥
गुरु चरणों की कृपा चाहिए तो, उनकी गति को न नकारो॥

हिमगिरी-सा ऊँचा सागर सा गहरा, गुरु पाया हो जिसने।
फिर भी ऊँचा चिन्तन श्रेष्ठ चरित्र, न अपनाया हो जिसने॥
मत ऐसा दुर्भाग्य बुलावो, मत ऐसा सौभाग्य बिसारो॥

दीप चाहिए ऐसे जो

दीप चाहिए ऐसे जो, मावस को कर दे पूनम।
दीप चाहिए ऐसे, जिनकी बाती सदा रहे नम॥

जितनी हो सामर्थ्य बहायें, हम प्रकाश की धारा।
तम हरने में लग जाये, जीवन सम्पूर्ण हमारा॥
खिले ऊषा बन अंधकार के, घर मनवा दें मातम॥

हो प्रकाश ऐसा जो अन्दर भी उज्ज्वलता भर दे।
बचे न तमस किसी कोने में, अन्तर भासित कर दे॥
दीप चाहिए ऐसे कि बनें, सूरज का परचम॥

इन दीपों का स्नेह सूत्र, हो शाश्वत और अनश्वर।
बुझे न ज्योति कभी चाहे, आये तूफान भयंकर॥
हर घर आँगन हर देहरी, हो प्रकाश का आलम॥

कुछ मनुष्य भी जलें दीप की, भाँति ज्ञान फैलाएँ।
इस प्रकाश से लोग, अंधेरा अज्ञान का मिटाएँ॥
तो इस जग का हाहाकार, स्वतः हो जायेगा कम॥

संगीत केवल विनोद की वस्तु नहीं, बल्कि ऐसा चिरस्थाई आनन्द है जिसमें हमें आत्म सुख मिलता है।

दीप मन के जलाओ

(धुन–ज्ञान गंगा नहाले)

दीप मन के जलाओ मन वाले।
थाल पूजा सजाओ तन वाले।।

तुझे मिला मानव का मन है, देवों को दुर्लभ यह तन है।
कुछ करके दिखा जीवन वाले, दीप मन के जलाओ....।।

दीप बनाने तन की माटी, संयम से वह मन की बाती।
ज्ञान घृत तो पिला चिन्तन वाले,दीप मन के जलाओ....।।

काम, क्रोध की चले न आँधी, लोभ, मोह की छले न चाँदी।
भ्रष्ट पथ से न हो पूजन वाले, दीप मन के जलाओ....।।

तन मन से दीनों की सेवा, भोग लगा भावों की मेवा।
सार्थक तो बना साधक वाले, दीप मन के जलाओ....।।

दीनों को लख छलक उठे मन, सेवा करने ललक उठे मन।
वरदान समझले धनवाले, दीप मन के जलाओ....।।

संग ले जाता कोई नहीं धन, जाता है मरघट में सब जन।
लकड़ी वाले चन्दन वाले, दीप मन के जलाओ....।।

द्वार सफलता आती है

द्वार सफलता आती है, जब संकल्प किये हो।
बाधा स्वयं टल जाती है, जब संकल्प किये हो॥

प्राणों में प्रण उछल रहा हो।
संकल्पित मन मचल रहा हो॥
चरणों में गति आ जाती है, जब संकल्प किये हों॥

रहे सामने लक्ष्य हमारा।
लगे मनोबल मन का सारा॥
हिम्मत मंजिल पाती है, जब संकल्प किये हों॥

बाधाएँ तो कसने आतीं।
वे तो जीवट को अजमाती॥
वे उत्साह बढ़ाती हैं, जब संकल्प किये हों॥

शिव संकल्पों को जब साधा।
समझो पार हुआ पथ आधा॥
मंजिल स्वयं आ जाती है, शिव संकल्प किये हों॥

सद्वृत्तियाँ फैलाना है।
मानव में सद्गुण लाना है॥
शक्ति नई बढ़ जाती है, जब संकल्प किये हों॥

देश तो लुट गया शराब

देश तो लुट गया शराब पीने वालो से।
डगमग चालों से दारू के प्यालों से॥

शराब पीने वाले देखो कौड़ी के तीन हुए,
पागलों की भाँति हुए, बुद्धि के हीन हुए।
पास पैसा न रहा, भूखे-नंगे औ दीन हुए,
मौत है पास खड़ी, पर नशे में लीन हुए॥
आशा तो टूट रही, ये नौनिहालों से॥

नशा में चूर हुए, घूमें बनके मतवाला,
लटपट चाल से गिरता कहीं नाली-नाला।
धन बर्बाद किया, बच्चों को न देखा भाला,
घर को उजाड़ दिया जीवन नष्ट कर डाला॥
गट-गट घूँट गया रंग रस निहालों से॥

शराब के पीने से रावण की दुर्दशा भारी,
मिट गयी लंका जब शराब की बोतल ढारी।
वेद ज्ञान था भ्रान्ति भंग थी उसकी सारी,
राम के बाणों से मारा गया अत्याचारी॥
नजर से हट गया वो आज दुनियाँ वालों से॥

चाहो कल्याण वो नशा के पीने वालों,
जीवन सुखी बनाओ दुनियाँ में आने वालों॥
कुकर्मों से बचो सुख शांति चाहने वालों,
दुनियाँ को फिर दिखाओ ज्योति जगाने वालों॥
पथिक वह है जो डरता नहीं है कालों से॥

देव-संस्कृति संदेशो को

देव संस्कृति संदेशो को, घर-घर में पहुँचाना है।
संस्कारों से सोई आत्मा को, फिर पुनः जगाना है॥

पहले संस्कार पुंसवन आता, माता की जिम्मेदारी है।
बच्चो को देवता बनाने की, पहली तैयारी है॥
करो जतन नारी मिलकर, देव संस्कृति को बुलाना है॥

दूसरा संस्कार नामकरण का, शब्दों का विज्ञान है।
तीसरा संस्कार अन्नप्राशन का, मन आत्मा निर्माण है॥
चौथा संस्कार मुण्डन शिखा का, सद्बुद्धि बीज लगाना है॥

पंचम संस्कार विद्या आता, वेदों का अनुदान है।
छठवाँ संस्कार यज्ञोपवीत का, देवत्व गुण निशान है॥
सातवाँ गुरु दीक्षा महान से, जीवन सफल बनाना है॥

आठवाँ संस्कार युगल जोड़ी का, सुन्दर उपवन सजाना है।
मानव से देवता बनाने का, यह संदेशा लाना है॥
जन्म दिन से जीवन जीने का, यह विधान अपनाना है॥

संगीत की गरिमा असीम है। उसे नाद ब्रह्मशब्द कहकर भगवान के समतुल्य ठहराया गया है।

देश हमारा सबसे प्यारा

देश हमारा सबसे प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
प्यारा भारत देश हमारा, प्यारा हिन्दुस्तान हमारा॥

लहर-लहर लहराये अपना, तीन रंग का झण्डा प्यारा।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥
रहे तिरंगा अमर हमारा, मिलकर गायें भारत सारा॥

सदा शक्ति सरसाने वाला, प्रेम सुधा बरसाने वाला।
वीरों को हर्षाने वाला, मातृभूमि का तन मन सारा॥
विश्व विजय करके दिखलायें, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥

इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये।
आओ प्यारे वीरों आओ, देश धर्म पर बलि-बलि जाओ॥
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा॥

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, न्यारा भारत देश हमारा।
देश हमारा सबसे प्यारा, झण्डा ऊँचा रहे हमारा॥
प्यारा भारत देश हमारा, प्यारा हिन्दुस्तान हमारा॥

सामान्यतः संगीत के मूल उद्देश्य सौन्दर्यानुभूति हृदय में नैतिकता की अभिवृद्धि तथा आनन्द की प्राप्ति है।

दोष दुर्गुणों को जब

(तर्ज–सावधान हो जाओ)

दोष दुर्गुणों को जब त्यागा जायेगा।
जीवन यज्ञ तभी पूरा हो पायेगा॥

छोड़ें हम दोषों को,शत्रु जो हमारे,
छूटेंगे दोष दुर्गुण,ऐसे ही सारे।
दोषों ने हमको नीचा दिखाया है,
मानव की गरिमा से हमको गिराया है॥
दोषों का कीड़ा जीवन को खायेगा॥

दुर्गुण को छोड़ें अब हम सद्गुण अपनायें।
मानव जीवन की हम अब गरिमा बढ़ायें॥
दोषों की आहुति यज्ञ में चढ़ा दो।
मानव जीवन को अब तो कुन्दन बना लो॥
तभी यज्ञ जीवन का पूर्ण कहायेगा॥

करना सहकार हमको यज्ञ ये बताते।
जनहित में त्याग तपस्या करना सिखाते॥
यज्ञ यही है मिल बाँटकर खाओ रे।
मेरा नहीं है कुछ यह भाव जगाओ रे॥
अपना और परायापन मिट जायेगा॥

होता है दोषों का जब यूँ निवारण।
बनता है मानव तब ही नर नारायण॥
होना है मानव को देव मेरे भाई रे।
करना है स्वर्ग धरा को मेरे भाई रे॥
नर ही नारायण बन स्वर्ग बसायेगा॥

दुर्भाव बढ़े दुष्कर्म बढ़े

दुर्भाव बढ़े, दुष्कर्म बढ़े, धरती पर मुसीबत आई है।
दुर्जनता बढ़ी सज्जनता घटी,विपदा की बदरिया छाई है॥

ईर्ष्या की आग में जलने लगे, सब राग द्वेष से भरने लगे।
चिन्तायें बढ़ी मुँह बाये खड़ी, जिन्दा ही चिता जलाई है॥

विश्वास आस्था टूट गये, हम आदर्शों से रुठ गये।
तृष्णाओं और कामनाओं ने, मन की शांति गँवाई है॥

दुर्व्यसन हमारे साथ लगे, मानो मरघट के भाग जगे।
मरने से पहले ही हमने, अपने घर मौत बुलाई॥

युग प्रज्ञा हमें पुकार रही, दुर्व्यसनों से है उबार रही।
दुष्प्रवृत्तियों को छुड़वाने, युगऋषि ने राह बताई है॥

आओ दुष्प्रवृत्तियाँ छोड़ें, दुराचरण से अब मुँह मोड़ें।
इस विधि से नर ने नारायण, की गरिमा पाई है॥

संगीत केवल विनोद की वस्तु नहीं, बल्कि ऐसा चिरस्थाई आनन्द है जिसमें हमें आत्म सुख मिलता है।

दीपकों की कमी कुछ

दीपकों की कमी कुछ नहीं है, खोजने में कहीं कुछ कसर है।
आओ मिलकर उन्हें हम तलाशें, दीप से रिक्त कोई न घर है॥

दीप हैं कुछ नये कुछ पुराने, उनमें छोटे भी हैं कुछ बड़े हैं।
किन्तु क्षमता स्वयं की, अनगिनत आज निष्क्रिय पड़े हैं॥
खोजकर हम उन्हें फिर सँवारे, जिनकी निस्तेज नीची नजर है॥

शर्त है हम स्वयं प्रज्वलित हों, अन्य दीपक सभी जल सकेंगे।
जबकी हम अग्रगामी बनेंगे, अन्य भी साथ में चल सकेंगे॥
बात दुनियाँ उसी की सुनेगी,जिसका निर्भीक नि:स्वार्थ स्वर है॥

घोषणा यह महाकाल की है, वह सतत् स्नेह की शक्ति देंगे।
पूर्ण निष्ठा लिए लक्ष्य के हित, साथ में साहसी व्यक्ति देंगे॥
दीप से दीप जलते रहेंगे, धार में ज्यों लहर से लहर है॥

संगीत मनुष्य की आत्मा है। उसे अपने जीवन से अलग न करें तो आत्मोत्थान के स्वर्गीय सुख से भी हम कभी वंचित न हों। शास्त्रों में शब्द और नाद को 'ब्रह्म' कहा है। नि:संदेह स्वर साधना एक दिन 'अक्षरब्रह्म' तक पहुँचा देती है। –वाङमय१९ पृ.५.४

दीजिए गुरुवर हमें निज

दीजिए गुरुवर हमें निज पीर की अनमोल थाती।
धन्य जीवन हो हमारा ला सकें नवयुग प्रभाती।।

लोकहितों की राह कठिन, चलना इस पर है मुश्किल।
पीर बना जो पथ पर आये, दूर रही उनसे मंजिल।।
पीर तो पाथेय उसका जो राह आप तक ले जाती।।

बढ़ती जाती व्यथा जगत की कितने आँसू रोज बहे ?
कितने शोषित तापित जीवन किस-किस की व्यथा आज कहें ?
थम जाती सिसकियाँ जगत की, पीर हमारी यदि जग जाती।।

संवेदन बिन धोएँ कैसे ? हम जगत का घाव गहरा।
परहित मय ही जीना मरना हो जीवन का लक्ष्य सुनहरा।।
कीजिए उर्वर हृदय प्रभु तो जल उठे शुभ संवेदन बाती।।

धन्य हो गया जीवन उसका दर्द यह गुरु का जिसे मिला।
मिल गया अनुदान अनुपम उसका ही जीवन कमल खिला।।
जग के सारे वैभव फीके सम्पदा अगर यह मिल जाती।।

आपके हम अंश गुरुवर इसी विरासत के अधिकारी।
पीते रहे जिसे जीवन भर वह पीर अब तो हो हमारी।।
स्रोत करूणा के लिख रहे हैं हम आपके यह नाम पाती।।

दरबार में सच्चे सदगुरु

दरबार में सच्चे सद्गुरु के, दुःख दर्द मिटाये जाते हैं।
दुनियाँ के सताये लोग यहाँ, सीने से लगाये जाते हैं॥

यह महफिल है मस्तानों की, हर शक्स यहाँ मस्ताना है।
भर–भर के जाम इबादत के, यहाँ खूब पिलाये जाते हैं॥

ऐ जगवालों तुम डरते हो, इस दर पर शीश झुकाने से।
इस दर पर तो दुनियाँ वालों, सर भेंट चढ़ाये जाते हैं॥

इल्ज़ाम लगाने वालों ने, लाखों इल्जाम लगाये हैं।
पर तेरी सुगन्ध समझकर, हम, सर पर ही उठाये जाते हैं॥

ऐ जगवालों जिन लोगों पर, हो खास इनायत सद्गुरु की।
संदेश उन्हीं को आता है, और वे ही बुलाये जाते हैं॥

ध्यान से सुनलो

ध्यान से सुन लो प्रज्ञा पुराण, दिव्य युग ऋषि की वाणी रे॥
दिव्य युग ऋषि की वाणी रे, ज्ञान भक्ति की खानी रे॥

यही है इस युग की गीता, इसी में संस्कृति की सीता॥
यही है वेद ऋचा सुखधाम, इसी में राम और घनश्याम॥
कि सुनकर मिटे घोर अज्ञान, सुखी हो जाये प्राणी रे॥

दीपयज्ञ की दीप ज्योति सा

दीपयज्ञ की दीप ज्योति सा, जीवन को चमकाओ।
पंक्तिबद्ध दीपों सा जीवन में, अनुशासन लाओ॥
हर दीपक की एक कहानी, सतत् मौन हो जलना।
बूंद-बूंद ही तेज मिले, उसको पीकर ही पलना॥
उस पर भी देना प्रकाश यह,क्रम तुम भी अपनाओ॥
लेना कम, देना ज्यादा है, रीति देवताओं की।
बननी चाहिए यह नीति, हम बहनों भ्राताओं की॥
देने में आनन्द बहुत है, यह विश्वास जगाओ॥
दीप मिटाते अन्धकार, हम सब अज्ञान मिटायें।
यह भी मन का अन्धकार है, इसे मेट सुख पायें॥
मन का भवन ज्ञान के मणि, मुक्ताओं से चमकाओ॥

दूर होगा अंधेरा जो

दूर होगा अंधेरा जो छाया सघन है, उजाले का कोई दीया तो जलाओ।
निशा दूर होगी, अंधेरी जो छायी, दिये से दिये को तो मिलाकर जलाओ।।

जगाओ हृदय से सद्भावनाएँ, सृजन कार्य में अब लगाओ जवानी।
जहाँ संगठित शक्ति मिलकर लगेगी, होगी वहीं युग सृजन कहानी।।
बहुत हो चुका कष्ट कठिनाई सहते, उदासी निराशा को मन से भगाओ।।

धरा चाहती है खिलें दिल की कलियाँ, संस्कारित मनुज अपना कौशल लगायें।
समय और साधन समर्पित करें हम, सृजन हेतु प्रतिभा प्रखर हम लगायें।।
स्वाध्याय, सत्संग, संयम व सेवा, परमार्थ का भाव सब में जगाओ।।

बहुत हो चुका छद्म पाखण्ड करते, मनुज उर में देवत्व भरने लगेगा।
बनेगी धरा स्वर्ग सहयोग से ही, मनुज से मनुज प्यार करने लगेगा।।
प्रखर-प्रेरणा देगी युगऋषि की वाणी, इसके लिए पुस्तक मेला लगाओ।।

दुःख निराशा के समय

दु:ख निराशा के समय जब क्लेश ने बाँधा हमें।
तब स्वयं गुरु रूप में करुणेश ने साधा हमें॥
एक दिन ऋषियुग्म का मृदु प्यार जब पाया नहीं।
आँख भर आयी सगुण साकार जब पाया नहीं॥
किन्तु अगले पल किरण कौंधी हमारे सामने।
यूँ लगा जैसे कि गुरुवर आ गये कर थामने॥
शक्ति साहस दे रहे निर्देश ने बाँधा हमें॥
जब मिला संकेत गुरु के द्वार पर हम आ गये।
हर समस्या का सहज उपचार हल हम पा गये॥
और जब लौटे हृदय में सांत्वना संतोष था।
आस्था संकल्प का मन में अपरिमित कोष था॥
हर निमंत्रण में छिपे आदेश ने बाँधा हमें॥
आपके स्वर में सभी को स्नेह अपनापन मिला।
पढ़ लिया जिसने उसे प्रेरक प्रखर चिन्तन मिला॥
लेखनी मुखरित सदा करती रही जग की व्यथा।
किन्तु वाणी-वेश में पल मात्र आडम्बर न था॥
उस सरल निश्छल निराले वेश ने बाँधा हमें॥
मातृसत्ता की शरण में मौन बन जो आ गया।
वह स्वत: गुरुदेव का अनुपम अनुग्रह पा गया॥
बिन कहे हर बात हर मन की सुनी गुरुदेव ने।
शक्ति हर हनुमान को दी सतगुनी गुरुदेव ने॥
हर समय उनके सुखद संदेश ने बाँधा हमें॥

मुक्तक–गुरु व्याप्त हुए कण-कण में, शिष्यों को बोध कराते हैं।
उनके संकेतों पर चलकर हम दिव्य लक्ष्य पा जाते हैं॥

धर्म की स्वर ध्वजाएँ

धर्म की स्वर ध्वजाएँ उड़ाओ नहीं, कर्म में धर्म का ध्यान देते चलो।

विश्व रोता है ईमान जिन्दा नहीं, धर्म का ज्ञान है ध्यान जिन्दा नहीं।
लाश अपनी स्वयं ढो रहा आदमी, साँस चलती है इन्सान जिन्दा नहीं॥
उठ रहा है धुँआ बढ़ रही है घुटन, साँस रोके खड़े साधना के चरण।
ऐसे वातावरण के लिए कौन-सा, मुक्ति वरदान लाये हो देते चलो॥

शान्ति के गीत गाना बड़ा ही सरल, क्रान्ति के स्वर जगाना बड़ा ही सरल।
कर्म कुरुक्षेत्र में पाँव धरना कठिन, वाक जौहर दिखाना बड़ा ही सरल॥
कर उठे व्यञ्जना शुचि गिरा कर्म की, शान्ति के मर्म की क्रान्ति के धर्म की॥
चित्त डोले नहीं शब्द बोले नहीं, कर्म में वेद व्याख्यान देते चलो॥

धर्म धारा गया है हृदय में सदा, वह उतारा गया आचरण में सदा।
सिर्फ व्याख्यान से धर्म फैला नहीं, धर्म पीकर जिया ज़िन्दगी की सुधा॥
धर्म कहता है तुम धैर्य धारण करो, शान्ति से विघ्न सारे निवारण करो।
धर्म देता नहीं भीरुता को जगह, शौर्य का शक्ति का दान देते चलो॥

जो कि सूने क्षणों में सहारा बनें, डूबते के लिए जो किनारा बने।
हर भटकती नज़र को मिले रास्ता, घोर अँधियारे में ज्योति धारा बने॥
हारती साँस को दे सके चेतना, जो उठे पाँव को दे सके प्रेरणा।
मंजिलों को छुयें गीत को गुनगुना, हर अधर को मुधर गान देते चलो॥

तुम जहाँ पर जियो धर्म जीने लगे, बाँट दो तुम सुधा विश्व पीने लगे।
साथियों की यहाँ बाट जोहो नहीं, प्यार दो हर दु:खी को कि सीने लगे॥
अश्रु पोंछो किसी के तनिक आह भर, धर्म उतरे धरा पर नया रुप धर।
वेद की यह ऋचायें भुलाओ नहीं, टूटती साँस को प्राण देते चलो॥

धधक उठी तन मन में

धधक उठी तन मन प्राणों में, ज्ञान यज्ञ की ज्वाला है।
होगा युग निर्माण नया अब, कौन रोकने वाला है॥

ऐसी नई लहर आयेगी, माया बंधन टूटेंगे।
सदाचार की ठोकर खाकर, पाप ताप सब फूटेगें॥
असुरों की छाती दहलेगी, राम बाण अब छूटेगा।
भस्मासुर मानव समाज के, पत्थर से सिर फूटेगा॥
आज तीसरा नेत्र भयानक, शिव का खुलने वाला है।

शान्तिकुन्ज में देव दूत, अब ऐसा रास रचायेगा।
तिमिरकुंज के दम्भ किला में, ऐसा आग लगायेगा॥
छल प्रपंच पाखण्ड दैन्य दुःख, खण्ड-खण्ड हो जायेगा।
अमर अखण्ड ज्योति के आगे, तम बल शीश झुकायेगा॥
ज्ञान प्रकाश पूर्व से पश्चिम, आज फैलने वाला है।

प्रगति पथ में कर्म कन्हैया, आगे कदम बढ़ायेगा।
युग चारण प्रज्ञा अभियान की, शंख बजाता जायेगा॥
नैतिकता तप अनुशासन की, अमर ध्वजा फहरायेगी।
देश समाज उठेगा ऊपर, स्वर्ग धरा पर आयेगा॥
आज विचार क्रान्ति नव करने, चेतन आने वाला है॥

धर्म से हम नहीं रख

धर्म से हम नहीं रख सके वास्ता,
किन्तु लड़ते रहे रास्तों के लिए।
प्रेम पाठ सीखा नहीं धर्म से,
दी दुहाई घृणित हादसों के लिए॥

धर्म तो एक है सृष्टि आधार है,
नेक जीवन जीने का सार है।
भूलकर भी किसी का दुखायें न दिल,
धर्म तो छल–छलाता हुआ प्यार है॥

किन्तु हमने कंलकित किया धर्म को,
लोभ के स्वार्थ के वास्तों के लिए॥

धर्म तो जोड़ता ही रहा है सदा,
भेद तो छोड़ता ही रहा है सदा।
एक ही लक्ष्य की ओर हर राह को,
धर्म तो मोड़ता ही रहा है सदा॥

बात करते रहे शास्त्र परमार्थ की,
किन्तु लड़ते रहे स्वार्थ के ही लिए॥

धर्म के तत्त्व जानना था कठिन,
धर्म के आचरण धारणा था कठिन।
स्नेह करुणा दया शील संयम, क्षमा,
त्याग के मंत्र को मानना था कठिन।

था झगड़ना सरल सो झगड़ते रहे,
वेश या क्षेत्रीय बोलियों के लिए॥

ध्वंस में लग गई यदि

ध्वंस में लग गई यदि मनुज शक्तियाँ,
किस तरह कर सकेंगी कि वे फिर सृजन।
मानवी शक्तियों से सृजित स्वर्ग के,
कौन पूरा करेगा? सुनहरे सपन॥

स्वर्ग रचती नहीं मंत्रवत् शक्तियाँ,
मात्र भौतिक सुखों की अभिव्यक्तियाँ।
कब सृजन कर सकी भोग की वृत्तियाँ,
छद्म है वासना पूर्ण अनुरक्तियाँ॥
शक्तियाँ भोग में वासना में लगीं,
तो सुनिश्चत मनुज शक्तियों का पतन॥

शक्तियाँ बट गयीं राग में द्वेष में,
और थोथे अहं तृष्टि आदेश में।
हर समय हर जगह स्वार्थ के वेश में,
मात्र शोषक कि पुरूषार्थ परिवेश में॥
शक्तियाँ स्वार्थवश संकुचित यदि हुईं,
फिर मनुज ही बुनेगा मनुज का कफन॥

स्नेह सौहार्द्र समता पलेंगे कहाँ,
और करुणा क्षमाश्रु झरेंगे कहाँ।
त्याग तप को कि फिर प्रश्रय मिलेगा कहाँ,
और सर्वार्थ को आत्म आश्रय कहाँ॥
यदि मनुज की मनोभूमि सँवरी नहीं,
हो सकेगा कहाँ स्वर्ग का अवतरण॥

शक्तियाँ यदि लगे आत्म निर्माण में,
शक्तियाँ यदि जुटे लोक-कल्याण में।
लोक-मंगल महायज्ञ अनुदान में,
व्यष्टि के सृष्टि के श्रेष्ठ उत्थान में॥
बस धरा पर सँवरने लगे स्वर्ग फिर,
देववत् दिव्यतम हो मनुज आचरण॥

धरती से ऊँचा पर्वत है

धरती से ऊँचा पर्वत है, पर्वत से आसमान रे।
सबसे ऊँचा देश हमारा, प्यारा हिन्दूस्तान रे॥

जहाँ हिमालय हाथ बढ़ाये, जग का भला मनाता है।
हिन्द महासागर पर्वत में, लहरों का फूल चढ़ाता है॥
बार-बार जन्मा करते, इस धरती पे भगवान रे॥

यहीं लड़ी थी महाकाल, बनकर झांसी की रानी।
कुंवर सिंह, तात्या टोपे, नाना ने दी कुर्बानी॥
जहाँ भगतसिंह, वीर शिवा, देते रहते बलिदान रे॥

पंचशील है विश्व शान्ति का, नव संदेश सुनाता।
यहीं मिलाकर मानवता को, अब है जी ललचाता॥
रामराज्य के लिये सदा सब, करते अर्पण प्राण रे॥

धन्यभूमि है, यह पुण्य भूमि है

धन्यभूमि है, यह पुण्य भूमि है।
युग के अवतार की यह जन्मभूमि है॥

इसी भूमि से प्रकाश, विश्व को मिला।
आत्मज्ञान का विकास, विश्व को मिला॥
भावना पवित्र यहीं, अकुंरित हुई।
साधना की बेल यहीं, पल्लवित हुई॥
विश्व के परिवार की यह, जन्मभूमि है, युग के अवतार....है॥

तप की तपस्थली पर खेलता रहा।
प्यार भेदभाव बिन, उड़ेलता रहा॥
ज्योति जो यहाँ जली, मशाल बन गयी।
क्रांति लहर ज्वार सी, विकराल बन गयी॥
सबके विस्तार की, यह जन्मभूमि है, युग के अवतार....है॥

यहाँ लोकमंगल की, साधना पली।
सेवा के धर्म की, आराधना पली॥
धरती पर स्वर्ग के, सपने बुने गये।
दिव्य गुणों के यहाँ, सुमन चुने गये॥
जग के उद्धार की, यह जन्मभूमि है, युग के अवतार....है॥

गुरुवर का यहीं, पुण्य अवतरण हुआ।
नवयुग की सुदृढ़ नींव का, भरण हुआ॥
आओ इस पुण्यभूमि को, नमन करें।
हम दृढ़ संकल्प सृजन का, वरण करें॥
नवयुग-श्रृंगार की यह, कर्मभूमि है, युग के अवतार....है॥

धन्य आपका जन्म दिवस

धन्य आपका जन्म दिवस है, धन्य धन्य अभिराम।
देव आपके पद पंकज पर, बारम्बार प्रणाम॥

धर्म कर्म के महायज्ञ में, होते रहे समर्पित।
तजकर सब सुख चैन हुए नित, तन मन धन से अर्पित॥
युग निर्माण लक्ष है जिनका, बहा स्नेह की धारा।
कितने अधम जनों को तुमने, बढ़कर दिया सहारा॥
कलुष कर्म से हमें बचाओ, यह जीवन संग्राम॥

युग दृष्टा, युग सृष्टा माता गायत्री के बेटे।
बाह्य शक्ति के विषधर को, बन शंकर अंग लपेटे॥
दिव्य अखण्ड ज्योति लेकर, बाधाओं को झेले।
बड़े धैर्य साहस से तुमने, तूफानों से खेले॥
भारत भाल हिमालय हो तुम, पावन चारो धाम॥

भारत का स्तर साथ तुम्हारे, करता सत्य समर्थ।
आज विश्व कर रहा तुममें, नित नवजीवन दर्श॥
हर पथ तेरा पन्थ निहारे, स्तर तुझको टेरे।
ओ पावन में बड़ी आपसे, नित्य धन घेरे॥
कर्मभूमि में सतत् कर्मरत, रहकर भी निष्काम॥

नीव के पत्थरों

नींव के पत्थरों, यह मिशन का भवन,
युग युगों तक तुम्हारा रहेगा ऋणी॥

मानते हैं कि तुम भूमि के गर्भ में,
कर सकोगे न अनुभव पवन की छुअन,
मंदिरों की मधुर घंटियो की गमक,
भोर की गोद में मुस्कुराती किरन,
दिख सकेगी न तुमको बसन्ती छटा,
छू न पायेगी तुमको घटा सावनी॥

सत्य है सामने भव्यता के कभी,
तुम नहीं आ सकोगे किसी ध्यान में,
कोई उत्सव समारोह अथवा सभा,
भी न होगी तुम्हारे सुसम्मान में,
गीत स्तुति प्रशंसा तुम्हारे लिए,
लिख सकेगी नहीं कोई लेखनी॥

यह भवन अब भले ही गगन चूम ले,
किन्तु उसको जनाधार तुमसे मिला,
खुद अपरिचित रहे पर मिशन की प्रखर,
कीर्ति को विश्व विस्तार तुमसे मिला,
छा गई छाँह बनकर मिशन के लिए,
साथियों भाव श्रद्धा तुम्हारी धनी॥

नींव के पत्थरों पात्रता का नहीं,
मिल सकेगा तुम्हारा न सानी कभी,
एक पल भी नहीं भूल पायेंगे हम,
त्याग तप की तुम्हारी कहानी कभी,
स्वार्थ को त्यागकर बीज से तुम गले,
दीप से तुम जले भावना के धनी॥

कोई देखे न देखे तुम्हारे लिए,
पूज्य गुरुदेव की दृष्टि में प्यार है,
अब तुम्हारे लिए दिव्य अनुदान से,
छल छलाती हुई गुरु कृपाधार है,
धन्य हो तुम अमर यश तुम्हारा सदा,
और गरिमा तुम्हारी गगन गामिनी॥

मुक्तक–

नींव ही तो भवन का आधार होती है।
भूमि पूजन के समय मनुहार होती है॥
नीव का पत्थर बने जो धन्य होता वह।
शिलान्यासों में उसी की याद होती है॥

संगीत सुर का सागर है। संगीत जीवन का रस है।
–परम पूज्य गुरुदेव

नित सत्संग करो मेरे भैया

नित सत्संग करो मेरे भैया, जो चाहो कल्याण है।
बदले दृष्टि कोण इसी से, जीवन बने महान है॥

रत्नाकर से निर्दय डाकू, लूटमार जो खाते हैं।
पाकर के सत्संग वे ही, ऋषि बाल्मीकि बन जाते हैं॥
खड़्क छोड़कर कलम उठाते, लिख जाते रामायण है॥

तुलसी जैसे कामुकता में, जीवन रत्न लुटाते हैं।
पाय नारी सत्संग बदल गये, रामचरित सोई गाते हैं॥
तुलसीकृत रामायण जिनकी, जगत प्रसिद्ध प्रमाण है॥

अंगुलिमाल महा हत्यारे, सत संगत जब पाये हैं।
धर्म प्रचारक बने वे ही, फिर देश-विदेश न धाये हैं॥
बुद्धम् शरणम् गच्छामि, का गूँजा जग में गान है॥

सत्संग बिन चंचल मनुआ, पर कुसंग में जावेगा।
हिरणाकुश, रावण दुर्योधन, सा उत्पात मचायेगा।
दु:ख दे और स्वयं दु:ख पावे, ये कुसंग शैतान है॥

बहुत हुई बदनाम मनुजता, अब मत देर लगाओ रे।
ग्राम-ग्राम और नगर-नगर, मण्डल सत्संग बनाओ रे॥
मनुज देवता बने-बने ये, धरती स्वर्ग समान है॥

नवयुग की निर्माण

नवयुग की निर्माण डगर में, राही बढ़ते जाना रे।
झँझाओं को गले लगा के, निर्भय कदम बढ़ाना रे॥
राही बढ़ते जाना रे॥

ये संसार कर्म की भूमि, धर्म धूरि पर घूम रही।
जल, थल, नभ और चाँद सितारे, सृष्टि समूची घूम रही॥
धर्म दिये की कर्म ज्योति से, घर-घर दीप जलाना रे॥

सच्ची राह दिखाती जन को, संतों की सच्ची वाणी।
संतो की वाणी गंगा जल, तरे नहाकर हर प्राणी॥
वाणी गंगा की लहरों में, तू हर रोज नहाना रे॥

बिना कर्म के धर्म वृथा है, बिना धर्म के कर्म वृथा।
बिना धर्म और कर्म के, मानव का जीवन है निपट वृथा॥
धर्म कर्म के दो पहियो को, तू गतिशील बनाना रे॥

मुक्तक-
जाग उठा है भूतल सारा, देखो हुआ सवेरा।
जागो तुम भी भोर हो गया, निशि का घोर अंधेरा॥
जागो..ऽऽ , जागो..ऽऽ, जागो..ऽऽ।

नौजवानों उठो अब करो

नौजवानों उठो अब करो ना विलम्ब,
समय हाथ में से निकल जायेगा।
औरों की बातें अब तुम न सोचो जरा,
तुम जो बदलो जमाना बदल जायेगा॥

चारों ओर ऐ कैसी जो आँधी चली,
जिससे भड़क उठी जलती चिनगारियाँ।
सबको अपनी लगन अपना ही स्वार्थ है,
नहीं आदर्श का कोई नामो निशां॥
आग बढ़ती रही ऐ अगर जो कहीं,
एक दिन सारा विश्व ही जल जायेगा॥

है परेशां बहुत आज यज्ञपिता,
अपनी सन्तान में स्वार्थ को देखकर।
आज रोती रही भारतीय संस्कृति,
अपनी औलाद के ऐसे कर्त्तव्य पर॥
तुम उसी को बता हम ऋषि पुत्र हैं,
ताकि माँ बाप का मन बहल जायेगा॥

जो कर्त्तव्य के रंग से हो भरा,
चोला तुम बसन्ती ऐसा पहन।
बलिदान का कर लो संकल्प तुम,
समर्पण का सर पे तुम धर लो कफ़न॥
बुलन्दी तुम अपनी तो ऐसी जगा,
ताकि झुक जाये तेरे चरण में गगन॥

तेरे चेहरे पे ईर्षा का धब्बा लगा,
आँखो में नशा है अहंकार का।
तुम धो डालो अपना ये चेहरा जरा,
और भर लो नशा आँख में प्यार का॥
फेंक दो तुम पथिक आज अपनी जलन,
ताकि सच्चा स्वरूप तब निखर आयेगा॥

नर तन मिलता कभी कभी

नर तन मिलता कभी कभी रे, पाते इनको कहाँ सभी रे।
नर से नारायण तू बन जा, यह अवसर है अरे अभी रे॥

पुण्य कर्म से पाया यह तन, बहुत कठिन है मानव जीवन।
यह रत्नों की खान मिली है, बिखर न जाये रत्न कहीं रे॥

काम दूसरे के आता है, वह ही मानव कहलाता है।
पर पीड़ा से द्रवित उठे वह मानव की पहचान यही रे॥

नहीं स्वार्थ में डूब बितायें, जग सेवा में इसे लगायें।
लोक और परलोक सधे सब, गुरु ने राह बताई यही रे॥

मुक्तक–कहते हैं सब ग्रंथ हो चाहे गीता या रामायण।
शुभ कर्मों से धीरे-धीरे, नर बनता नारायण॥

नक्षत्रों के बीच चाँद से

नक्षत्रों के बीच चाँद से, प्रतिकूलों में निर्विवाद से।
युद्धभूमि में जयनिनाद से प्रतिभावानों!
समय की गति को पहचानो॥

समय धार में जल हर पल बढ़ता जाता है।
धारा में इन्सान विवश हो बहता जाता है॥
तेजधार के बीच नाव से, सज्जन के निश्छल स्वभाव से।
विष के विषनाशक प्रभाव से, प्रतिभावानो॥ समय की...... ॥

देखो चारों ओर घृणा ईर्ष्या फैली है।
सत्पथ में हैं विघ्न दृष्टि सबकी मैली है॥
काँटों में खिल रहे फूल से, माँ के ममतामय दुकूल से।
गुरु की पावन चरण धूलि से, प्रतिभावनों॥ समय की...... ॥

जिधर देखते उधर सभी बौराए लगते हैं।
तन से अपने, मन से मगर पराए लगते हैं॥
तुम हो पतझर में बहार से, आतप में जल की फुहार से।
चंदन की गंधिल बयार से, प्रतिभावानों॥ समय की...... ॥

सृजनशील व्रत लेकर तुझको आगे आना है।
ले लो श्रेय सृजन नूतन तो होने वाला है॥
कहीं नहीं होगा प्रमाद फिर, होंगे ऊँचे सिंह नाद फिर।
आएगा अध्यात्मवाद फिर, प्रतिभावानों॥ समय की...... ॥

नवयुग के गीता के गायक

नवयुग के गीता के गायक, शत् शत् तुम्हें प्रणाम है।
आत्मचेतना के उन्नायक, शत् शत् तुम्हें प्रणाम है॥

देवभूमि में देव संस्कृति को हम अपनाना भूले।
थे दैवी अनुदान असीमित किन्तु उन्हें पाना भूले॥
जगन्नियन्ता को स्वयं अपने अहंकार में भूले हम।
ईश्वर ने जो दिया उसी का ढेर लगाकर फूले हम॥
तुमने सिद्ध किया गुरुसत्ता को हमें जगाया तन्द्रा से।
स्रष्टा के स्वर के परिचायक, शत्-शत् तुम्हें प्रणाम है॥

दृश्य रूप में ईश चेतना गुरु बनकर जो आती है।
गायत्री में सद्विचार सद्भाव वही कहलाती है॥
यज्ञरूप हो तुमने प्रभु, सत्कर्म सभी को सिखलाया।
कर्मयोग का मुक्ति मार्ग जन-जन को तुमने दिखलाया॥
तुमने काया नहीं चेतना रूप रहे परमेश्वर के।
कर्मों के तुम ही फलदायक, शत्-शत् तुम्हें प्रणाम है॥

जितने साधन बढ़े स्वार्थ उतना ज्यादा हमको दीखा।
शक्ति साधनों का हमने कुछ सद्उपयोग नहीं सिखा॥
करूणा संवेदना भुला दी वर्ग भेद उपजाया था।
तभी स्नेह समता सुबुद्धि तुमने सद्भाव जगाया था॥
गायत्री को किया मुक्त माँ सुलभ हुई संतानो को।
जन-जन के प्रेरक जननायक, शत्-शत् तुम्हें प्रणाम है॥

नवयुग आना है आना है

नवयुग आना है, आना है, नवयुग आना है।
सतयुग आना है, जल्दी ही, सतयुग आना है॥

नहीं कल्पना मानव की यह, ईश्वर का संकल्प।
उसकी इच्छा पूरी होगी, कोई नहीं विकल्प॥
समझो काली रात समाप्त, सवेरा आना है॥

उल्टी चाल देख दुनियाँ की, मत निराश हो जाओ।
फिर उज्ज्वल भविष्य सम्मुख है, यह विश्वास जगाओ॥
आओ जन-जन में फिर नया, जोश जगाना है॥

मानवता की है पुकार, प्रतिभाएँ आगे आयें।
पलटें उलटी चाल समय की, वह पौरुष दिखलायें॥
वीरों मानवता के हित में, बलि हो जाना है॥

शक्ति-समय कम है यह कहकर, करना नहीं बहाना।
महाशक्ति के, महाकाल के, सहचर बन दिखलाना॥
हमको अपना यह सम्बन्ध, अवश्य निभाना है॥

दुष्प्रवृत्तियों-दुर्भावों को, जड़ से खोद हटाओ।
सद्प्रवृत्तियों-सद्भावों की, पौध नयी पनपाओ॥
अब तो नन्दन वन सा जग को, पुनः बनाना है॥

अनुपम यह अवसर आया है, इसे गँवा मत देना।
कर प्रयास दुर्लभ अनुदानों, से झोली भर लेना॥
अब तो उठो समय के, अग्रदूत कहलाना है॥

नशा नसावै तन मन

नशा नसावै तन मन धन को, मत चक्कर में आना जी।
भाँग तम्बाखु गांजा सुलफा, मदिरा मुँह न लगाना जी॥

आदत बुरी बुरे व्यसनों में, पैसा खर्च कराती।
होश भुलाये करे बेहोशी, पागल हमें बनाती॥
गली सड़क पर शिवगण जैसा, भौंड़ा नाच नचाती।
भले आदमी संग छोड़ दे, जग में हँसी कराती॥
सब घर को चिन्ता छा जाती, छूटे कृत्य अपनाना जी॥

विष का पौधा तम्बाखु, हम जिसका धुआँ उड़ाते।
मौनाक्साइड निकोटीन, विष पाये जाते॥
खाँसी दम मधुमेह सरीखे, रोग हैं ये पनपाते।
दुखद प्रदूषण दें जग को, क्या बुद्धिमान कहलाते॥
आमन्त्रण दे रोग बुलाते, छोड़ो ये बचकाना जी॥

समझदार कहलाने वालों, ना समझी को छोड़ो।
बतलाता विज्ञान हानिकर, इससे नाता तोड़ो॥
समय आ गया उठो जागृतों, चला समय की मोड़ो।
दुर्व्यसनों को दूर भगा, रूढ़ियों का भण्डा फोड़ो॥
आदर्शों से रिश्ता जोड़ो, जीवन सफल बनाना जी॥

व्रत लो अपनी धरती को हम, फिर से स्वर्ग बनायेंगे।
गंदा धुआँ उड़ाना छोड़ें, पावन यज्ञ रचायेंगे॥
घर-घर नगर-नगर हम जाकर, सद्विचार फैलायेंगे।
अपनी प्यारी देव संस्कृति, आओ पुनः सजायेंगे॥
हरिराम संग मिलकर गायें, युग का नया तराना जी॥

नहालो चाहे सारे तीर्थ

नहालो चाहे सारे तीर्थ, घूम लो चाहे चारों धाम।
तुम्हारे कर्मों के अनुसार, मिलेगा निश्चय ही परिणाम॥

न करते देवालय के द्वार, किसी का पापों से उद्धार।
किसी के दुष्कर्मों का दण्ड, न धोयेगी गंगा की धार॥
क्या हुआ जपा अगर हरिनाम, रात दिन तुमने आठों याम॥

मिला है जीवन हमें महान, व्यवस्थित करें विश्व उद्यान।
इसी में है सबका कल्याण, इसी में अपना भी कल्याण॥
कि ऐसा जीवन है बेकार, न आया अगर किसी के काम॥

दिशाओं में गूँजी आवाज, कि है संक्रान्ति काल यह आज।
झुकाए बैठै हैं सब शीश, मनुजता की लुटती है लाज॥
करो हर दुष्प्रवृत्ति का नाश, बनो तुम आज चक्रधर श्याम॥

हो रहा नारी का अपमान, न विद्या, आयु, बुद्धि का ध्यान।
यत्न यूँ करो कि जिससे आज,कलुष का रहे ना नाम निशान॥
पलायन से न चलेगा काम, जिन्दगी है अविरल संग्राम॥

लोकहित में कर लो कुछ काम, यही है तीर्थ यही हर धाम।
तभी तो धरा बनेगी स्वर्ग, देव मंदिर होगा हर ग्राम॥
न करना है बिल्कुल विश्राम, निरन्तर चलना है अविराम॥

सुनिश्चित है पूरब की ओर, उगेगी उजली-उजली भोर।
न होगा कपट और पाखण्ड, देव संस्कृति का होगा जोर॥
हृदय में होगी नयी उमंग, समय होगा पावन अविराम॥

नम है आँखे आज याद में

नम है आँखें आज याद में, कैसे तुम्हें पुकारें।
दिव्य लोकवासी हैं गुरुवर, तुमको कहाँ निहारें॥

ढूँढ़ रहे हैं स्नेह तुम्हारा, कहीं नहीं मिलता है।
मधुर स्नेह का दिव्य कमल दल, कहीं नहीं खिलता है॥
आज बिलख कर गुरुवर तुमको, कैसे टेर लगायें॥

दुःख कष्टों के क्षण में गुरुवर, दौड़ दौड़कर आते।
घावों में भावों का मरहम, हम तुमको ही पाते॥
किन शब्दों में आर्तभाव से, तुमको कहाँ पुकारें॥

पिता हमारे प्राण हमारे, हे गुरुवर उद्धारो।
सुनलो करूण पुकार हमारी, हम भक्तों को तारो॥
दरश दिखा दो बंद नयन में, गुरुवर तुमको ध्यायें॥

शपथ आज है संकल्पों को, पूरा सदा करेंगे।
याद तुम्हारी करते-करते, हम नित चरण धरेंगे॥
आज काँपने कर से कैसे, श्रद्धा सुमन चढ़ायें॥

मुक्तक-

आप हैं भगवान गुरुवर, आप ही करतार हैं।
हैं खेवैया नाव के प्रभु, जग के तारण हार हैं॥

निराशा हो कभी मन में

निराशा हो कभी मन में, न फिर भी धैर्य को खोना।
समझकर जिन्दगी को व्यर्थ, सी मत भार–सा ढोना॥

जगत की रीति है सब, शक्ति का ही साथ देते हैं।
बहुत कम हैं कि जो गिरते, हुओं को थाम लेते हैं॥
अत: मत इस जगत की कटु, उपेक्षा के लिए रोना॥

हमारी राह में अक्सर, भयानक मोड़ आते हैं।
हमें दिशाहीन करके जो, अकेला छोड़ देते हैं॥
समझो इनको अटल अनिवार्य, बन्धु हताश मत होना॥

बहुत ही कीमती है जिन्दगी, का एक छोटा पल।
निरर्थक आज है यदि तो, वही सार्थक बनेगा कल॥
प्रतिक्षा में बहक जाये न, मन का बाल मृग छौना॥

परिस्थिति आज है जो शक्ति, साहस से उसे बदलो।
जहाँ अधिकार हो अपना, उसे लेने उठो मचलो॥
नये उल्लास से नैराश्य के, हर रंग को धोना॥

न जीवन व्यर्थ है यदि हम, जियें इसको जगत के हित।
न पानी व्यर्थ है करता रहे, यदि बाग को सिंचित॥
विशद कर लो हृदय का स्वार्थ, से संकीर्ण सा कोना॥

नहीं मांगते राज्य स्वर्ग

नहीं मांगते राज्य स्वर्ग सुख, हमें मुक्ति की चाह नहीं।
बस इतना कर दो दुखियों में, रहे कष्ट का दाह नहीं॥

जब पथ से विचलित हो जन मन, भूल जाय परमार्थ प्रयोजन।
खोजे अपना ही सुख साधन, बढ़े असुरता का सम्मोहन॥
तब प्रतिपल तिल-तिल जलकर, बने ज्योति की राह कहीं॥

पराधीनता की कुण्ठायें, जब मानव को विवश बनायें।
मृग मरीचिका सी आशायें, असफल प्राणों को भटकायें॥
तब उस जीवन के मरुस्थल में, हमें बना दो छांह कहीं॥

तथा कथित सब धर्म धुरन्धर, हो जब भाग्यवाद पर निर्भर।
भूतल को भव सिन्धु बताकर, दूर हमें झन्झा से उरकर॥
तब हम कर्णधार को लेकर, जूझें बनकर नाव कहीं॥

जब तक सुलभ न स्वर्ग सभी को,शांति नहीं व्याकुल धरती को।
जब तक चैन न हर प्राणी को, कैसे रुचे आत्म सुख जी को॥
जन्म-जन्म से पुण्य हमारे, लुट जाये परवाह नहीं॥

संगीत के विद्यमान सूक्ष्म ध्वनि तंरगों का मनुष्य की मनोदशा पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

संगीत टूटे हुए हृदय की औषधि है। -ए. हन्ट

नौजवानों! भारत की

नौजवानों! भारत की, तकदीर बना दो।
फूलों से इस गुलशन से, कांटों को हटा दो॥
तोड़ के सारे जाल विदेशी, कर लो देश को अपना।
रह ना जाये देखो अधूरा, कोई सुन्दर सपना॥
घर में आग लगाये, दीपक उसको बुझा दो॥
हम भारत के वासी क्यों? हो दुनियाँ में शर्मिन्दा।
देश के कारण मौत भी आये, रहेंगे फिर भी जिन्दा॥
जय-जय हिन्द के नारों से, धरती को हिला दो॥
अपने हाथ हैं ऐसे जैसे, बलवानों की शक्ति।
भगतसिंह सी हिम्मत है, बहादुर जैसी भक्ति॥
देश का झण्डा जग में ऊँचा, करके दिखा दो॥
वीर हमारी लक्ष्मीबाई, वीरों की सरदार।
जिसने खोला था भारत में, आजादी का द्वार॥
बरछा तीर कटारों से, भारत को बचा दो॥

न कोई दे पाये साथ

न कोई दे पाये साथ तो भी, चलो अकेले कदम बढ़ाते।
युगों से सूरज निकल रहे हैं, निपट अकेले ही चल रहे हैं॥
थका न हारा कभी गगन में, चलें सभी को सदा जगाते॥
गला हिमालय सदा अकेला, न कोई संगत न कोई मेला॥
मगर रूके न प्रवाह उसका, रहा उमर भर तृषा जलाते॥
है बात यह है कि जो चलेगा, उसे परम प्रभु का बल मिलेगा॥
सदा रहे लक्ष्य लोकमंगल, चले कदम से कदम मिलाते॥
पुनः जगायेंगे देव संस्कृति, मिटायेंगे जड़ से पूर्ण विकृति॥
यही सद्उद्देश्य है हमारे, चलो सभी को यही सिखाते॥

नाम है तेरा माँ गायत्री

नाम है तेरा माँ गायत्री, कब तेरा दर्शन होगा।
कलयुग जागे वेदमंत्र से, नया युग निर्माण होगा॥

तुमने तारे लाखो प्राणी, ये गुरुदेव की वाणी है।
तेरी मूरत पर है माता, ये दुनियाँ दीवानी है॥
गायत्री मंत्र मुख से बोलो, सृष्टि में मंगल होगा॥

ऋषिवर मुनिवर जिनकी शरण में, निशिदिन शीश झुकाते हैं।
जो गाते गायत्री चालीसा, वो सब कुछ पा जाते हैं॥
अपने कर्ज मिटाने तेरे, चरणों में वन्दन होगा॥

तेरे निर्मल दर्शन तो ये, अखियाँ हर दम प्यासी है।
जीवन में है घोर अंधेरा, अन्तर में उदासी है॥
तेरी करुणा की किरणों के, सारा जहाँ रोशन होगा॥

मन की मुरादें लेकर माता, तेरे दर पर आये हैं।
तुझ चरणों में अर्पण करने, भौतिक मन हम लाये हैं॥
भव से पार उतरने तेरे, गीतों का गुंजन होगा॥

ताल मूलन्ति गेयानि, ताले सर्व प्रतिष्ठितम्।
ताल हीनानि गेयानि, मंत्र हीना यथाहुति।।

(संगीत समयसार)

निर्धन या धनवानों की

निर्धन या धनवानों की, सच्चे श्रद्धावानों की।
हुई जरूरत महकाल को, फिर से प्रतिभावानों की॥

चाहे बूढ़ा हो जवान हो, हृदय भरा सद्भावों से।
अनपढ़ हो ज्ञानवान, लेकिन हो दूर दिखाओं से॥
क्या कर्त्तव्य हमारा है, जिनने इसे विचारा है।
सबके जो आदर्श बन सके, उन उत्तम प्रतिभाओं की॥

चारों तरफ है फैली, धधक रही है ज्वालाएँ।
नहीं समझदारी जो अब भी, करें स्वयं की चिन्ताएँ॥
यह न समय अलसाने का, अवसर है जग जाने का।
निभा सके जो गौरवशाली, परम्परा बलिदानों की॥

कला, कथा, कविता को नारी, का सम्मान बढ़ाना है।
फिल्मों को अपराधवृत्ति को, नहीं और उकसाना है॥
समझें माँग जमाने की, कुछ करके दिखलाने की।
है भवनों से अधिक जिन्हें, चिन्ता चरित्र निर्माणों की॥

जो वैभव से नहीं बड़प्पन, अपना दिखलाना चाहें।
हर सुविधा साधन पद अपने, लिये न जो पाना चाहें॥
कर्मों में मर्यादा हो, जीवन सीधा साधा हो।
जिन पर ऊँगली उठे न कोई, उन बेदाग प्रमाणों की॥

अपना सारा समय बितायें, जो न यहाँ पाखण्डों में।
जिन्हें न सुख मिलता मजहब के, मनमौंजी हथकण्डों में॥
उन जागृति जीवन्तों की, लोक सेवकों सन्तों की।
सबकी पीर समझलें ऐसे, परहित रत इन्सानों की॥

नव प्रभात है नव प्रकाश है

नव प्रभात है नव प्रकाश है, जागृत प्राण करो।
सविता की प्रकाश सविता में, शुचि स्नान करो॥

जन–मानस से आलोकित करने, फूट पड़े प्रकाश के झरने।
बरस रहा अमृत अम्बर से, अमृत पान करो॥

है प्रकाश पर्व अनूठा, रहे न इससे कोई अछूता।
द्वार–द्वार किरणें पहुँचाओ, दीपक दान करो॥

तम के घर भी हो दीपावली, मावस से भी हो अब उजियारी।
तम के प्राण घुट रहे तम में, तम से त्राण करो॥

है प्रकाश युग की अगवानी, सत्य हो रही भविष्य वाणी।
नव प्रकाश युग के सृष्टा को, श्रद्धा सहित प्रणाम करो॥

यदि गायन सुन्दर हो तो, श्रेय उन्हीं को मिलना चाहिए,
जिन्होंने इनका भाषानुवाद प्रारम्भ में किया
और दुबारा करने का आदेश
मुझे दिया।

–प. वन्दनीया माताजी

नशा न करना

नशा न करना मानलो कहना, प्यारे भाई–बहना।
होगी बड़ी खराबी, होगी बड़ी खराबी॥
नशा में डर है नशा जहर है, जीते जी मर जाना।
होगी बड़ी खराबी, होगी बड़ी खराबी॥

दारू न पीना भैया, पागल फिरोगे तुम बाजार में।
भूखे रहेंगे बच्चे, बीवी रहेगी इन्तजार में।
बिकेंगे गहना, फिर क्या कहना, दर–दर ठोकर खाना॥
–होगी बड़ी खराबी... ॥

बीड़ी न पीना भैया, जलेगा कलेजा बातों बात में।
आँतो में होगा अल्सर, नींद न होगी रातों रात में।
भरी जवानी चौपट होगी, हजम न होगा खाना॥
–होगी बड़ी खराबी... ॥

खैनी न खाना बंधु छाले पड़ेंगे तेरे होंठ में।
दांतों में होगा कैंसर, लाली चढ़ेंगे तेरी आँख में।
शरम लगेगी जलन रहेगी, मुश्किल होगा जीना॥
–होगी बड़ी खराबी... ॥

गुटखा जो खाये भैया, कैंसर बुलाये बड़े शौक से।
बाप महतारी रोये, छाती पीटे बड़े खौफ से।
दम निकलेगा अर्थी सजेगी, रोयेगी प्यारी बहना॥
–होगी बड़ी खराबी... ॥

प्रज्ञा पुराण पावन

प्रज्ञा पुराण पावन, युगऋषि की है ये वाणी।
है धन प्रदाता लक्ष्मी, शिव की यही भवानी॥

है ज्योति ये निराली, सद्‍बुद्धि देने वाली।
सद्‍गुण बढ़ाने वाली, दुर्गुण मिटाने वाली।
युग ज्ञान की चमक यह, युग धर्म की है दानी॥

ऋषियों का दिव्य चिंतन, सुनकर प्रसन्न हो मन।
मिट जाय करूण क्रन्दन, जीवन बनेगा उपवन।
हर भ्रान्ति दूर होगी, ऐसी है ये कहानी॥

दु:ख दूर हो हमारे, भरपूर सुख हों सारे।
कल्मष कषाय भागे, देवत्व सबका जागे।
पावन पुराण सुनकर, शुभ ज्योति है जलानी॥

इहलोक भी सँवारे, परलोक भी विचारे।
परिवार में सभी जन, सबके बने सहारे।
है ज्ञान यह अनूठा, सत्कीर्ति है सुहानी॥

प्राकृतिक रचना क्रम का प्रतिफल ही संगीत है।
–मनीषी हर्मीस

पास रहता हूँ तेरे

पास रहता हूँ तेरे सदा मैं अरे।
तू नहीं देख पाये तो मैं क्या करूँ॥
मूढ़ मृग तुल्य चारों दिशाओं मे तू।
ढूँढ़ने मुझको जाये तो मैं क्या करूँ॥

कोसता दोष देता मुझे है सदा।
मुझको यह न दिया मुझको वह न दिया॥
श्रेष्ठ सबसे मनुज तन तुझे दे दिया।
सब्र तुझको न आये तो मैं क्या करूँ॥

तेरे अंत:करण में विराजा हुआ।
कर न यह पाप संकेत करता हूँ मैं॥
लिप्त विषयों में खो सीख मेंरी भुला।
ध्यान में तू न लाये तो मैं क्या करूँ॥

जाँच अच्छे-बुरे की तुझे हो सके।
इसलिए बुदि मैने तुझे दी अरे।।
किन्तु तू मन्द भागी अमृत छोड़कर।
घोर विषयों में जाये तो मैं क्या करूँ।।

सरल सुखकर मनोरम सुदृश्यों भरा।
विश्व सुन्दर प्रकाशार्थ मैंने दिया।।
अपनी करतूत से स्वर्ग वातावरण।
नर्क तू ही बनाये तो मैं क्या करूँ।।

पूज्यवर गुरुदेव की चतुरंगिनी

पूज्यवर गुरुदेव की चतुरंगिनी सेना चली।
जो भी जुड़ते इस समर में, धन्य होते जा रहे।।

पूज्यवर गुरुदेव का अनुदान इन सबको मिला।
कष्ट या कठिनाइयों में, फूल भी मन में खिला।।
युग विचारों को लिये, ये वीर बढ़ते जा रहे।
विश्व से दुर्गुण पराभव, को मिटाते जा रहे।।
ईष्ट को लेकर हृदय में, कृष्ण की सेना चली।।

युग बदलने के महा उद्घोष से गूँजा गगन।
सैनिकों के त्याग तप से, आज खिलता है चमन।।
साधना की भट्ठी में, इनको तपाया जा रहा।
पूज्यवर टकसाल में इनको बनाया जा रहा।।
पूज्यवर की छाप ले, श्रीराम की सेना चली।।

जब जरूरत आ पड़ी तब, पुल बना दिखला दिया।
गहन जंगल रौंदकर, गुलजार कर दिखला दिया।।
हाथ में छाले पड़े या पैरों में काँटे चुभे।
चीर गंगा धार को, सतयुग बना दिखला दिया।।
ज्ञानपट साहित्य ले, चतुरंगिनी आगे बढी।।

नाम है मुख में गुरु के, तन में नव उत्साह है।
बह रही है श्रम की बूँदें, मिट रहे भव पाश है।।
व्यक्ति-व्यक्ति को बदल, जग में बवडंर ला रहे।
एक से बढ़कर नया इतिहास रचते जा रहे।।
स्वर्ग धरती को बनाने, आज सेना बढ़ चली।।

प्रज्ञा पुराण सुनिये

प्रज्ञा पुराण सुनिये, दुःखनाशिनी कथा है।
दुःख द्वन्द दूर होते, मिटती सकल व्यथा है॥

हर ओर छा रहा है, दुर्बुद्धि का अंधेरा।
संकीर्णता अहंता ने, है आदमी को घेरा॥
साधन बहुत बढ़े हैं, पर मन हुआ विकल है।
अस्वस्थ देह मन है, कमजोर आत्मबल है॥
सब चल रहे न लेकिन, कुछ लक्ष्य का पता है॥

इस लोकहित कथा से, हर दृष्टि स्वच्छ होती।
सुख शांति और सफलता, सबके मनों में होती॥
आत्मिक विकास होता, भ्रम का विनाश होता।
जिसमें न कुछ छिपा हो, ऐसा प्रकाश होता॥
फिर स्वार्थ जन्य चिन्तन, मन को न सालता है॥

निज मार्ग से पुनः यह, मानव भटक रहा था।
जंजाल में भ्रमों में, जीवन अटक रहा था॥
है ज्ञान की ये धारा, प्रभु की महानता है।
अज्ञान को मिटाने, रेखा अमिट खिंची है॥
प्रज्ञा पुराण पावन, युगऋषि ने तब रची है॥

प्यार लुटाया तुमने गुरुवर

'प्यार' लुटाया तुमने गुरुवर, गायत्री के नाम पर।
दृष्टि तुम्हारी रही सदा ही, नवयुग के निर्माण पर॥

दिव्य हिमालय में जा तुमने, तप से तन को तपा दिया।
सूक्ष्म साधना की सिद्धि से, जनहित मन को लगा दिया॥
गायत्री परिवार बनाया, जप-तप बल की राह पर।

सात समन्दर गहराई में, ढूंढे तुमने मोती।
डुबकी खूब लगायी फिर भी, आश न पूरी होती॥
खोज निकाला निज शिष्यों को, चिंतन की गहराई पर।

नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक उत्थान, तुम्हीं को प्यारा।
हम बदलेंगे, युग बदलेगा, गूँजेगा यह नारा॥
स्वर्ग धरा पर उतरेगा फिर, स्वर्णिम युग की चाल पर।

बनने को तैयार खड़े है हम, अगणित कर, पग, माथा।
ज्ञान ज्योति जग में फैलाकर, लिख देंगे वह गाथा॥
सतयुग झलकेगा जन-जन में, जलती लाल मशाल पर।

मुक्तक-साधना की आपने, दीं सिद्धियाँ हमको प्रभो!
सहज ही दीं, निज प्यार की निधियाँ प्रभो!
हम चलेंगे आपने हमको बताई राह जो।
लोकमंगल की सिखा दीं आपने निधियाँ प्रभो॥

पूज्य गुरुदेव थे त्याग-जप

पूज्य गुरुदेव थे त्याग-तप के धनी,
प्यार बांटे बिना चैन आया नहीं।
प्यार की धार को वह बहाते रहे,
वह अभागा है जो प्यार पाया नहीं।।

स्नेह सलिल सजल श्रद्धा माँ ने हमें,
स्नेह-संवेदना रस पिलाया सरस।
युग की पीड़ा से पीड़ित रहे युग्म
ऋषि वेदना से विकल आँसू जाते बरस।
प्यार की साधना में निरन्तर जपे,
प्यार बिना उनने जीवन बिताया नहीं।।

त्याग-बलिदान आदर्श मन में बसा,
साधना के शिखर पर वे चढ़ते रहे।
जिस तरह से मिटे जग से पीड़ा-पतन,
पुण्य-पुरूषार्थ वे नित्य करते रहे।।
रोते जो भी गया हँसता वापस हुआ,
कौन सी सम्पदा जो लुटाया नहीं।।

माँ की ममता सहजता से मिलती रही,
प्रेरणा मार्गदर्शन भी मिलता रहा।
साधना की कली झूम कर खिल उठी,
श्रेष्ठ सत्संग का लाभ मिलता रहा।
माता की ममता की मूर्ति थी गुणकारी,
जो मिला उसने उर से भुलाया नहीं।

फर्ज़ अपना है गुरु ऋण चुकायें चलो,
उर का देवत्व विकसित करें स्नेह से।
स्वर्ग मिलकर धरा को बनायें चलो,
सूक्ष्म कारण से गुरु देखते नेह से।।
भूल जायें उन्हें हम भले ही मगर,
अपना कर्तव्य उनने भुलाया नहीं।

प्रेम से जपलो प्रभु का नाम

प्रेम से जपलो प्रभु का नाम, लगन से करो उसी का काम॥
बोलो राम राम, बोलो श्याम श्याम॥

निज सुख औरौं तक पहुँचाये, सदा पराई पीर बँटाये।
ऐसे नर भू-देव कहाते, स्वर्ग इसी जीवन में पाते।
अपनाते यह नियम वही जो, होते पूरन काम॥

जन-जन में विवेक उमगावें, घर-घर जाकर अलख जगावें।
जग में जीवन ज्योति जलायें, धन्य बनें और धन्य बनावें।
लगन जगे ऐसी इस पथ पर बढ़े चलें अविराम॥

नहीं किसी को कभी सतायें, खिलें खिलायें बढ़ें बढ़ायें।
व्रत पालें संयम भी साधें, सब को एक सूत्र में बाँधें।
चले साधना ऐसी तो यह, जगत बने सुखधाम॥

पुरुषार्थ की कहानी

(धुन-चलना सिखा दिया है)

पुरूषार्थ की कहानी, इतिहास गा रहा है।
सूरज सुना रहा है, चन्दा बता रहा है॥

राणा प्रताप क्या थे, पुरूषार्थ की कहानी।
गीता सुना रही है, अपनी पुनीत वाणी।
पुरूराज का पराक्रम, फिर याद आ रहा है॥

पीड़ित हुई मनुजता संस्कृति सिसक रही है।
फिर क्यों मनीषियों की, प्रज्ञा हिचक रही है।
पुरूषार्थ के धनी क्यों, दुःख को बुला रहा है॥

उद्योग जब हुए हैं, संभव हुआ तभी कुछ।
जब भी प्रमाद छाया, पाया तभी नहीं कुछ।
भागीरथी परिश्रम, गंगा बहा रहा है॥

"जब कभी संगीत की स्वर लहरियाँ मेरे कानों में गुँजतीं मुझे ऐसा लगता है कि-मेरी आत्म-चेतना अदृश्य जीवनदायिनी सत्ता से सम्बन्ध हो गई है। मैं शरीर की पीड़ा भूल जाता, भूख प्यास और निद्रा टूट जाती, मन को विश्राम और शरीर को हलकापन मिलता। मैं तभी सोचा करता था कि सृष्टि में संगीत से बढ़कर मानव जाति के लिए और कोई दूसरा वरदान नहीं है।"

-विश्व के यशस्वी गायन -एनरिको कारूसो

पत्थर मत मारो

पत्थर मत मारो, इस दर्पण में तुम।
अपने को बाँधो, अनुशासन में तुम॥

यह समय नहीं है भूल झुलावे का।
सुख की मरीचिका का दुःख के दावे का॥
नारे उछालकर देश नहीं बनता।
थक चुकी व्यर्थ हड़तालों से जनता॥
उजले–उजले संकल्प करो मन में।
आगत भविष्य के आकर्षण में तुम॥

सुख को बाँटो तो दुःख की उमर घटे।
हँसते गाते यह जीवन पंथ कटे॥
यह देश गलत गति विधि से ऊबा है।
झुलसा हिंसा में जल में डूबा है॥
मिलकर कुछ ऐसे सघन प्रयास करो।
अगली पीढ़ी के संवर्धन में तुम॥

संगीत मनुष्य की आत्मा है। उसे अपने जीवन से अलग न करें तो आत्मोत्थान के स्वर्गीय सुख से भी हम कभी वंचित न हों। शास्त्रों में शब्द और नाद को 'ब्रह्म' कहा है। निःसंदेह स्वर साधना एक दिन 'अक्षरब्रह्म' तक पहुँचा देती है।

–वाङ्मय १९ पृ. ५.४

प्रेमी भर तू प्रेम में

प्रेमी भर तू प्रेम में, भगवान के गुण गाया कर।
मन मंदिर में गाफिल, तू झाड़ू रोज लगाया कर॥

सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बरबाद तू बन्दे, करता अपने आप रहा।
प्रातः समय उठ ध्यान से, सत्संग में तू जाया कर॥

नरतन के चोले को पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं।
जनम–जनम के शुभ कर्मों का, होता जब तक मेल नहीं।
नरतन पाने के लिए, तू उत्तम कर्म कमाया कर॥

पास तेरे है दुःखिया कोई, तूने मौज उड़ाई क्या।
भूखा प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई क्या।
पहले सबसे पूछकर, भोजन को तू खाया कर॥

देख दया उस परमेश्वर की, वेदों का जिसने ज्ञान दिया।
देख तू मन में सोच जरा तो, कितना है कल्याण किया।
दुष्कर्मों को छोड़कर, ईश्वर नाम ध्याया कर॥

मुक्तक–
सत्संग किया ना एक घड़ी, हर समय स्वार्थ में जुटा रहा।
हीरा सा जीवन पाकर भी, कौड़ी के दामों लुटा रहा॥

प्यार तो हमे जिन्दगी से

प्यार तो हमे जिन्दगी से बहुत।
किन्तु जीना हमें हाय आता नहीं॥
क्योंकि जिससे जिसे प्यार होता अधिक।
वह उसे व्यर्थ यूँ ही गँवाता नही॥

चाहते हम सभी कि, युगों तक जियें।
और जीवन सुधा, हम हमेशा पियें॥
शाल फटने लगे, जिन्दगी की अगर।
जिस तरह हो, उसे आखिरी तक सीयें॥
प्यार तो जिन्दगी में सभी चाहते।
किन्तु कोई उसे साध पाता नहीं॥....प्यार तो है॥

लाड़ ही लाड़ में हम जहर दे रहे।
प्यार ही प्यार में, प्राण भी ले रहे॥
हम अनाड़ी पने से, जिये जिन्दगी।
जी रहे शान से, ये कहे जा रहे॥
जिन्दगी की कला सीख पाये न हम।
कोई ऐसी कला क्यों सिखाता नहीं॥....प्यार तो है॥

मुक्तकः–

नर–तन के चोले को पाना बच्चों का कोई खेल नहीं।
जन्म–जन्म से शुभकर्मों का, होता जब तक मेल नहीं॥

प्राणी आजा शरण गुरु की

प्राणी आ जा शरण गुरु की, तब ही मुक्ति पायेगा।
निकल गया जो समय हाथ से, रोयेगा पछतायेगा॥

मायाजाल में फँस के तूने, हरि भजन नहीं गाया है।
किसकी खातिर तूने प्राणी, इतना माल कमाया है॥
क्या लेकर आया जग में तू, क्या लेकर तू जायेगा॥

मतलब के सारे रिश्ते हैं, मतलब हर कोई साधे है।
दीपक संग पतंगा जब तक, जली हुई ये बाती है॥
बुझ जायेगी बाती जब वो, पास न कोई आयेगा॥

बीत जाये तेरी उमरिया, क्यों खोता नादानी में।
ये भी सोचो तेरी नैया, पड़ी हुई है पानी में॥
जीवन है कागज की नैया, कब तक उसे चलायेगा॥

झूठा जग का ये मेला है, क्यों दिल यहाँ लगाता है।
झूठे जगत की रीत पुरानी, कोई आता कोई जाता है॥
तू ही समझ ले कोई किसी का, कब तक साथ निभायेगा॥

सामान्यतः संगीत के मूल उद्देश्य सौन्दर्यानुभूति हृदय में नैतिकता की अभिवृद्धि तथा आनन्द की प्राप्ति है।

पाप हारिणी दुःख निवारणी

पाप हारिणी दुःख निवारणी, माँ गंगे तेरी जय जय जय।
जटा शंकरी नाम तिहारो, माँ गंगे तेरी जय जय जय॥

पर्वत और गुफाओं में से, बहती पावन धारा है।
लहरें कल-कल कर गाती हैं, ये संगीत प्यारा है॥
इन्द्र और पवन भी गाते, माँ गंगे तेरी जय जय जय॥

विष्णु के चरणों का धोवन, जल में तेरे समाया है।
जटा मुकुट में शंकर ने माँ, गंगे तुझे सजाया है॥
सभी देव और मानव गाते, माँ गंगे तेरी जय जय जय॥

भोर की किरणों से भानु जब, तेरे जल को धोता है।
बज उठते हैं शंख मंदिर में, और कीर्तन होता है॥
टन टन करके घण्टे कहते, माँ गंगे तेरी जय जय जय॥

सूरज जब छिपता है मैया, पावन संध्या आती है।
चन्द्र छटा धरती में आ, अपना रूप दिखाती है॥
तेरी गोद में बैठ हम गाते, माँ गंगे तेरी जय जय जय॥

हरिद्वार और ऋषिकेश को, तूने स्वर्ग बनाया है।
जिसने भाव से लिया चरणामृत,उसका कष्ट मिटाया है॥
सब भक्तों को तू खुश करती, माँ गंगे तेरी जय जय जय॥

प्यार तुम्हारा ही तो माँ

प्यार तुम्हारा ही तो माँ, इन गीतो में साकार हो गया।
बरसाया पीयूष मरूस्थल, सोने का संसार हो गया॥

गला दिया तुमने निज जीवन, विश्व वाटिका यह लहराई।
आँधी पानी में आँचल ढक, बुझती दीपक शिखा जलाई॥
क्रोध तुम्हारा उमड़ पड़ तो, चण्डी का अवतार हो गया॥

रोती ठोकर खाकर दुनियाँ, थपकी खाकर फिर सो जाती।
उमड़ तुम्हारी करुणाधारा, फूलों पर मोती बिखराती॥
प्यार तुम्हारा तूफानें में, नैया की पतवार हो गया॥

किसे भला अवकाश कि सुन ले, क्षण भर मेरी करुण कहानी।
तुम्हीं न हो तो किन प्राणों में, ढालूँ इन आँखों का पानी॥
हाथ लगा दो करुणामय बस, मेरा बेड़ा पार हो गया॥

मुक्तक–

माँ तुम्हारे प्यार ने जीवन दिया है,
प्राण ने पीयूष जैसा रस पिया है।
माँ न होती तो धरा फिर नर्क होती,
आपने ही स्वर्ग का सर्जन किया है॥

प्रभो अब दो ऐसा वरदान

प्रभो अब दो ऐसा वरदान।
सत्य प्रेममय जन जीवन हो, हो नवयुग का निर्माण॥

द्वेष, कपट, छल, छद्म छोड़ दें, द्रोह, दम्भ का व्यूह तोड़ दें।
सदाचार, संयम, सेवा का, रहे सभी को ध्यान॥

मन का मैल मिटे अब सारा, बहे प्रेम की पावन धारा।
उस मानवता की गंगा में, कर लें सब स्नान॥

स्वार्थ भाव अब तो मिट जाये, लोभ, मोह का तम छुट जाये।
बन्धु भाव हो भरा सभी में, सबमें हो सद्ज्ञान॥

दु:ख, दारिद्रय निकट नहीं आवे, सुख सद्गुण नर नारी पावे।
सुख, संतोष भरा हो सबमें, जग हो स्वर्ग समान॥

धन वैभव की चाह नहीं है, यश की भी परवाह नहीं है।
केवल यही चाह है मन में, नेक बने इन्सान॥

भूतल की शोभा हों हम सब, भूलें कभी न अपना गौरव।
मानवता के बने पुजारी, सच्ची प्रभु सन्तान॥

मुक्तक–

हमें वह शक्ति दो प्रभु प्रेम की, दुनियाँ बसायें हम।
स्नेह, सहकार, श्रम को, मंत्र जीवन का बनायें हम॥
दम्भ, द्वेष से छल छद्म से चिन्तन न विकृत हो।
समय, श्रम, साधनों को लोक-मंगल में लगायें हम॥

पिछले युग की बातें

पिछले युग की बातें, हो गई बहुत पुरानी।
हम सबको करनी है फिर से, नवयुग की अगवानी॥
हम युग निर्माणी–हम युग निर्माणी॥
नये सृजन की प्रबल तरंगे, हमको आज जगानी।
हम युग निर्माणी–हम युग निर्माणी॥

सता रही दुर्बुद्धि साथ अब उसको छोड़ो।
राह रोकने खड़ी रूढ़ियाँ उनको तोड़ो॥
लोभ–मोह में रूक जाने का समय नहीं है।
भय से दुःख से झुक जाने का समय नहीं है॥
महाकाल के संग चलने की, हमने मन में ठानी॥

अब दुर्बद्धि मनों में हम पलने न देंगे।
दुर्भावों की कुटिल चाल चलने न देंगे॥
परिष्कार मन का अब सबको कर लेना है।
और हृदय में दिव्य भावना सबको भर लेना है॥
मानव में है देवो जैसी पावन ज्योति जगानी॥

भेदभाव की द्वेष दम्भ की खैर नहीं है।
है अनीति से युद्ध किसी से बैर नहीं है॥
दैवी सांचे में हम सबको ढलना होगा।
बिना रुके उज्ज्वल भविष्य तक चलना होगा॥
बढ़ो हमारे साथ चल रही है युग शक्ति भवानी॥

पैसे के बदले सदाचार

पैसे के बदले सदाचार जब घर-घर पूजा जायेगा॥
वह युग जल्दी ही आयेगा, वह युग जल्दी ही आयेगा॥

जब शुद्ध उपार्जन का पलड़ा, काले धन से भारी होगा।
सम्मानित होगा श्रमजीवी, हर संचय उपकारी होगा॥
जब मानव जान गँवाकर भी, अपना ईमान बचायेगा॥

जब सज्जनता की और समय की, धारा मोड़ी जायेगी।
असफल होकर भी जीवन में, जब नीति न छोड़ी जायेगी॥
विष वृक्ष असुरता का खुद ही, निर्जीव पड़ा मुरझायेगा॥

नारी की गरिमा बढ़कर जब, नर से ऊँची हो जायेगी।
होगी वह भार स्वरूप नहीं, सब को सन्मार्ग दिखायेगी॥
स्वीकार करेगा जो दहेज, वह महाभ्रष्ट कहलायेगा॥

आदर्श सभी का होगा जब, सादा जीवन ऊँचा चिन्तन।
ओजस्वी होगा तरुण रक्त, तज फैशन का दीवानापन॥
पशु की श्रेणी में होगा वह, जो इन्द्रिय सुख अपनायेगा॥

जब धर्म और विज्ञान यहाँ, मिलकर पूरक बन जायेंगे।
कर्त्तव्य परायण जन जो जब, सच्चे आस्तिक कहलायेंगे॥
जब स्वर्ग स्वयं विकल होकर, इस धरती की जय गायेगा॥

प्रेम का अमृत पिला जो

प्रेम का अमृत पिला जो, सींचता था स्नेह जल से।
आज वो ही स्रोत सूखा, देख मन मुरझा रहा है॥
तड़पते दिल, रो रही हर आँख, उर है छल छलाया।
ज्योति शाश्वत ही रहे, विश्वास यह गहरा रहा है॥

होश आया तो मनुजता, छटपटाती रो रही थी।
संस्कृति अध्यात्म की, गरिमा युगों से सो रही थी॥
आस्था खोकर जगत यह, पतित हो दुःख पा रहा था।
देखकर यह हृदय उसका, द्रवित होता जा रहा था॥
भ्रमित जग को राह देने, के लिए वह छट-पटाया।
विश्व माली का बगीचा, सूखता क्यों जा रहा है॥

लोकहित में दीप बनकर, रात-दिन जलता रहा वह।
लह लहाने विश्व उपवन, बीज बन गलता रहा वह॥
साधना की प्रखर अविरल, ज्योति प्रज्ञा की जलाई।
और युग निर्माण करने, योजना नूतन चलाई॥
रात-दिन अविराम हर पल, साधना करता रहा वह।
कह उठा जग क्रांति करने, फिर मसीहा आ रहा है॥

कह रहा मन आपके अनुदान का, ऋण हम चुकायें।
राह जो तुमने दिखाई दृढ़, चरण उस पर बढ़ायें॥
कर रहे हम आज श्रद्धा से भरा हे प्रभु समर्पण।
अब तुम्हारे लक्ष्य में ही, है सदा ये प्राण अर्पण॥
ज्योति जो तुमने जलाई, वह नहीं हरगिज बुझेगी।
आज हर परिजन यही सौगन्ध पावन खा रहा है॥

परमार्थ है जहाँ पर

परमार्थ है जहाँ पर, परमात्मा वहीं है।
इससे बड़ा जगत में, सद्कर्म ही नहीं है॥

इस राजपंथ पर चल, कोई नहीं ठगे हैं।
बाँटी जिन्होंने मेंहदी, वे हाथ खुद रंगे हैं॥
है साधना यहीं पर आराधना यहीं है॥

पाती विकास अपनी ही, आत्मा यहाँ पर।
निज स्नेह बाँटते हैं, परमात्मा यहाँ पर॥
परमार्थ है जहाँ पर, यश कीर्ति भी वहीं है॥

इस मार्ग पर चले जो, अक्षुण्य हो गये हैं।
वानर गिलहरी केवट, तक धन्य हो गये हैं॥
इससे बड़ी नियामत, क्या और भी कहीं है॥

देती हैं बाल भेड़ें, मिलते उन्हें नये हैं।
फल फूल दान करते, वे वृक्ष बढ़ गये हैं॥
देने में सुख जहाँ पर, वह स्वर्ग भी वहीं हैं॥

युग शक्ति लोक-मंगल, पथ पर पुकारती है।
जो प्राणवान नर हैं, उनको निहारती है॥
इससे बड़ा सुअवसर, मिलना कभी नहीं है॥

पीड़ा पुकारती है

पीड़ा पुकारती है, देती न क्या सुनायी।
संवेदना हृदय की, क्यों कर न जाग पायी॥

पीड़ा सुनो स्वयं की निज पीर कर रही है।
अज्ञान का अँधेरा दिन रात सह रही है॥
है आत्मा उपेक्षित पोषण शरीर का है।
कुछ ध्यान आत्मा की हमको न पीर का है॥
आवाज आत्मा की अज्ञान ने दबाई॥

युग छटपटा उठा है, पापो जनित पतन से।
अन्याय के अनय के अब क्रूर आचरण से॥
बैचेन है मनुजता, अपनी व्यथा सुनाने।
पीड़ा-पतन, पराभव की अब कथा सुनाने॥
संवेदना मनुज में देती न अब दिखाई॥

विश्वास आस्था का, मन भी सिसक रहा है।
आदर्श उपेक्षा का क्रम, कसक रहा है॥
चिन्तन चरित्र चिन्तित है स्वार्थ के संगों से।
सद्भावना दुखी है, दुर्भाव के ठगों से॥
कैसे सहे मनुजता सौजन्य की जुदाई॥

हावी समाज पर है, जो क्रूर तम प्रथायें।
करतूत क्रूरता की कोई सुनें सुनायें॥
पागल हुई मनुजता आँसू बहा रही है।
बेहाल हो रही है, दुखड़े सुना रही है॥
होकर मनुज, मनुजता की कोख क्यों लजाई॥

प्रभु का ही दर्शन हो

प्रभु का ही दर्शन हो सब में, यह जीवन प्रभुमय बन जायें।
यह जीवन ऐसा हो जाये॥

अपनेपन का कुछ भान रहे, मिट जाये परायापन सारा।
सबमें अपने को ही देखें, हमसे न रहे कोई न्यारा॥
सर्वत्र एक ही तत्व दिखे, चाहे जिस ओर नजर जाये॥

तन–मन से जो शुभ कर्म करें, सबको प्रभु का पूजा माने।
अपना हममें कुछ भी न रहे, सब कुछ प्रभु का है यह जाने॥
जैसा प्रभु चाहे हम चाहें, उसकी इच्छा ही मन भाये॥

दुर्भावों को हम दूर भगा, सद्भावों का सम्मान करें।
ईर्ष्या न किसी से हो मन में, संतोष सुधा का पान करें॥
हो निश्छल निर्मल बुद्धि सदा, कुविचार कभी न आ पाये॥

भगवान यही वर दो हमको, कुछ और न हो सुख की इच्छा।
तुमको न कभी हम भूल सकें, हम सबकी अंतिम यह भिक्षा॥
कुछ सार्थक हो इस जीवन का, यह व्यर्थ न यूँ ही बह जाये॥

> हमारे साधु–संतों की संगीत साधना का ही यह प्रभाव था कि कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, तुकाराम, नरसी मेहता आदि ऐसी कृतियाँ कर गए जो हमारे और संसार के साहित्य में सर्वदा ही अपना विशिष्ट स्थान रखेंगी।
>
> –डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

पथ के कष्ट उठाकर

पथ के कष्ट उठाकर आये, किया बड़ा उपकार।
हे शुभ अतिथि स्वागत बारम्बार॥

धन्य भाग्य हुए आज हमारे तुम जो आये।
हमने अतिथि जो देखा दर्शन पाये॥
हाथ जोड़कर विनती करते तुमसे बारम्बार॥

बच्चे होते मन के सच्चे, ये बोले मीठी वाणी।
अच्छे बुरे का काम नहीं, इन्हें सुनलें सब प्राणी॥
हाथ जोड़कर करते विनती, निशदिन बारम्बार॥

खुशियों के ये दिन देखो खिलते ही रहे।
फूलों के ये हार तुम्हें मिलते ही रहे॥
ये माला तुमको पहनायी, इसे कर लेना स्वीकार॥

संगीत गंधर्व विद्या है। यह कला अति प्राचीन है। रावण ने भगवान शिव को संगीत के द्वारा ही संतष्ट किया था। संगीत भावाभिव्यक्ति का एक साधन है। यह प्रेम सरसता है। मन में आशा का संचार करता है। इसकी ध्वनियाँ असंख्य हैं। उपकरण भी इसके असंख्य हैं। सभी प्राणियों के हृदय में संगीत समाया हुआ है। सबकी रसना पर संगीत नृत्य करता है।

–स्वामी शिवानन्द

पीर की बेचैनियों में

पीर की बेचैनियों में, प्यार बनती गुरु कृपा है॥

फँस भँवर आलिङ्गनों में, जब किनारा छूटता है।
जब थपेड़ों से थका हारा, हुआ मन डूबता है॥
तब उफनती धार में, पतवार बनती गुरु कृपा है॥

जब भटकती जिन्दगी को, रास्ता मिलता नहीं है।
जब अटकते पाँव को गति, का पता मिलता नहीं॥
तब स्वयं ही ज्योति का, आधार बनती गुरु कृपा है॥

बाँट गह चलती फिसलती, राह में हारे हुओं की।
भव त्रितापों के प्रहारों, पाप से मारे हुओं की॥
प्राण की संजीवनी, हर बार बनती गुरु कृपा है॥

राम हो श्याम हो, या हों शिवा से वीर मानी।
हों दयानन्द या विवेकानन्द, से अमरत्व ज्ञानी॥
हर विजय उत्थान में, उजियार बनती गुरु कृपा है॥

पक्षी, भ्रमर, पतंगे, मृग और जीवजन्तु तक गायन करते रहते हैं। गीत-ब्रह्माण्डव्यापी है। संगीत मनुष्यों की ही नहीं, सृष्टि के समस्त प्राणधारियों की सम्पदा है।

–नारद संहिता

प्रतिभाओं तुमको क्रान्ति

प्रतिभाओं तुमको क्रान्ति रण, भेरी बजानी है।
नई तस्वीर भारत देश की, फिर से बनानी है॥

जगत्गुरु की पुनः आध्यात्मिक सामर्थ्य जागेगी।
समूचे विश्व को आध्यात्मिक मधुरस चखा देगी॥
धर्म की चेतना फिर विश्व मानव में जगानी है॥

सिखाकर आत्मविद्या मनुज को जीना सिखाना है।
आत्मघाती-अतिविद्या मनुज को जीना सिखाना है॥
तेन त्यक्तेन भुञ्जिथा, विद्या सबको सिखानी है॥

न हो विज्ञान विध्वंसक सृजन के गीत ही गाएँ।
स्नेह सहकार की दुनियाँ, बसा मिल बाँटकर खाएँ॥
सादगी-उच्च विचारों की, नई दुनियाँ बसानी है॥

जगाने सुप्त जन-मानस जरूरत प्राणवानों की।
और प्रतिभा की आहुति लोकमंगल में चढ़ाने की॥
सृजन में प्रतिभाओं अपनी प्रखर प्रतिभा लगानी है॥

मुक्तक-
आमन्त्रण आ रहा साथियों, नव भारत निर्माण का।
प्रतिभाओं प्रमाण देना है, अब आदर्श महान का॥

पगले! दृष्टि बदल यदि

पगले! दृष्टि बदल यदि जाय।
जैसा चश्मा चढ़े आँख पर, वैसा दृश्य दिखाय॥

दृष्टिकोण बदले तू बदले, जीवन नूतन होय।
धरा न बदले गगन न बदले, पर परिवर्तन होय॥
अगर सोचलें साधन बदलें, सब कुछ बदला जाय॥

साधन में सुख नहीं बावरे, सुखतो मन में होय।
बिन संतोष साधनों में भी, सुखी हुआ नहिं कोय॥
आ जाये संतोष सम्पदा, सुख अभाव में आय॥

सुख दु:ख तो जीवन का क्रम है, चिन्ता से क्या होय।
हानि लाभ का हार जीत का, फिर क्यों रोना रोय॥
अच्छा बुरा समय कट जाता, साहस अगर जुटाय॥

आप भला तो जगत भला है, बुरा न दीखे कोय।
सबके सब ही आत्म रूप हैं, कौन पराया होय॥
अपना सुख सब कोई बाँटे, सबका दु:ख बँटाय॥

जीवन का तात्पर्य मानव जीवन से है, पशु–पक्षी जीवन से नहीं और संगीत से तात्पर्य केवल शास्त्रीय संगीत ही नहीं बल्कि भाव संगीत, चित्रपट संगीत, लोक संगीत आदि से भी होता है।

प्रभु चरण तुम्हारे पड़े जहाँ

प्रभु चरण तुम्हारे पड़े जहाँ, है तीर्थ हमारा वहीं वहीं।
जीवन यह नाथ तुम्हारा है, अधिकार हमारा कहीं नहीं॥

तुमने तप किया भगीरथ सा, प्रज्ञा प्रवाह भू-पर लाये।
सबको अधिकार प्रदान किया, जो करे साधना खुद पाये॥
समता, ममता पूरित ऐसा, अनुदान जगत में कहीं नहीं॥

हे वेदमूर्ति! तुमसे जग को, फिर से जीवन की कला मिली।
भ्रम-भटकावों से मुर्झायी, सूखी हर मन की कली खिली॥
सूखे मरुथल थे जहाँ जहाँ, रस धार बहायी वहीं वहीं॥

हम हीन स्वार्थ में डूबे थे, तुमने कर कृपा उबार लिया।
सत्कर्मों की फैली सुगन्ध, ऐसा पावन युग यज्ञ किया॥
जो कर्म तुम्हें प्रिय हैं ऋषिवर, कर्त्तव्य हमारा वहीं वहीं॥

भटके अटके मन वालों को, जीवन की विद्या दी प्यारी।
दुनियाँ के ताबेदारों को, दी ईश्वर की साझेदारी॥
जो युक्ति सिखा दी जीवन की, है मुक्ति हमारी वहीं वहीं॥

आस्थाहीनों ने दुनियाँ को, बर्बादी तक पहुँचाया है।
फिर नयी आस्था दे तुमने, उज्ज्वल भविष्य दिखलाया है॥
तुम महाकाल बनकर आये, है जोड़ तुम्हारा कहीं नहीं॥

पुकार प्राण-प्राण को

पुकार प्राण-प्राण को, सुनो गुहार ध्यान दो।
जली मशाल ज्ञान की, उठो जवान थाम लो॥

दिशा-दिशा पुकारती, उषा निशा पुकारती।
अनादि मंत्र गा रहे, जगे प्रबुद्ध भारती॥
समस्त शक्ति दान लो, बनो महान थाम लो॥

साँस-साँस पर समर, चुनौतियाँ भरी डगर।
प्रयाण शंख फूँकता, तिमिर चला सँवर-सँवर॥
अमित शक्ति पुञ्ज हो, प्रकाश प्राण थाम लो॥

सजल नयन पुकारते, खिले सुमन पुकारते।
करें पुनीत अर्चना, चले चरण पुकारते॥
कि कण्ठ-कण्ठ गा रहा, हुआ विहान थाम लो॥

झुके न शीश ज्ञान का, रूके न पाँव ध्यान का।
महान ज्योति पर्व पर, नहान प्राण-प्राण का॥
उबार पाप-ताप से, दु:खी जहान थाम लो॥

दिगन्त लाल-लाल है, उदार भारती जगी।
अनन्त ज्योति वर्तिका, उभार आरती जगी॥
मुहूर्त जो मिला महान, पुण्यवान थाम लो॥

प्रभु से साझेदारी कर लो

युगऋषि का कहना है, धर ध्यान सभी सुनलो।
प्रभु स्वयं बुलाता है, साझेदारी कर लो॥

जो जागृत आत्मा हैं, उन सबको कहना है।
यह अवसर मत चूको, निज भाग्य तय करलो॥

मानव संकट में है, मानवता विकल हुई।
मानवता-मानवता संग, सहयोग जरा करलो॥

जिसने प्रतिभा बाँटी, वह स्वयं माँगता है।
कुछ समयदान देकर, यश से झोली भरलो॥

धन साधन जो भी है, सब तो प्रभु के ही हैं।
प्रभु का प्रभु को अर्पित, कुछ अंशदान करलो॥

सौभाग्य मूल शुभ यह, संकल्प नहीं भूले।
रख ज्ञान पात्र घर में, सौभाग्य अचल करलो॥

सद्संत रूप है यह, शुभ मार्ग दिखायेगा।
युगधर्म निभा करके, सुख से झोली भरलो॥

रख स्वयं इसे घर में, स्वजनों को प्रेरित कर।
मन भावन पुण्यों से, जीवन अपना भरलो॥

गायन में शरीर, मन व आत्मा तीनों को बलवान बनाने वाले तत्त्व परिपूर्ण मात्रा में विद्यमान हैं।

पूरब-पश्चिम उत्तर-दक्षिण

पूरब–पश्चिम उत्तर–दक्षिण, घूमा मन मेरा सन्यासी।
हर मूरत में रूप तुम्हारा, देख रहा यह मन विश्वासी॥

काया में थे पिता सरीखे, हर पल दाएँ–बाएँ दीखे।
जीवन के कण्टक पथ पर हम, तुझसे ही चल पाना सीखे॥
सूक्ष्म और कारण बनकर अब, तुम हो रोम–रोम के वासी॥

इस नश्वर धरती पर प्रतिपल, तुम झर–झर झरते अमृत हो।
देश–देश में अब सन्तों की, वाणी में तुम ही मुखरित हो॥
निराकार होकर गुरुवर! तुम, अब हो अजर–अमर अविनाशी॥

दिशा–दिशा प्रेरित है तुमसे, तुमसे ज्योतित साँझ सकारे।
क्षितिजल पावक, पवन गगन, सब देते हैं संदेश तुम्हारे॥
प्रभु तुम स्त्रष्टा हो, पालक हो, तुम हो प्रलयंकर कैलाशी॥

एक पिता की सन्तानों में, ऊँच–नीच क्या अन्तर कैसा।
सबको लेकर साथ करेंगे, कार्य मिलेगा हमको जैसा॥
शिथिल न होंगे पाँव तनिक भी, नयनों में होगी न उदासी॥

मनोविकारों के निवारण में संगीत को सफल उपचार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।
(डॉ. वाल्टर क्यूग, जर्मनी मनोरोग चिकित्सक)

प्रतिष्ठा महाकाल की

प्रतिष्ठा महाकाल की अब हुई है।
महाप्राण की चाल की गति नई है॥
शिव साधकों अब थिरकना पड़ेगा।
शिव आराधना को निकलना पड़ेगा॥
जरूरत पड़ी है कि शिव के गणों की।
कुदृष्टि अशिव जाल की अब हुई है॥
अशिव जाल को तोड़ना अब पड़ेगा।
कुटिल-चाल को मोड़ना अब पड़ेगा॥
खुले आक्रमण शिव-संस्कृति पर होते।
जरूरत महा ताल की अब हुई है॥
महाकाल का क्रुद्ध डमरू बजा अब।
अशिव-संस्कृति को मिलेगी सजा अब॥
चलो सिर उतारें अशिव-धारणा के।
जरूरत कि मुण्डमाल की अब हुई है॥
नशे दुष्प्रवृत्ति के सिर ही उड़ा दें।
कुटिल धूर्तता के धतूरे चढ़ा दें॥
व्यसनग्रस्त मन-मृग को अब दबोचें।
जरूरत कि मृगछाल की अब हुई है॥
महाकाल के गण नहीं अब भ्रमित हों।
समयदान, अंशदान के क्रम नियमित हों॥
समय युग परिवर्तन का आ गया है।
पुकार आरती थाल की अब हुई॥
फ़िज़ा दीप की माल की अब हुई है॥

फूट पड़े यदि आप हृदय से

फूट पड़े यदि आप हृदय से, बन भावों की धार।
फिर तो मानवीय संवेदन का, खुल जाये द्वार॥

करुणा स्रोत स्वयं फूटे जब, कैसा वहाँ अभाव।
वहाँ छलक उठते हैं फिर तो, संवेदन, सद्भाव॥
कैसा भी पाषाण हृदय फिर, हो सकता है चूर।
करुणानिधि के साथ, कौन फिर रह सकता है क्रूर॥
फूट पड़े प्रभु आप हृदय से, बनकर पावन प्यार॥

सद्भावों की लहरें छूलें, जन मानस के कूल।
मानवीय अन्तर में फिर तो, खिलें प्यारके फूल॥
महक उठे मानव की वसुधा, बिखरे प्रेम पराग।
मानव के प्रति फिर मानव में, छलक उठे अनुराग॥
सद्संकल्पों, सद्भावों के, भ्रमर करें गुंजार॥

फिर कैसा शोषण उत्पीड़न, कैसी कसक कराह।
मानव कैसे सुन सकता है, फिर मानव की आह॥
जहाँ व्यथित हो मनुज व्यथा से, मनुज हृदय की पीर।
मनुज व्यथा की कथा मनुज का, उर देती है चीर॥
भावों के भगवान! मनुज के, उर में लो अवतार॥

सृजन स्वर्ग का कर सकता शुभ, भावों का संस्पर्श।
सतयुग फिर से ला सकता है, भावों का उत्कर्ष॥
पुलकित होती है मानवता, देख देख सद्भाव।
मानव बनने को देवों में, उमड़ा करता चाव॥
स्वर्ग वहाँ है जहाँ शील, सौजन्य, स्नेह, सहकार॥

फैल रहा अज्ञान रे

फैल रहा अज्ञान रे, भटक रहा इन्सान रे।
आजा गीता ज्ञान सिखा जा, गीता के भगवान रे॥

जब-जब बढ़े अधर्म जगत में, होय धर्म की हानि रे।
तब-तब ही तुमने आने की, कठिन प्रतिज्ञा ठानी रे॥
फिर हुई धर्म की ग्लानि रे, केशव कृपा निधान रे॥

बढ़े बहुत खल चोर जुआरी, निर्दयी माँसाहारी रे।
कत्ल होय नित बूचड़ घर में, लाखों गऊ बिचारी रे॥
भूल धर्म ईमान रे, बना मनुज शैतान रे॥

अण्डा, माँस, शराब पिवैया, बहुत बढ़े हैं थोड़े ना।
मेंढक, मछली, बकरी, सूअर, साँप तलक भी छोड़े ना॥
ऋषियों की सन्तान रे, बनी आज नादान रे॥

लाज बचा जा पुनः बुलाती, है भारत की अर्धांगी।
स्वाँग सिनेमा दुस्सासन, मोहे हँस-हँस के कर रहे नंगी॥
अंधों की सन्तान रे, छोड़ि चुकी कुलकान रे॥

रक्षक भक्षक बने कि उल्टी, बार खेत को खाय रही।
चोर चबूतरा चढ़े शाह, सज्जनता खड़ी कराह रही॥
कर सज्जन पर त्राण रे, विनति पर दो ध्यान रे॥

मनुज देवता बने यहाँ की, धरती स्वर्ग समान बने।
हरिराम सुखधाम देश की, फिर से ऊँची शान बने॥
केशव कृपा निधान रे, विनति पर दो ध्यान रे॥

फैली दुनियाँ में बिमारी

फैली दुनियाँ में बिमारी, सुनलो भैया/सुनलो दीदी॥

लेखक चित्रकार अभिनेता, गीतकार आजाद।
जितनी जल्दी होगा भैया, करे देश बरबाद॥
करदी नारी को उघारी, सुनलो भैया॥

सट्टा, जुआ, शराब के नेता, बन बैठे हैं राजा।
इन गुण्डों को मार भगाओ, रक्षक है शिव बाबा॥
करदी जनता को भिखारी, सुनलो भैया॥

ये दहेज का दानव देखो, हत्यारा इन्सान।
पैसा खाते लड़का बेचा, बेच दिया ईमान॥
लड़की फिरती है कुँवारी, सुनलो भैया॥

सब गुंडे मिल किया संगठन, सारा माल दबाओ।
क्रूर प्रथाओं को छोड़ के भैया, ज्ञान मशाल उठाओ॥
बने पापों के शिकारी, सुनलो भैया॥

नाद के 'आहत' और 'अनाहत' दो भेद हैं। आघात या घर्षण से उत्पन्न प्रत्यक्ष सुनाई देने वाला नाद "आहत" और स्वभूं या अन्तर में अनुभव किया जाने वाला नाद "अनाहत" है। इसमें अनुकरणन युक्त रंजक "आहत नाद" ही संगीतोत्पत्ति का मूल कारण है।

–संगीत रत्नाकर

बुढ़ापा आ गया कैसे

बुढ़ापा आ गया कैसे, जवानी क्यों नहीं आयी।
अरे गतिरोध क्यों आया, रवानी क्यों नहीं आयी॥

सुबह की रोशनी पीकर, किरण की जिन्दगी जीकर।
ऊषा का तेज मुस्काया, प्रभा का रूप अँगड़ाया।
मनुज के गाँव में मधुऋतु, सुहानी क्यों नहीं आयी॥

सुधा की धार में रहकर, लहर के प्यार में रहकर।
बने क्यों रेत ढह ढहकर, उमड़ते ज्वार के सहचर।
अमृत के घूँट पीने जिन्दगानी, क्यों नहीं आयी॥

समूचा स्वर्ग आ पहुँचा, स्वयं अपवर्ग आ पहुँचा।
लिए मधु तेज की काया, पिछलता भर्ग आ पहुँचा।
हृदय के शून्य मंदिर में, भवानी क्यों नहीं आयी॥

नदी जलनिधि बनी चलकर, किरण हँसने लगी जलकर।
घटा पर बीज की लघुता, सफल टहनी बनी गलकर।
तुम्हें उर दीप की बाती, जलानी क्यों नहीं आई॥

संगीत ही क्या, समस्त सृष्टि क्रम में एक अपूर्व ताल व्यवस्था अर्थात् काल की नियमितता दृष्टिगोचर होती है।

बात कोरी न केवल करो

बात कोरी न केवल करो धर्म की–
धर्म मय ही बनाओ अभय आचरण।

धर्म अग्नि का है दान उष्मा करे–
धर्म जल का है ठण्डक सभी में भरे।
पर सदा अग्नि जलती स्वयं ही प्रथम–
और शीतल बनाती भी है स्वयं॥
धर्म इन्सान का शुद्ध परमार्थ है–
सब करें विश्व हित का महाव्रत वरण॥

सूर्य तपकर स्वयं ताप देता सदा–
प्राण इस विश्व को बाँटता सर्वदा।
शीत सहता हिमालय गलन भी बहुत–
अनवरत कर रहा नीर को तब निसृत॥
दीप बनकर चलेगा मनुज जब स्वयं–
कर सकेगा तभी विश्व का तम हरण॥

कुछ न होता सहज भाषणों से यहाँ–
चाहिए कर्म का आचरण भी यहाँ।
बात वह ही सदा अनुकरण में ढली–
कर्म की ज्योति में स्नेह बन जो ढली॥
तुम अत: गति वही निज पगों में भरो–
विश्व में चाहते जिस तरह अनुकरण॥

बिछड़े हुए मिलायें

बिछड़े हुए मिलायें, सबको गले लगायें।
युग का नया तराना, हम एक साथ गायें॥

है जन्म से यहाँ पर, कोई बड़ा न छोटा।
है जाति वंश भर से, कोई खरा न खोटा॥
तब क्यों न हर मनुज को, अपना स्वजन बनायें॥

होता समाज में है, गुण कर्म से विभाजन।
गीता सिखा रही है, सच्चा नियम सनातन॥
जो है दलित युगों से, झुककर उन्हें उठायें॥

अलगाव में हमेशा, हम बिखरते रहे हैं।
होती प्रगति कहाँ से, जब रूढ़ि में बहें हैं॥
अब क्यों न स्वागतम हम, सबके लिए सजायें॥

जो थे सगे हमारे, वे बन गये पराये।
इतिहास कह रहा है, हमने रतन गँवाये॥
चेतो अभी समय है, अब फिर न चूक जायें॥

झंझट अनार्य अथवा, अब आर्य का कहाँ है।
शक हूण दल सभी का, संगम हुआ यहाँ है॥
अब क्यों अपच हुआ है, इस ब्याधि को मिटायें॥

जिसने हमें डसा है, वह नागपाश तोड़े।
वसुधा कुटुम्ब को अब, ऐसा विधान जोड़े॥
हम कौन थे हुए क्या, यह सब नहीं भुलायें॥

बनो एक सब मिल

बनो एक सब मिल विषमता मिटाओ।
जगो तुम स्वयं राष्ट्र को भी जगाओ॥

अगर फूट हम में परस्पर न होती,
न यह भेद अथवा छुआछुत होती॥
जकड़ती हमें क्यों भला यों गुलामी,
रहे हम हमेशा अखिल विश्व स्वामी॥
बढ़े शक्ति फिर एकता को बढ़ाओ॥

प्रकृति भी नहीं भेद करती किसी से,
लुटाती सहज सम्पदायें खुशी से।
पवन, ज्योति, जल बाँटती है बराबर,
किसी जीव तक का न होता निरादर॥
करें भेद हम फिर भला यों बताओ॥

मनुज में करे भेद क्यों जाति या धन,
करे स्वार्थ के द्वेष के क्रूर बन्धन।
हटे देश से शीघ्र सारी विषमता,
हटे यदि हमारे हृदय से कृपणता॥
गिरे हैं उन्हें अब हृदय से लगाओ॥

सभी को प्रगति के मिले शुभ अवसर,
परिश्रम करें हम सभी जोश भरकर।
बढ़ायें कदम से कदम सब मिलाकर,
बनायें नया देश हम आत्म निर्भर॥
दिलों में सभी स्नेह का रस बहाओ॥

बरस रहे अनुदान साधकों

बरस रहे अनुदान साधकों, बरस रहे अनुदान।
युग-प्रज्ञा माँ गायत्री के, जनहिताय वरदान॥

युग साधक की अथक साधना, आज बन गई सिद्धि।
युग मंगल के लिए समर्पित, साधक की समृद्धि॥
आदि शक्ति माँ गायत्री की अतुलित शक्ति महान॥

सृष्टि-सृजेता ब्रह्मा जी की, भी सामर्थ्य विशिष्ट।
ऋषियों की आराध्य साधक, विश्वामित्र, वशिष्ठ॥
गायत्री, सावित्री महिमा, गाते वेद पुराण॥

प्राण दायिनी, शक्तिदायिनी, देती विमल विवेक।
कृपा दृष्टि पा करके साधक, बन जाता है नेक॥
सुप्त देवत्व जगााकर करती, ब्रह्मवर्चस प्रदान॥

सभी साधनाओं में उत्तम है गायत्री साध।
सहज साधना चलती रहती, है निर्विघ्न अबाध॥
सादा जीवन उच्च विचारों, का है सहज विधान॥

ऐसी माँ के स्नेहांचल में, बैठे मानव मात्र।
गायत्री के सिद्ध पुरूष की, पायें कृपा सुपात्र॥
दोनों की ही शक्ति कर रही, नवयुग का निर्माण॥

बीती विषयों में उमरिया

बीती विषयों में उमरिया भजन बिना।
बीती जाए रे उमरिया भजन बिना।।

बालपन खेलों में खोया, कियो बड़ी नादानी।
आई जवानी की मनमानी, चाल चले मस्तानी॥
सीधी चले न डगरिया, भजन बिना।। बीती ....

मनचाही शादी कर बेटा, बहू ब्याह कर लाए।
हाथ पकड़कर चले अकड़कर, कुल मर्यादा भुलाए॥
घूमें शहर बजरिया, भजन बिना।। बीती ....

चन्द रोज में बेटी-बेटा, ससुर दामाद कहाए।
बेटा से बन गयो बाप, दादा को नम्बर आए॥
झुक गई दादा की कमरिया, भजन बिना॥ बीती ....

एक दिन राम नाम सत् हो गयो, हो गई खतम कहानी।
सगे सनेही रोते बाबा, बोल सके न वाणी॥
बन्द हो गई बाबा की नजरिया, भजन बिना।। बीती...

पण्डित और पीर पैंगम्बर योगी ग्यानी ध्यानी।
साधू हो या भूप सेठ हो, सबकी यही कहानी॥
सद्गुरु लाए हैं खबरिया, भजन बिना॥ बीती .....

बल प्राण प्रकाश सभी

बल प्रकाण प्रकाश सभी, सविता से पाते हैं।
ओजस्, तेजस्, वर्चस्, साधक से पाते हैं॥

हमको भी प्रभु सविता, साधन का बल देना।
साधना मार्ग का भी, संबल साहस देना॥
बालक हाथ पकड़, पितु–मातु चलाते हैं॥

मन चंचल है भगवन, वह साधन क्या जाने।
मन तो अपनाता है, केवल पथ मनमाने॥
शुभ चिन्तक माता–पिता, सन्मार्ग बताते हैं॥

संयम को साध सकें, वह प्राण हमें देना।
दोषों से दुर्गुण से, प्रभु त्राण हमें देना॥
हम सभी आपसे ही, अब आश लगाते हैं॥

जनहित में जीवन को, अर्पित करना आये।
साँसें, श्रम, साधन सब, जनहित में लग जाये॥
अन्यथा जिन्दगी के, क्षण बीत जाते हैं॥

जब सहज अँधेरा ने, जग पथ को घेरा है।
पीड़ित जन–मानस ने, सविता को टेरा है॥
तब–तब प्रकाश देकर, पथ आप दिखाते हैं॥

बहिनों दीपयज्ञ है आज

बहिनों दीप यज्ञ है आज, परम सौभाग्य हमारा है।
चलो सौभाग्य हमारा है, बड़ा सौभाग्य हमारा है॥

निकली कलश यात्रा भारी, दीप यज्ञ की है तैयारी।
जाग गई नगर की नारी, नारों से गूँजी गलियारी॥
नगरी को आदर्श वाक्य से, आज सँवारा है॥

दीपयज्ञ में खर्चा कम है, लेकिन भक्ति भाव संगम है।
दीप कर रहे ज्योति वरण हैं, यज्ञदेव का शुभ दर्शन है॥
अंधकार अनगिन दीपों को, लखकर हारा है॥

युगऋषि का संरक्षण होगा, दूर हमारा दुर्गुण होगा।
जन-जन सद् संकल्प करेगा, जीवन में परिवर्तन होगा॥
युग ऋषि ने कितना सुन्दर, यह भाव विचारा है॥

बुने रे मन क्यों ताना बाना

बुने रे मन क्यों ताना बाना।
सफर में खाली ही जाना, साथ में क्या ले जाना॥

इतनी आपा-धापी करता, पेट नहीं भोगों का भरता।
तन का नहीं ठिकाना, पीछे मत पछताना॥

अमृत पीने में सुख पाता, विष पीने में क्यों घबराता।
करना नहीं बहाना, जहर भी पीते जाना॥

पथ में राही नहीं अटकना, आकर्षण में नहीं भटकना।
कहीं न मिले ठिकाना, मंजिल तय कर जाना॥

बुला रही है भारत माता

बुला रही है भारत माता, अपने वीर जवानों को।
हो जाओ तैयार पुनः अब, नव परिवर्तन लाने को॥

विश्व गुरु था देश हमारा, जग को ज्ञान लुटाता था।
सोने की चिड़िया उड़ती थी, धर्म ध्वजा फहराता था॥
सोई शक्ति पुनः जगाओ, दीपक बुझा जलाने को॥

एक समय आया था ऐसा, आजादी हथियाने का।
'इन्कलाब' का स्वर गूँजा था, फाँसी गले लगाने का॥
वही चुनौती पुनः जगी है, माँ का दर्द चुकाने को॥

माँ बहनों की इज्जत लुटती, गली-गली हर गाँव में।
आतंकों की आग धधकती, काश्मीर है दाँव में॥
संघर्षों का समय है साथी, जमकर शौर्य दिखाने को॥

सेवा और सद्भाव भरा था, भारत के जन जीवन में।
कथनी करनी का प्रण पूरा, होता था निज जीवन में॥
आज जरूरत पुनः पड़ी है, भूले भाव जगाने को॥

ऊँचा हो निज देश का मस्तक, ऐसा कुछ निर्माण करो।
जन-जागृति का शंख बजाकर, जन-जन से आहवान करो॥
भेदभाव और जातिवाद को, ले जायें दफनाने को॥

बहनों अपनी शक्ति

बहनों अपनी शक्ति जगाकर, जुट जाओ निर्माण में।
संस्कृति का सौभाग्य छिपा है, नारी के उत्थान में॥

जब तक शक्ति तुम्हारी सोई, दिखा सकेगा राह न कोई।
नवयुग के संकल्प अधूरे, होंगे सब तुमसे ही पूरे॥
सद्विचार हो तुम्हीं कर्म में, आत्मतत्व विज्ञान में॥

तुमने निज वर्चस्व गँवाया, रूप रंग को लक्ष्य बनाया।
देवी अंश नहीं पहचाना, अस्ति चर्म ही सब कुछ जाना॥
विज्ञापन ने शील तुम्हारा, सजा दिया दुकान में॥

लोलुप नर ने ही गुण गाकर, कठपुतली सा तुम्हें सजाकर।
भोग्या कहीं बनाया दासी, सब ले डूबे अंध विश्वासी॥
जब तक तुम न स्वयं चेतोगी, संशय है कल्याण में॥

ज्ञानयज्ञ की ज्योति सम्भालो, जड़ता में नव जीवन ढालो।
जागे दिव्य क्रान्ति चिनगारी, कर दो भस्म विकृतियाँ सारी॥
स्वस्थ सृजन का शंख बजा दो, जागृति के अभियान में॥

मुक्तक–

उठो उठो हे! मातृशक्ति अब, समय प्रभाती सुना रहा है।
ओ देवी! दुर्गे तुम्हीं हो नारी, तुम्हारा गौरव बुला रहा है॥

बोल रहे राखी के धागे

बोल रहे राखी के धागे!
संस्कृति तड़प रही बन्धन में, छुड़ा सको तो आओ आगे।
बँधवा लो ये पावन धागे।

संस्कृति की महिमा मत भूलो, संस्कृति है सावित्री-सीता।
इससे ही सब ज्ञान मिला है, संस्कृति है रामायण-गीता॥
है अधीर, बन्धन से पीड़ित, धैर्य बँधाने आओ आगे॥

क्षुद्र स्वार्थ की जंजीरों से, देखो संस्कृति बँधी हुई है।
ऊँच-नीच की, भेदभाव की, दीवारों से घिरी हुई है॥
श्रेष्ठ भावना से दोनों को, तोड़ सको तो आओ आगे॥

अनगढ़ता से हुई प्रभावित, बुद्धि कुचक्र रचाती रहती।
शक्ति लगी है उग्रवाद में, सम्पति व्यसन बढ़ाती रहती॥
इन सबको शुभ दिशा चाहिए, दिखा सको तो आओ आगे॥

हृदय हीनता भरी तपन से, उसे पसीना छूट रहा है।
संवेदन की रस धारा बिन, गला रूँधा है, सूख रहा है॥
उसको निर्मल प्यार चाहिए, पिला सको तो आओ आगे॥

बातों से सबने बहलाया, किन्तु कर्म से कतराते हैं।
सब समर्थ होकर भी देखो, कैसे कायर बन जाते हैं॥
बलिदानी उत्साह चाहिए, जगा सको तो आओ आगे॥

बहुत विकल देखे नर-नारी

बहुत विकल देखे नर–नारी, दिशाहीन देखी तरुणाई।
भुवः और स्वः इस भू–पर त्रिपदा तभी उतरकर आई॥

जेठ मास की भरी दुपहरी, जब थी तपन धरा पर गहरी,
स्वर्गलोक से गंगा माई, ग्रीष्म–ताप हरने थी आई,
पर अब बारहमास रातदिन जलती हर मन की अँगनाई।

आज तपन हर जीवन में है, भाव–कर्म में, चिंतन में है,
जलता पर्यावरण हमारा, अग्नि बना आचरण हमारा,
युगऋषि ने गायत्री विद्या, इसीलिए जन सुलभ बनाई।

माना संकट अभी विकट है, जन्मशताब्दी किन्तु निकट है,
अब उसके अनुकूल बनें हम,करें साधना, सेवा संयम,
तभी तपन से व्याकुल धरती, पाएगी शीतल पुरवाई।

जग का भाग्य बदल जाएगा,नया सूर्य नभ में आएगा,
स्वर्णिम भोर सुहानी होगी, सत्य संत की वाणी होगी,
नवयुग में फिर सदाचार की धरती पर होगी अगुवाई।

चंचल मन को वश में करने के लिए गायन आकर्षक विद्या है। अज्ञानी जीव भी सुन करके एक टक ध्यान मगन हो जाता है। –कबीर दास

भटक रहा है जनम जनम से

भटक रहा है जनम जनम से, हंसा भूखा प्यासा रे।
तुम लाये जल घाट–घाट से, फिर भी रहा उदासा रे॥

मोती का अभिलाषी हंसा, कैसे पत्थर खाये।
मान सरोवर का वासी यह, कीचड़ में अकुलाये॥
तुमने इसे कषाय कल्मषों, में हर समय डुबाया।
दल–दल में बोलो फिर कैसे, करले हंसा वासा रे॥

नीर–क्षीर का ज्ञान इसे है, पर कैसे समझाये।
सद्गुण की पहचान इसे है, पर कैसे बतलाये॥
काम–क्रोध–मद की कारा में, बन्दी इसे बनाया।
पराधीन वाणी से कैसे, सबका करे खुलासा रे॥

मिथ्या मीठी बात बनाना, कभी न इसको भाया।
कपट भरा व्यवहार न इसने, पल भर भी अपनाया॥
निर्मलता में पला इसी से, निर्मल दृष्टि बनाई।
समझा करता है यह केवल, निर्मल मन की भाषा रे॥

तन का हर आवरण रात–दिन, तुमने बहुत सजाया।
पर उसके भीतर का वासी, भूखा सदा सुलाया॥
स्वाभिमान का धनी हंस यह, कैसे भी रह लेगा।
फैलाएगा मगर न भूखा रहकर, कभी हताशा रे॥

तन के सुख के लिए न सारा जीवन यहाँ गँवाओ।
अन्तर्मन की तुष्टि–पुष्टि का भी कुछ पुण्य कमाओ॥
यह वह है अंगार, राख की परतें अगर हटा दी।
बन जायेगा यहीं धरा पर स्वर्णिम सूर्य प्रभाषा रे॥

भरी भीड़ में एकाकी हम

भरी भीड़ में एकाकी हम, भटक रहे थे राहों पर।
उत्तर से संकेत हमें दे, हम सबका कल्याण किया॥

जब जब धरती पर अधर्म की, काली बदली गहराई।
पाँव-पाँव में थकाव हृदय में घोर निराशा थी छाई॥
ईश-चेतना जो अनुशासन करती दशों दिशाओं पर।
बनकर वह साकार पूज्य सद्गुरु का तन धरकर आई॥
डरी-डरी हिरनी सी बैठी, मानवता जो कोने में।
अभयदान दे उसको, सारी दुनियाँ का कल्याण किया॥

गुरु ने गरिमा सदा निभाई, हर मरुथल में पानी की।
प्यार-ज्ञान तप देकर पाई, महिमा औघड़ दानी की॥
सद्गुरु की पा कृपा, विवेकानन्द विश्व में छाए थे।
गुरुकृपा से मिली शिवाजी को तलवार भवानी की॥
उसी सहज शीतल अनुकम्पा की बौछारें बरसाकर।
हर सूखी मृत प्राय फसल को तुमने जीवन दान दिया॥

तुम जैसा अपनत्व दिखाने वाला मिला नहीं कोई।
घने वनों में दीप जलाने वाला मिला नहीं कोई॥
बहुत मिले बस पतन पराभव के पथ पहुँचाने वाले।
उच्च शिखर की राह शिव हमको मिला नहीं कोई॥
तुमने सरल सूत्र जीवन के दिये दु:खी मानवता को ।
यूँ जीवन का जटिल मार्ग जग में तुमने आसान किया॥

भर भर आये नयन हमारे

भर भर आये नयन हमारे, भरा तुम्हारा भी मन होगा।
सदा हमारे आशीषों से, भरा तुम्हारा जीवन होगा॥

जीवन पथ में सदा तुम्हारे, पग पग पर हम साथ रहेंगे।
अगर कहीं तुम भटक गये तो, सत्पथ का संकेत रहेंगे॥
मगर अकेलेपन में खोया, नहीं कभी कोई क्षण होगा।
जहाँ रहोगे वही हमारा, भावभरा संरक्षण होगा॥

लक्ष्य हीन सब भटक रहे हैं, छाया इतना गहन अंधेरा।
उड़ते उड़ते शाम हुई है, मिला नहीं पर कहीं सबेरा॥
तुम्हें पथ भूले मानव को, देना इतना निमंत्रण होगा।
तभी हमें संतोष मिलेगा, तभी यहाँ पूरा प्रण होगा॥

युग के इस तपते मरूस्थल में, करूणा की रसधार तुम्हीं हो।
नवयुग के उज्ज्वल भविष्य के, मूल तुम्हीं आधार तुम्हीं हो॥
बढ़ी आज जिम्मेदारी है, नष्ट नहीं कोई क्षण होगा॥
अग्रदूत बन जो चल देगा, कल उसका अभिनन्दन होगा॥

आओ तुम सब आगे बढ़कर, नए सृजन का भार उठाओ।
मानव का दुर्भाग्य मिटाकर, चिर नूतन सौभाग्य जगाओ॥
उतरेगा देवत्व तभी तो, जब संस्कारित तन मन होगा॥
धरा बनेगी स्वर्ग और फिर, गाँव-नगर नन्दनवन होगा।।

भीड़ की तो कमी है कहाँ

भीड़ की तो कमी है कहाँ, काम के लोग मिलते नहीं।
प्रार्थी या प्रशंसक बहुत, राह पर साथ चलते नहीं॥

धर्म, शासक सभा सम्मेलन, सब जगह भीड़ ही भीड़ है।
आस्थाएँ कहीं भी नहीं, हर जगह स्वार्थ का नीड़ है॥
स्वार्थी भीड़ के शोर में, काम के स्वप्न पलते नहीं॥

भीड़ के भूरि उन्माद में, दिव्यतायें कहो क्या करें।
होश तक जिस हृदय हो न हो, दिव्य अनुदान कैसे झरे॥
सिन्धु हो सीपियों से भरा, रत्न सबमें निकलते नहीं॥

काम के रीछ वानर मिले, तो भले राक्षसी भीड़ से।
आदमी से जटायू भले, जो द्रवित हो उठे पीर से॥
त्याग से जीतते राम को, नाम से राम छलते नहीं॥

हर समर जीतते शूरमां, भीड़ इतिहास लिखती नहीं।
क्योंकि बलिदान की राह पर,देर तक भीड़ टिकती नहीं॥
और बलिदानियों के बिना, जीत के दीप जलते नहीं॥

लो सुनों आज आवाज वह, जो महाकाल ने बाँग दी।
भीड़ में पास किसके वह, जो महाकाल देखना है यही॥
कौन पाषाण है भीड़ में, जो कि बिल्कुल पिघलते नहीं॥

चल रही मन्थन क्रिया, शुद्ध मक्खन उछल आयेगा।
साधना की सघन ताप में, छाछ कैसे पिघल पायेगा॥
वेदना छल छलाये अगर, प्राण कैसे मचलते नहीं॥

भारत माता प्रश्न पूछती है

भारत माता प्रश्न पूछती है, अपने संतानो से।
कब मुझको आजाद करोगे, चोरों से बेईमानों से॥

सोचा था पन्द्रह अगस्त सैंतालीस से अब अस्त हुये।
किन्तु प्रगति के, उन्नति के वे,स्वप्न भवन सब ध्वस्त हुए॥
भूल गये तुम सब जननी को, अपनी धुन में मस्त हुए।
पराधीन रहकर न किया, उन दुष्कर्मों से व्यस्त हुए॥
क्या कभी शिक्षा लोगों निर्दोषों से बलिदानों से॥

मिट गई इन बीते बरसों में, सरस कल्पनायें कितनी।
मन की मन में रह जाती हैं, मधुर भावनायें कितनी॥
तुमने कितने डेम बनाये, और योजनायें कितनी।
फिर भी भूखी सो जाती है, मेरी सन्ताने कितनी॥
रोने की आह आती है, इन अधिकांश मकानों से॥

कुछ पुत्रों को मिले मलाई, किन्तु अधिकतर भूखे हैं।
कुछ खेतों में हरियाली है, किन्तु अधिकतर सूखे हैं॥
चेहरे चमक रहे चोरों के, परिश्रमी के रुखे हैं।
गेहूँ चावल के खेतों में, आज उपजती ऊखें हैं॥
फिर भी फीका दूध पी रहे, बच्चे वीर जवानों के॥

केवल शासक बदले हैं पर, शासन अभी नहीं बदला।
रिश्वत खोर लुटेरों का, सिंहासन अभी नहीं बदला॥
दिन-दिन असहाय जनों का, शोषण अभी नहीं बदला।
भाई,भतीजों और सालों का, शोषण अभी नहीं बदला॥
आखिर कब तक दबे रहोगे, मुट्ठी भर शैतानों से॥

भारत का भाग्य जगायेंगी

भारत का भाग्य जगायेंगी, अब भारत ललनाएँ।
नारी का गौरव बढ़ायेंगी, अब भारत ललनाएँ॥

कन्या, भगिनी, पत्नी, माता, इनका रुप सदा सुख दाता।
सच्चा रूप दिखायेंगी, अब भारत ललनाएँ॥

कन्याएँ मुस्कान लुटाती, बहिनें निर्मल प्यार दिखाती।
गंगा सी लहरायेंगी, अब भारत ललनाएँ॥

ये तुलसी को सन्त बनाती, कालिदास को दिशा दिखाती।
पत्नी धर्म निभायेंगी, अब भारत ललनाएँ॥

पुत्रों को शेरों से सिखाया, और शिवा को शेर बनाया।
माँ की शान बढ़ायेंगी, अब भारत ललनाएँ॥

सब क्षेत्रों में आगे आकर, पुरुषों के संग कदम मिलाकर।
नव निर्माण करायेंगी, अब भारत ललनाएँ॥

यदि पिछड़े आधी आबादी, होती है सबकी बरबादी।
यह कलंक धो जायेंगी, अब भारत ललनाएँ॥

गीत, संगीत, नृत्य, गायन, वादन, साहित्य और कविता यह स्वस्थ मनोरंजन तथा मानसिक विकास के सर्वोत्तम साधन हैं।

–(अखण्ड ज्योति नवम्बर–1991, पृष्ठ–18)

भजले प्यारे शाम सबेरे

भजले प्यारे शाम सबेरे, माला एक हरि नाम की।
जिस माला में राम नहीं वह, माला है किस काम की॥

नाम के बल पर हनुमान ने, सिन्धु शिला तैराई थी।
बाण लगा जब लक्ष्मण जी को, संजीवनी लाय पिलाई थी॥
महिमा अपम्पार है भाई, पवन पुत्र हनुमान की॥

राम के बल पर अंगद जी ने, रावण को ललकारा था।
अपने पग को बीच सभा में, अंगद जी ने रक्खा था।
महिमा अगम अपार सुनों जी, रामचन्द्र भगवान की॥

एक माला तो मातु जानकी, हनुमत जी को दान किए।
उस माला को तोड़-तोड़ कर, भूमि के ऊपर डाल दिए॥
हृदय खोलकर दिखा दिया, सबको मूरत सियाराम की॥

जो करते हैं काम राम का, बल वे राम का पाते हैं।
करते-करते काम राम का, नाम अमर कर जाते हैं॥
राम नाम से बढ़कर महिमा, सदा राम के काम की॥

मुक्तक-

राम नाम कहते रहो, जब लगि घट में प्राण।
कबहुँ तो दीन दयाल के, भनक पड़ेगी कान॥

भगवान का अमर सुत

(धुन-चलना सिखा दिया है)

भगवान का अमर सुत, हैवान हो रहा है।
देखो पिशाच बनकर, हर आदमी जी रहा है॥

विकृत विचार विष से, फिर जल रही मनुजता।
देवत्व डर रहा है खुश हो रही दनुजता।
विष भर रहा हृदय में, उर ताप भी लिए हैं॥

चिंतन चरित्र में अब, विकृति बढ़ी हुई है।
चहुँ ओर कौरवों की, सेना खड़ी हुई है।
विध्वंस के लिए ही, हर आदमी जिये है॥

माँ शरण में आये हैं

माँ शरण में आये हैं हम तुम्हारी,कर कृपा अब हृदय से लगा लो॥

दोष दुर्गुण हमारे मिटा दो, और निर्मल हृदय अब बना दो।
हम है अज्ञान बालक तुम्हारे,तुम तो ममता की मूरत हो माता।
याद हरदम रहे अब तुम्हारी॥ कर कृपा----- ॥

बहुत भटके यहाँ से वहाँ तक, मोह माया के चक्कर में अब तक।
मातु सुनलो हमारी व्यथा को, दूर अज्ञान हम से हटा दो।
बरसे करूणा की धारा तुम्हारी॥ कर कृपा----- ॥

हैं तो बालक ही माता तुम्हारे, और जाये माँ किसके दुआरे।
मूढ़मति हम समझ ना सके माँ, जो मिले थे तुम्हारे इशारे।
कर दो भूलें क्षमा अब हमारी॥ कर कृपा----- ॥

मेरा-मेरी करते-करते

मेरा–मेरी करते–करते, बीती रे उमरिया।
पल–पल बढ़ती जाये सर पर पापों की गठरिया॥

गर्भवास में बँधा पड़ा था, कीन्हा तब इकरार था।
नाम जपन का वादा करके, ही आया तब पार था॥
मोह माया में फँसा पड़ा है, बना फिरे बरतिया॥

बने राख का ढेरा ये तन, जिस पर तू इतराता है।
धन–दौलत कुटुम्ब कबीला, कोई संग न जाता है॥
अन्त समय हरिनाम भजन बिन, पछताए अनड़िया॥

बीत गई सो बीती रे अब, आगे का कर ख्याल तू।
कर उपकार भजन कर बन्दे, पढ़ ले जीवन सार तू॥
ना जाने कब लुट जायेगी, जीवन की बजरिया॥

मुक्तकः–

जो बीत गई सो बीत गई, तकदीर का शिकवा कौन करे।
जो तीर कमान से निकल गया, उसका पीछा कौन करे॥

घर में बजने वाले पियानों की आवाज सुनकर चूहे शान्ति से बिलो में रहते हैं। दुधारू पशु संगीत की ध्वनि सुनकर अधिक दूध देते हैं।

(डॉ.जार्जकेट विल्स, पशुमनो विज्ञानी)

महाकाल के अब तो दोनो

महाकाल के अब तो दोनो, हाथ हुए तैयार।
औघड़दानी एक हाथ है, एक रूद्र अवतार॥
जय महाकाल, जय महाकाल, जय महाकाल॥

कालचक्र को बदल रहा है, उसका शिव संकल्प।
युग परिवर्तन की बेला है, कोई नहीं विकल्प॥
महाकाल के काल चक्र की, तेज हो रही धार॥

सहज साथ हो जायेंगे जो, पायेंगे वरदान।
औघड़दानी हाथ सहज दे, श्रेय और सम्मान॥
साधन श्रम श्रद्धा के कण में, पायेंगे अधिकार॥

महाकाल से विमुख हुए जो, चलकर टेढ़ी चाल।
जन प्रताड़ना और भर्त्सना से होंगे बेहाल॥
महाकाल की दण्ड व्यवस्था, के असह्य प्रहार॥

दोष दुर्गुणों दुष्प्रवृत्तियों को आओ दें त्याग।
सद्गुण सद्प्रवृत्ति सद्भावों में जागे अनुराग॥
यूँ देवत्व मनुज में, धरती पर लें स्वर्ग उतार॥

युग की बागडोर थामे हैं, महाकाल के हाथ।
समय अरे! सामान्य नहीं है, चूक न जायें साथ॥
जीवन धन्य बनाएँ अपना, कर संभव सहकार॥

मुक्तक–

महाकाल का शंख बज गया, समय बदलने वाला है।
मत संशय में समय गँवाओ, यह कब रूकने वाला है॥
बड़ा कीमती है यह क्षण क्षण, अरे! समय हो क्यों खोते।
फिर मत कहना हमें समय पर, सावधान तो कर देते॥

मन तू राम नाम गुण गाले

मन तू राम नाम गुण गा ले।
अपने इस मन के मंदिर में, ज्ञान की ज्योति जला ले॥

मन ही मंदिर मन ही पुजारी, मन से पूजा होय।
मन से मन का दीप जला ले, प्रभु मिलेंगे तोय॥
मन का मनका फेर बावरे, मन का फेर हटा ले॥

मन की माया, मन की ममता, मन का मोह बिसार।
ओ मति मन्द अरे मन मूरख, मन का मैल उतार॥
मन मंदिर में दीप जलाकर, प्रभु के दर्शन पा ले॥

मन से कर ले, मनन अरे मन, नित्य सुबह औ शाम।
मन से साधना मनका मन से, कर मन से शुभ काम॥
उस प्रभु से मन से मिलने की, सच्ची लगन लगा ले॥

अपने मन मंदिर के मन तू, बन्द पड़े पट खोल।
मन के भीतर राम मिलेंगे, इधर-उधर मत डोल॥
क्यों होता है परेशान मन, गुरु मंत्र अजमाले॥

भयंकर सर्प भी बीन की स्वर लहरी सुनकर समर्पण कर देता है, ये नाद का प्रभाव है।

मिलकर करें प्रयास

मिलकर करें प्रयास, हमें परिवर्तन लाना है।
यदि हो गये उदास, नहीं कुछ होना-जाना है॥

अनाचार से दुःखी धरा ने, है धीरज छोड़ा।
और गगन के मन में भी है, दर्द नहीं थोड़ा॥
प्रकृति हुई बेहाल, उसे अब धीर बँधाना है॥

कुविचारों ने मानव मन को, दूषित कर डाला।
और स्वार्थ ने परिवारों को, तोड़ फोड़ डाला॥
दुश्चिंतन के विष से उनको, मुक्ति दिलाना है॥।

दुर्भावों ने ही समाज में, डाला है डेरा।
राग-द्वेष की लपटों ने है, सब को ही घेरा॥
सद्भावों की अब समाज को, सुधा पिलाना है॥

कला, शिल्प, साहित्य सभी में, विकृति है आई।
लोभ-मोह की काली छाया, इन सब पर छाई॥
मानवता की गरिमा सबको, फिर समझाना है॥

संस्कृति हमको मिल-जुलकर,रहना सिखलाती है।
जाति, धर्म, भाषा की बाधा, दूर हटाती है॥
फिर अखण्डता और एकता, भाव जगाना है॥

सत्-संकल्पों का साहस लेकर, हम आगे आयें।
ज्ञानयज्ञ की ले मशाल हम जन-जन तक जायें॥
पुनःजगा उत्साह लक्ष्य, पाकर दिखलाना है॥

मन मैल अगर ज्यों का

मन का मैल अगर ज्यों का त्यों, लाख सँवारो तन क्या होगा।

दिन-दिन भारी अधिक गठरिया, छिन-छिन मैली अधिक चदरिया।
पल-पल प्यास प्रबल होती है, रह-रह रिसती अधिक गगरिया॥
आज न अगर लगाम कसी तो, कल सौ करो जतन, क्या होगा॥

नहीं गिरे को अगर उठाया, नहीं थके को यदि दुलराया।
किसी भ्रमित भूले भटके को, अगर राह पर नहीं उठाया॥
फिर चाहे हर तीर्थ नहाओ, मंदिर करो नमन क्या होगा॥

मेला ठेला ठेली का है, हारे दाँव सभी फीका है।
मरन-हाट में अमर रहे जो, सौदा बस जीते जी का है॥
लिया दिया यदि प्यार नहीं तो, अनगिन मिले जतन क्या होगा॥

खोलो द्वार रोशनी आये, सुख-दुःख सब का सब बँट जाये।
सोचो जिसका रूप अजाना, जिसकी गन्ध न कोई पाया॥
ऐसा कहीं किसी गमले में, खिल भी गये सुमन क्या होगा॥

मुक्तक-

नहाये धोए क्या भैया, जो मन मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहे, धोए बास न जाय॥

मन की चाल अटपटी, झपटपट लसै न कोय।
जो मन की खटपट मिटे तो, चटपट दर्शन होय॥

मंगलमयी गायत्री माता

मंगलमयी गायत्री माता।
करुणा कण जो तेरा पाता, तुम चारों वेदों की माता॥
पाप नाशिनी त्रास नाशिनी, पुण्य प्रभा अन्तर प्रकाशिनी।
पावनता शुचिता सुखदाता, तुम जग पावनि जग विख्याता॥
मुद मंगल मधु दायिनी त्राता, अभय प्रदा सुखद वरदाता।
प्राण त्राण वरदान विधाता, शरणागत हित मुक्ति प्रदाता॥
अक्षय अमृत प्राण वितरणी, शरणागत की तारक तरणी।
तर जाता जन गाता गाता,तुम जग तारिणी सद्गति दाता॥
तू ही पिता बनी तू ही माता, पालक पोषक धारक धाता।
रस प्रकाश से मन भर जाता, पीता अमृत नहीं अघाता॥

मुक्तक–आदि शक्ति माता गायत्री, तुमको कोटि प्रणाम।
हे करुणामयी पापनाशिनी, प्रिय जन मंगल धाम॥

मन के गहरे अँधियारे में

मन के गहरे अँधियारे में, सद्गुरु नाम दिये जैसा २
जिसने सद्गुरु सद्गुरु ध्याया,
जीवन का सुख उसने पाया॥
मन माया के चौबारे में, सद्गुरु नाम दिये जैसा २
क्या तेरा क्या मेरा अपना,
सारा जग है झूठा सपना।
बिन चन्दा के चौबारे में,सद्गुरु नाम दिये जैसा २
जिसका न कोई इस दुनियाँ में,
सद्गुरु उसी की बाहें थामें।
मोह माया के अँधियारे में, सद्गुरु नाम दिये जैसा २

मुखरित गायत्री हर स्वर में

मुखरित गायत्री हर स्वर में,
फिर और को नाम लियो न लियो।
सद्बुद्धि की जननी बसी उर में,
फिर और को ध्यान कियो न कियो॥

जग-जननी ने जब गोद लिया, माँ प्रज्ञा का पय पान किया।
अमृत निर्झरणी अन्तर में, कोई रस धार पियो न पियो॥

सद्ज्ञान की ज्योति जलाई जब, तम को हर, घर पहुँचाई जब।
सद्ज्ञान दियो जब तम हरने, फिर स्वर्ण को दान दियो न दियो॥

जीवन जन मंगल में अर्पित, दीनों दुखियों संग संवेदित।
परमार्थ सधे यदि पल भर में, फिर वर्ष हजार जियो न जियो॥

युग पीड़ा से करुणा छलके, घावों पर संवेदन ढलके।
आध्यात्मिक टीस बसे उर में, सुख भोग को ध्यान कियो न कियो॥

आओ नैतिक निर्माण करें, जन जीवन में विश्वास भरें।
नैतिकता हो नारी नर में, भौतिक निर्माण कियो न कियो॥

महाक्रान्ति अनिवार्य हो चुकी

महाक्रान्ति अनिवार्य हो चुकी आओ मिल सब शपथ उठायें।
नये सृजन की क्रान्ति पताका, धरती से नभ तक फहराई।।

पाँचजन्य का नाद हो रहा, असमंजस का नहीं समय है।
युग परिवर्तन की घड़ियाँ ये, नवयुग का अब सूर्य उदय है।।
है आवाहन युग वीरों को, ललकार समय की स्वीकारें।
अभी नहीं तो कभी नहीं फिर, युग पुकार पर सब कुछ वारें।।
प्राण होम युग धर्म निभाने, संकल्प सृजन के कर जायें।।

ज्ञानक्रान्ति की चिंगारी को, हर जन मन तक अब पहुँचायें।
युग की उल्टी धार पलटने, घर-घर जायें अलख जगायें।।
भ्रम भटकावों, युगतम की हों, जितनी भी जंजीरें तोड़ें।
प्राण पिलाने युगप्रज्ञा का, युग चिन्तन से सबको जोड़ें।।
बीज विचार क्रान्ति के सारे, भूमण्डल में हम फैलायें।।

दें संदेशा जाति वर्ग हर, मज़हब के पहरेदारों को।
तोड़ दें संकीर्ण दीवारें, मान लें युगऋषि विचारों को।।
आदर्शों को धर्म बनालें, बन जायें प्रज्ञावान सभी।
सभ्य समाज का मर्म है यह, युग रोगों का है निदान यही।।
मंदिर, मस्ज़िद, गिरजे में हम, अब नया भगवान बैठायें।।

जीवन धन्य बनाने सबको, बुला रहा है अब महाकाल।
सृजन सैनिकों को आमन्त्रण, बढ़ चलो थामकर युग मशाल।।।
साझेदारी करने प्रभु से यह समय नहीं फिर आना है।
चूक गये यह अनुपम सुयोग, तो पीछे बस पछताना है।।
युग के इस महायज्ञ में अपना, तन-मन धन सर्वस्व लुटायें।।

महाकाल के अवतारी तुम

महाकाल के अवतारी तुम, अमर अजर वरदानी।
नूतन सृष्टि बनाकर तुमने, लिख दी अमर कहानी॥

परम शुद्ध वह बुद्ध तथागत, जिसको मोह न भाया।
इन आँखों से हुई अचानक, ओझल कंचन काया॥
सत्य अहिंसा पथ अन्वेषक, महावीर स्वामी थे।
किया समन्वित नया पुराना, कर्मठ निष्कामी थे॥
कोटि-कोटि हृदयों तक पहुँची, जिसकी अमृत वाणी॥

किस वैदिक ऋषि ने इस युग में, आ अवतार लिया था।
देव पुरुष ने मानवता को, अनुपम प्यार दिया था॥
माँ तेरी पावन महिमा का, जिसने ध्वज फहराया।
वह भविष्य दृष्टा, युग सृष्टा, ब्रह्म तेज बन छाया॥
गहन तपश्चर्या से जिसने, नये सृजन की ठानी॥

शक्ति साधना के स्वर उभरे, गूँजा कोना कोना।
तभी हंस उड़ गया अकेला, करके आँगन सूना॥
तब बन्धन से मुक्त प्रभामय, ज्योति अखण्ड जलाई।
धरती तो धरती अम्बर तक, जिनने राह बनाई॥
जन मन के संग एक हो गये, वह अद्भुत विज्ञानी॥

चिन्तन, मनन, सृजन का जग को, अभिनव पंथ दिखाया।
इस सारे जग ने उनके, चरणों में शीश झुकाया॥
एक नया भूचाल बौद्धिक, अब आने वाला है।
सतयुग आयेगा सविता का, फैला उजियाला है॥
चलें तुम्हारे पथ पर हम भी, हे शिव औघड़दानी॥

मैने जीवन त्याग तितिक्षा

मैने जीवन त्याग, तितिक्षा, तप में सतत् गलाया।
तब जीवन के 'ब्रह्मकमल', को पूरी तरह खिलाया॥

ब्रह्मकमल में ब्रह्मतेज का, जादू बोल रहा था।
और ब्राह्मणोंचित जीवन की, महिमा खोल रहा था॥
ब्रह्मकमल की हर पंखुड़ि में, ब्राह्मण का परिचय है।
ब्रह्म और ब्राह्मण का युग-युग, से अटूट परिणय है॥
मैंने खिलकर ब्रह्मबीज का, है अम्बार लगाया॥

पड़े न रह जाये मेरे में, ब्रह्मबीज बिन बोए।
मैंने इन्हें कलेजे में रख, हैं जीवन भर ढोए॥
मेरे हों तो मेरे इन, बीजों को तुम बो देना।
कुछ तो मेरा भार घटाने, को तुम भी ढो देना॥
कहीं न हो ऐसा पछताऊँ, क्यों कर कमल खिलाया॥

ब्रह्मबीज बोए जाते तप से, तपती धरती पर।
और ब्राह्मणोंचित जीवन की, उपजाऊ धरती पर॥
भाग्यवाद के चक्कर में फँस, ब्राह्मण वंश घटा है।
त्याग, तितिक्षा, संयम, तप से, ही सम्बन्ध कटा है॥
भटके हुए पुरोहित ने ही, इस जग को भटकाया॥

आवश्यक है ब्रह्मबीज की, फसल उगाई जाये।
ब्रह्म परायण वृत्ति देश में, पुनः जगाई जाये॥
मार्गदर्शकों के अभाव में, सब ही भटक रहे हैं।
मानव के बहुमुखी प्रगति के, पहिये अटक रहे हैं॥
इसी वेदना से मेरा मन, द्रवित हुआ अकुलाया॥

मेरा परिचय क्या पूछ रहे

मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता, रक्षक, पोषक हूँ।
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ऋचा उद्घोषक हूँ॥

मैं एक, किन्तु संकल्प किया, तो एकोऽहम् बहुस्याम हुआ।
मैंने विस्तार किया अपना, ब्रह्माण्ड उसी का नाम हुआ॥
ये चाँद और सूरज, मेरी आँखो में उगने वाले हैं।
है एक आँख में स्नेह, और दूजी में प्रखर उजाले हैं॥
मन चाही सृष्टि रचाने की क्षमता वाला, मैं कौशिक हूँ॥

जिसमें मणि मुक्ता छिपे हुए, वह सागर की गहराई हूँ।
जिसकी करुणा सुरसरि बनती, उस हिमनग की ऊँचाई हूँ॥
मेरा संगीत छिड़ा करता, कल-कल करते इन झरनों में।
मैं सौरभ बिखराता रहता, इन रंग बिरंगे सुमनों में॥
यह प्रकृति छटा मेरी ही है, इतना सुन्दर, मनमोहक हूँ॥

मेरे चिन्तन की धारा से, ऋषियों का प्रादूर्भाव हुआ।
मैंने जब ऋचा उचारी तो, सुर-संस्कृति का फैलाव हुआ॥
मैं याज्ञवल्क्य, मैं ही वशिष्ठ, मैं परशुराम, भागीरथ हूँ।
जो कभी अधूरा रहा नहीं, मैं ऐसा प्रबल मनोरथ हूँ॥
प्रण पूरा करने महाकाल हूँ, कालचक्र अवरोधक हूँ॥

जनहित में विष पीने वाली, विषपायी मेरी क्षमता है।
जन-पीड़ा से विगलित होती, ऐसी करुणा है, ममता है॥
मैंने साधारण वानर को, बजरंग बनाकर खड़ा किया।
मेरी गीता ने अर्जुन को, अन्याय मिटाने अड़ा दिया॥
विकृतियों से लोहा लेने, सुर-संस्कृति का संयोजक हूँ॥

मैंने संकल्प किया है फिर, मानव को देव बनाऊँगा।
फिर प्यार और सहकार जगा, धरती पर स्वर्ग बसाऊँगा॥
लाऊँगा मैं 'उज्ज्वल भविष्य', इसका साक्षी यह दिनकर है।
मेरे संग सविता के साधक, गायत्री वाला परिकर है॥
मैं युगद्रष्टा, युग सृष्टा हूँ, युग परिवर्तन उद्घोषक हूँ॥

माँ पीड़ित बच्चों ने

माँ पीड़ित बच्चों ने, फिर तुम्हें पुकारा है।
हो पूत-कपूत भले, माँ ने ही सँवारा है॥

माँ हम अज्ञानी हैं, व्यसनों को पकड़े थे।
हो पास नहीं कुछ भी माँ, पर मद में अकड़े थे॥
तुमने ही पापों से माँ, भक्तों को उबारा है॥

मनमौजी मस्त रहे, कुछ ज्ञान न था हमको।
जब भूख-प्यास लगी माँ, तो याद किया तुमको॥
जग में कुटिलता माता, शिशु भाव हमारा है॥

अपने दोषों का हे माँ, दिखता है छोर नहीं।
पर पाप विनाशक है माँ, तुम जैसा और नहीं॥
हमको मत त्यागो माता, इक तेरा सहारा है॥

माँग रही है देव संस्कृति

माँग रही है देव संस्कृति, निष्ठावानों से कुर्बानी।
देवभूमि की शपथ उठाकर, आगे बढ़ो वीर बलिदानी॥

शीश चढ़ाकर कभी सपूतों ने, माटी का कर्ज चुकाया।
भेंट चढ़ा निज पति पुत्रों को, महिलाओं ने फर्ज़ निभाया॥
आज माँगता महाकाल बस, समय तनिक सा प्रतिभाओं से।
स्वार्थ घटा, परमार्थ साधना है थोड़ी निज क्षमताओं से॥
समय और श्रम से रचनी है, नये सृजन की नई कहानी॥

वीर भूमि की सन्तानों तुम, कायर बन मत पीठ दिखाना।
रत्न प्रसूता माताओं तुम अरे कोख को नहीं लजाना॥
परिवारों से एक व्यक्ति यदि, सृजन वीर बन आ जायेगा।
तो अपना गौरव इस जग में, प्राण प्रतिष्ठा पा जायेगा॥
भय मत करना साथ हमारे हैं, रक्षक युगऋषि वरदानी॥

यदि विज्ञान-सभ्यता दोनों से, मानव का हित करना है।
अगर ध्वंस का चक्र काटकर, फिर उज्ज्वल भविष्य रचना है॥
तो संस्कृति का गौरव फिर से, सारे जग को समझाना है।
देव संस्कृति के सूत्रों को फिर, जन-जन तक पहुँचाना है॥
लोभ मोह से ऊपर उठकर, आओ बनें सृजन सेनानी॥

संगीत ने मानवीय गुणों में प्रेम और प्रसन्नता बढ़ाई है।

मातृ स्वरूपा नारी है

मातृ स्वरूपा नारी है, 'ये' भाव दिलों में जगाना है।
नारी की लुट रही अस्मिता, इसको आज बचाना है॥

आज देश में मातृशक्ति ये, बाजारों में बिकती है।
क्या–क्या हाल हुआ नारी का, करुण कथा ये लिखती है॥
नारी दुर्गा रूप है हमने इसको नहीं पहचाना है॥

चौराहों पर आज देखिये, गन्दे चित्र चमकते हैं।
कामुकता के दृष्टिकोण से, इसको लोग परखते हैं॥
ऐसे कीचड़ से निकाल, इस शक्ति को चमकाना है॥

दानव रूपी इस दहेज ने, नारी का क्या हाल किया।
अग्नि समर्पित हुई अबलायें, लोगों को कंगाल किया॥
ऐसी कुरीतियाँ समाज की, जड़ से हमें मिटाना है॥

रानी लक्ष्मीबाई जैसी, नारी बड़ी महान हुई।
देश की रक्षा के निमित्त वह, हँस–हँसकर बलिदान हुई॥
अब भी बहुत समय है लोगों, इनका कर्ज चुकाना है॥

साधना मार्ग का प्रधान माध्यम संगीत ही है।
संगीत भावों से उत्पन्न होता है।

माँ की सेवा को निकले

माँ की सेवा को निकले हम, घर-घर युग सन्देश सुनाएँ।
सादर सबको आवाहन है, साथ हमारे आप भी आएँ॥

जन्म जहाँ पर हमने पाया, अन्न जहाँ का हमने खाया।
तन पर जिसके वस्त्र संजोये, ज्ञान मिला धन-धान्य कमाया॥
है जिसके उपकार हजारों, उसका कुछ तो कर्ज चुकाएँ॥

वैभव हम कितना ही पालें, तन बल जन बल लाख सम्भालें।
लेकिन चैन न लेने देंगी, धरती की शतरंजी चालें॥
क्षमताएँ गुमराह न हों अब, प्रज्ञा की नव ज्योति जगाएँ॥

मन्दिर मस्ज़िद या गुरुद्वारा, एक यही है सबका नारा।
अपने को इन्सान बनाओ, उज्ज्वल हो कर्मों की धारा॥
याद करे कल आने वाला, कुछ ऐसा जग में कर जाएँ॥

नाहं वसामि बैकुण्ठे, योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारदः ।।

भगवान कहते हैं कि हे नारद मेरा स्थाई निवास न बैकुण्ठ में है, न योगियों के हृदय में, किन्तु जहाँ मेरे भक्त-भक्तिपूर्वक गान करते हैं मैं वहाँ उपस्थित रहता हूँ।

-पद्म पुराण

माँ ने आज निमन्त्रण भेजा

माँ ने आज निमन्त्रण भेजा, बन्धु तुम्हें बलिदान का।
महायज्ञ आरम्भ हो गया, आज नवल निर्माण का॥

आगे आओ होता बनकर, इसमें आहुति डाल दो।
युग साधक तुम रूको न क्षण भर, भय शंका को टाल दो॥
तुम्हें मिला जो अनुपम अवसर, उसका भर उपयोग लो।
बेला है सामूहिक श्रम की, उसमें अपना योग दो॥
ध्यान रहे हर क्षण, प्रति क्षण, अपने दायित्व महान का॥

ज्ञान रूपी पावन गंगा को, भू-पर हमें उतारना।
जन-मन को पवित्र करने की, करो भगीरथ साधना॥
तप का कल्पवृक्ष वह बोओ, सभी सिद्धियाँ फल आयें।
राग प्रभाती ऐसा गाओ, सोया गौरव जग जाये॥
अपनालो तुम पथ जनहित, जन-जन के कल्याण का॥

युगऋषि का संदेश सुनो रे, पहचानों युग साधना।
विश्वरूप परमेश्वर की, कर तो लो आराधना॥
कभी अधूरे रहे न भाई, पावन शुभ संकल्प हैं।
तेजस्वी युग साधक करते, युग का कायाकल्प हैं॥
सृजन करो सधे हाथों से, नये रूप इन्सान का॥

मस्तिष्क को प्रशिक्षित करना संगीत के सैद्धान्तिक ज्ञान का लक्ष्य है।

मन करता है इस धरती

मन करता है इस धरती पर, होवे सौ-सौ बार जनम।
फाँसी का फंदा मैं चुमूँ, कहकर वन्दे मातरम्-मातरम्॥

जब-जब आते पुण्य पर्व 15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस।
26 जनवरी गणतन्त्र दिवस॥
अगर शहीदों के यादों में, मेरा नयन जाये बरस॥
मातृभूमि पर हुए न्यौछावर, भूल गये दुनियाँ का नाम॥

वीर शिवा राणा प्रताप था, बन जाऊँ बंदा बैरागी।
बनूँ भगत, शेखर, सुभाष, जिससे सारी जनता जागी॥
बढ़ते रहो मातृ के बेटे, तब तक है साँसों में दम॥

इस धरती पर राम, कृष्ण, गौतम, गाँधी ने जन्म लिया।
तपोभूमि है कर्मभूमि है, जिसने दुनियाँ को मंत्र दिया॥
इसे ही सारी दुनियाँ में, फैलाया ओ धरम-करम॥

"जब कभी संगीत की स्वर लहरियाँ मेरे कानों में गुँजतीं मुझे ऐसा लगता है कि-मेरी आत्म-चेतना अदृश्य जीवनदायिनी सत्ता से सम्बन्ध हो गई है। मैं शरीर की पीड़ा भूल जाता, भूख प्यास और निद्रा टूट जाती, मन को विश्राम और शरीर को हलकापन मिलता। मैं तभी सोचा करता था कि सृष्टि में संगीत से बढ़कर मानव जाति के लिए और कोई दूसरा वरदान नहीं है।"

-विश्व के यशस्वी गायन -एनरिको कारूसो

माँ प्रज्ञा अवतरित हुई क्या

माँ प्रज्ञा अवतरित हुई क्या, सद्गुण का भण्डार मिल गया।
विकृतियों से क्लांत मनुज को, संस्कृति का संसार मिल गया॥

फूटे स्रोत गुप्त वैभव के, पथ प्रशस्त नूतन वैभव के।
जगा सुप्त देवत्व मनुज का, कण-कण स्वर्ग धरा की रज का॥
परिवर्तन के महापर्व को, अब सुदृढ़ आधार मिल गया॥

श्रध्दा भक्ति हुलसती मन में, सेवा की तत्परता तन में।
मन में वह विश्वास बढ़ रहा, नित नूतन संकल्प कर रहा॥
अब श्रध्दा विश्वास युगल को,जन-जन में विस्तार मिल गया॥

चिंतन अब लोक मंगलोन्मुख है, चरित्र दिव्यता का आमुख है।
टलने लगा आस्था संकट, छलक उठा आशाओं का घट॥
स्वर्ग सृजन के दिव्य शिल्प को, अब तो और निराकार मिल गया॥

अब विभिषिकाओं के बादल, फैले नहीं सकेंगे आँचल।
माँ प्रज्ञा आलोक पिलाती, उकसाती प्राणों की बाती॥
स्नेह विहीन मनुष्य को अब तो, स्नेह छलकता प्यार मिल गया॥

समस्त स्वर, ताल, लय, छंद, गीत, मंत्र, स्वर चिकित्सा, राग, नृत्य, मुद्रा, भाव आदि सामवेद से निकले हैं।

मैं तुम्हारी साधना का

मैं तुम्हारी साधना का दीप बन जलता रहूँगा।
मैं तुम्हारी भावना का पुष्प बन खिलता रहूँगा॥

हिय हिलोरें ले रहा है, आज हुलसित कामना है।
मृदु मिलन की आस ले, यह साधना यह अर्चना है॥
प्रेम पथ पर स्वस्थ श्रद्धा से, सदा चलता रहूँगा॥

इस भटकते पथिक को, पथ का किनारा मिल चुका है।
मुस्काती वेदना का, दर्द उर को मिल चुका है॥
कामना तेरे मिलन की, जन्म भर करता रहूँगा॥

दूर तम हो देव! इन व्याकुल दृगों से।
छूट गया हो नीड़ प्रिय, जैसे खगों से॥
आधार लेकर प्रीति का मैं, वन्दना करता रहूँगा॥

स्वर्ग से मुझको, धरा पर मत गिराओ।
मैं पुजारी हूँ तुम्हारा, कर कमल आगे बढ़ाओ॥
हो भले ही सघन निशि मैं, तारिका गिनता रहूँगा॥

संगीत मनुष्यों की तरह पेड़-पौधों को भी पसन्द है।
-वाङ्मय-१९ पृ. ६.१७

मानव जीवन की गरिमा को

मानव जीवन की गरिमा को, पहचान सको तो पहचानो।
यह जीवन है अनमोल बड़ा, चाहे मानो या न मानो॥

इस जीवन को पाकर के भी, कर पाये अच्छे काम नहीं।
खेला-खाया, सोया जीभर, कर पाये प्रभु का काम नहीं॥
कौड़ी-कौड़ी धन जोड़ रहे, हे! धन-वैभव के दीवानों॥

क्या लेकर आये थे जग में, क्या लेकर के तुम जाओगे।
करते हो पाप अधिक इनको, लेकर के यहाँ समाओगे॥
सत्कर्म करो, सुख दो सबको, हे परम पिता की सन्तानों॥

सद्बुद्धि प्राप्त करके ही तुम, कर सकते अच्छे काम यहाँ।
सत्कर्मों के द्वारा प्राणी, पाओगे तुम सम्मान यहाँ॥
परमेश्वर की अनुकम्पा फिर, बरसेगी यह निश्चय जानो॥

यह जन्म दिन और दीपयज्ञ इस हेतु यहाँ पर आया है।
नर-नारी, बालक-वृद्ध सभी के लिए बहुत कुछ लाया है॥
गायत्रीमय कर लो खुद को, यह बात पूज्यवर की मानो॥

गायन की अमूल्य निधि देकर परमात्मा ने मनुष्य की पीड़ा को कम किया है।

माँ गायत्री रही पुकार

माँ गायत्री रही पुकार, जागो भारत की नारी।
जागो भारत की नारी–जागो भारत की नारी॥

तुमने ध्रुव–प्रहलाद बनाये, तुमने रामकृष्ण उपजाये।
इस धरती पर स्वर्ग उतारो, जागो भारत की नारी॥

रोती–संस्कृति की सीता, भूली रामायण गीता।
घर–घर बहे प्रेम की धार, जागो भारत की नारी॥

दानव दहेज का आया, नारी समाज को खाया।
सहोगी कब तक अत्याचार, जागो भारत की नारी॥

मत गन्दे गाने गाओ, मत गहनों को अपनाओ।
त्यागो फैशन का संसार, जागो भारत की नारी॥

मत बाल–विवाह रचाओ, तुम परदा प्रथा मिटाओ।
ले–लो शान्तिकुञ्ज का प्यार, जागो भारत की नारी॥

तुम विद्या पढ़ो–पढ़ाओ, घर–आँगन स्वर्ग बनाओ।
हो उत्तम आचार विचार, जागो भारत की नारी॥

तुम घर–घर हवन कराओ, माँ की आरती सजाओ।
कहता गायत्री परिवार, जागो भारत की नारी॥

मन मन्दिर में सदा विराजे

मन मन्दिर में सदा विराजे, झाँकी ये श्रीराम की।
देते जो नित नई प्रेरणा, त्याग और बलिदान की॥

रहा जिन्हें सेवा-व्रत प्यारा, रामकाज हित जीवन हारा।
सियराम मय सब जग जाना, कण-कण में प्रभु को पहचाना॥
जिनके वक्ष स्थल में अंकित, झाँकी युग श्रीराम की॥

अनुपम ब्रह्मचर्य व्रत पाला, वन्दनीय आदर्श निकाला।
इतना ऊँचा लक्ष्य बनाया, जन-जन में देवत्व जगाया॥
नरतन पाकर देव बना जो, उसने बड़ा महान की॥

कर्मयोग की सिद्धि निराली, अजर-अमर कर देने वाली।
अविचल भक्ति सदा उपकारी, सरल हृदय अतुलित बलधारी॥
प्रज्ञा पुत्रों ने अंहकार की, लंका राख समान की॥

विमल ज्ञान रवि के उजियारे, रामराज्य के हैं रखवारे।
जब-जब अपनी ज्ञान सम्भाली, महाक्रांति क्षण में कर डाली॥
संजीवनी लिये हैं कर में, सकल विश्व कल्याण की॥

संगीत ही क्या, समस्त सृष्टि क्रम में एक अपूर्व ताल व्यवस्था अर्थात् काल की नियमितता दृष्टिगोचर होती है।

माँ! जीवन संगीत सुना दे

माँ! जीवन संगीत सुना दे, आज हमें वह गीत सुना दे॥

जो कण–कण,अणु–अणु में गूँजे,जो जल थल नभ में छा जाये।
जो उपवन–उपवन में डोले, जो कानन–कानन लहराये॥
जो आँगन–आँगन में नाचे, जो गृह–गृह में दीप जलाये।
जो पग–पग पर प्रेम बखेरे, जो जन–जन में जीवन लाये॥
वाणी से अमृत बरसा माँ, प्यासे जग की प्यास बुझा दे॥

जिसको सुनकर मानव के मन, प्राणों में चेतनता आये।
जिसको सुनकर हृदयों में शुचि प्रेम शान्ति सज्जनता आये॥
जिसको सुनकर वाणी में, माधुर्य और कोमलता आये।
जिसको सुनकर जीवन में सुन्दरता और सुखमय आये॥
आज जगजननी! वसुधा पर एक सुधा की धार बहा दे॥

जिसकी लय में जगती का नीरस कोलाहल लय हो जाये।
जिसके स्वर में मानवता का तार–तार झंकृत हो जाये॥
जिसके भावों का आकर्षण मन में भातृभाव उपजाये।
जिसके शब्दों का आयोजन, विश्व प्रेम का पाठ पढ़ाये॥

जो इस जीवन के यात्री को, जनसेवा का मार्ग दिखाये।
जो भूले राही के पथ में, न्याय नीति के दीप जलाये॥
जिसके महाराग को सुनकर मन का राग द्वेष मिट जाये।
जिसके महामंत्र को पाकर मानव जीवन सफल हो जाये।।

माँ हमें शक्ति दो वह

माँ हमें शक्ति दो वह अखण्डित, कर सकें आप का कार्य सारा।
नित नयी प्रेरणा नव सृजन की, प्रथ प्रदर्शित करें माँ हमारा॥

स्वार्थ संकीर्णता से परे हों, सत्य सन्मार्गगामी बने हम।
विश्व की वेदना दूर करने, चल पड़े काफिला यह तुम्हारा॥

पुत्रवत प्यार पाते रहे हम, आप के ही कहाते रहे हम।
डगमगायें कभी पग हमारे, थाम लेना हमें, दे सहारा॥

भावना है समर्पित हमारी, कर कृपा मातु स्वीकार लो तुम।
आप की ही कृपा है सभी पर, हर मनुज आपको प्राण प्यारा॥

भाव संवेदना से भरे हों, निष्कपट निष्कलुष डर हमारे।
कष्ट कठिनाइयों से लड़े हम, आपने ही स्वयं जब पुकारा॥

वेदमाता हमें ज्ञान देना, लोकहित में उसे हम लगाएँ।
शोक-सन्ताप पीड़ित जनों को, ज्ञान आलोक दे बाँट सारा॥

संगीत समस्त विज्ञानों को मूलधार है तथा ईश्वर के द्वारा इसका निर्माण विश्व के वर्तमान विसंवादी प्रवृत्तियों के निराकरण के लिए हुआ है। –प्लेटो

माँ! हृदय में बस तुम्हारे

माँ! हृदय में बस तुम्हारे, स्नेह का संबल लिए।
जल रहे हैं आँधियों में, रात-दिन, अनगिन दिए॥

धन्य हैं माँ हम तुम्हारी दिव्य ममता में नहा।
वेदना मन की मिटी है, बह गया दुःख अनकहा॥
कष्ट काँटों की नहीं अनुभूति अब होती हमें।
अपने दुःख-दर्द दारुण इस तरह सारे पिए॥

है न इच्छा स्वर्ग-सी सुविधा यहाँ पाएँ कभी।
कामना है मार्ग की रोकें न दुविधाएँ कभी॥
एक क्षण भी अब न बिल्कुल व्यर्थ जाने पाएगा।
सार्थक हो जाएँगे, जो दिन यहाँ हमने जिए॥

अब मिशन की ओर सारा विश्व खिंचता आ रहा।
शान्ति-शीतलता तुम्हारी छाँह में जग पा रहा॥
चल रहे हम भी, हमें जिससे न पश्चाताप हो।
सोचकर संतोष हो, जो कार्य हैं हमने किए॥

भावना-भीगे हुए मन हैं, उमंगों से रंगे।
चेतना पूरित चरण हैं, प्रेरणाओं में पगे॥
कार्य में गति और लय है, सौम्य-सा संगीत है।
लोकमंगल भाव से परिपूर्ण हैं सबके हिए॥

मन में कुछ उमड़ा

मन में कुछ उमड़ा और तत्क्षण, याद गया भाई।
रक्षा बन्धन की यह बेला, बड़ी मनोरम आई॥

बस फिर क्या था हृदय चला जो पहुँच आज ही जायें।
या रास्ता था एक कल्पना के सुपंख फैलायें॥
बन्द नेत्रों में भइया की, छवि देती दिखलाई॥

साथ लिया रंग श्रद्धा का, ममता के अक्षत रोली।
स्नेहित सद्भावों की मन में, खिली हुई रंगोली॥
न्यौछावर हो जाऊँ भाई पर, आँखें भर आई॥

मंथन हुआ प्राण सागर में माखन प्रिय भावों का।
उभरा प्रेम तुम्हारा जो मरहम अपने घावों का॥
हृदय गगन में प्रीति तुम्हारी, बदली बन कर छाई॥

भाई का संरक्षण और महसूस दर्द का करना।
पल भर का परोक्ष में भी यह सद्भावों का झरना॥
रोम-रोम उल्लसित हुआ, जब याद तुम्हारी आई॥

है प्रभु से प्रार्थना हमेशा, सुखी रखें वो तुमको।
बगिया हरी भरी पितु गृह की, लख सुख होता हमको॥
भइया रहें समुन्नत खुशियों, की बाजे शहनाई॥

हो उज्ज्वल भविष्य सबको, मांगते जगत माता से।
याद करूँ तब आ जाना, क्या कहूँ और भ्राता से॥
सदा निभाना भइया जैसे, अब तक रीति निभाई॥

मधुर मंगलमय तुम्हारा

मधुर मंगलमय तुम्हारा जन्म दिन हो॥
तुम हँसो खेलो खिलो हर वर्ष के संग।
प्यार के उल्लास में रंग जाय अंग-अंग॥
दीप से दीपक जलाने की विधा में।
जगमगाती जिन्दगी की हर किरण हो॥
याद कर, गत वर्ष की उस जिन्दगी को।
दूर कर गत वर्ष की अब गन्दगी को॥
कार्य हो शुभ श्रेष्ठ आगत जिन्दगी का।
बस यही देते सभी आशीष तुमको॥
दीन-दुखियों की सुनों आवाज तुम।
बढ़ चलो संकल्प ले जन हित जियो तुम॥
हो सुखी परिवार पूरा हर दिशा में।
आपका जीवन बड़ा आनन्द मय हो॥

युग दृष्टा की सिद्ध लेखनी

युग दृष्टा की सिद्ध लेखनी, प्रगटी युग उत्थान को।
आओ सब मिल सुने ध्यान से, प्रज्ञा कथा पुराण को॥
इस पुराण से जागृत होती, नई चेतना जीवन में।
इस पुराण से मुखरित होती, नव संजीवनी तन-मन में।
कर लें जीवन धन्य ये अपना, सुनकर कथा पुराण को॥
यह पावन अमृत घट जिससे, प्राण संचरित होता है।
इस पुनीत सरिता में मानव, कष्ट पाप सब धोता है॥
पावन कथा सुनें फिर करलें, वरण श्रेष्ठ सद्ज्ञान को॥
आस्था संकट छाया जग में, मनुज लगा उससे घिरने।
रचि महेश सम ऋषि ने इसको, वर्तमान संकट हरने।
श्रद्धा जागृत होती इससे, दूर करे अज्ञान को॥

ये नरतन जो तुमको मिला है

ये नरतन जो तुमको मिला है।
ये गँवाने के काबिल नहीं है॥
तेरा हर स्वाँस अनमोल मोती,
ये लुटाने के काबिल नहीं है॥

देखो ईश्वर की अद्भुत है माया।
तेरी खातिर ही सब कुछ बनाया॥
ऐसे ईश्वर को तूने भुलाया,
जो भुलाने के काबिल नहीं है॥

पशु जीते जी सेवा कमाते।
मरने के बाद भी काम आते॥
तेरा जिस्म मरकर किसी के,
काम आने के काबिल नहीं है॥

तू तो विषयों में लिपटा है ऐसा।
खर्च करता है जिनपे तू पैसा।।
मिला बिनमोल अनमोल सत्संग,
जिसमें जाने के काबिल नहीं है।।

मौज मारे और निन्दा कमावे।
पाप करते नहीं शर्म आवे।।
तेरी रसना तो प्यारे प्रभु के,
गीत गाने के क़ाबिल नहीं है॥

अब ना सम्भला तो रोना पड़ेगा।
नर्क में गर्क होना पड़ेगा॥
तेरा ऐसा बुरा हाल होगा,
वो बताने के काबिल नहीं है॥

यह कन्या रूपी रत्न तुम्हें

यह कन्या रूपी रत्न तुम्हें, हम आज समर्पित करते हैं।
निज हृदय का यह प्यारा टुकड़ा, हम तुमको अर्पित करते हैं॥

माँ की ममता का सागर यह मेरे नयनों का उजियारा है।
कैसे तुमको बतलाऊँ मैं, किस लाड़ प्यार से पाला है॥
तुम मेरे द्वारे आये हो, हम क्या सेवा कर सकते हैं॥

इससे तो भूल बहुत होगी, यह अबला है सुकुमारी है।
इसके अपराध क्षमा करना, यह माँ की राजदुलारी है॥
ये आज पिता कहलाने का, अधिकार समर्पित करते हैं॥

भैया से आज बहन बिछुड़ी, माँ से बिछुड़ी माँ की ममता।
बहनों से छुटी स्नेह लता, तो तुम हो उसके आज पिता॥
मैने जिसको पाला अब तक, वह प्यार समर्पित करते हैं॥

यह जायेगी सब रोयेगें, छलकेगी नयनों की गागर।
भैया मैया सब रोयेंगे भर आयेंगे करुणा सागर॥
हम आज तुम्हें इन नयनों की, प्रिय ज्योति समर्पित करते हैं॥

संगीत केवल विनोद की वस्तु नहीं, बल्कि ऐसा चिरस्थाई आनन्द है जिसमें हमें आत्म सुख मिलता है।

युग के विश्वामित्र नमन

युग के विश्वामित्र! नमन कर रहा, विश्व तुमको स्वीकारो।
तन तो तन से बिछुड़ गया, पर मन तो मन से नहीं बिसारो॥

युग वशिष्ठ! तुमने गायत्री, कामधेनु का दूध पिलाया।
माँ से बेटे बिछुड़ गये थे, किया अनुग्रह उन्हें मिलाया॥
युग के याज्ञवल्क्य! तुमने ही, यज्ञ पिता की बाँह थमाई।
ओज तेज वर्चस के दाता, सविता से पहिचान बढ़ाई॥
आप बिना है कौन हमारा, इस पीड़ा पर तनिक विचारो॥

विकृत चिन्तन से अभिशापित, युग-युग से यह जन मानस था।
पतन, पराभव पीड़ाओं से, टूटा टूटा जनमानस था॥
युग भागीरथ! तुमने तपकर, प्रज्ञामय हिमनग पिघलाया।
और ज्ञान गंगा लहराई, दुश्चिन्तन से मुक्त कराया॥
युग के परशुराम तुम फिर अब, विकृतियों के शीश उतारो॥

युग दधीचि! सुर संस्कृति के हित, तुमने निज अस्थियाँ जला दीं।
पीकर विश्व वेदना का विष, नीलकण्ठ गरिमा दोहरा दी॥
पीड़ित मानवता की पीड़ा, हर धड़कन में बोल रही थी।
मुख मण्डल की रेखाएँ भी, अन्तर पीड़ा खोल रही थीं॥
जनमानस में भी जन पीड़ा, के प्रति संवेदन विस्तारो॥

क्या हम करें समर्पित इस क्षण, स्वयं समर्पण की प्रतिमा को।
श्रद्धाञ्जलि क्या करें समर्पित, श्रद्धा की अथाह गरिमा को॥
युग दधीचि के शक्ति कलश की, साक्षी में हम आज शपथ लें।
सतत् गलेंगे जनमंगल हित, युग दधीचि को आश्वासन दें॥
ओ दधीचि वंशज! दधीचि के, शक्ति कलश की ओर निहारो॥

ये क्या कर रहे हो

ये क्या कर रहे हो किधर जा रहे हो।
अँधेरे में क्यों ठोकरें खा रहे हो॥

कहो क्या यही काम, है सज्जनों के।
नहीं ढंग है यह विवेकी जनों के।
कि दुनियाँ को बातों मे बहका रहे हो॥

कहाते हो तुम जिसके, पावंद बन्दे।
करो तो न उसकी ही, इज्जत के धन्धे।
गजब है कि तुम प्रभु को, बहला रहे हो॥

अरे फर्ज अपना, जरा तो निभाओ।
गिरो यदि स्वयं, दूसरों को मत गिराओ।
इंसानियत को क्यों झुठला रहे हो॥

खुदगर्ज़ियों को जरा छोड़ दो तो।
ये जीवन की धारा जरा मोड़ दो तो।
दिशा हीन क्यों तुम बने जा रहे हो॥

याचकों की भीड़ है

याचकों की भीड़ है, दाता यहाँ कोई नहीं॥

विश्व के सर्वस्व दानी, भीख से पलते मिले।
इन्द्र के ऐश्वर्य भोगी, भूख से जलते मिले।
जाल में योगी फँसे, त्राता यहाँ कोई नहीं॥

काँच कण बिखरे पड़े, पारस मणि है लापता।
कल्प वृक्षी टहनियाँ, सूखी पड़ी जीवन लता।
प्राण गर्भा सम्पदा, पाता यहाँ कोई नहीं॥

खोखले स्वर चीखते, निस्पन्द जीवन की कथा।
राग और विराग ओझल, क्षीण अन्तर की व्यथा।
त्याग की रस रागिनी, गाता यहाँ कोई नहीं॥

जुगनुओं के पर चमकते, देखने भर के लिए।
दीप लौ से खेलने को, प्राण शलभों ने दिये।
ज्योति बन कर झूमने, आता यहाँ कोई नहीं॥

दूध पीते मजनूओं के हैं लगे मेले यहाँ।
दे कलेजे का लहू जो, मौत से खेल यहाँ।
प्यार का वह त्याग से, नाता यहाँ कोई नहीं॥

यह न समझो कि ज्योति

यह न समझो कि ज्योति बुझ गई है,
जल उठी है मशालें जलाने।
काय पिंजर को त्यागा है हमने,
ब्रह्म बीजों से उपवन सजाने॥

ब्रह्मवर्चस जगेगा पुनः विश्व का,
भाईचारा बढ़ेगा पुनः विश्व का।
देव मानव बढ़ेंगे नया रूप धर,
सत्य प्रेरक बनेगा पुनः विश्व का॥
यह न समझो कि सूरज नहीं है,
वह उगा है प्रभाती सुनाने॥

विश्व को मोड़ना यह बहुत ही कठिन,
रूढ़ियाँ मेटना भी है उससे कठिन।
सूक्ष्म से ही ये होंगे बहुत ही सरल,
युग बदलना भी तो है बहुत ही कठिन॥
यह न समझो हिमालय गला है,
वह गला 'गंग' जग में बहाने॥

मैं चला किन्तु रोने न दूँगा तुम्हें,
मैं चला किन्तु सोने न दूँगा तुम्हें।
कान मोडूँगा संकेत दूँगा तुम्हें,
क्यों रूके हो ये कहता रहूँगा तुम्हें॥
यह न समझो कि बिछुड़े हैं हम सब,
जुड़ गये हम मिलन गीत गाने॥

अंग अवयव बनो यह मेरी चाह है,
श्रेष्ठ मानव बनो यह मेरी चाह है।
चल पड़ो नित निरन्तर मेरी राह में,
लोकसेवी बनो यह मेरी चाह है॥
तुम न समझो कि बीज मिट गया है,
वह मिटा वंश विस्तार करने॥

ये दहेज का दानव दुनियाँ

ये दहेज का दानव दुनियाँ, में बढ़ता ही जाता है।
इसे मिटा दें दुनियाँ से, ये कोमल कलियाँ खाता है॥

बड़े प्यार से पाला पोसा, बड़ा किया सुकुमारी को।
निज सामर्थ्य न होते भी, भिक्षा दी उच्च दुलारी को॥
बेटी तू जिस घर में जायेगी, रोशन उसे कर पायेगी।
तुझमें सद्गुण इतने तू, सब की सेवा कर पायेगी॥
पर दहेज का दानव सद्गुण, उसके सभी जलाता है॥

जितनी भी सामर्थ्य सभी, दिया बाप ने बेटी को।
मानो काट कलेजा सौंपा, विदा किया यों बेटी को॥
किसे पता था सदा सदा, विदा हो रही है लाली॥
तुझमें सद्गुण इतने तू, सब की सेवा कर पायेगी॥
पर दहेज का दानव सद्गुण, उसके सभी जलाता है॥

यह परीक्षा की घड़ी है

यह परीक्षा की घड़ी है अब न चूको।
सामने विपदा खड़ी है अब न चूको॥

इस समय जो चूक जायेगा वही कल,
ग्लानि पश्चाताप में जलता रहेगा।
और सब जब अग्रगामी बन चुकेंगे,
वह पिछड़कर हाथ ही मलता रहेगा॥
इस घड़ी में कौन साहस कर सकेगा?
यह समस्या ही बड़ी है अब न चूको॥

मीन हैं हम उस सरोवर की कि जिसका,
नीर तेजी से विषैला हो रहा है।
जब कि सारा गाँव धू-धू जल रहा है,
कौन है जो नींद गहरी सो रहा है॥
अब नहीं उद्धार होगा यदि किसी को,
सिर्फ अपनी ही पड़ी है अब न चूको॥

सत्य की तो जीत होनी है सुनिश्चित,
श्रेय पर तुमको मिलेगा पग बढ़ाओ॥
रात जब इतनी अधिक गहरा गई हो,
सूर्य तब निश्चित उगेगा शक न लाओ॥
जोड़ लो संकल्प को संवेदना से,
जो सफलता की कड़ी है अब न चूको॥

कृष्ण का उपदेश अर्जुन को मिला है।
अब तुम्हें पुरुषार्थ फिर करना पड़ेगा॥
सिर उठाया है बहुत दुष्वृत्तियों ने।
उन सबों से आज फिर लड़ना पड़ेगा॥
बढ़ चलो बस आज निर्णायक घड़ी है,
यह लड़ाई आखिरी है अब न चूको॥

युग का तो परिवर्तन होगा

युग का तो परिवर्तन होगा, कोई रोक न पायेगा।
नहीं सुधारा खुद को जिसने, वह पीछे पछतायेगा॥

शिव का ताण्डव नृत्य हुआ है, शुरू आज संसार में।
मारकाट और खून खराबी, होगी इसी जहान में॥
बातों से नहीं काम चला तो, प्रभु की लातें खायेगा॥

महाकाल के तेवर समझो, करलो प्रभु का काम सब।
वानर रीछ गिलहरी बनकर, चल लो प्रभु के साथ सब॥
आज खुशी से जुड़ जायेगा, ईश्वर भक्त कहायेगा॥

प्रभु के काम नहीं रूकते है, उनको पूरा होना है।
होंगे काम समय से पूरे, दुष्टों को फिर रोना है॥
असमंजस को छोड़ दे प्यारे, प्रभु से लगन लगाये जा॥

मुक्तक–
आज सिसकती मानवता ने, फिर से तुम्हें निहारा है।
नये सृजन की नई चुनौती, ने तुझको ललकारा है॥

यह घड़ी है निर्माताओं

यह घड़ी है निर्माताओं, नवयुग के निर्माण की॥
आओ नवयुग की प्रतिमा में, करें प्रतिष्ठा प्राण की॥

महाकाल ने परिवर्तन का, क्रम फिर से दोहराया है।
इस धरती पर स्वर्ग सृजन का, संदेशा पहुँचाया है॥
नव निर्माण हो सके ऐसा, वातावरण जुटाया है।
निर्माताओं के प्राणों में, फिर तूफान उठाया है॥
नहीं उपेक्षा करना है अब, सृष्टा के आवाहन की॥

सृजन स्वेद की सरिताओं में, फिर तूफान उठाया है।
जन मानस को सृजन सुधा का, फिर से पान कराना है॥
युग-युग से इस तृषित धरा की, फिर से प्यास बुझाना है।
इस धरती पर हमें प्रीति की, पावन फसल उगाना है॥
मुखर हो रही नई ऋचाएँ, जन मंगल के गान की॥

यही समय है मनुज धरा को, स्वर्ग समान बनायें हम।
और सुप्त देवत्व मनुज का, जन-जन बीच जगाएँ हम॥
मानवता का पाप पतन से, पीछा चलो छुड़ायें हम।
सृजन शिखर पर नैतिकता की, धर्म ध्वजा फहरायें हम॥
नई कथा गढ़ें चलो हम, मानव के उत्थान की॥

सद्प्रवृत्तियाँ मुखर हो सके, मानव के आचारों में।
और श्रेष्ठ चिंतन की ही, छाया मनुज विचारों में॥
दया क्षमा करूणा संवेदन, हो मानव उद्‌गारों में।
हो न कहीं नीलाम आस्था, श्रद्धा फिर बाजारों में॥
मानव में प्राण प्रतिष्ठा, भावों के भगवान की॥

यह राग द्वेष का समय नहीं

यह राग द्वेष का समय नहीं, दुखियों का दर्द मिटाता चल।
युग परिवर्तन की बेला में, सबको गले लगाता चल॥

पथ विहीन हो गई मान्यता, मर्यादायें भ्रष्ट हुईं।
आदर्श संकुचित हो गये, संस्कृतियाँ सब नष्ट हुयीं॥
लाठी जिसकी भैंस उसी की, यह चरितार्थ लगा होने।
पिता पुत्र घर करे मजूरी, लगे क्रूरता भी रोने॥
विश्व गुरु भारत की गुरुता, वापस इन्हें दिलाता चल॥

सिसकी, आह! मनुज की पीड़ा, का निर्माता स्वयं बने।
पीड़ा, दु:ख, व्याधि, कष्टों के, तिमिर जाल है स्वत: बुने॥
अगर मुक्ति पाना चाहो तो, सेवाभाव निभाना होगा।
अपनालो हर दु:खी पीड़ित को, अपनी बुद्धि जगाना होगा॥
अपने ज्ञान वाटिका के, पुष्पों की गंध उड़ाता चल॥

करुण वेदना से क्रंदित, मानवता है चीत्कार उठी।
पालित बुद्धि से कष्ट विषम, अन्तर्मन भी सीत्कार उठी॥
उड़ते गुबार छल, कपट अनीति, हिंसा अरू अत्याचार के।
काम, क्रोध, मद, लोभ बने, जैसे हों ये व्यवहार के॥
महानिशा के इस घेरे में, दीपपुञ्ज फैलाता चल॥

नई दृष्टि की नई चेतना, नये भाव औ नये विचार।
पनप रही चहुँ ओर विश्व में, नूतन मानवता श्रृंगार॥
लोग सब समान अधिकारी, समता का ही भाव विवेक।
जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा क्या? पूरा विश्व बनेगा एक॥
सत्यं,शिवं,सुन्दरम के पथ,पर बस आगे कदम बढ़ाता चल॥

युग-युग से इतिहास बताता

युग-युग से इतिहास बताता, है गरिमा गुरु ग्राम की।
जहाँ-जहाँ अवतरित हुई थी, सत्ता युग सुख धाम की॥

व्यास, वशिष्ठ, बुद्ध, गुरुनानक, महावीर, चाणक्य, कबीर।
शंकर, रामदास, गुरुगोरख, परमहन्स योगी या पीर॥
सबकी जन्म भूमि ने पाई, महिमा गुरु के नाम की॥

सबको ही प्राणों से प्यारा, अपना-अपना गुरुद्वारा।
गुरु की जन्मभूमि की रज को, सबने ही सिर पर धारा॥
महिमा अपरम्पार बताई, सबने ही गुरु ग्राम की॥

आँवलखेड़ा ग्राम अनूठा, महाकाल अवतरित हुए।
तपोनिष्ठ बन वेदमूर्ति बन, जगत्गुरु के शिखर छुए॥
अब तो जग विख्यात हो गई, जन्मभूमि श्रीराम की॥

आँवलखेड़ा जन्म भूमि ने गरिमा कुछ ऐसी पाई।
दिव्य हिमालय की गुरुसत्ता, जहाँ स्वयं चलकर आई॥
बात हुई थी गुरु शिष्य में, मानवता के काम की॥

उगा यहीं ज्ञान का सूरज, फूटी यहीं ज्ञान गंगा।
महाप्राण का गौमुख, जिससे निकली प्रबल प्राण गंगा॥
मुखरित हुई यहाँ युग गीता, कर्म योग निष्काम की॥

जन्मभूमि की माटी लेकर, निकले क्रांति मचाने को।
नगर-नगर में ग्राम-ग्राम में, जागृति शंख बजाने को॥
बिना मिले उज्ज्वल भविष्य के, बात न हो विश्राम की॥

मुक्तक

दरबार हजारों देखें हैं, प्रभु तुम सा कोई दरबार नहीं।
जिस महफिल में तेरा रूप न हो,वह महफिल कभी गुलजार नहीं॥

यज्ञ हुआ प्रारम्भ भाइयों

यज्ञ हुआ प्रारम्भ भाइयों, नवयुग के निर्माण का।
होता बनने चलो लिये, संकल्प विश्व उत्थान का॥

मानव डूबा है सपनों में, हुआ सत्य से दूर है।
छोड़ शिव परमार्थ स्वार्थ के, अन्ध नशे में चूर है॥
जीवन का सुन्दरम् खो गया, क्रूर कुरूपता छा गये।
सूर्पनखा छद्मों की युग के, लक्ष्मण को भरमा गये॥
ज्ञान जगावो मानव में, सद्-असद् बीज पहचान का॥

दानवत्व जन-मन की मेटो, बदलो सारी नीतियाँ।
भार बन गई हैं जो ऐसी, मेटो सभी कुरीतियाँ॥
ऐसा जीवन दो समाज को, जिसमें सभी समान हो।
सबके लिए सुलभ सुख के, और सुविधा के साथ हो॥
ध्यान रखें सब एक दूसरे के, समुचित कल्याण का॥

सदुपयोग शक्ति का करो, बस मात्र सृजन के वास्ते।
मंजिल तक पहुँचायें ऐसे करो विर्निमित रास्ते॥
अभी दूर है पूर्णाहुति का, समय उठो जागो जरा।
पोषक गंधित पवन बहे, जो जाए धन्य वसुन्धरा॥
मनुज-मनुज को जीवन बाँटों, तेज जगाओ प्राण का॥

युग के राम विकल है

युग के राम विकल है, उनकी पीर बँटाना है।
ओ प्राणों के पवन तनय, संजीवनी लाना है॥

वेसुध जन–मानस का लक्ष्मण, लक्ष्य उपेक्षित है।
ऐसे में नूतन संजीवनी, शक्ति अपेक्षित है॥
जन–मानस के लक्ष्मण को, नव प्राण पिलाना है॥

उसे वासना, तृष्णा और अहंता, की शक्ति लगी।
आत्मबोध की अमर चेतना, उसमें नहीं जगी॥
जन–मानस की सुप्त चेतना, पुनः जगाना है॥

प्राणवान परिजन जो है बस, आश आज उनसे।
रामभक्त जो हैं संभव है, राम काज उनसे॥
आज समस्या का द्रोणागिरी, उन्हें उठाना है॥

व्यवधानों के कालनेमि संभव है, पथ रोके।
और प्रलोभन छद्म वेशधर, राम काज टोके॥
राम कृपा से साहस द्वारा, उन्हें हटाना है॥

सद्विचार की संजीवनी जन–मानस तक पहुँचे।
सुप्तलोक चेतना जागे, जनहित की सोंचे॥
सद्प्रवृत्ति संवर्धन का, अभियान चलाना है॥

यही है कामना अपनी

यही है कामना अपनी, जगत के काम आ जायें।
चढ़ा जन्मान्तरों से है, वो सारा ऋण चुका जायें॥
भ्रमित हो मनुज अमृत के, भरोसे जहर को पीता।
असत् को सत् समझ करके,तमो मय जिन्दगी जीता॥
स्वयं को हम जला करके, अँधेरा यह मिटा जायें॥
कृपणता स्वार्थ परता छोड़, सेवक हम बनें सबके।
रहें हम साथ नित उनके, नहीं साथी यहाँ जिसके॥
विहंसकर दीन दुखियों को, गले से हम लगा जायें॥
न लायें साथ कुछ भी हम, न लेकर जा सकेंगे हम।
यहाँ कुछ दे न पाये तो, न आगे पा सकेंगे हम॥
उचित है हाथ से अपने, यहाँ सब कुछ लुटा जायें॥

यदि स्वर्ग है कहीं पर

यदि स्वर्ग है कहीं पर, तो यहीं है और यहीं है।
जीवन का शान्ति और सुख,कहीं है तो बस यहीं है॥
मन्दिर कहो या मस्ज़िद, गुरुद्वारा या कि गिरिजा।
चारों ये घर प्रभु के, चाहे जिधर तू गिरजा॥
कायम है जिसपे दुनिया, ओ शक्ति एक ही है॥
मुफ़लिस यहाँ न कोई, ना अमीर ही है कोई।
एक दर के सब भिखारी, नफ़रत किसी में कोई॥
करती है सबकी रक्षा, माता महामयी है॥
जहाँ सन्त के हों दर्शन, जहाँ भजन और प्रवचन।
उसी ओर पर जमा दे, बन्दे तू अपना आसन॥
जिसकी तलाश तुझको, वो रब यहीं कहीं है॥

युग की पीर बुलाये

युग की पीर बुलाये, अब युग की पीर बुलाये।
पीड़ा को छलकाये मनुजता, पीड़ा को छलकाये॥

अन्धकार से बिलख उठी है, अब तो दशों दिशाएँ।
युग की पीड़ाएँ पीड़ा को तो आज रूलाएँ॥
जिनका हृदय निरा पत्थर हो, वे ही चुप रह पायें।
भाव शून्य हृदयों को कैसे, युग की पीर बतायें॥
संवेदनशीलों से ही अब, पीड़ा आश लगायें॥

चिन्तन और चरित्र सभी में, ऐसे स्वार्थ समाया।
स्वार्थ सिद्धि के लिए मनुज ने, है ईमान गँवाया।
स्वार्थी शोषण उत्पीड़न में, तनिक नहीं सकुचाया।
अपने सुख के लिए सभी के, सुख में आग लगाया॥
ऐसे में सर्वार्थ भावना, कहो कहाँ पर जाये॥

अब विश्वास आस्थाओं से, जन-जन डिगा हुआ है।
आदर्शों को छोड़ भोग के, हाथों बिका हुआ है॥
नैतिकता को छोड़ अनैतिक, सब ही होते जाते।
एक दूसरे को ठगने में, सब ही धोखा खाते॥
आज मनुज के बीच मनुज, शंका से देखा जाये॥

अगर स्वार्थ में लगे रहे, मानवता नहीं बचेगी।
स्वार्थ-वृत्ति तो बस विनाश की, दुनियाँ मात्र रचेगी॥
शिवि, दधीचि, गौतम, गाँधी की, याद करो गाथाएँ।
जनहिताय मर कर रच डाली, जिनने अमर कथाएँ॥
बलिदानों की परम्परा से, आओ हम जुड़ जायें॥

इस विभीषिका से लड़ने, साहस तो करना होगा।
सृजन सैनिकों नये सृजन हित, आगे बढ़ना होगा॥
संकल्प के चरण बढ़े तो, कुछ भी नहीं असम्भव।
हो सकता है इसी धरा पर, स्वर्ग लोक का उद्भव॥
क्यों करुणा का कण्ठ बिलखती, पीर नहीं पी पायें॥

ये वक्त न ठहरा है

ये वक्त न ठहरा है, ये वक्त न ठहरेगा।
यूँ ही गुजर जायेगा, घबराना कैसा॥
हिम्मत से काम लेंगे, घबराना कैसा॥

सुख-दुःख तो जीवन में, आते और जाते है।
दुःख पहले आ जाये, तो घबराना कैसा॥

जो आया दुनियाँ में, उसको जाना ही है।
अपने भी चलें जायें, तो घबराना कैसा॥

जब कदम बढ़ाया है, मंजिल मिल जायेगी।
है कदम बढ़ाया मुश्किल, तो घबराना कैसा॥

हम युग सैनानी है, हिम्मत से काम लेंगे।
मंजिल पर नज़र होगी, गुरुवर का नाम लेंगे॥
विपरीत दिशाओं से, फिर घबराना कैसा॥

यूँ घबराओ नहीं कि तुम

यूँ घबराओ नहीं कि तुम तो, युगऋषि की सन्तान हो।
क्या कर सकते नहीं कि तुमको, यदि अपनी पहचान हो॥

बहुत माँगते रहे अभी तक, अब तो कर्ज चुकाना है।
अवतारी गुरु सत्ता के प्रति, अपना फर्ज़ निभाना है॥
ग्वाल बनो गिरधर के, वानर, रीछ बनो श्रीराम के।
उस महान सत्ता के तुम, सहयोगी बहुत महान हो॥

तुम हो उसके शिष्य की जिसने, जीवन स्वयं गला डाला।
सारे जग का दर्द कि जिसने, अपने मन में था पाला॥
तुम्हें न शोभा देता ऐसे, आत्महीन बन घूमना।
तुम हो राजकुमार, भला क्यों अपने से अन्जान हो॥

युग की दिशा बदल जायेगी, अगर तुम्हारा मन बदले।
बदले सकल समाज, तुम्हारा यदि चरित्र-चिन्तन बदले॥
हम बदलेंगे-युग बदलेगा, यही एक आदर्श हो।
ज्योतिपुञ्ज के अंश, तुम्हीं कल के उगते दिनमान हो॥

अगर बना व्यक्तित्व प्रखर, जग पीछे दौड़ा आयेगा।
प्रामाणिक आचरण तुम्हारा, फिर जन-जन अपनायेगा॥
भटके हुए देवता, सत्पथ पर चलकर तुम देख लो।
निराकार के रूप तुम्हीं हो, तुम्हीं दृश्य भगवान हो॥

युग ने आज पुकारा

युग ने आज पुकारा तुमको, ओ भारत की ललना।
दिखला दो तुमको भी आता, है इतिहास बदलना॥

युग-युग में तुमने ही बहनों, जौहर थे दिखलाये।
देश धर्म संस्कृति के पावन, ध्वज नभ तक पहुँचाये॥
शौर्य स्वरूपा शक्तिदायिनी, तुम्हीं प्रेरणा नर की।
थी तुम ही पर्याय विजय की, और सफलता स्वर की॥
सीखा तुमने तुफानों में, निर्भय होकर बढ़ना॥

क्यों भूली ओ गौरव गरिमा, बिसराई निज क्षमता।
उस गौरव से आज पतन की, हो सकती क्या समता॥
भूल गई अध्याय शौर्य की, शक्ति बनी असहाय है।
तनिक खोलकर आँख देख लो, दुर्गति कैसी हाय है॥
बहुत ठोकरें खाली अब तो, सीखो जरा सम्भलना॥

आज सिसकती मानवता ने, फिर से तुम्हें निहारा।
नये सृजन की नई चुनौती, ने तुझको ललकारा॥
कर्मक्षेत्र के प्राँगण में निज, कौशल अब दिखलाओ।
जन-जन में शुचि भावों की तुम, पावन ज्योति जलाओ॥
चाहे शूलों में भी तुमको, पड़े अनवरत चलना॥

आया है संकल्प पर्व यह, तुम इतना तो व्रत लो।
हरने को युग पीर जरा, क्षमताओं के अक्षत लो॥
नहीं बेटियाँ पीछे होंगी, भारत माँ का यह प्रण है।
परिवर्तन का अरे यही तो, दुर्लभ अद्भूत क्षण है॥
लेकर क्रांति पताका कर में, अग्रदूत तुम बनना॥

युगों-युगों से तार रहा जग

युगों-युगों से तार रहा जग, पावन नाम तुम्हारा।
हे श्रीराम आपसे बढ़कर, कोई नाम न प्यारा॥

सारा देश कराह रहा था, हुए पहरूये बहरे।
दुष्ट आचरण और भ्रष्ट, चिन्तन वाले जो ठहरे॥
लगे धर्म दर्शन पर अपने, क्रूर काल के पहरे।
पाश्चात्य संस्कृति ने हम पर, किये आक्रमण गहरे॥
तब अपनी संस्कृति को तुमने, पहली बार उबारा॥

नारी जीवन की पवित्रता को, आ आँच रही है।
बुद्धजीवियों के माथे पर, नंगा नाच रही है॥
थी आसीन मंच पर कुत्सा, कोई जाँच नहीं थी।
भारतीय नारी थी हीरा, कोई काँच नहीं थी॥
उसे संगठित किया शक्ति दी, देकर सबल सहारा॥

मृत्युपर्व मानी संस्कृति का, कर डाला तर्पण।
सरस्वती साहित्य बन गया, खजुराहो का दर्पण॥
कर बैठा सिद्धान्त शक्ति के, आगे आत्म समर्पण।
हुई लेखनी रूप और धन, पद वालों को अर्पण॥
मध्य महाभारत तब तुमने, गीता धर्म उतारा॥

नये विचार क्रांति की तुमने, कर सारी तैयारी।
सृजन सैनिकों की सेना है, सागर तीर उतारी॥
शुरू हो गया पाश्चात्य, संस्कृति से है रण भारी।
साक्षी है इतिहास आपकी, सेना कभी न हारी॥
विष्णुरूप तुमने ही युग-युग चक्र सुदर्शन धारा॥

याद आ रही है हर क्षण

याद आ रही है हर क्षण ही, पिता आपके प्यार की।
भूल नहीं पाते हैं माता, स्मृति मृदुल-दुलार की॥

इस दुनियाँ में कौन किसी का, सभी सगे हैं स्वार्थ के।
पर मिलते अनुदान आपसे, पिता पुण्य-पुरूषार्थ के॥
संवेदना से शून्य मनुजता, प्यार नहीं दे पाती है।
माँ ऐसे में स्नेह आपकी, करुणा हमें पिलाती है॥
कैसे भूल सकें हम स्मृति, दोनों के उपकार की॥

भटकाने को लोभ-मोह के, पग-पग पर भटकाव हैं।
कदम-कदम पर अहंकार के, आकर्षक-अटकाव हैं॥
छद्म-वेष भरकर यह दुनियाँ, हर क्षण छलने आती है।
मन की गति भी तो विचित्र है, शीघ्र डगमगा जाती है॥
याद तभी आती दोनों के, प्यार और फटकार की॥

मानवता भी दुःखी हो उठी, पतन-पराभव पाप से।
और देव संस्कृति पीड़ित है, भोगवाद अभिशाप से॥
कहाँ गये सौजन्य, सौम्यता, कहाँ गये शील, संयम।
छाई है ऐसी अनास्था, भले सभी साधना श्रम॥
याद आ रही हैं दोनों की क्षमताएँ, प्रतिकार की॥

हमें साधना की क्षमता दो, सभी करें युग-साधना।
ले संबल ऋषि युग्म आपका, करें लोक आराधना॥
ताकि बच सके पतन-पाप से, गरिमा अब मानवता की।
नष्ट हो सके आतंको वाली, दुनियाँ दानवता की॥
ऋषि-संवेदन भरी विरासत, मुक्ति करे संसार की॥

युग ऋषि का साथ निभाने

युग ऋषि का साथ निभाने, दृढ़ता जिसने दिखलाई है।
ऐसे भाई के लिए बहन यह, रक्षाबन्धन लाई है॥

जो नहीं स्वार्थ से बंधा हुआ, परमार्थ जिसे प्रिय लगता है।
जो युग ऋषि के अनुशासन से, चिन्तन चरित्र निज गढ़ता है॥
साहस एकाकी बढ़ने का, कौशल सबको संग लेने का।
उत्साह बढ़ाएँ जो प्रति पल, युग सृजन हेतु खप जाने का॥
युग सृजन पताका को थामे, जिसकी दृढ़ सबल कलाई है॥

जो ज्ञान क्रान्ति में लगा हुआ, माँ गायत्री का पुत्र बना।
जो नैतिक क्रान्ति सिखाता है, युग सृजन यज्ञ का दूत बना॥
युग प्रज्ञा का प्रसाद ले जो जन-मन की भ्रान्ति मिटाता है।
लेकर सविता का तेज साथ, सामाजिक क्रान्ति जगाता है॥
उसके हों पूर्ण मनोरथ शुभ, यह भाव गूँथकर लाई है॥

गुरुवर का प्रिय प्रज्ञा प्रसाद जो, बाँटा करता जन-जन को।
माँ की शुभ श्रद्धा धारा से, सींचा करता है जन-मन को॥
इस अनगढ़ जग के दल-दल में जो पंकज खिल जाता है।
सद्भावों की पावन सुगन्ध इस दुनियाँ में फैलाता है॥
इस सरसिज जैसे जीवन को बहना दे रही बधाई॥

युगऋषि की जीवनशैली

युगऋषि की जीवनशैली को, जीवन में जो अपनायेगा।
वही बनेगा प्रिय शिष्य, औ सच्चा साधक कहलायेगा।।

ज्ञान रूप गुरुवर स्वरूप थे, गागर में थे सागर।
सत्य सनातन प्रखर तेजमय, सहज प्यार के आगर।।
ज्ञान रूप गुरु सद्विचार को, घर-घर में जो पहुँचायेगा।
वही बनेगा प्रिय शिष्य, औ सच्चा साधक कहलायेगा।।

विश्वमित्र वे विश्ववंद्य थे, सबको गले लगाया।
मातु पिता सहचर बन करके, ऊंगली पकड़ चलाया।।
गुरुवर की ही तरह सहज ही, निर्मल प्यार लुटा पायेगा।
वही बनेगा प्रिय शिष्य, औ सच्चा साधक कहलायेगा।।

युग के व्यास भगीरथ नारद, वे वशिष्ठ अवतारी।
प्रखर तपस्वी तपोनिष्ठ वे, त्रिदेवों से भारी।।
युगऋषि-सद्गुणों की खुशबू, दुनियाँ में जो फैलायेगा।
वही बनेगा प्रिय शिष्य, औ सच्चा साधक कहलायेगा।।

युग शक्ति के माध्यम गुरुवर, महायज्ञ के सृष्टा।
भूत भविष्यत् वर्तमान, उज्ज्वल भविष्य के दृष्टा।।
साधन समय लगाकर जो भी, जीवन अर्पित कर पायेगा।
वही बनेगा प्रिय शिष्य, औ सच्चा साधक कहलायेगा।।

रघुनन्दन राघव राम हरे

रघुनन्दन राघव राम हरे, सीताराम हरे सीताराम हरे।
बृजनन्दन माधव श्याम हरे, राधेश्याम हरे, राधेश्याम हरे॥

हे अवतारी, जगहितकारी, दुष्ट विनाशक, भवभय हारी।
दोष दलन की शक्ति हमें दो, अपनी निर्मल भक्ति हमें दो॥
वह भक्ति जो सबसे प्रेम करे, सीताराम हरे सीताराम हरे॥

तुमने पिछड़ों को अपनाया, प्रेम दिया सम्मान दिलाया।
हम को भी यह कला सिखा दो, भेदभाव का भूत भगा दो॥
हों सिद्ध आपके भक्त खरे, राधेश्याम हरे, राधेश्याम हरे॥

मायावी बढ़ रही असुरता, विकल हो रही आज मनुजता।
जन-जन में देवत्व जगा दो, जीवन में, सहयोग बढ़ा दो॥
फिर विकल मनुजता धीर-धरे, सीताराम हरे सीताराम हरे॥

मानव की बढ़ गई शक्तियाँ, दानव सी क्यों हुई वृत्तियाँ।
प्रभु! सबके मन स्वच्छ बना दो, सबमें शुभ सद्भाव जगा दो॥
कर दो सबके मन हरे-भरे, राधेश्याम हरे, राधेश्याम हरे॥

सामान्यतः संगीत के मूल उद्देश्य सौन्दर्यानुभूति हृदय में नैतिकता की अभिवृद्धि तथा आनन्द की प्राप्ति है।

रह न साधना जाय अधुरी

रह न साधना जाय अधुरी, कहता उर में राम।
युग निर्माण करो सब मिलकर, यह हरि का ही काम॥

आत्म सुधार करें जप तप से, निश्छल प्यार करें हम सबसे।
नाम जपें पर काम न भूलें, प्रभू के संकेतों पर झूलें॥
कर्मक्षेत्र में ही अर्जुन ने, पाया सच्चा श्याम॥

गीत न अब सुरपुर के गावो, भूतल को ही स्वर्ग बनावो।
उसने ही जग का रण जीता, वही समझ पाया है गीता॥
जीवन रथ की जिसने दे दी, हरि के हाथ लगाम॥

आये जितने भी बलिदानी, वह घर-घर बन गई कहानी।
राम काज में जो खो जाये, वही हनुमान हो जाए॥
त्यागी तो पारस बनता है, खोता नहीं छदाम॥

कर अपनी प्रिय वस्तु समर्पण, रचो यज्ञ मय सारा।
जो कुछ भी हम प्रभु से पायें, उसका सदुपयोग कर जायें॥
कीचड़ को भी कंचन कर दें, वही पुण्य अभिराम॥

संगीत की स्वर लहरियों का जादू जीवन में उल्लास की अनोखी सृष्टि तक ही सीमित नहीं है, इसका स्पर्श रोग-निवारक भी है।

रहन सहन में खान पान में

रहन सहन में खान पान में, परिवर्तन स्वीकार।
फिर कुरीतियों को तजने से, क्यों करते इन्कार॥

किसी समय पगड़ियाँ पहनकर, मान बड़ा होता था।
कोई भी पगड़ी उतारकर, कलह खड़ा होता था॥
भोजन नहीं किया जाता था, तब चौके से बाहर।
ओढ़ा करती बहू-बेटियाँ, सिर ऊपर से चादर॥
पर अब नंगे सिर होटल में, खाता है परिवार॥

उन कुरीतियों, परम्पराओं के, क्यों दास बने हैं।
जिनके कारण सारे जग में, हम उपहास बनें हैं॥
बिना परिश्रम का दहेज धन, मृतक भोज को छोड़ें।
पुनर्विवाह कराकर विधवाओं, के बन्धन तोड़े॥
जादू टोना, भूत-प्रेत का, चक्कर है बेकार॥

युग से पीछे नहीं रहे हम, प्रगति पंथ अपनायें।
भौतिक, आध्यात्मिक विकास में, हम संतुलन बनायें॥
ध्वंस प्रलय से साज सजाता, युग पीड़ित है इससे।
उसे सृजन से ही आशा है, आशा करे वह किससे॥
युग स्रष्टा का स्वप्न हमें ही, करना है साकार॥

राष्ट्र घिरा हो विपदाओं से

राष्ट्र घिरा हो विपदाओं से, तब कैसा आराम।
देश भक्त जो हैं उन सबको, है आराम हराम॥

मौसम जब बद नियत हुआ हो, रचता हो षड्यन्त्र।
दुरभि सन्धि से हवा पा रहे, उग्रवाद आतंक॥
सीमाओं में जब करता हो, अरे छद्‌म घुस पैठ।
राष्ट्र द्रोह को जब मिलती हो, भ्रष्टाचारी भेंट॥
नयी समस्यायें उठती हों, जहाँ सुबह और शाम॥

सीमाओं पर खड़े पहरूओं, पर तो है विश्वास।
राष्ट्र प्रेम से धड़क रही है, उनकी हर एक सांस॥
किन्तु मोर्चे खुले हुए हैं, यत्र, तत्र, सर्वत्र।
जहाँ लड़ाई नहीं लड़ेगें, सेना वाले शस्त्र॥
युद्ध स्तर पर करना होगा, सबको अपना काम॥

हरिया हल जोतेगा धनिया, संग रोपेगी धान।
युद्ध स्तर पर काम करेंगे, खेत और खलिहान॥
जूझेगी श्रम की तरुणाँई, जहाँ लगे हैं यन्त्र।
कलों कारखानों में गूँजेगा, पौरुष का मंत्र॥
नगर जुटेंगे उद्योगों में, हरित क्रान्ति में ग्राम॥

तात्या,लक्ष्मी,बोस,भगतसिंह, अरविन्द,बहादुर शाह।
शिवा, प्रताप, गुरुगोविन्द सिंह, गाँधी भरते हैं आह॥
पहले राष्ट्र बाद में हम हैं, उनकी यह आवाज।
गूँज रहा है दशों दिशाओं, में अखण्डता का साज॥
गुरुद्वारे, मंदिर, मस्ज़िद का, है यह ही पैगाम॥

राष्ट्र देवता ने भेजा है

राष्ट्र देवता ने भेजा है, आज नया पैगाम।
नयी विचार क्रांति करना है, डगर-डगर हर ग्राम॥

वट तरू से भी गहरी होती, जड़ें आत्म विश्वास की।
स्वर्ग बना देती धरती को, मन लहरें उल्लास की॥
आज तोड़ना है हिम्मत से, वर्ग भेद दीवार की।
हमें जोड़ना है अखण्डता, से सारे संसार की॥
शौर्य शंख श्रम की शहनाई, गूंजे चारो धाम॥

आज मनोबल ऊँचा रखना, ऊँचा रखना भाल।
बुझने देना नहीं देश में, शाश्वत ज्ञान मशाल॥
रोक न पाये पथ बाधाएँ, बढ़ते चरण विकास के।
समता सरोवर में खिल जाए, हृदय कमल विश्वास के॥
मानवता की फसल न कोई, कर पाये नीलाम॥

नैतिकता का यज्ञ हो रहा, शान्तिकुञ्ज की छाँव में।
आज नई थिरकन आयी है, अनुशासन के पांव में॥
आज बाँधना है हिम्मत से, मुट्ठी में तूफान को।
आगे बढ़कर गति देना है, ज्ञान और विज्ञान को॥
आत्म त्याग सेवा व्रत तप से, रोशन करना नाम॥

आज नया संरक्षण देना, धरती के इन्सान को।
सबको मिलकर गले लगाना, नव जागृति अभियान को॥
महल झुके कुछ कुटी उठे, कुछ समता का विस्तार हो।
देश समाज बढ़े कुछ आगे, मानवता से प्यार हो॥
कठिन परिश्रम करना सबको, है आराम हराम॥

राम फिर से ले लो अवतार

राम फिर से ले लो अवतार, दुःखी है भारत की नारी।
करो फिर से आकर उद्धार, बहुत पीड़ित है बेचारी॥

हुआ छल छद्मों का विस्तार, संभ्रमित उसको करने को।
हजारों चन्द्र आज तैयार, शील नारी का हरने को॥
महिलायें करती मनुहार, चले आओ संकट-हारी॥

हुआ अपमानित उसका प्यार, हृदय की श्रद्धा रोती है।
त्याग भी मूल्यहीन हो गया, अहेतुक सेवा रोती है॥
वही शबरी की आँसू धार, चले आओ धनुर्धारी॥

त्राहि-त्राहि कर उठी सभ्यता, ओ नारी कल्याणी।
भारतीय संस्कृति के नयनों का, मत खोओ पानी॥
त्यागो वह परिवेश कि जिसमें, आधे अंग खुले हों।
छोड़ो वे श्रृंगार बहुत से, जिसमें रंग मिले हों॥

सादा जीवन उच्च विचार, की महिमा हो जानो।
आदर की तुम पात्र बहनों, अपनी गरिमा पहिचानों॥
सबके मन में पवित्रता की, धारा तुम्हें बहानी।
भारतीय संस्कृति के नयनों का, मत खोओ अब पानी॥

रहे न नाम निशान

रहे न नाम निशान धरा पर, अँधकार अज्ञान का।
अगर जलालो मन मन्दिर में, एक दीप ईमान का॥

भ्रम का कुआँ खोदते रहते, चमत्कार के अभ्यासी।
अन्तर मन का मैल छुड़ाने, जाते हैं कावा काशी॥
नयी चेतना से भर जाये, कुण्ठित मन इन्सान का॥

ज्योति पर्व हर वर्ष मनाते, बीत गयी जीवन घड़ियाँ।
तम पहाड़ की फटी न छाती, लाखों छोड़ी फूलझड़ियाँ॥
जगमग–जगमग पथ प्रशस्त हो, मानव के निर्माण का॥

सरल नहीं है तिमिर ठेलना, केवल मीठी बातों से।
सारी रात जूझना पड़ता, तम के झंझावातों से॥
जीवन यज्ञ सफल हो जाये, आत्म त्याग बलिदान का॥

जिस दिन फूटेगा भीतर से, एक गीत सच्चाई का।
बन जायेगा कीर्तिमान नव, मानव की ऊँचाई का॥
भाग्य सितारा चमक उठेगा, नवयुग के निर्माण का॥

संगीत की गरिमा असीम है। उसे नाद ब्रह्मशब्द कहकर भगवान के समतुल्य ठहराया गया है।

राखी के हर धागे में (अ)

राखी के हर धागे में है अनुपम प्रेम समाया।
जन-जन में यह भाव जगाने, रक्षा बन्धन आया॥

गुरुसत्ता के हर सपूत की, मैं हूँ प्यारी बहना।
हर भाई प्यारा है मुझको, वही हमारा गहना॥
गुरुसत्ता की परम कृपा से, तुम सबको है पाया।
जन-जन में यह भाव जगाने, रक्षा बन्धन आया॥

भरे हृदय स्नेहिल भावों से, बाँध रही हूँ राखी।
मेरे सदा रहोगे तुम सब, गुरुसत्ता है साखी॥
तुमको मिलती रहे निरन्तर, गुरु की शीतल छाया।
जन-जन में यह भाव जगाने, रक्षा बन्धन आया॥

गुरुसत्ता के प्रति श्रद्धा की, खिली रहे फुलवारी।
सद्गगुरु कृपा रहे तुम सब पर, शुभकामना हमारी॥
मंगल गान हृदय ने मेरे, सदा यही है गाया।
जन-जन में यह भाव जगाने, रक्षा बन्धन आया॥

जन्म शताब्दी महापर्व मिलकर है सफल बनाना।
धन साधन सामर्थ्य सहित, बढ़-चढ़कर आगे आना॥
जीवन भर हम पर सद्गुरु ने प्यार असीम लुटाया।
जन-जन में यह भाव जगाने, रक्षा बन्धन आया॥

राखी के हर धागे में (ब)

(रक्षा बन्धन)

राखी के हर धागे में है, अनुपम प्रेम समाया।
जन–जन में यह भाव जगाने, रक्षा बन्धन आया॥

भाई और बहिन का रिश्ता, गरिमामय अति पावन।
बना दिया राखी ने इसको, अति पवित्र मनभावन॥
इस रिश्ते की गहराई, कोई भी समझ न पाया।

बहनों के मन के तड़ाग में, सुन्दर कमल खिले हैं।
प्यार और उपहार सहित, जो भैया आज मिले हैं॥
दोनों के ही तन–मन में, सुख का सागर लहराया।

चन्दन रोली, अक्षत, दीपक, पुष्प सुगन्ध मिठाई।
राखी थाल सजा बहनों ने, खुशी अलौकिक पाई॥
आज बहिन के मन को केवल, भाई ही है भाया।

राखी बँधवाने को मेरे भैया हाथ बढ़ाओ।
सदा करोगे मेरी रक्षा, यह संकल्प उठाओ॥
सदा बँधाते रहना राखी, जैसे आज बँधाया।

भाई के कर्त्तव्यों का मैं, सदा पालन करूँगा।
रहूँ कहीं भी बहना, मन से तेरे पास रहूँगा॥
मुझे बुलाती रहना बहना, जैसे आज बुलाया।

राखी का त्यौहार सुहावन

राखी का त्यौहार सुहावन आया है।
रक्षा–बन्धन पर्व मनोरम आया है॥
बहनों ने मंगवाई है सुन्दर राखी।
मन में हर्ष जगाने को यह आया है॥

भैया की यादों में खोई है बहना।
बहनों का भाई सबसे प्यारा गहना॥
बहनों की आँखों में स्नेह समाया है॥

चन्दन पुष्प सुगन्धित पूजा की थाली।
रक्षा–बन्धन पायी स्नेहिल है लाली॥
जन–जन का स्नेह साथ में लाया है॥

हम बहनों की भैया तुम करना रक्षा।
रहो सदा खुशहाल यही मेरी इच्छा॥
इस राखी में पावन भाव समाया है॥

बहनों से ही सजी कलाई भैया की।
बहना ही प्यारी लाली है भैया की॥
यही प्रेरणा पर्व सुहाना लाया है॥

राखी बन्धालो भइया

राखी बन्धालो भइया, बहना बुलाये रे।
आ जाओ प्यारे भइया, बहना बुलाये रे॥

सावन के मौसम में ये, रक्षा–बन्धन है आया।
छाये खुशियों के बादल, मन में उमंग है लाया॥
बहना के न्यारे भइया, बहना बुलाये रे॥

मेंहन्दी के हाथों बहना, भाई के घर आई।
पूजा की थाली पूरे, मन से है आज सजाई॥
बहना ने देखो घी के, दीपक जलाये रे॥

बहना का भाई प्यारा, उसकी आँखों का तारा।
देती उड़ेल भाई पर, वह अपना प्यार सारा॥
भइया के स्वागत में है, पलकें बिछाये रे॥

संगीत के सुर–सागर में मानव की सभी इच्छाएँ आकाक्षाएँ एकाकार होकर आनन्द की अनुभूति प्राप्त करती हैं। इस तरह संगीत जहाँ व्यक्ति के अन्तःकरण को झकझोरता है वहीं उसे सामाजिक परिवेश से भी जोड़ता है।

–अखण्ड ज्योति अप्रैल १९९९ पृष्ठ–१४

रक्षा-बन्धन विमल स्नेह

रक्षा-बन्धन विमल स्नेह की, रक्षा करना सिखलाता है।
ज्ञानपर्व श्रावणी यही है, ज्ञानार्जन विधि बतलाता है॥

इसे श्रावणी भी कहते हैं, वेदों की पूजा होती है।
ऋषियों द्वारा दिव्य ज्ञान की, प्राप्त सहज ऊर्जा होती है॥
ग्रन्थ नहीं पूजे जाते हैं, दिव्य ज्ञान पूजा जाता है॥

खड़ी हुई पीड़ित मानवता, हाथों में रक्षा बन्धन ले।
ढूँढ़ रही संवेदनशीलों की, कलाइयाँ संवेदन ले॥
जिधर देखती उधर घृणा का, वातावरण नजर आता है॥

सद्ग्रन्थों को पढ़ें-पढ़ायें, यह संदेश श्रावणी देती।
कर यज्ञोपवीत को धारण, द्विज बन जाने को वह कहती॥
ब्राह्मण के चिन्तन चरित्र से, विश्व प्रेरणायें पाता है॥

संवेदन वाली कलाइयाँ, अब तो अपना हाथ बढ़ायें।
मानवता से राखी बँधवा, रक्षा का विश्वास दिलाये॥
देखें कौन राष्ट्र संस्कृति की, रक्षा को आगे आता है॥

संगीत आत्मा के ताप को शान्त एवं शीतल कर सकता है। यह आत्मा की मलीनता को धोकर पवित्र कर सकता है।

—महात्मा गाँधी

लो संकल्प करो निर्माण की

लो संकल्प करो निर्माण की, धूम मचा दो गली-गली।
श्रीराम के हीरे मोती, हम बिखरायें गली-गली॥
ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचायें गली-गली॥

दौलत के दीवानों सुनलो, एक दिन ऐसा आयेगा।
धन दौलत और माल खजाना, यहीं पड़ा रह जायेग।
सुन्दर काया माटी होगी, चर्चा होगी गली-गली॥

श्रीराम के मोती पाये, वे तो माला माल हुए।
दौलत के जो बने पुजारी, आखिर वे कंगाल हुए।
सोने चाँदी वालों सुनलो, फिर मुरझाये कली-कली॥

श्रीराम के हीरे मोती, शांतिकुंज में मिलते हैं।
माता जी के दर्शन से तो, सभी धन्य हो जाते हैं।
सुन लो भाई सुनलों बहनों, बात कहूँ मैं भली-भली॥

क्यों कहता है मेरा-मेरा, छोड़ दे इस अभिमान को।
छोड़ दे बन्दे झुठे धंधे, देख जरा उस भगवान को।
कंचन काया जल एक दिन, धुल उड़ेगी गली-गली॥

लागी है लगन माता

लागी है लगन माता, एक तेरे नाम की।
तेरे ही नाम की माँ, तेरे ही काम की॥
लागी है लगन माता, बस तेरे नाम की॥

मन ने पग-पग पर जग में, धोखा ही खाया।
तेरी करुणा बिन माता, चैन नहीं पाया॥
सिर पर हो हाथ तुम्हारा, चिन्ता किस काम की॥

चरणों में बैठे बिन माँ, भाव नहीं जागता।
तेरी महिमा बिन मन का, मोह नहीं भागता॥
तू है जगदम्बा माता, सुधि ले सन्तान की॥

माया में भटके मन को, माँ अब तो तार दो।
प्यासा है जनम-जनम से, थोड़ा सा प्यार दो॥
मन को सुधि भूली मैया, सुबह और शाम की॥

निर्मल कर दो माँ मन को, सबको सद्ज्ञान दो।
निष्ठा की ज्योति जगा दो, श्रद्धा का दान दो॥
आस तो लगी माँ तेरे, शान्तिकुञ्ज धाम की॥

लो साथ हमारा छूट चला

(विदाई गीत)

लो साथ हमारा छूट चला, यह सोच विकल तुम मत होना।
स्नेह पलेगा जीवन भर बस, यह विश्वास नहीं खोना॥

अनजाने पावन धागे से, हम बन्धे हुए एकत्र हुए।
जो मिली भूमिका उसके हित,पुरूषार्थ किए कृत-कृत्य हुए॥
यों पूर्ण हुआ अध्याय एक, ऐसा अवसर तुम मत खोना॥

कलियाँ खिलती है एक साथ, जीवन भर साथ नहीं रहती।
लहरें उठती है साथ-साथ जीवन भर साथ नहीं रहती॥
इस सहज नियम को मान अटल, यह दुःख विछोह का सह लेना॥

सौरभ बिखेरते फूलों को, चन्दन सा देखा है सबने।
कटकर भी खुशियाँ बिखराया, यह गौरव पाया है उनने॥
इस उपवन की पावन सुगंध, जन-जीवन में तुम भी बनना॥

अध्यात्म साधना की विभूति, पा जाओ सब इस जीवन में।
सौभाग्य जगाने जीवन की, सद्‌भाव दुलारे क्षण-क्षण में॥
उस सुख वैभव के जीवन में, नित याद गुरु का कर देना॥

लेना कभी मत दहेज

लेना कभी मत दहेज, दहेज मेरी बहनों॥

जितना भी मिलता जायेगा, लोभ और भी मुँह फैलायेगा।
करना इससे परहेज, परहेज मेरी बहनों॥

लोभ ही तो बहू जलाते, उसे अनेकों भाँति सताते।
यह तो है काँटों की सेज, सेज मेरी बहनों॥

लड़की को शिक्षित करवाओ, उसका ज्ञान विवेक बढ़ाओ।
आने दो विद्या का तेज, तेज मेरी बहनों॥

यह देहज है सबसे अच्छा, जीवन भर का साथी सच्चा।
कन्या के संग यही भेजो, भेजो मेरी बहनों॥

बेटी की गरिमा पहचानों, सद्गुण को दहेज शुभ मानों।
रखो इसी को सहेज, सहेज मेरी बहनों॥

ले चला संत बन

ले चला संत बन जानकी को असुर।
तो जटायू ने रोका अमर हो गया॥
वह तो था मात्र पक्षी ही इस देश का।
जानकी के लिए देखो, खुद मिट गया॥
तुम तो हनुमान हो शौर्य कुछ तो करो।
राक्षसी सृष्टि का, दुर्ग जल जायेगा॥
भावना से मलिन आचरण से कुटिल।
उनसे कह दो कि खुद को बदल ले अभी॥
जो न बदलेगा खुद को समय पर अरे।
वक्त उनको उलटता चला जायेगा॥

लोकमंगल के लिए खुद

लोकमंगल के लिए खुद को तपाया आपने।
लोकहित में लोकशिव! जीवनरस पाया आपने॥

हुआ था शापित कि जन मानस निरे अज्ञान से।
और वंचित हो रही थी, मनुजता सद्ज्ञान से॥
मुक्ति देने, ज्ञान-गंगा को बहाया आपने॥

दुर्गुणों, दुर्व्यसनों, दुश्चिन्तन ग्रसित थी मनुजता।
भोग-विषयों के विषम-विष से त्रसित थी मनुजता॥
उसे व्यसनों और विकृति से छुड़ाया आपने॥

आप विषपायी बनें व विषमता विष पी गए।
भेदभावों को मिटाने, हर चुनौती सह गए॥
और मानव मात्र को, यज्ञ में बिठाया आपने॥

धर्म व विज्ञान आपस में विरोधी थे बने।
बने थे लंगड़े व अंधे, प्रगति अवरोधी बने॥
धर्म को विज्ञान को, सहचर बनाया आपने॥

पतनपीड़ा पराभव से द्रवित होकर आपने।
लिया 'युग निर्माण' व्रत संकल्पित हो आपने॥
लोकसेवी-शिवगणों को, संग जुटाया आपने॥

नाथ! शिवसंकल्प करते लोकसेवी आपके।
बनेंगे पीड़ा-हरन, शापित जनों के ताप के॥
चलेंगे बलिदान पथ पर, जो दिखाया आपने॥

लोकरंजन के समर्पित

लोकरंजन के समर्पित, सूत्रधारों! सोच लो।
दे रहे क्या देश को तुम, कलाकारों! सोच लो॥

वह गढ़ो प्रतिमा कि हो सत्कर्म की प्रस्तावना।
जन्म-भू के प्रति जगे जिससे समर्पण भावना॥
मूर्तियों में हो न पाएँ नारियाँ अब निर्वसन।
हों न जिनको देखकर लज्जित जननि, बेटी, बहन॥
आधुनिकता का नशा मत दो कला के नाम पर।
मूर्तिकारों! श्रेष्ठ भावों को उभारो, सोच लो॥

फिल्म-टी.बी. आदमी को आत्मघाती हो रहे।
नित जनमते दुर्गणों का दोष दर्शक ढो रहे॥
शिष्टता, शालीनता, संकोच, सब खोने लगे।
और हम हिंसक, अनाचारी बहुत होने लगे॥
तुम अगर चाहो, नई पीढ़ी पुनः जीवंत हो।
जाग सकता देश सारा, फिल्मकारों! सोच लो॥

दृश्य, अभिनय, गीत, भड़काएँ नहीं दुष्वृत्तियाँ।
हों विनिर्मित लोकसेवी सज्जनों की मूर्तियाँ॥
लोकहित हो लक्ष्य टी.वी और हर चलचित्र में।
हो भरी शुभ प्रेरणाएँ हर कैलेंडर-चित्र में॥
मिट रहे हैं मूल्य साँसें संस्कृति की घुट रही।
दुर्दशा से तुम मनुजता को उबारो! सोच लो॥

व्यक्तित्व को हमारे गढ़ना

व्यक्तित्व को हमारे, गढ़ना हमें पड़ेगा।
सोपान साधना के, चढ़ना हमें पड़ेगा॥

है फूल वृक्ष पर जो, नभ से नहीं टपकते।
वरदान से किसी के, फल भी नहीं लटकते॥
बस वृक्ष की जड़ें ही रस खींचती धरा से।
पाती सशक्त जड़ ही, फल फूल उर्वरा से॥
व्यक्तित्व की जड़ों तक, बढ़ना हमें पड़ेगा॥

अन्दर छिपा हुआ है, जीवन्त देवता है।
वह शक्ति का खजाना, इसका जिसे पाता है॥
वह सिद्धियाँ संजोता है, आत्म साधना से।
मिलता अतुल बल है, जिसकी उपासना से॥
साधक समान पीछे, पड़ना हमें पड़ेगा॥

हम पर कषाय-कल्मष का, आवरण पड़ा है।
अँगार में परत बस, इस राख का चढ़ा है॥
जब आत्म साधना से, प्राणाग्नि जागती है।
अज्ञान की अँधेरी, तत्काल भागती है॥
प्रज्ञा-प्रकाश, पथ पर, बढ़ना हमें पड़ेगा॥

व्यक्तित्व कर परिष्कृत, चुम्बक उसे बनायें।
फिर दिव्य शक्तियों के, अनुदान खींच लायें॥
सोया हुआ हृदय का, देवत्व हम जगायें।
अपनी वसुन्धरा को, फिर स्वर्ग सा सजायें॥
व्यक्तिव का नगीना, जड़ना हमें पड़ेगा॥

विश्व मन्दिर में विराजी

विश्व मन्दिर में विराजी, मूर्ति सद्गुरु की निहारें।
दीप निष्ठा के जलाकर, आरती उनकी उतारें॥

मिल गये सद्गुरु जिसे, पारस उसी ने पा लिया है।
पी लिया 'गुरु मंत्र' जिसने, वह अमृत होकर जिया है॥
ज्योति प्रज्ञा की प्रखर, अंत:करण में हम सँवारे॥

लोक मंगल से भरे घट, सजल श्रद्धा के दुलारे।
साधना सेवा वृत्ति जो, वे सभी परिजन हमारे॥
इस विशद परिवार का पथ, सिद्धियाँ मिलकर बुहारें॥

भावना की सम्पदा अनमोल, गुरुवर से मिली है।
दृष्टि उनकी हर हृदय में, चाँदनी बनकर खिली है॥
जो अँधेरे में भटकते, हम उन्हें खोजें पुकारें॥

हो द्रवित तप से हिमालय, ने विमल धारा बहायी।
पी रहा पीयूष युग शिशु, गोद उषा ने सजायी॥
दे गये सब शक्ति गुरुवर, बस हमीं हिम्मत न हारें॥

जब वेद के पद्यबद्ध मंत्रों को गान विद्या से अनुप्राणित किया गया तो 'सामवेद' बन गया।

विषयों से नहीं फुरसत जिनको

विषयों से नहीं फुरसत जिनको, सत्संग में आना क्या जानें।
मन जिनका भ्रम में डोल रहा, वो अपना ठिकाना क्या जानें।

जिन पर प्रभु की होती है कृपा, सत्संग में वो ही आते हैं।
सत्संग का अमृत रस पीकर, पीकर के अमर हो जाते हैं।
घर छोड़ जो सत्संग आते नहीं, वो सुनना समझना क्या जानें।

अहंकार के मद में आकर के, गीता की महिमा नहीं गाते हैं।
लोभी रहा लोभ की मस्ती में, फँस करके विलय हो जाते हैं।
दिन रात जो पाप समेंट रहा, वो धर्म कमाना क्या जानें।

ज्यादा मैं महिमा क्या गाऊँ, सत्संग है मर्म बतलाया।
था जिनका आतम रोग हुआ, सत्संग से छुटकारा पाया।
जो खुद सत्संग नहीं आते, वो औरों को लाना क्या जानें।

वन्दना के इन स्वरों में

वन्दना के इन स्वरों में, एक स्वर मेरा मिला लो॥

वन्दिनी माँ को न भूलूँ, राग में जब मस्त झूलूँ।
अर्चना के रत्न कण में, एक कण मेरा मिला लो॥

जब हृदय के तार बोले, श्रृंखला के बन्द खोले।
हो जहाँ बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो॥

मुक्तक–

वन्दना का स्वर बनूँ मैं, लालसा है,
अर्चना का कण बनूँ मैं, वांछा है।
माँ न विस्मृत हो कभी भी एक क्षण को,
शीश भी अर्पित करूँ, आकाँक्षा है॥

व्यसन हमारी सभी शक्तियाँ

व्यसन हमारी सभी शक्तियाँ क्षीण बनाते हैं।
तन से दुर्बल, मन से हमको दीन बनाते हैं॥

कोई भी हो व्यसन, हमें कमजोर बना देता।
उन्हें छुपाने अनचाहे ही, चोर बना देता॥
गाँजा, भाँग, तम्बाकू, बीड़ी, मदिरा जो पीते।
जीते व्यसनों हेतु, स्वयं के लिए नहीं जीते॥
जेब काटते और बुद्धि को हीन बनाते हैं॥

चौपड़, ताश खेलना अपना समय गँवाना है।
हीरों जैसे क्षण, कौड़ी के मोल बिकाना है॥
ताश अँगुलियाँ पकड़ हमारा हाथ पकड़ता है।
बरबादी को जुआँ, हमारा साथ पकड़ता है॥
बच्चों को, बरबादी के आधीन बनाते है॥

वीणा वादिनी वरदे

वीणा वादिनी वर देऽऽ वादिनी वर दे॥
प्रिय स्वतंत्र रव अमृत मंत्र नव-भारत में भर दे॥

काट अंध उर के बन्धन स्वर, बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर।
कलुष भेद तम हर प्रकाश भर, जगमग जग कर देऽऽ॥

नव गति नव लय ताल छन्द नव, नवल कण्ठ नव जलद मन्द्र रव।
नव नभ के नव विहंग वृन्द को, नव पर नव स्वर देऽऽ॥

विश्व की सत्प्रेरणा के स्रोत

विश्व की सत्प्रेरणा के स्रोत, सविता को नमन।
जीव की हर चेतना के स्रोत, सविता को नमन॥

तुम नियन्ता की सृजन की शक्ति के आधार हो।
ज्योति के हे पुञ्ज! प्रभु के रूप तुम साकार हो॥
ईश की अवधारणा के स्रोत, सविता को नमन॥

मिल सके तुमसे हमें ओजस्, प्रखर तेजस् प्रभो।
और वर्चस्वी बने प्रत्येक का अन्तस् प्रभो॥
दिव्यता की साधना के स्रोत, सविता को नमन॥

देह, मन, अन्त:करण को प्राणमय कर दो प्रभो।
विश्व के संताप से सबको अभय कर दो प्रभो॥
मानवी सद्भावना के स्रोत, सविता को नमन॥

प्राण-ऊर्जा से हमारी हर क्रिया भरपूर हो।
ज्ञान के भण्डार! हर जड़ता मनुज की दूर हो॥
बुद्धि औ संवेदना के स्रोत, सविता को नमन॥

लोक मंगल को मिली हर ऋद्धि औ हर सिद्धि हो।
दूर हों दुष्वृत्तियाँ, सद्वृत्तियों में वृद्धि हों॥
लोकहित की कामना के स्रोत, सविता को नमन॥

आत्म विश्लेषण करें सब बन सकें अन्तर्मुखी।
दिव्य पाये दृष्टि हर मानव, बने जीवन सुखी॥
स्वर्ग की सम्भावनों के स्रोत, सविता को नमन॥

कल्मषों की कालिमा हर लो, मिटे दु:ख, शोक अब।
व्यक्ति के अन्त:करण तक तुम भरो आलोक अब॥
सतयुगी प्रस्तावना के स्रोत, सविता को नमन॥

विमल भावना भर भाषा में

विमल भावना भर भाषा में, संदेशा भेजा माँ ने।
हर सपूत तक पहुँचाना है, वह माने या ना माने॥

दूर देश जाकर तुम सब क्यों? अपनी गरिमा भूल गये।
योगी की क्षमता है तुममें, क्यों? भोगों में फूल गये॥
बस अपना निर्वाह कर लिया, पशु से ज्यादा क्या पाया?
देवभूमि के देवदूत तुम, यह क्यों याद नहीं आया?
अब तो अपनी गरिमा के अनुरूप बुनों ताने बाने॥

आज कसौटी पर मानव को, परख रही है मानवता।
मानव में कितनी मानवता, निरख रही है ऋषिसत्ता॥
मानवता का मान बढ़ाना, देखें किसको आता है?
कौन दिखाता प्यार ऊपरी, किसका सच्चा नाता है?
सबकी कठिन परीक्षा होगी, अब जाने या अनजाने॥

मानवता ने विज्ञान गढ़ लिया, सीख गया है शिष्टाचार।
यह तो बस पहली सीढ़ी है, कौन सिखाये सद्आचार॥
जब संस्कृतिमय जीवन होगा, तब मानव सुख पायेगा।
संस्कृति पुत्रों सिवा तुम्हारे, कौन सिखाने आयेगा?
दैवी संस्कृति के प्रसार हित, बन जाओ तुम दीवानें॥

देवभूमि की सन्तानों ने हरदम फर्ज़ निभाया है।
संस्कृति का अभ्यास स्वयं कर, दुनियाँ को सिखलाया है॥
दानवता से त्रस्त मनुजता, उसको आज बचाना है।
संस्कारों की परम्परा को, जन-जन तक पहुँचाना है॥
देगी माँ वरदान अनोखे, युग दूतों को मनमाने॥

विश्व व्यापी सघन तम

विश्व व्यापी सघन तम को मेटने को।
ज्ञान का एक दीप हम भी तो जला लें॥

लोग व्याकुल है, कली खिलती नहीं है।
प्राण पोषक वायु भी मिलती नहीं है॥
आसमाँ तक का प्रदूषण मिट चलेगा।
पौधे आँगन में चलो हम भी लगा लें॥

मिट चली सद्भावना संध्या बनी सी।
दिख रही हर भौंह ऐठीं सी तनी सी॥
दे भले कोई कटीले कटु वचन पर।
मित्रता का हाथ हम आगे बढ़ा लें॥

तम अशिक्षा का चतुर्दिक छा रहा है।
आदमी उठने नहीं यों पा रहा है॥
बाँटकर सद्ज्ञान की आभा सुनहरी।
देश को दीपावली सा जगमगा लें॥

मुखप्रधान देहस्य नासिका मुखमध्यके।
ताल हीनं तथा गीतं नासाहीनं मुखंयथा।।

अर्थात्–जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में मुख प्रधान अंग समझा जाता है और मुख में नाक को प्रधानता दी जाती है, ठीक उसी प्रकार संगीत में ताल को महत्त्व है। बिना ताल के गाना–बजाना वैसा ही होगा जैसा कि बिना नाक का चेहरा।

विश्व धर्म का झण्डा लहरा

विश्व धर्म का झण्डा लहरा ये संकेत दिलाता है।
आओ भाई हिल-मिल रह लें, सही प्रेम का नाता है॥

अर्हन्त कहो, अल्ला कह दो, ईश्वर कह, स्वतंत्र कहो।
गॉड कहो,नेचर ही कह दो, अग्नि कह,गुरु मंत्र कहो॥
नाम पुकारो चाहे जितने, शक्ति एक जताता है॥

कोई पूरब हाथ जोड़ता, कोई पश्चिम को झुकता।
कोई उत्तर को ध्यान धरे, कोई दक्षिण को बढ़ता॥
पूजा के फिरकों से फिरका, शैतानी उपजाता है॥

एक बाप की दुनियाँ सारी, एक पिता की संताने।
उसी बाप की धरती प्यारी, वही शक्ति हम पहचाने॥
तेरा मेरा करके लड़ना, पन हैवान सिखाता है॥

कोई किसका खून करे क्यों, कोई किसको क्यों लूटे।
कोई पैसे पर क्यों ऊँचा, किस्मत किसकी क्यों फूटे॥
समता, ममता और एकता, ये युग बदला जाता है॥

कितनी सुन्दर दुनियाँ होगी, आपस में हम मिल जायें।
सुख बाँटे दुःख दूर करें तो, मुरझाये दिल खिल जायें॥
रोग, शोक,सन्ताप विदा हो, पाप-पतन मिट जाता है॥

ज्ञान रूप से जगमग ज्योति, कर्म क्षेत्र की बाँह खड़ी।
भक्ति भाव से प्यार उमड़कर, देखो मानव भीड़ अड़ी॥
ज्ञान कर्म भक्ति का संगम, जग बन्धुत्व बनाता है॥

विश्व सोया रहा

विश्व सोया रहा, गुरु जागते रहे,
जग की पीड़ा में खुद को डुबाते रहे।
दीप ऐसा जलाया कि जलता रहे,
और दीपक से दीपक जलाते रहे॥

बातें ऐसी कही जग सम्भल जायेगा,
रात ढल जायेगी दिन निकल जायेगा।
नेक बनने की छोटी–सी एक बात को,
युग बदलने की बातें बताते रहे॥

थकते कदमों का बनकर सहारा कभी,
चाह बढ़ने की देकर बढ़ाया कभी।
जिए औरों की खातिर थके न कभी,
वे झुके भी नहीं मुस्कराते रहे॥

जो करनी पड़ी क्रान्ति की बात तो,
हर किसी के लिए टीस सहते रहे।
हर समस्या को गुरु ने निकट से लगा,
विश्व में देव मानव कहे जा रहे॥

शक्ति-साधना बिना न बनता

शक्ति साधना बिना न बनता, बिगड़ा कोई काम।
नारी तुम हो शक्ति राष्ट्र की, शत्-शत् तुम्हें प्रणाम॥

महादेव शिव ने जगहित है आदि शक्ति को साधा।
बने 'अर्द्धनारीश्वर' जिसमें रूप तुम्हारा आधा॥
देवों को, जब-जब असुरों ने छेड़ा और सताया।
तब देवों को भी विपदा में, ध्यान तुम्हारा आया॥
तब दुर्गा बनकर तुमने ही, जीते वे संग्राम॥

वीर शिवा भी तो माँ से प्ररित हो आए आगे।
रिपु भी टिक न सके थे जिनकी प्राण शक्ति के आगे॥
झाँसी की रानी बन तुमने, जब तलवार चलायी।
अंग्रेजों जैसे शासक की, छाती थी थर्रायी॥
है 'प्रभात' उत्साह तुम्हारा, उदासीनता शाम॥

घर, परिवार, राष्ट्र की दुर्गति, तुम्हें निहार रही है।
युग-युग से पीड़ित मानवता, तुम्हें पुकार रही है॥
किन्तु उपेक्षा, उदासीनता, देख तुम्हारी नारी।
मानवता छटपटा उठी है, मन में पीड़ा भारी॥
आधी-आबादी की मूर्छा का, यह है परिणाम॥

शक्ति न जागी तो शिव कैसे दुष्ट अशिव को तोड़े।
ध्वंस हुआ हावी मानव को कौन सृजन से जोड़े॥
रुका हुआ हर क्षेत्र-प्रगति का, लंगड़ाई सी गति है।
बिना तुम्हारे रुकी-रुकी सी, नर की सभी प्रगति है॥
शक्ति न जागी अगर राष्ट्र की, होगा क्या अंजाम॥

शांति और संतोष छोड़

शांति और संतोष छोड़, मृग तृष्णा मत पालो।
बुन मकड़ी सा जाल,स्वयं को कैद न कर डालो॥

परम पिता ने स्वतंत्रता से युक्त किया तुमको।
जननी ने दे जन्म गर्भ से मुक्त किया तुमको॥
हो बन्धन से मुक्त गले में फंदे मत डालो॥

साँसों की निर्मल सरिता को गंदी नहीं करो।
लोभ, मोह के छल छद्मों में बन्दी नहीं करो॥
मुक्त धरा पर मुक्त गगन में मुक्ति गान गालो॥

बढ़ा महत्वाकाँक्षाएँ मत नींद हराम करो।
सादा-जीवन, उच्च-विचारों को आयाम करो॥
सादा रह लो सादा पहिनो सादा ही खालो॥

तृष्णाएँ उंगलियाँ पकड़कर पोंचा पकड़ेगी।
जितनी छूट मिलेगी उनको उतना जकड़ेगी॥
इन पर अकुंश रखकर भावी विपदाएँ टालो॥

शक्ति और क्षमताएँ अपने लिये नहीं केवल।
कई अशक्त अभाव ग्रसित हैं उनको दें संबल॥
जीवन अर्ध्य लोक मंगल की प्रतिमा पर ढालो॥

साधन धाम मोक्ष कर द्वारा जेल न बन जाये।
सुर दुर्लभ सम्पदा स्वार्थ का खेल न बन जाये॥
शोषित पीड़ित दीन जनों को भी देखो भालो॥

शान्तिकुञ्ज बन गया छावनी

शान्तिकुञ्ज बन गया छावनी, अब जीवट दिखलाना है।
सृजन सैनिकों! युग सैनिक का, अब तो भार उठाना है॥

ज्ञान मशाल–विचार क्रान्ति की, उनको पथ दिखलाती है।
भाषा शान्तिकुञ्ज की जिनको, सहज समझ में आती है॥
शान्तिकुञ्ज प्रतिभाओं के हित, बुनता ताना–बाना है॥

लेकर जो भाषा न समझते, युग ऋषि के सन्देश की।
'स्वर्ग' धरा पर और मनुज में, 'दैवीतत्व' प्रवेश की॥
महाकाल की भाषा में ही, अब उनको समझाना है॥

दुष्प्रवृत्तियों, कुरीतियों का, दुर्व्यसनों का जोर है।
है विवाह उन्माद निरंकुश, क्रूर दहेज कठोर है॥
इनके षड्यन्त्री अड्डों को, अब अविलम्ब मिटाना है॥

नारी की गरिमा गिरती है, नहीं किसी को ध्यान है।
विज्ञापन करने वालों पर, अब सवार शैतान है॥
हर अश्लील विधा पर हमको, गहरी चोट लगाना है॥

सद्साहित्य शस्त्र को लेकर, जाना है मैदान में।
दुश्चिन्तन का हर एक मोर्चा, उखड़े इस तूफान में॥
असहयोग का सत्याग्रह का, साहस हमें जुटाना है॥

शूरवीर तुम उठो! जागकर

शूरवीर तुम उठो! जागकर युग बसन्त की तान सुनाओ।
तपो निरन्तर तपसी होकर, भारत देश महान् बनाओ॥

प्राणों में तप की ज्वालायें हर साधक में धधक रही है।
जीवन लक्ष्य बनायें गुरु सा, भक्ति भाव अब हुलस रही है॥
राग रंग में डूबे मन को, वासन्ती टंकार सुनाओ॥

युग बसन्त संदेश यही है, हृदय गुहा में ईश निहारें॥
छोड़ लालसा अभिलाषा को आर्त भाव से उन्हें पुकारें॥
जीव चेतना आरोहण कर, जीवब्रह्ममय आज बनाओ॥

मन्द नहीं हो सकी साधना, युग बसन्त से हुई शुरू जो।
बुझा नहीं वह दीपक क्षणभर, जन्म दिवस से शुरू हुई जो॥
हर पल बिखरायी वह ज्योति गुरुवर ने यह बात बताओ॥

हर बसन्त ने गुरुवर को अनुदान रत्न से लाद दिये थे।
पवित्रता, आध्यात्मिक जीवन, भक्तिभाव अनुराग दिये थे॥
बने प्रामाणिक इस बसन्त में हर साधक को यही बताओ॥

संगीत प्रेमी कार्लाइल ने तो यहाँ तक कहा है कि संगीत के पीछे-पीछे खुदा चलता है और जहाँ पर स्वयं भगवान होगा वहाँ भला कैसे कोई रोग-शोक टिक सकते हैं। वहाँ तो आनन्द का निर्झर ही बहेगा।

-अखण्ड ज्योति मार्च २००३ पृष्ठ १९

शंख घण्टियाँ गूँज रही हैं

शंख घण्टियाँ गूँज रही हैं, जन्म शताब्दी की बेला॥
हम सब बेटे हैं गुरुवर के, अग्नि परीक्षा की बेला॥

उनका है व्यक्तित्व हिमालय, गुरु जीवन क्या जी पाये।
तपोमूर्ति गुरुवर के बेटे, तप को क्या अपना पाये॥
अन्तर के सब द्वार खोल ले, अनुदानों की है बेला।
गायत्री की आज जयन्ती, जन्म शताब्दी की बेला॥

ज्ञान गंग धरती पर लाये, युग के भागीरथ बनकर।
ज्ञानामृत हम पहुँचा पायें, भागीरथ के सुत बनकर॥
समय साधना तन मन जीवन, अर्पित करने की बेला।
गायत्री की आज जयन्ती, जन्म शताब्दी की बेला॥

सद्‍विचार से युग बदलेगा, सद्‍विचार की जन्मशती।
जन-जन में देवत्व जगेगा, गुरुवर की यह जन्मशती॥
श्रद्धा का यह महापर्व है, शपथ उठाने की बेला।
गायत्री की आज जयन्ती, जन्म शताब्दी की बेला॥

प्यार उन्हीं का मूल मंत्र है, सांचा गढ़कर दिखलाये।
जब भी उन्हें पुकारा हमने, थपकी देकर सहलाये॥
करुणा की साकार मूर्ति वे, प्यार लुटाने की बेला।
गायत्री की आज जयन्ती, जन्म शताब्दी की बेला॥

शुद्ध किया भगवन ने

शुद्ध किया भगवन ने भक्तों का मन।
राधा रमण हरी, राधा रमण॥
जग को नचाते वे मुरली बजाते,
बालरूप मोहन है ठुमका लगाते।
कण-कण के स्वामी को करलें नमन॥
शबरी सुदामा के सबसे हैं प्यारे।
मातु कौशल्या के आँखों के तारे॥
भक्तों के तारक हैं विपदा हरण।
श्रद्धा से भगवन को आओ बुलायें।
केवट, यशोदा सी भक्ति दिखायें॥
निर्मल बनायें अत:करण॥

सत्संग वो गंगा है

सत्संग वो गंगा है, इसमें जो नहाते हैं।
पापी से पापी भी, पावन हो जाते हैं॥
ऋषियों ने मुनियों ने, इसकी महिमा गाई।
सत्संग से ही जीवन है, यह बात है समझाई।
यही वेद बताते हैं, यही ग्रंथ बताते हैं॥
प्रभु नाम के मोती है, सत्संग के सागर में।
फल ही फल मिलते हैं, इस सुख के सरोवर में।
सत्संग में जो आते हैं, डुबकियाँ लगाते हैं॥
इस तीरथ से बढ़कर, कोई तीरथ धाम नहीं।
दु:ख क्लेश का भक्तों, इसमें कोई काम नहीं।
आते हैं सत्संग जो, जीवन को सजाते हैं॥

सत्संग है ज्ञान सरोवर

सत्संग है ज्ञान सरोवर, सुख की खान है वन्दे।
सत्संग से ही मिलते, सचमुच भगवान है वन्दे॥

सत्संग से होकर जाता है, मंजिल का रास्ता।
इस मंजिल के राही को, प्रभु से ही वास्ता।
सत्संग की बहती गंगा, कर स्नान है वन्दे॥

सत्संग ही सच्चा सौदा है, सच्चा व्यापार है।
परमारथ के प्रेमी जन का, सत्संग आधार है।
सत्संग ही करता सबका, रे कल्याण है वन्दे॥

सत्संग ही कावा काशी है, सत्संग कैलाश है।
सत्संगी के मन में ही, प्रभु जी का वास है।
सत्संग सुरीली मुरली, की वो तान है वन्दे॥

दुर्लभ है जिसको ढूँढ़ना, जप तप के जोर से।
खुद वो भी खींचे आते हैं, सत्संग की डोर से।
सत्संग से मिटता मनका, रे अज्ञान है वन्दे॥

सुनों कथा प्रज्ञा पुराण की

सुनों कथा प्रज्ञा पुराण की, श्रोताओं अति ध्यान से।
नमन करो नत्-मस्तक होकर, हाथ जोड़ सम्मान से॥
नमन करो सम्मान से, सुनो कथा अति ध्यान से॥

धर्म निष्ठ श्रद्धालु साधकों, आओ आसन ग्रहण करो।
युग ऋषि के अमृत विचार को, श्रद्धा से सब श्रवण करो।
भर जायेगी सबकी झोली, गुरुवर के अनुदान से॥

डूब रहा दु:ख के सागर में, आज समुचा जन-मानस।
दु:ख का मारा डोल रहा है, व्याकुल पराधीन परवश।
भार ढो रहा त्रस्त हो रहा, निज कुटुम्ब संतान से॥

आज समस्या है जैसी वह, समाधान दर्शाया है।
जीवन जीने का स्वरूप, समुचित ऋषि ने समझाया है।
लाखों लाख प्रबुद्ध जुड़ रहे, इस प्रज्ञा अभियान से॥

ज्ञान-कर्म के साथ भक्ति का, बड़ा अनोखा संगम है।
मानवीय गरिमा, कर्त्तव्यों, का भी दृश्य विहगंम है।
चाहे तो नाता जुड़ जाये, मानव का भगवान से॥

गंगा का अविरल प्रवाह यह, मिट जाते संताप सभी।
ध्यान-धारणा, मज्जन करके, अनुभव कर लें आप सभी।
मन में सुख संतोष बढ़ेगा, श्रवण, मनन, गुणगान से॥

सुनो कथा यह कान लगाकर

सुनो कथा यह कान लगाकर, स्थिर होकर ध्यान से।
यह प्रज्ञा पुराण अति पावन, मुक्त करे अज्ञान से॥
सुनो कथा यह ध्यान से, रहो नहीं अज्ञान से॥

बिना ज्ञान के जप तप पूजा, करती है कल्याँण नहीं।
कथा ज्ञान का सागर है यह, कर देगी कल्याँण सही।
गंगा गोदावरी, सरिस यह, सुख देती स्नान से॥

परम पिता का प्यार चाहते, हो तो इसका वरण करो।
हृदय भरो श्रद्धा निष्ठा से, मंगलमय आचरण करो।
प्रज्ञावान बनो जिससे यह, जीवन बीते शान से॥

यदि प्रमाद में रहे आप तो, जीवन भर पछतायेंगे।
समय सुनहरा निकल गया तो, काम न कोई आयेंगे।
प्रभु का यह संदेश सुनो अब, इस प्रज्ञा अभियान से॥

''गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते''

गीत, वाद्य और नृत्य इन तीनों को संगीत कहते हैं। इस प्रकार 'संगीत' के शब्द में गीत, वाद्य और नृत्य इन तीनों का समावेश माना गया है। –(संगीत रत्नाकर)

सुनो हृदय पट खोल

सुनो हृदय पट खोल सब जन, यह प्रज्ञा पुराण है।
यह प्रभु का संदेश इसमें, युग ऋषि का तप प्राण है॥

जब-जब बढ़ी असुरता तब-तब, प्रभु ने उसे मिटाया है।
प्रभु के संग-संग युग दूतों ने, निज कर्त्तव्य निभाया है।
जागृत हो युगदूत जिससे, यह ऐसा अभियान है॥

इस युग में बनकर अनास्था, भीषण दानव छाया है।
करने दमन दुष्टता का प्रभु, प्रज्ञा बनकर आया है।
पलट असुरता जाय यह तो, ऐसा प्रबल उफान है॥

जन-मन में जा घुसी असुरता, जल्दी उसका नाश हो।
हृदय बुद्धि में फिर स्थापित, शुभ, श्रद्धा, विश्वास हो।
रोके नहीं रूकेगा यह तो, प्रभु का अटल विधान है॥

जिनको प्रभु का प्यार चाहिए, वे सब इसका वरण करें।
अपनाकर आदर्श उन्हीं का, साहसमय आचरण करें।
जागे सुख, सौभाग्य सबका, यह ऐसा वरदान है॥

स्वरेण संल्लीयते योगी' स्वर साधना के द्वारा योगी अपने को तल्लीन करते हैं।

सत्संग ने कई का जीवन

सत्संग ने कई का जीवन बदल दिया है।
ऋषियों मनीषियों ने, इस पर ही बल दिया है॥

थे बाल्मिकि डाकू, परिवार पालते थे।
है पुण्य-पाप कैसा? वह यह न जानते थे॥
ऐसे ही सप्त ऋषियों को रोक लिया उनने।
तो बाल्मिकि से था यह प्रश्न किया ऋषि ने॥
परिवार बटायेगा दुष्कर्म जो किया है॥

उत्तर मिला नहीं में तो आँख खुल गई फिर।
इस सत्य से विचारों की गर्द धुल गयी फिर॥
जीवन बदल ही डाला ऐसी उठी व्यथा फिर।
ऋषि तुल्य लेखनी ने दी राम कथा लिख फिर॥
सुविचार के सहारे जीवन अमर किया है॥

रत्ना के प्यार में थे कामान्ध हुए तुलसी।
मुर्दे को नाव समझे थे सर्प बना रस्सी॥
रत्ना ने वासना की जब व्यर्थता बतायी।
तो आँख खुल गई फिर श्री राम कथा गायी॥
सत्संग ने महात्मा तुलसी हमें दिया है॥

मोहन ने बालपन में हरिश्चन्द्र खेल देखा।
बस खिंच गई हृदय में सत् की अटूट रेखा॥
गाँधी बने महात्मा था सत्य को न छोड़ा।
सत्याग्रही बने वे अनुगामियों को मोड़ा॥
नाटक को देखकर ही जीवन बदल दिया है॥

सभी दिल दिमाग

सभी के दिल दिमाग पर ही छा रहा पैसा।
रंक को राव को सबको नचा रहा पैसा॥

सिर्फ पैसे के लिए झूठ बुला ले कोई।
धर्म ईमान को नीलाम करा ले कोई॥
भाई–भाई को लड़ा देता है पैसे का नशा।
देह–व्यापार करा देता है पैसे का नशा॥
पाश्विक कृत्य मनुज से करा रहा पैसा॥

आज तो न्याय भी बिकने लगा पैसे के लिए।
आज तो सत्य भी झुकने लगा पैसे के लिए॥
खाद्य सामाग्री में पैसा ही मिलावट करता।
दवा को जहर बनाने से भी नहीं डरता॥
जुल्म अपनों पर ही ज़ालिम सा ढा रहा पैसा॥

किसी से पूछिये क्या है कि लक्ष्य जीवन का।
जिसे देखो वही दीवाना बना पैसे का॥
कोई क्यों पढ़ रहा है पैसे कमाने के लिए।
कोई श्रम कर रहा है पैसे को पाने के लिए॥
जागते सोते नजर सिर्फ आ रहा पैसा॥

कमायें पैसा अवश्य किन्तु भामाशाह बनें।
दीन–दुखियों की राष्ट्र संस्कृति की आह सुनें॥
पैसा साधन बनायें साध्य नहीं बनने दें।
पेट को पाप हेतु बाध्य नहीं बनने दें॥
त्याग बलिदान की गाथा भी गा रहा पैसा॥

समय से कदम मिलाओ

समय से कदम मिलाओ साथी, अब न अधिक अलसाओ साथी।

बीत गई आलस की बातें, फिर कैसी प्रमाद की बातें।
इनको दूर भगाओ साथी, अब न अधिक अलसाओ साथी॥

सूरज ने संकल्प किया है, किरणों को आवाज दिया है।
सूरज संग हो जाओ साथी, अब न अधिक अलसाओ साथी॥

अब तम का अस्तित्व मिटेगा, अँधकार का जाल कटेगा।
तम से मत घबराओ साथी, अब न अधिक अलसाओ साथी॥

नव प्रभात की बेला आई, चमकेगी अब घर अँगनाई।
चलो प्रभाती गाओ साथी, अब न अधिक अलसाओ साथी॥

सूरज के साथी हो जाओ, तुम यश के भागी बन जाओ।
युग को अर्ध्य चढ़ाओ साथी, अब न अधिक अलसाओ साथी॥

युग परिवर्तन तो निश्चित है, किसी दिव्य सत्ता का व्रत है।
चाहो तो यश पाओ साथी, अब न अधिक अलसाओ साथी॥

घरेलू कुत्ते संगीत को ध्यानपूर्वक सुनते और प्रसन्नता व्यक्त करते हैं। कांगो देश में चिम्पाजी तथा गुरिल्ला वनमानुष संगीत के प्रति सहज आकर्षित होते हैं।

–(जार्ज हवेस्टे)

संसार के लोगों से

संसार के लोगों से, आशा ना किया करना।
जब कोई न हो अपना, सिया-राम जपा करना॥
जीवन के समुंदर में तूफान भी आते हैं।
जो कष्ट हो भक्तों पर प्रभु आप बचाते हैं॥
वो आप ही आते हैं, तुम याद किया करना॥
मत सोच अरे बन्दे प्रभु तुमसे दूर नहीं।
जो कष्ट हो भक्तों पर प्रभु को मंजूर नहीं॥
भगवान को आता है, भक्तों पे दया करना॥

सप्त महाव्रत धारण करके

सप्त महाव्रत धारण करके, चिन्तन प्रखर बनाएँ।
युगऋषि के प्रज्ञा प्रकाश की, ज्ञान मशाल जलाएँ।।
सप्त क्रान्तियाँ मचल रहीं, पुरुषार्थ प्रबल करना है।
गुरु अनुशासन में चलकर अभियान सफल करना है।।
गायत्री की चेतना शक्ति सभी ओर फैलाएँ।।
प्रतिभाओं की पड़ी जरूरत, लोभ-मोह को छोड़े।
मानवता के लिए समय दें, आलस बन्धन तोड़ें।।
वैज्ञानिक, कवि, वक्ता, गायक, सृजन श्रेष्ठ अपनाएँ।।
सृजन शिल्पियों हाथ बँटाओ, सतयुग फिर लाना है।
युगधर्म आज है समयदान, सबको यह समझाना है।।
जग में पीड़ा-पतन बहुत है, मिलकर दूर भगाएँ।।
देवसंस्कृति के चिन्तन को, घर-घर में पहुँचाना है।
समयदान व अंशदान का क्रम, सबको अपनाना है।।
ज्ञानयज्ञ की ज्योति जलाने, आगे कदम बढ़ाएँ।।

सर पे तेरे घड़ा है

सर पे तेरे घड़ा है अगर पाप का,
तो प्रभु को बुलाने से क्या फायदा।
मुख में है राम तेरे बगल में छुरी,
ढोंग ऐसे रचाने से क्या फायदा॥

रात दिन दूसरों की बुराई करे,
पाप गंगा में जा जाके धोया करे।
अपने मन को तू मूरख समझ ना सके,
तो फिर गंगा नहाने से क्या फायदा॥

लाख दारा सिकन्दर हुए हैं यहाँ,
काल के चक्र में खो गये हैं कहाँ।
दो घड़ी के सभी लोग मेहमान है,
ज्यादा शेखी बताने से क्या फायदा॥

मंदिर में तो पत्थर की है मूर्ति,
उसको विश्वास से देवता मानते।
दिल के मंदिर को पगले समझ न सका,
तो फिर मंदिर में जाने से क्या फायदा॥

जाल माया में दिन रात फँसता रहा,
देख दुःख दूसरों के तू हँसता रहा।
सर पे आई तेरे जब दुःखों की घड़ी,
तो दूसरों को सुनाने से क्या फायदा॥

समय ही होता है बलवान

समय ही होता है बलवान, समय से बनते व्यक्ति महान॥

समय से ही हनुमान बने, समय अर्जुन से बाण बने।
समय सानिध्य महान बने, अकिंचन अरे महान बने।
देव बन गये नये इन्सान॥

समय आवाज लगाता है, असाधारण हूँ बतलाता है।
पकड़ता नहीं किन्तु वह स्वयं, समझता जो वह आता है।
समय फिर देता है वरदान॥

समय यूँ किसको नहीं मिला, समय का चालू है सिलसिला।
मिला सबको साधारण समय, असाधारण विरलों को मिला॥
धन्य वे मिला जिन्हें आह्वान॥

मान्धाता अरू भामाशाह, समय पर दिखा गये उत्साह।
पा गये वे ऐसा सानिध्य, हो गया उनको वैभव वाह॥
सुदामा बनें सहज श्रीमान॥

आज भी वैसा ही है योग, सुलभ है आज दिव्य संयोग।
अरे युग परिवर्तन अभियान, दिव्य सत्ता का दिव्य प्रयोग॥
जोड़ दे महाप्राण से प्राण॥

सुनों नारियों भारत माता

सुनों नारियों भारत माता, तुमको रही पुकार।
भारत माँ का सुन्दर सपना, करो तुम्हीं साकार॥

उच्छृंखल हो रहे मनुज से, अब समाज है ऊबा।
आज देश का कोना कोना, है चिन्ता में डूबा।
अनुशासन से हीन हो रहा, सारा देश हमारा।
इस बिमारी ने अब तो है, रूप भयंकर धारा॥
अब अनुशासित सभ्य पीढ़ियाँ, तुम्हीं करो तैयार॥

तुम्हीं प्रथम गुरु हो अनुशासन, का नव पाठ पढ़ाओ।
अपने चिंतन से चरित्र से, नैतिक इन्हें बनाओ॥
भावी कर्णधार जो है वे, अगर सदाचारी हों।
तभी समस्याएँ समाज की, समाधान सारी हों॥
सदाचार है व्यक्ति राष्ट्र की, उन्नति का आधार॥

अपने सेवा भाव स्नेह से, वह परिवार बनाओ।
जिससे राष्ट्र भक्ति से प्रेरित, परिजन तुम दे जाओ॥
हाथ बटाओ निर्माणों में, निर्माणों की बेला।
राष्ट्र सृजन में लगा रहे क्यों, नर ही आज अकेला॥
अपने कर्त्तव्यों को जानों, पहिचानों अधिकार॥

बिना भावनाओं के कोई, प्रतिभा काम न आती।
नारी ही है जो पौरूष का, सोया भाग्य जगाती॥
आने वाले युग का अब तो, सृजन करेगी नारी।
भारत माता के मन्दिर की, भावों भरी पुजारी॥
क्योंकि वही है समता, ममता, करूणा की आगार॥

समय बड़ा बलवान रे

समय बड़ा बलवान रे, समय बड़ा बलवान।
एक दिन सबको जाना होगा, निर्धन या धनवान रे॥

है दुर्लभ यह मानव जीवन, बड़ा कठिन पाना मानव तन।
पाकर धन वैभव यौवन तू, मत करना अभिमान रे॥

जिस दिन आया तू धरती पर, काल चला हमजोली बनकर।
पता न किस पर धर बैठेगा, मूरख रूख पहचान रे॥

काम बहुत पर जीवन थोड़ा, उस पर मन का चंचल घोड़ा।
रूक जा प्राणी गाले प्रभु का, सुन्दर प्यारा नाम रे॥

सफल हुआ है उन्हीं का

सफल हुआ है उन्हीं का जीवन, जो तेरे चरणों में आ गये हैं।
उन्हीं की पूजा हुई है पूरण, जो तेरे चरणों में आ गये हैं॥

न पाया तुमको अमीर बनके, न पाया तुमको फकीर बनके।
उन्हीं को तेरा हुआ है दर्शन, जो तेरे चरणों में आ गये हैं॥

जहाँ भी जिसने तुम्हें पुकारा, वही दिया है तूने सहारा।
कटे हैं उनके दुःखो के बंधन, जो तेरे चरणों में आ गये हैं॥

शरण तुम्हारी जो जब भी आते, कृपा से तेरी वो मुक्ति पाते।
भक्ति का भण्डार उन्होंने पाया, जो तेरे चरणों में आ गये हैं॥

सृजन हम करें

सृजन हम करें नया संसार, बने फिर यही दिव्य परिवार।

भाई-भाई भरत राम सा, नित्य बढ़ायें प्रेम।
दशरथ जैसे पिता जगत में, नित्य निभाये नेम॥
कौशल्या माता की ममता, घर के आँगन बिखरे।
सीता की सुशीलता घर की, बहुओं में नित निखरे॥
बढ़े आपस में शुभ सहकार॥ बने फिर यही----- ॥

भारत भर के भव्य भवन हों, नन्दन वन से सुरभित।
घर के परिजन देव गुणों से, करें स्वयं की पूरित॥
सद्गृहस्थ के आदर्शों से, सबके मन हों मुखरित।
संस्कार जागें घर-घर में, ऋषि वाणी हो गुञ्जित॥
बनायें भावभरा व्यवहार॥ बने फिर यही------- ॥

स्वीकार करेगा तू एक दिन

स्वीकार करेगा तू एक दिन॥
सत्संगति अति प्यारी जग में, सतसंगति अति प्यारी॥
जीवन बोध कराती नर को, देती है सुख भारी॥

चौरासी के चक्कर काटे, तब आई यह बारी।
सत्संगी से कट जायेगी, यम की विपदा भारी॥

गणिका, गीद्ध, अजामिल तर गये, संग की महिमा न्यारी।
रत्नाकर का जीवन बदला, दी रामायण सुखकारी॥

सत्संगति तो पारसमणि है, देती नव उजियारी।
सत्संगति भव की संजीवनी है, यह अति गुणकारी॥

सोना नहीं तपा तो

सोना नहीं तपा तो, कुन्दन नहीं बनेगा।
बिन साधना के सार्थक, जीवन नहीं बनेगा॥

सोना खदान में है, माटी बना रहेगा।
कंचन सा मनुज जीवन, अनगढ़ पड़ा रहेगा॥
दोनों नहीं तपेंगे, कंचन नहीं बनेगा॥

व्यक्तित्व की महत्ता, तप ही निखारता है।
तप ही कषाय-कल्मष, बाहर निकालता है॥
बिन साधक परिष्कृत, चिंतन नहीं बनेगा॥

चिंतन चरित्र बनता, चिंतन सुधारिएगा।
तप, त्याग, तितीक्षा से, क्षमता निखारिएगा॥
सुरभित नहीं हुआ तो, चंदन नहीं बनेगा॥

जीवन की साधना कर, देवत्व को निखारें।
इस ही मनुज धरा को, हम स्वर्ग सा सँवारें॥
सुमनों सा हम न महकें, नन्दन नहीं बनेगा॥

मुक्तक-

यदि चाहो तुम जगहित, और आत्म उद्धार।
जीवन में तप साधना, कर लो अंगीकार॥

समय को साधने वाले

समय को साधने वाले, अमर इतिहास रचते हैं।
समय जो चूक जाते हैं, सदा ही हाथ मलते हैं॥

समय को साधने से अस्थियाँ भी बज्र बनती है।
समय की साध, वानर-देह में बजरंग ढलती है॥
उन्हें मंज़िल मिली है, जो समय के साथ चलते हैं॥

समय की दृष्टि में कोई नहीं छोटा, बड़ा होता।
समय को प्रिय वही जो, साथ में तनकर खड़ा होता॥
समय साधक गिलहरी, गिद्ध तक हो याद रखते हैं॥

समय ऐसा ही, फिर से अब युगों के बाद आया है।
उछलते प्राणवानों को, समय ने फिर बुलाया है॥
समय आवाज देकर, सुन रहा है कौन सुनते हैं॥

समय कटिबद्ध युगपीड़ा, पतन को दूर करने को।
समय प्रतिबद्ध है अब, मनुज का चिन्तन बदलने को॥
समय को देखना है, कौन अपने को बदलते हैं॥

व्यक्ति निर्माण से ही, नया युग-निर्माण होना है।
मनुज में ही पुनः, देवत्व का उत्थान होना है॥
सृजन का समय है, कितने सृजन की साध करते हैं॥

नए युग के सृजन का, यह समय जो चूक जायेंगे।
बताओ! किस तरह? निर्माण करके श्रेय पाएँगे॥
समय को साधने वाले, समय की शान बनते हैं॥

सारी जगती है जन्मभूमि

सारी जगती है जन्मभूमि, हर मानव अपना भाई है।
सारी दुनियाँ परिवार मान यह, ज्ञान मशाल जलाई है॥

हम अपने और पराये का, संकीर्ण भाव कब लाते हैं?
जन-जन की पीड़ा हरने का, अपना कर्त्तव्य निभाते हैं॥
पीड़ा तो पीड़ा होती है, क्या अपनी और पराई है॥

प्रभु को रहीम करुणा-निधि कह, उनकी स्तुतियाँ गाते हैं।
पर स्वार्थ, अहंता की खातिर, बहुतों का हृदय दुखाते हैं॥
हमदर्दी में रहते रहीम, करूणा में कृष्ण कन्हाई है॥

सम्पत्ति बनायी है प्रभु ने, हम तो बस ढेर लगाते हैं।
वह दाता है उदार निश्छल, हम शोषण क्यों अपनाते हैं॥
तृण भी दाता बन जीते हैं, क्यों कृपणता आयी है॥

प्रभु कहलाते है समदर्शी, हम ही तो भेद बढ़ाते हैं।
वह प्रगति चाहता है सभी का, हम क्यों अवरोध लगाते हैं॥
शबरी केवट को गले लगा, प्रभु ने भी गरिमा पायी है॥

सुनलो पुकार मानवता की, आवाज समय की पहचानों।
मानव हित में सच्चे दिल से, कुछ करने की मन में ठानों॥
यह युग ऋषि का संदेश है, इसमें हर तरह भलाई है॥

सच्ची राहें खोजना है

सच्ची राहें खोजना है यदि, तो साहस दिखलाना होगा।
छोड़ रूढ़ियाँ या मन मर्जी, सद्विवेक अपनाना होगा॥

बात सच है आज मानव, मनुजता से हट गया है।
भावना से शून्य मन है, क्रूरता से पट गया है॥
किन्तु मनुज के मन में फिर से, देव भाव विकसाना होगा॥

मनुजता का दर्द बाँटे, है कहीं यह खोजना है।
और उसको शक्ति देने, की बनानी योजना है॥
मानव में देवत्व जगाकर, स्वर्ग धरा पर लाना होगा॥

बुद्धि संगत गर कोई यदि, धर्म का पथ दिखलाता है।
और अनुशरण का भाव, मन में वह जगाता है॥
तो सहयोग जुटाकर उसको, मंजिल तक पहुँचाना होगा॥

बूँद मिलकर सिन्धु बनता, सत्य हम यह जानते हैं।
और कण मिलकर बने पर्वत, सभी यह जानते हैं॥
सज्जनता को जोड़ जोड़कर, सतयुग भू पर लाना होगा॥

अकेले गायन को भी प्रभावोत्पादक और लाभकारी बताया गया है।

–डॉ.मैकफेडेन

सुनो परावाणी गुरुवर की

सुनो परावाणी गुरुवर की, हे! 'परिव्राजक' भाई।
-ओ 'त्रैमासिक' भाई॥
'गौरव' टिका मिशन का तुम पर, लेना नहीं जँभाई॥

उपवन जिसे लगाया गुरु ने, शक्तिपीठ के खेत में।
-समाज रूपी के खेत में॥
रखना ध्यान बदल न जाये, कहीं वो सूखी रेत में॥
श्रम-सीकर से उसे सींचना, दे अपनी तरुणाई॥

तिलक लगाकर भेज रहीं है, तुम्हें भगवती माता।
करना तुम्हें वही है भाई, जो है उन्हें सुहाता॥
टूटे बन्धन लोभ-मोह के, ऐसे लो अंगड़ाई॥

पथ यह नहीं सुरभित सुमनों का, तुमने जो अपनाया।
करो समर्पण मन-बुद्धि का, गीता ज्ञान बताया॥
बढ़ा हुआ पग लौट पड़े ना, गुरु ने ज्योति जलाई॥

मातु भगवती के सपूत हो, इस गौरव का भान रहे।
कितना है उपकार गुरु का, अपने ऊपर ध्यान रहे॥
आज शपथ लो, तुम्हें समझनी है अब पीर पराई॥

मुक्तक-

सुनों! परिव्राजकों कर्त्तव्य पथ से मत विमुख होना।
जागरण केन्द्रों को जाकर-अरे जीवन्त कर देना।।

सूर्यदेव आप अनवरत

सूर्यदेव आप अनवरत प्रकाश दो हमें।
शक्ति का अजस्त्र स्त्रोत आसपास दो हमें॥

यज्ञ से प्रभो हमें सुबुद्धि प्राप्त हो सकें।
दुष्प्रवृत्ति दुष्टता पुनः न व्याप्त हो सकें॥
तेज का वही प्रखर विशद विभास दो हमें॥

प्रेरणा भरे पुनीत भव्य कर्म के लिये।
शक्ति भर सके विरोध की अधर्म के लिये॥
रोम-रोम में सुमन्यु का निवास दो हमें॥

एक पल कभी न आत्म-बल अदम्य घट सके।
रश्मि हम बनें प्रगाढ़ अन्धकार छुट सके॥
स्वर्ण भेर का वही सुखद सुहास दो हमें॥

व्यक्ति में चरित्र की पवित्रता प्रधान हो।
सन्त के लिये न दण्ड का कहीं विधान हो॥
हम सृजन सहाय हों वही विकास दो हमें॥

हम कुबुद्धि त्यागकर सहज सुमार्ग पर चलें।
हम तपे गले युगानुकुल रूप में ढलें॥
शब्द-शब्द में सरल विमल सुवास दो हमें॥

देखकर विभीषिका हृदय नहीं हतास हो।
पथ के लिये अनास्था न मृत्यु पाश हो॥
वह अटूट आस्था वही विश्वास दो हमें॥

समय की पुकार है

समय की पुकार है, चाहते धरा गगन।
बेहतर इन्सान और, सृजन शील संगठन॥

क्रूर ध्वंस हँस रहा, रो रही मनुष्यता।
पस्त हुई सज्जनता और मस्त दुष्टता॥
तोड़-फोड़ करने को, दौड़ सभी आते हैं।
करने में भले काम, डरते सकुचाते हैं॥
किससे है आशा जो रोक सके यह पतन॥

अब तो इन्सान करे ऐसी कुछ साधना।
जागे सुविचार और दिव्य प्रेम भावना॥
सुख-दुख सब बाँट सके, सबमें सहकार हो।
हर कुचक्र तोड़ सके, वह बल संचार हो॥
आये उज्वल भविष्य, कौन करे यह पतन॥

कोई हो जाति-पाँति, कोई धर्म सम्प्रदाय।
मनुज बने देवता, सब करें यही उपाय॥
फिर नव निर्माण हेतु सज्जन हो संगठित।
तब सधे समाज हित, राष्ट्रहित, जनहित॥
न्याय पर रहे अडिग, अनीति का करे दहन॥

जागे सहकार, और शौर्य श्रेष्ठ वीरों का।
पायें सब संरक्षण ऋषियों का पीरों का॥
अपनायें ईश्वरीय शक्ति और योजना।
भेदभाव भूल, करे सभी सृजन साधना॥
जीवन हो धन्य करें स्वर्ग का यहीं सृजन॥

सत्संगति अति प्यारी

जगत में सत्संगति अति प्यारी।
जीवन बोध कराती नर को, देती है सुख भारी॥

चौरासी के चक्कर काटे, तब आई यह बारी।
सत्संगति से कट जायेगी, यम की विपदा भारी॥

गणिका, गिद्ध अजामिल तर गये, संग की महिमा न्यारी।
रत्नाकर का जीवन बदला, दी रामायण सुख कारी॥

सत्संगति तो पारसमणि है, देती नव उजियारी।
सत्संगति भव की संजिवनी है, यह अति गुणकारी॥

सत्संग की सुधा

सत्संग की सुधा से, जीवन सरस बनेगा।
सत्संग की सुधा पी, मानव का यश बढ़ेगा॥

सत्संग में डूबे तुलसी, सदियों से चमक रहे हैं।
मीरा, कबीर, नानक, सत्संग से महक रहे हैं॥
सत्संग से ही हरि का, अनुदान भी मिलेगा॥

सत्संग का ये रस जब, आ जाता जिन्दगी में।
लग जाता है ये तन मन, तब प्रभु की बन्दगी में॥
सत्संग से ही मन का, श्रद्धा सुमन खिलेगा॥

सुनो! यह छात्र जीवन

सुनो! यह छात्र जीवन, ज्ञान पाने का समय है।
और व्यक्तित्व को उज्ज्वल बनाने का समय है॥

अभी तक खेलने, खाने, मजे करने जुटे थे।
वही करते रहे जो भाव भी मन में उठे थे॥
नहीं यह सोचने पाये कि जीवन लक्ष्य क्या है?
मनुज जीवन मिला है तो अरे! उद्देश्य क्या है?
अरे! यह सप्त शक्ति को जगाने का समय है॥

नहीं है अन्य शिक्षण संस्थाओं सा यहाँ कुछ।
यहाँ तो देव संस्कृति से परिष्कृत है सभी कुछ॥
ये गुरुकुल युगऋषि की कल्पना साकार करता।
जहाँ पर साधना से सिद्धियों का लाभ मिलता॥
यहाँ से दिव्यता, आलोक पाने का समय है॥

करें! होकर समर्पित ज्ञान अर्जन साधना को।
और तप, त्याग, संयम, शील की आराधना को॥
करें उत्कृष्टता, विकसित, विचारों भावना में।
जगाएँ लोकमंगल भावना संवेदना में॥
चरित्र, चिन्तन उठाने को, तपाने का समय है॥

तुम्हीं पर देव संस्कृति की अरे! आँखे लगी है।
नए निर्माण की संभावनाएँ भी टिकी है॥
यहाँ से ज्ञान का भण्डार लेकर के निकलना।
स्वयं के आचरण में दिव्यता लेकर उभरना॥
विवेकानन्द सी गरिमा दिखाने का समय है॥

सबसे करना प्रेम जग में

सबसे करना प्रेम जगत में, यही धर्म सच्चा है।

जो हैं जगत में हीन पतित अति, उनको गले लगाओ।
जो हैं दीन दुःखी या पीड़ित, उनको धीर बँधाओ॥
जिनका कोई नहीं जगत में, उनको जा अपनाओ।
जो रोते हैं उन्हें हँसाओ, सबसे प्रेम जगाओ॥
सब में प्रभु का रूप निहारो, यही भाव अच्छा है॥

सबसे हिलमिल रहना सीखो, करो न द्वेष किसी से।
सबसे मीठी बोली बोलो, होगा भला इसी से॥
जो अनाथ हैं उन्हें सहारा देना बड़ी खुशी से।
तुच्छ न समझो कभी किसी को,रखना स्नेह सभी से॥
गिरे हुए हैं उन्हें उठाओ, यही मार्ग अच्छा है॥

उस प्रभु के ही सब बालक, सब हैं उसके प्यारे।
अहंकार से बने हुए हैं, हम सब न्यारे न्यारे॥
हिन्दू, मुस्लिम, जैन, पारसी, बौद्ध, सिक्ख, ईसाई।
सब भारत माता के जाये, सब हैं भाई–भाई॥
फिर भाई–भाई आपस में, लड़ना क्या अच्छा है॥

जहाँ निराशा उदासीनता, का ही गहन अँधेरा।
आलम जड़ता निष्क्रियता का, जहाँ पड़ा हो घेरा॥
वहाँ ज्ञान का दीप जलाकर, नव प्रकाश फैलाओ।
सारा जग आनन्द मगन हो, ऐसा राग सुनाओ॥
सबको सुख पहुँचाना केवल, यही कर्म अच्छा है॥

स्वर्ग लोक के गीत

स्वर्ग लोक के गीत नहीं अब, इस धरती पर गाना है।
हमको तो अब अपनी ही, धरती को स्वर्ग बनाना है॥

हम सबकी माँ है ये धरती, यही उदर हम सबका भरती।
ईश रूप है पिता परिश्रम, भाग्य एक को कल्पित श्रम॥
आलस और नींद में अब तो, व्यर्थ न समय गंवाना है॥

सबसे मीठी बोली बोलें, हृदय कुञ्ज के सम्पुट खोलें।
अपना सुख सबका सुख समझे,सबका दु:ख अपना दु:ख समझें॥
त्याग और सेवा संयम के, पथ पर आगे कदम बढ़ाना है॥

जन जन का सम्बन्ध पुराना, सबको मानव धर्म निभाना।
आपस में हिल मिल कर रहना, सदा सत्य सम्बल का गहना॥
दुष्प्रवृत्तियों को तज अपना, जीवन सफल बनाना है॥

सुबह का बचपन हँसते देखा

सुबह का बचपन हँसते देखा, और दोपहर जवानी।
शाम बुढ़ापा रोते देखा, रात को खत्म कहानी॥

बचपन बेपरवाह है जिसमें, खेल कूद के मेले।
हाय जवानी अंधी होकर, प्यार की आग में खेले॥
वृद्धावस्था! तन काँपे जब, आवे याद पुरानी॥

इस जीवन में मूर्ख मन, आशा के महल बनाये।
धरा-धराया रह जाये, जब अंत बुलावा आये॥
पड़ जाती है आशाओं की, चिता पे आग लगाई॥

झूठी जग की माया है, और झूठा जग का सपना।
जिन पर मान तू करता है, वह कोई नहीं है अपना॥
गम क्यों करता है जीवन का, दुनियाँ आनी जानी॥

सावधान युग बदल रहा है

सावधान युग बदल रहा है, गूँजी नई ऋचायें।
स्वयं नया इतिहास लिखेंगी, भारत की ललनायें॥

रमणी भोग्या और कामिनी, रही बहुत दिन नारी।
किन्तु आज फिर दहक उठी है, जौहर की चिनगारी॥
बदलेगी परिवेश विश्व का, जागृत अग्नि शिखायें॥

देख रहे निर्वसन द्रोपदी, मंच गली चौराहे
भटक रहे अनगिनते भक्षक, नर पिशाच अनचाहे॥
निष्प्रभ किन्तु भीम अर्जुन, सब कुंठित हुई भुजायें॥

सोने की कारा में बन्दी, सत्य न्याय की सीता।
असुर राज नर मेध रचाये, धर प्रोक्षणी प्रणीता॥
रामदूत हो गये अगोचर, पीड़ा किसे सुनायें॥

रक्षक जहाँ कन्हैया बनकर, रटते राधे राधे।
वहाँ पद्मिनी किसके कर में, पावन राखी बाँधे॥
मंदिर में भी पेट प्रणय से, पनप रही कुण्ठायें॥

जाग उठी है मातृशक्ति अब, मुद्रा सौम्य सरल है।
किन्तु छिपी उसके खप्पर में,प्रलय कर हलचल है॥
जिसे देख कम्पित हो उठते, त्रिभुवन दशों दिशायें॥

सदा मन हमारा रहे

सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा,
यही कामना है यही याचना है।
चरण में तुम्हारे समर्पित रहें हम,
यही कल्पना है, यही भावना है॥

मिला प्यार निर्मल हमें तो तुम्हारा,
भले ही विमुख हो तुम्हीं से रहे हम।
तुम्हीं हो हमारे हितैषी सदा से,
मगर प्यार तुमसे भी कर ना सके हम॥
हमारे हृदय में जगे प्रेम निश्छल,
अनुष्ठान हमको यही ठानना है॥

तुम्हारी निगाहें रहीं नित्य हम पर,
मगर हम तुम्हें क्यों नहीं देख पाये।
कला जिन्दगी की सिखाते रहे तुम,
मगर हम उसे क्यों नहीं सीख पाये॥
चलें किस तरह हम तुम्हारी नज़र में,
समझना यही है यही जानना है॥

हमें मान पद यश सताने न पाये,
कि पैसे की झिलमिल लुभाने न पाये।
हमें दुष्ट-दुर्गुण डराने न पायें,
कि श्रद्धा हमारी डिगाने न पायें॥
तुम्हीं नाव हो प्रभु तुम्हीं हो खिवैया,
यही सत्य हमको तो पहचानना है॥

मिले दृष्टि ऐसी तुम्हें जो निहारें,
सधे स्वर वही बस तुम्हें जो पुकारे।
जगे बुद्धि वही बस तुम्हें जो विचारे,
बहे आँख में जल चरण जो पखारे॥
कि जो भी है अपना बनें साधना है,
हमारे लिए प्रिय यही साधना है॥

सूर्य की पहली किरण

सूर्य की पहली किरण, दीप अन्तर का जलाकर।
फिर मिलो सबसे, सभी के दीप में वह ज्योति ढालो॥

लग रहा है स्नेह हमारे, दीपकों का चुक गया है।
प्यार का चिर स्रोत ही, जैसे कहीं पर रूक गया है॥
प्रेम की गंगा बनो, बाती सिरे तक जल चुकी है।
विश्व मानव का हृदय, मरूभूमि होने से बचालो॥

आएगा आलोक तो फिर, कमल आस्था के खिलेंगे।
त्याग कर दूरी सभी, विश्वास के नभ में मिलेंगे॥
बहुत ही प्यारा मधुर, आकाश मानव प्रेम का है।
रोशनी के अब इसे, दीपावली सा जगमगा लो॥

बीज बो दो रोशनी के, काम कल आते रहेंगे।
फूल कल के प्राण, ऊर्जा चेतना पाते रहेंगे॥
बाँटकर जीवन सुनहरा, यों भविष्यत के चमन को।
प्रिय! मनुज तन धारने का, फर्ज़ तुम अपना निभालो॥

सागर से भी गहरा वन्दे

सागर से भी गहरा वन्दे, गुरुदेव का प्यार है।
देख लगाकर गोता इसमें, तेरा बेड़ा पार है॥

भवसागर में एक दिन तेरी, जीवन नैया डूबेगी।
खेते-खेते इक दिन तो, पतवार भी तेरी छूटेगी॥
जायेगा उस पार तू कैसे, चारो ओर अंधकार है॥

सौंप दो नैया गुरुदेव को, सबको पार लगा देंगे।
पैर पकड़ ले जाकर के तू, सोया भाग्य जगा देंगे॥
पापी से भी पापी जन को, करते न इन्कार है॥

संत समागम हरि कथा भी, गुरु कृपा से पाओगे।
खुद आयेंगे गोविन्द गिरधर, गुरु का आशीष पाओगे॥
वन्दे बन गुरु कृपा से तेरी, ज़िन्दगी बेकार है॥

मुक्तक-
जो नित नर सुमिरन करे, सुख अपार वह पाय।
लगन लगे गुरु नाम की, भवसागर तर जाय॥

सबमें अंश तुम्हारा

सबमें अंश तुम्हारा भगवन, सबमें अंश तुम्हारा भगवन॥

जब देखा उगते सूरज को, अन्न सलिल देती इस रज को।
कीचड़ में खिलते पंकज को, गन्ध उड़ाते इस मलयज को॥
मैंन तुम्हें विचारा भगवन्, सबमें अंश तुम्हारा भगवन॥

इठलाते हँसते बचपन में, किसी दुःखी के विकल रुदन में।
उगते पौधों में उपवन में, इस जगती के हर कण-कण में॥
मैंने तुम्हें निहारा भगवन्, सबमें अंश तुम्हारा भगवन॥

मानवता को जब नर सोये, कलह बीज आपस में बोये।
व्यर्थ उमर के बोझे ढोये, बेकल प्राण व्यथित हो रोये॥
मैंने तुम्हें पुकारा भगवन्, सबमें अंश तुम्हारा भगवन॥

पिता पुत्र के से ये नाते, टूट भला वो कैसे पाते।
तुम आये दुःख द्वन्द्व मिटाते, सुख के अंदर फूल खिलाते॥
शाश्वत् तुम्हीं सहारा भगवन्, सबमें अंश तुम्हारा भगवन॥

संगीत समस्त विज्ञानों का मूलाधार है तथा ईश्वर के द्वारा इसका निर्माण विश्व के वर्तमान विसंवादी प्रवृत्तियों के निराकरण के लिए हुआ है।

-प्लेटो

सभी जन्म से शुद्र किन्तु

सभी जन्म से शुद्र किन्तु, द्विज बन जाते संस्कार से।
संस्कारित होते हैं मानव, पावन पुनीत विचार से॥

भारतीय के संस्कृति को, संस्कारों का पूरा ध्यान है।
इसीलिए सोलह, संस्कारों का कर दिया विधान है॥
गर्भाधान क्षणों से लेकर मरणोंत्तर जीवन पर अंत।
संस्कारों से गूंथ गये है, जीवन को ऋषि मुनि सतसंग॥
भवन व्यक्ति का ऊँचा उठता, है सुदृढ़ आधार से॥

माँ 'मदालसा' ने पुत्रों पर, संस्कार जो डाले थे।
उनसे दैवी गुण संस्कारों, द्वारा गये उछाले थे॥
मनचाहा निर्माण कर लिया, यूँ अपनी सन्तानों का।
धर्मतंत्र वे कल्पवृक्ष है, फल देते मनुहार से॥

वन में रहकर भी 'लव-कुश' को, माँ से वे संस्कार मिले।
राजतंत्र से दूर रहे पर, विरोचित उपहार मिले॥
कुम्भकार बनकर सीता ने, उनका था निर्माण किया।
और बाल्मीकि आश्रम ने, उनका श्रेष्ठ संस्कार किया॥
इसी साध ने उन्हें सँवारा, रघुकुल के श्रृंगार से॥

अब भी नहीं सम्भाल सके तो, कल हम ही पछतायेंगे।
संस्कृति, भाषा और धर्म, इतिहास सभी मिट जायेंगे॥
त्यागवाद के बिना मानवी, संस्कृति फिर विधवा होगी।
बिन आध्यात्मिक साम्यवाद के, वह न अरे! सधवा होगी॥
क्या न हमें पीड़ा होती है, उसकी करूण पुकार से॥

समता मैत्री भाई चारा

समता मैत्री भाई चारा, है जिनका आधार।
प्यार बाँटता है दुनियाँ को, गायत्री परिवार॥
अणुव्रत जलती जिसके दिल में, प्यार की ज्योति।
निस्वार्थ लुटाता माँ की तरह, जो ममता के मोती॥
जिसके लिए है कुटुम्ब समान, ये सारा संसार॥
नित्य आराधना,मौन साधना, जो मनुष्य करता है।
दुनियाँ के दुःख दूर हो बस, यही कामना करता है॥
धर्म ध्वजा को हाथ में, वेदो का करता प्रचार॥
समदर्शी और त्याग तपस्वी ये है इंसा।
दया भाव और परमार्थ ही, जिसकी है पहचान॥
निज स्वार्थ ही कामना है, जिसके लिए बेकार॥

सारे जग के जीवन प्राण

सारे जग के जीवन प्राण, यज्ञ पिता है श्री भगवान।
करें सदा सबका कल्याण, ज्योति स्वरूप यज्ञ भगवान॥
कष्ट निवारण करने वाले, रोग शोक दुःख हरने वाले।
तन-मन निर्मल करने वाले, ज्ञान सुधा बरसाने वाले॥
करते हैं सद्बुद्धि प्रदान, देते सबको उत्तम ज्ञान॥
नित्य प्रकाश करना सिखलाते, अंधकार हरना सिखलाते।
सबका हित करना सिखलाते, नित्य ऊपर उठना सिखलाते॥
करते नव जीवन निर्माण, देते सबको शक्ति महान॥
आओ यज्ञ कर्म अपनायें, यज्ञ पिता को शीश नवायें।
घर-घर में यह ज्योति जलायें, जन-जन में यह बात बतायें॥
यही आज की क्रांति महान, इससे मानव का उत्थान॥

स्वीकारिये शुभ कामनायें

स्वीकारिए शुभ कामनायें, शुभ विवाह पर।
मन धारिए सद्भावनायें, शुभ विवाह पर॥

साक्षी में शुभ विवाह के, भगवान यज्ञ है।
ऊँचे उठो की प्रेरणा, भगवान यज्ञ है॥
कर लिजिए कुछ धारणायें, शुभ विवाह पर॥

दो व्यक्ति मिलकर शक्ति, हो रहे हैं आज से।
दो तन व एक आत्मा, अभिव्यक्ति आज से॥
जीवन की करना साधनाएँ, शुभ विवाह पर॥

मिल करके बनाना है, तपोवन गृहस्थ को।
सद्भावनाओं से महकता, उपवन गृहस्थ को॥
आदर्श की स्थापनाएँ, शुभ विवाह पर॥

परिवार बीच प्रेम का, वातावरण मिले।
संयम व शील दो सुमन का युग्म ही खिले॥
उभरे नहीं दुर्भावना, इनके मन जीवन भर॥

माँ भगवती के स्नेह का, आँचल सदा रहे।
गुरुदेव के संकेत का, सम्बल सदा रहे॥
हो स्वर्ग जैसी सर्जनाएँ, शुभ विवाह पर॥

सुनों-सुनों बहिन-भाईयों

सुनों–सुनों बहिन भाईयों, हम सब के हित की बातें हैं।
गुरुवर की अनुकम्पा से यह, सबको आज सुनाते हैं॥

पूर्व तपस्या के बल पर, मानव तन सब पाते हैं।
अज्ञानी बन अहंकार से, जीवन व्यर्थ गँवाते हैं॥
समझ न पाए कर्त्तव्यों को, आज उसे समझाते हैं॥

धन–दौलत के पिछे हम, जो निशिदिन दौड़ लगाते हैं।
अन्त समय में अंश मात्र भी, साथ नहीं ले जाते हैं॥
फिर क्यों हम दाता के हक को, देने में सकुचाते हैं॥

हिंसा करना महापाप है, सभी धर्म बतलाते हैं।
मछली–मांस और मंदिरा को, गिरे हुए नर खाते हैं॥
मानव से दानव बन करके, नाहक कलह मचाते हैं॥

पाप और हिंसा के कारण, प्रलय भयंकर आया है।
युग परिवर्तन निश्चित होगा, महाकाल की माया है॥
इसीलिए हम आप सभी को, गुरु की राह दिखाते हैं॥

सुधरे हमारा परिवार

सुधरे हमारा परिवार, परिवार मेरी बहनों।
करना है जग का सुधार, सुधार मेरी बहनों॥

घर के बच्चे कहना माने, निज कर्त्तव्य सभी पहचानें।
होगा तभी उद्धार, उद्धार मेरी बहनों॥

कोई न होवे नशे का आदी, होवे नहीं घर की बरबादी।
तुमसे ही होगा सुधार, सुधार मेरी बहनों॥

सबको अच्छी राह चलाओ, भारतीय संस्कार जगाओ।
पीढ़ी को दो तुम संवार, सँवार मेरी बहनों॥

नारी ने ही सबको ढाला, अवतारों तक को है पाला।
इनसे ही चलता संसार, संसार मेरी बहनों॥

सत्‌शिव सुन्दर भावों की

सत्‌शिव सुन्दर भावों की हम, शांति क्रांति चिनगारियाँ।
कर देंगी उद्धार देश का, भारत की हम नारियाँ॥

हम सुधरेगीं जग सुधरेगा, यही हमारी कामना।
जड़-चेतन में भर देंगी हम, धर्म-कर्म की भावना॥
अनय अनैतिकता के बन्धन, तोड़ेंगी हम शान से॥
संकट में भिड़ जायेंगी हम, आँधी से तुफान से॥
प्राँतीय-प्रभंजन थम जाता है, चढ़ जाती जब त्यौरियाँ॥

नई रोशनी लायेंगी हम, लायेंगी आकाश नया।
मूढ़-मान्यताएँ बदलेंगी, भर देगी विश्वास नया॥
युग-कुरीतियों में रख देंगी, हम भीषण अंगार नया।
त्याग-तपस्या से कर देंगी, हम भीषण श्रृंगार नया॥
युग निर्माण योजना की हम, करती हैं तैयारियाँ॥

सद्ज्ञान की खान हो

सद्ज्ञान की खान हो माँ, कुछ ज्ञान हमें दे दो।
शरणागत आपके हैं माँ, अनुदान हमें दे दो॥

अनुदान तुम्हारे माँ, जनहित में लगा दें हम।
सोये हुए मानव के, प्राणों को जगा दें हम॥
परपीर मिटाने का, अरमान हमें दे दो॥

संसार के वैभव की नहीं, कामना हो मन में।
सत्कर्म सदाशय की, बस भावना हो मन में॥
अनुचित व उचित पथ की, पहचान हमें दे दो॥

मिट जाए मनुज मुख से, भय चिन्ता की रेखाएँ।
आँखों से किसी के भी, मोती न बिखर जाएँ॥
उल्लास उमँगों की, मुस्कान हमें दे दो॥

गुरुवर ने जो दिखलाया, उस राह पे चल दें हम।
बदलेगी फ़िजा सारी, खुद को जो बदल दें हम॥
दुष्प्रवृत्तियाँ दूर करें हम, वह प्राण हमें दे दो॥

संगीत विश्व की अणुरेणु में परिव्याप्त है।
(ग्रीक बिचारक पायथागोरस)

संस्कार की परम्परा

संस्कार की परम्परा, जिस दिन से उठ गई।
उस दिन से ही नर रत्न की, खदान लुट गई॥

होते हैं जन्म से तो सभी क्षुद्र वृत्ति के।
संस्कार बनाते हैं उन्हें सत्प्रवृत्ति के॥
संस्कार की भट्टियों में जो तपे थे।
संस्कार दिव्य उनमें निरन्तर ही पके थे॥
गहरी परत कषाय कल्मषों की छा गई॥

संस्कार थे सोलह शुभ, निर्माण के लिए।
ये सीढ़ियाँ थी व्यक्ति के उत्थान के लिए॥
जो शक्तियाँ सोई, संस्कार जगाते।
उत्कृष्ट प्रेरणायें भी, संस्कार उठाते॥
संस्कार घट गये तो प्रेरणा भी घट गई॥

संस्कारों के घर-घर में केन्द्र बनायें।
परिवार के सदस्यों के संस्कार करायें॥
घर-घर में हो उपासना, की पुण्य स्थली।
करके उपासना जहाँ संतान हो भली॥
क्यों प्रेरणा के स्रोत से ही, दृष्टि हट गई॥

प्रहलाद, ध्रुव, लवकुश, संस्कार ने दिये।
माता मदालसा की याद, है नहीं किन्हें॥
संस्कार ने ऐसे भी चमत्कार कर दिये।
सम्राट चन्द्रगुप्त शिवा, छत्रपति किये॥
संस्कार बिना श्रेष्ठ संस्कृति ही मिट गई॥

सब भाव पूर्ण आज

सब भाव पूर्ण आज, गुरु को नमन् करें।
अब आ गया समय, समग्र समर्पण करें॥

हर व्यक्ति असंयम से, दुर्व्यसन से ग्रसित है।
परिवार कुसंस्कार, कुरीति से त्रसित है॥
आडम्बरों अज्ञान के, असुरों से रण करें॥

है दुष्प्रवृतियों अनीतियों का दुश्चलन।
अश्लीलतायें कर रही, नारी पे आक्रमण॥
खर्चीली शादी दहेजों, का मद दमन करें॥

अब छटपटा उठा है, परमहंस का हृदय।
अनिवार्य हो गया, विवेकानंद का उदय॥
अविलम्ब देव संस्कृति, का उन्नयन करें॥

शिष्यों का निभा पाये न, दायित्व हम अगर।
तड़पेगा वेदनाओं से, गुरुदेव का ज़िगर॥
है क्या शिवा समर्थ की, पीड़ा हरण करें॥

अध्यात्म आत्मशक्ति का, संबल लिये हुए।
गुरु की विचार क्रांति का, बल है लिये हुए॥
गुरु साक्षी में सप्तक्रांतियों, का व्रत वरण करें॥

स्वार्थ का ही सगा है

स्वार्थ का ही सगा है, जमाना प्रभो।
आप भी मत मुझे, भूल जाना प्रभो॥

नाथ जिनके लिये जिन्दगी काट दी,
नाथ उनने भी दो टुक बात की।
कौन सुनता है, ग़म का तराना प्रभो॥

खींचता था जिन्हें रूप यौवन कभी,
पास जब सम्पदा थी सगे थे सभी।
लुट गया जिन्दगी का खजाना प्रभो॥

मन मलिन हैं बहुत मानता ही नहीं,
और अच्छा बुरा जानता ही नहीं।
कब कहाँ पर छले, क्या ठिकाना प्रभो॥

आज तक बहुत अपने लिये जी लिया,
विष विषय वासना का बहुत पी लिया।
लोक सेवा-सुधा अब पिलाना प्रभो॥

आपकी शान का है सभी को पता,
और सब जानते नाथ मेरी खता।
मत मुझे,शान को तो निभाना प्रभो॥

साधक वह है जिसके

साधक वह है जिसके द्वारा, खुद को ही साधा जाता है।
साधक का सतत् साधना से, जीवन भर का ही नाता है॥

चिन्तन की मनोभूमि में ही, अँकुरित विचार हुआ करते।
जैसे विचार अँकुरित हुए, वैसे आचार हुआ करते॥
चिन्तन ही तो चरित्र बनकर, साधक व्यक्तित्व बनाता है॥

साधक चिन्तन का परिष्कार, सबसे पहले करना होगा।
साधना और स्वाध्याय नित्य हो, यही ध्यान धरना होगा॥
सद्गुरु के सद्चिन्तन द्वारा, सद्ज्ञान सहज ही पाता है॥

संयम सेवा द्वारा साधक, अपने चरित्र को गढ़ता है।
गुरु के निर्देशों का पालन, करता सद्पथ पर बढ़ता है॥
चिन्तन-चरित्र का परिष्कार, साधक को सिद्धि दिलाता है॥

सादा जीवन, ऊँचे विचार, जीवन साधक का परिचय है।
जनसेवा की ही साधों से, उसकी साँसों का परिचय है॥
उसके चिन्तन चरित्र द्वारा, हर व्यक्ति प्रेरणा पाता है॥

वह सहज द्रवित हो जाता है, दीन-दुखियों के क्रन्दन से।
मानव के पतन-पराभव से, मानवता के उत्पीड़न से॥
वह धर्म, राष्ट्र संस्कृति, समाज पर, जीवन सुमन चढ़ाता है॥

गायत्री की साधना अरे! साधक का सहजशिल्प करती।
होकर प्रसन्न माँ गायत्री, साधक का चरित्रकल्प करती॥
साधक की प्रज्ञा अरे! वेदमाता का ध्यान जगाता है॥

सद्गुरु! युग! ऋषि है

सदगुरु! युग ऋषि! है नमन आपको।
यह सदी कर रही, स्मरण आपको।।

आपने तो इसे धन्य ही कर दिया।
और उल्टा उलट अन्य ही कर दिया।।
याद करता रहेगा भुवन आपको।।

क्रांतियों के लिए, आँधियों सा चलो।
भ्रांतियों को सजग रौंदते पग-तले।।
रास आया नहीं था, पतन आपको।।

जन्म की यह शती, प्रेरणा बन गई।
अनुचरों के लिए चेतना बन गई।।
कर रहे भेद श्रद्धा-सुमन आपको।।

नीव के पत्थरों सा पकाया हमें।
और निर्माण क्रम में लगाया हमें।।
है समर्पित यह तन और मन आपको।।

नव सृजन के लिए ईंट, गारा बनें।
और उज्ज्वल भविष्य का सितारा बनें।।
पूर्ण हो जो दिए हैं, वचन आपको।।

आप में अवतरित तो महाकाल हैं।
रूद्र से कम नहीं, नाथ पग-ताल हैं।।
युग बदलना कहाँ है कठिन आपको।।

साधना से शक्ति का

साधना से शक्ति का, अर्जन करें।
शोध तन,मन,प्राण परिमार्जन करें॥

साधना से साधना है इन्द्रियाँ।
और मन,चित्त,बुद्धि की दुष्प्रवृत्तियाँ॥
दुष्टता,दुर्भाव का वर्जन करें॥

साधना ही सिद्धियों का मंत्र है।
साधना जीवन कला का तंत्र है॥
आचरण के शिल्प से चित्रण करें॥

'साधना' तप त्याग,सेवा की विधा।
भोगवादी वृत्तियों को अलविदा॥
'लोकसेवा' साँस की धड़कन करें॥

स्नेह संवेदन जगाती साधना।
प्यार की दुनियाँ बसाती साधना॥
साधना से स्वर्ग का सर्जन करें॥

समय है 'युग संधि' का चुकें नहीं।
श्रेय की उपलब्धि का चुकें नहीं॥
इष्ट को श्रद्धा सुमन अर्पण करें॥

सबसे अच्छा सबसे प्यारा

सबसे अच्छा सबसे प्यारा, गायत्री परिवार हमारा॥

जब तक तन में प्राण रहेंगे, इसकी हार न होने देंगे।
प्राणों से भी अधिक दुलारा, गायत्री परिवार हमारा॥

आपस में सब हिलमिल जावें, भूले भटके को गले लगावें।
बहे-प्रेम की निर्मल धारा, गायत्री परिवार हमारा॥

घर-घर में हम यज्ञ रचावें, गायत्री गुण-गान सुनावें।
गूँजे अखण्ड ज्योति का नारा, गायत्री परिवार हमारा॥

नगर-नगर औ डगर-डगर में, गायत्री ध्वज लहरें नभ में।
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा, गायत्री परिवार हमारा॥

बोलो माँ गायत्री की जय, यज्ञ पिता का यश और अक्षय।
श्रीराम का हमें सहारा, गायत्री परिवार हमारा॥

संस्कार शुभ अन्नप्राशन

संस्कार शुभ अन्नप्राशन का यह, संदेश सुनाता है।
जैसा खाते अन्न हमारा, मन वैसा बन जाता है॥

प्रथम बार जब अभिमंत्रित कर, शिशु को खीर चटाते हैं।
खिल उठता मानस शिशु का, शुभ संस्कार मिल जाते हैं॥
तुलसी दल के मिश्रण से तन-मन सुन्दर बन जाता है॥

मिलता अगर आहार सात्विक, संतोष गुणी बालक होते हैं।
अगर तामसी भोजन मिलता, निज कर्मों पर रोते हैं॥
शाकाहार सुपाच्य कर, आयुर्वेद बन जाता है॥

वातावरण यज्ञमय शिशु के, भाव शुद्ध कर देता है।
यज्ञदेव के अनुदानों से, शिशु का झोली भरता है॥
सत्कर्मों की सत्प्रेरणा से, जीवन भी खिल जाता है॥

स्वागतम्-स्वागतम्

स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्।
स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्॥

कैसा पावन सुहावन समय आज है।
द्वार आये अतिथियों का सत्कार है॥
धन्य है भूमि ये, धन्य है आज हम॥

आप आये हमें एक निधि मिल गयी।
दिव्य दर्शन से दिल की कली खिल गयी॥
नेक रखिये कृपा, बस यही एक नम॥

आप आये यहाँ पर, बहार आ गयी।
स्नेह रस धार की, एक ज्वार आ गयी॥
हर दिशा है प्रफुल्लित, सभी है मगन॥

है न इस योग्य, स्वागत करें आपका।
पर अहो भाग्य है, स्नेह की आपका॥
आप स्वीकार लें, स्नेह की ये सुमन॥

कब से आँखें बिछाए, हुए हम सभी।
कब से पलकें सजाए, हुए हम सभी॥
वह समय आज, सौभाग्य से पा ली हम॥

समय विषम है डगर

समय विषम है डगर कठिन है, जाना भी उस पार।
छोड़ चलो यह रीत पुरानी, राह नई तैयार॥

सोच पुरातन लेकर हमने, जीवन बहुत बिताया।
उलझे रहे प्रपंचों में हम, समय अमूल्य गँवाया॥
शंख बज चुका महाक्रान्ति का, आगे आना होगा।
अवसर आया है न चूकना, अब हमको इस बार है॥

कुरुक्षेत्र का अंत बिना, अर्जुन भी ऐसा होता।
नहीं नील-नल होते फिर, रावण का वध होता॥
काम प्रभु का नाम तुम्हारा, होगा निश्चित जानो।
तुमको यह अनुबन्ध युद्ध में, करना अब स्वीकार है॥

कैसा हो संघर्ष विजय तो, सच की होती आई।
अंत नहीं परिवर्तित होगा, कितनी बढ़े बुराई॥
समय नहीं रुक पाता है, गति हमें बढ़ानी होगी।
अभी नहीं तो कभी नहीं, बस युग की यही पुकार है॥

युग की जो हो माँग वही, अध्याय लिखे जाते हैं।
युद्धों में नव नियम नए, संग्राम रचे जाते हैं॥
नए समय की परिभाषा है, रंग बदलना होगा।
ओढ़ चलो चादर वासन्ती, गुरुवर का त्यौहार है॥

हमें सद्गुणों का खजाना

हमें सद्गुणों का खजाना मिला है।
मगर व्यर्थ में ही लुटाना मना है॥

परिवार है सबसे बड़ी योगशाला।
वो पाता है गौरव परिवार वाला॥
गुण कर्म स्वभाव होते हैं निर्मित।
नर रत्न निकले, यहीं से अपरिमित॥
परिवार है पुष्ट व्यायामशाला, इसे दीन दुर्बल बनाना मना है॥

मनुज को मिला जो भी, वह न किसी को।
अरे यह खजाना, दिया है उसी को॥
किसी और के पास यह तन नहीं है।
किसी और के पास यह मन नहीं है॥
धरोहर निरर्थक गँवाना मना है, इसे दीन दुर्बल बनाना मना है॥

इन्हें संयमित कर, बने देवता हम।
करे दूर इनसे, दुःख की व्यथा हम॥
न गरिमा गिरा कर, जियें हम जगत में।
करे लोक मंगल, लगे लोक हित में॥
असंयम भरे पग उठाना मना है, मगर व्यर्थ में ही लुटाना मना है॥

हे माँ ऐसी आत्मशक्ति दो

हे माँ ऐसी आत्मशक्ति दो, दुखियों का दुःख दूर करें।
प्राणी मात्र के जन-जीवन में, करूणा के मृदुभाव भरें॥

श्रम से कभी नहीं मुख मोड़ें, दीन-हीन का साथ न छोड़ें।
पर दुःख को अपना दुख जानें, सद्गुरु की महिमा पहिचानें॥
सुर-दुर्लभ मानव तन पाकर, पिछड़ों का उपकार करें॥

शाश्वत ज्ञानयज्ञ हो घर-घर, उर में बहे नेह का निर्झर।
विकसित हो दैवी क्षमतायें, रहे न दायें बायें॥
मानव रिक्त हृदय अविरल, निर्मल निश्छल प्यार भरें॥

त्याग, तपस्या मय हो जीवन, परहित में अर्पित हो तन-मन।
सुख समाधि की रहे न इच्छा, मागें नहीं स्वार्थ की भिक्षा॥
कर्त्तव्यों से विमुख न हों हम, संकल्पों को पूर्ण करें॥

ध्वनि की उस विशिष्ट रचना को जिसमें स्वर तथा वर्णों के कारण सौंदर्य हो जो मनुष्य के चित्त का रंजन करे, अर्थात् श्रोताओं के मन को प्रसन्न करे, बुद्धिमान लोग उसे राग कहते हैं।

-(अभिनव राग मंजरी)

हम सब बालक हैं

हम सब बालक हैं नादान, हे परमेश्वर दो सद्ज्ञान॥

मानव जीवन श्रेष्ठ महान, उस पर दीजै समुचित ध्यान।
इसका करले सद्उपयोग, फिर न मिलेगा ऐसा योग॥
करें साधना बनें महान, हे परमेश्वर दो सद्ज्ञान॥

लोभ मोह छल या आवेश, इनसे उपजे सभी क्लेश।
नहीं विरोधी से भी द्वेष, हो अपना सिद्धान्त विशेष॥
सबको दें समुचित सम्मान, हे परमेश्वर दो सद्ज्ञान॥

कर सके जो जन कल्याण, उस नर से अच्छा पाषाण।
ऊँची विद्या ऊँचे बोल, सदाचार बिन माटी मोल॥
सच्चरित्र हों बनें महान, हे परमेश्वर दो सद्ज्ञान॥

अधिकारों का वह हकदार, कर्त्तव्यों से जिसको प्यार।
करें नहीं ऐसा व्यवहार, जो न स्वयं को हो स्वीकार॥
सबसे सबका हो उत्थान, हे परमेश्वर दो सद्ज्ञान॥

श्री भगवान शंकर द्वारा नाद अवतरित हुआ, नाद से मन तथा मन से काल एवं काल ही ताल शब्द से प्रख्यात हुआ।

हे प्रभु हम सबसे प्रेम करें

हे प्रभु हम सबसे प्रेम करें, सब सच्चे मन से प्रेम करें॥

सबमें तेरा दर्शन पायें, भेदभाव को दूर हटायें।
मानव मात्र एक हो जायें, गिरतों को हम पुनः हटायें॥
हम अपनी कथनी करनी को एक करें॥

नारी सब दैवी कहलायें, अबला नहीं बनें सबलायें।
स्वस्थ श्रेष्ठ परिवार बनायें, जिसे देख सुर भी ललचायें॥
स्वर्ग छोड़ चल पड़े देव नर देह धरे॥

जन्म जहाँ पर हमने पाया, अन्न जहाँ का हमने खाया।
ज्ञान जहाँ से हमने पाया, तन पर जिसका वस्त्र सजाया॥
भारत की गरिमा के हित बलिदान करें॥

हे भगवान हमारे देश को

हे भगवान हमारे देश को, दे इतना वरदान में।
श्रवण सरीखे बेटे जन्में, घर-घर हिन्दुस्तान में॥

हे करतार तू कर कुछ ऐसा, ये भारत हो पहले जैसा।
माता और पिता की भक्ति, जागे हर संतान में॥
श्रवण सरीखे बेटे जन्में, घर-घर हिन्दुस्तान में॥

हे प्रभु दे ऐसी संताने, जो माँ बाप को ईश्वर माने।
फिर से इस प्राचीन देश का, डंका बजे जहान में॥
श्रवण सरीखे बेटे जन्में, घर-घर हिन्दुस्तान में॥

हे माता भगवती तुम्हारी

हे माता भगवती तुम्हारी, करुणा अपरम्पार है।
जग में, कण कण में माँ तेरी, करुणा का संचार है॥
मूर्तिमान हो भक्ति तुम, महाकाल की शक्ति तुम।
ममता की अभिव्यक्ति तुम, समझ रहा संसार है॥
शान्तिकुञ्ज की शान्ति तुम,तपोभूमि की कान्ति तुम।
प्रज्ञायुग की क्रान्ति तुम, जो जग का उपचार है॥
तुम श्रद्धा की धार हो प्रज्ञा का संचार हो।
निष्ठा शक्ति अपार हो, बही त्रिवेणी धार है॥
ऋद्धि सिद्धि की दाता हो, मंगल मोद प्रदाता हो।
सारे जग की माता हो, पूज रहा संसार है॥

हमें परखने का तरीका

हमें परखने का तरीका नहीं है।
कोई वर्ना दुश्मन किसी का नहीं है॥
जो है नूर मुझमें वही औरों में है,
यह दर असल हमने सीखा नहीं है॥
तेरी ही जुबाँ पर है नफरत के छाले,
यह उल्फ़त का गुड़ वर्ना फीका नहीं है॥
जिसे सुनते ही दूसरा तिल-मिलाये,
यह कुछ गुफ्तगू का सलीका नहीं है॥
हो दुश्मन अगर दोस्त से ज्यादा,
कोई लुफ्त फिर ज़िन्दगी का नहीं है॥
तू क्यों बाँधता है राही लम्बे दावे,
भरोसा तेरा इक घड़ी का नहीं है॥

हम मोड़ने चले हैं

हम मोड़ने चले हैं, युग की प्रचण्ड धारा।
गिरते हैं उठते-उठते, हे! नाथ दो सहारा॥

दुष्वृत्तियाँ बढ़ी हैं, उनको उखाड़ना है।
छल कंस कर रहा है, उसको पछाड़ना है॥
स्वारथ की बस्तियों को, अब तो उजाड़ना है।
फिर व्यूह कौरवों का, हमको बिगाड़ना है॥
मिट जाय फिर असुरता, यह लक्ष्य है हमारा।
गिरते हैं उठते-उठते, हे! नाथ दो सहारा॥

हम कर्म खुद करेंगे, पर आन माँगते हैं।
हम गीत खुद रचेंगे, पर तान माँगते हैं॥
भगवान तुमसे हम कब? वरदान माँगते हैं।
बस एक सद्-असद् की पहचान माँगते हैं॥
पर है तभी यह सम्भव, आशीष हो तुम्हारा।
गिरते हैं उठते-उठते, हे! नाथ दो सहारा॥

निर्देश हो तुम्हारा, पुरुषार्थ हम करेंगे।
संदेश प्रभु तुम्हारा, सबसे कहा करेंगे॥
आस्था जगे सभी में, अभियान वह रचेंगे।
कर्त्तव्य-मार्ग पर हम, बलिदान भी करेंगे॥
'सर्वे भवन्तु सुखिनः' उद्देश्य है हमारा।
गिरते हैं उठते-उठते, हे! नाथ दो सहारा॥

हम धनी न चाहे हों

हम धनी न चाहे हों धन के, पर हृदय धनी होवें।
हम हँसे न चाहे सुख पाकर, पर दु:ख में रोवें॥

हम कृषक बने तो हृदय खेत में प्रेम बीज बोवें।
हम सदा जागते रहें देश हित कभी नहीं सोवें॥

हम धनी-निर्धनी सुखी-दु:खी जैसे हों वैसे हों।
पर काम आ सकें कुछ स्वदेश के प्रभु हम ऐसे हों॥

हम योगी हों तो सब बिछ्ड़ों का योग मिला देवें।
हम वक्ता हों तो वाणी से अमृत बरसा देवें॥

हम हों ऐसे गुणवान रेत में पुष्प खिला देवें।
हम बली बहादुर हों ऐसे ब्रह्माण्ड हिला देवें॥

हर तरफ अँधेरा है

हर तरफ अँधेरा है, दीप तू जलाता चल।
रास्ते चमक उठे, रोशनी लुटाता चल॥

ये गगन हमारा है ये धरा हमारी है।
जागते शहीदों ने, देश को सँवारा है॥
देश जन पुकारे तो, गीत तू सुनाता चल॥

आज तू अकेला है, थक न जाये तेरा दिल।
मुश्किलें न मिट पाई, दूर है अभी मंजिल॥
दूरियाँ न घबरा दे, दूरियाँ मिटाता चल॥

हम युग सन्देश सुनाते हैं

हम युग सन्देश सुनाते हैं, युग ऋषि की बात बताते हैं।
ओ! हिम्मत वालों, आओ रे, अपना युगधर्म निभाओ रे॥

देखो मानवता रोती है, साहस अब अपना खोती है।
है दर्द तो आगे, आ जाओ, कुछ ढाढस उसे बंधा जाओ॥
अब तक तो हुई निराशा है, कुछ इन्सानों से आशा है।
यदि उसकी आशा टूटेगी, मानव की किस्मत फूटेगी॥
अब सावधान हो जाओ रे, खुद जागो और जगाओ रे॥
मौके पर कायर छिपते हैं, दिलवाले आगे आते हैं॥

जब जब अधर्म बढ़ जाता है, धरती माता अकुलाती है।
तो संतजनों की रक्षा को, अवतार चेतना आती है॥
ऋषि उसका मर्म बताते हैं, सबको युगधर्म सिखाते हैं।
जो साथ निभाते हैं उनका, जीवन का फल पा जाते हैं॥
जो समझ सको आ जाओ रे, यह मौका नहीं गँवाओ रे॥
जिनने पहचाना अवसर को, वे उछल उछल कर आते हैं॥

यह युग परिवर्तन वेला है, प्रभु ने अनुदान उड़ेला है।
यह समय न फिर फिर आयेगा, जो जागेगा सो पायेगा॥
जिनको मानवता प्यारी है, उनने कर ली तैयारी है।
फिर देवासुर संग्राम छिड़ा, युग सैनिक भर्ती जारी है॥
अपना भी नाम लिखाओ रे, संशय में मत रह जाओ रे॥
निष्ठा वाले पा जाते हैं, बाकी पीछे पछताते हैं॥

कुछ अपना स्वयं सुधार करो, परिवारों में संस्कार भरो।
रच लो समाज सहकार भरा, मानवता का उद्धार करो॥
प्रभु से कर लो साझेदारी, अध्यात्म मार्ग अपनालो रे।
बाधक से साधक बन जाओ, भरपूर सिद्धियाँ पालो रे॥
परमार्थ मार्ग अपनालो रे, जीवन को धन्य बना लो रे।
जो भी युगधर्म निभाते हैं, वे परम लाभ पा जाते हैं॥

हे सृजन शक्ति नारी

हे सृजन शक्ति नारी, यह तथ्य मत भुलाओ।
विकसित करो इन्हें अब, अनुदान श्रेष्ठ पाओ॥

यह देश था मुकुटमणि, जब थी महान नारी।
तप, ज्ञान युद्ध सबमें, छवि थी पुनीत न्यारी॥
नारी की शक्तियों को, यूँ ही नहीं गँवाओ॥

तप से हुए भगीरथ, अनुसुइया कम नहीं है।
गौरी का तप भुला दो, यह न्याय तो नहीं है॥
दुर्गा, सरस्वती को, भोग्या नहीं बनाओ॥

ज्ञानी है पुरूष यदि तो, नारी भी कम कहाँ है।
घोषा अरून्धती सी, ऋषि देवियाँ यहाँ है॥
गार्गी या भारती का, अधिकार मत भुलाओ॥

बच्चों में तेज भरना था, काम देवियों का।
पुरूषों से कम नहीं था, तप शौर्य नारियों का॥
सीता शकुन्तला को, मत कैद में बिठाओ॥

हम तो छोड़ चले घरबार

हम तो छोड़ चले घरबार, हम वैरागी हो गये।
हमसे दूर हुआ संसार, हम वैरागी हो गये॥

हमको हुई बहुत है देर, कोई रहा है हमको टेर।
देह तो है माटी का ढेर, नष्ट होगी यह देर सवेर॥
झूठा जग का प्यार दुलार, हम वैरागी हो गये॥

मेरा कभी न लेना नाम, मैं तो हुआ बहुत बदनाम।
हमें क्या नश्वर जग से काम, चाहिए नहीं हमें आराम॥
रहा है हमको समय पुकार, हम वैरागी हो गये॥

हमारी रही न कोई चाह,न तन,मन,धन की अब परवाह।
कठिन हो चाहे जितनी राह, हमें लेनी ही होगी थाह॥
करेंगे सात समुन्दर पार, हम वैरागी हो गये॥

जाना है गुरुवर के गाँव, जहाँ है शीतल शीतल छाँव।
उसी का आँवलखेड़ा नाम, जहाँ जन्में मेरे श्रीराम॥
वहीं है निराकार साकार, हम वैरागी हो गये॥

रहा सारा जीवन निष्काम, राम तो बस मेरा अभिराम।
हमारा बारम्बार प्रणाम, खुशी से छोड़ चला मैं धाम॥
मेरा नमन करो स्वीकार, हम वैरागी हो गये॥

मुक्तक–

राग से वैराग्य लेकर जा रहे हैं, स्वार्थ के सम्बन्ध सब झुठला रहे हैं।
राम के ही काम में, अब जा जुटेंगे, राम के कब से निमन्त्रण आ रहे हैं॥

हुआ समर्पण मिटी चाह

हुआ समर्पण मिटी चाह सब, अब दो प्रभु ऐसा वरदान॥
दुर्बल दीन-दुःखी की खातिर,हो जाऊँ हँस-हँस बलिदान॥

चाह नहीं लोकिक वैभव की, मेरा धन प्रभु तेरा प्यार।
पाऊँ तुमसे बाँटू जग को, धन्य बने सारा संसार॥
पावन प्रेम प्रवाहित हो प्रभु, डूब जाय सारा अभिमान॥

इन्द्रिय सुख सौन्दर्य न चाहूँ, नहीं चाहिए सुविधा धाम।
तुमसे ही उपजे हैं यह सब, तुम्हें चाहकर रहूँ अकाम॥
क्यों भटकूँ मैं इस माया में, तेरी राह चलूँ भगवान॥

प्रभु पद कमलों का रस पाकर, देवराज का पद बेकार।
स्वर्ग और अपवर्ग न चाहूँ, है प्रभु चरणों का आधार॥
ऐसा रस संचरित करो प्रभु, बह जाये सारा अज्ञान॥

संत कहाऊँ , पैर पुजाऊँ, ऐसी कोई चाह नहीं।
दुनियाँ जाने या न जाने ,इसकी भी परवाह नहीं॥
हर दुखिया का दर्द बटाऊँ, सेवा करूँ रहूँ अनजान॥

स्वार्थ रहित, परमार्थ भाव से, शुद्ध पुष्ट हो जीवन।
यज्ञ रूप जीवन बन जाये, आहुतियाँ हों तन मन धन॥
प्यार भरा सहकार बढ़ायें, करुणा करें यज्ञ भगवान॥

हे मेरे गुरुदेव कृपा सागर

हे मेरे गुरुदेव कृपा सागर, कृपा कर दीजिए।
शान्ति पा जाये धरा, ऐसा उसे वर दीजिए॥

स्वार्थ में डूबे सभी अभिमान में फूले हुए।
दूसरों की पीर या दुःख, दर्द हैं भूले हुए॥
आप हृदयों में सजल संवेदना भर दीजिए॥

देह-साधन के लिए हर आदमी बेचैन है।
शान्ति से भरपूर अब कोई नहीं दिन रैन है॥
हर विकल मन को प्रभो! शीतल सरोवर दीजिए॥

आदमी को आदमी पल भर यहाँ भाता नहीं।
शब्द कोई भी हृदय छूकर कभी आता नहीं॥
नाथ! हमको भावना-भीगा वही स्वर दीजिए॥

पेड़ की हर डाल पर सुलगी भयंकर आग है।
भूमि पर अब ताप से कुम्हला रहा बाग है॥
पा सके जीवन पुनः वह नीर निर्झर दीजिए॥

आपकी पाकर कृपा हर व्यक्ति निर्मल मन बने।
और हर कुविचार गंगा नीर-सा पावन बने॥
हम बखेरें चाँदनी, ऐसा सुधाकर दीजिए॥

हुये विकारों से शापित

(धुन-उठो सुनो प्राची से उगते)

हुए विकारों से शापित जब, युग के राजकुमार।
द्रवित हो उठे युग भगीरथ, करने को उद्धार॥

अडिग हिमालय की गोदी में, आसन तभी जमाया।
त्रयतापों से मुक्ति दिलाने, तप से स्वयं तपाया॥
तपसी भागीरथ ने तपकर, वह करुणा छलकाई।
पिघल उठी हिमगिरि की छाती, गंगा बन बह आई॥
फूटी भागीरथ करूणा से, पतित पावनी धार॥

शिव संकल्पों के शिव ने फिर, धारण की वह धारा।
शापित युग को सद्चिन्तन का,फिर मिल गया सहारा॥
प्रज्ञा पतित पावनी बनकर, स्वयं धरा पर आई।
नहा ज्ञान गंगा में सबने, डुबकी खूब लगाई॥
जन मानस की मुक्ति बन गया यह, प्रज्ञा अवतार॥

जननी जनक आपसे पाकर, भी जो रहे अपावन।
कर न सके अपने तन मन का, परिशोधन प्रच्छालन॥
उनमें कैसे मनुज वेदना, के प्रति पीर जगेगी।
जिन्हें न अपने ही अन्तर की, पीड़ा जान पड़ेगी॥
संवेदित हो हृदय सुन सके, युग की करूण पुकार॥

हृदय-हृदय को भरे पुलक

हृदय-हृदय को भरे पुलक से, देव रचो कुछ ऐसा गान।
आत्मा-आत्मा झूम उठे फिर, आज रचो कुछ ऐसी तान॥

जीवन के मरुस्थल को दे दो, स्नेह सुधा की निर्मल धार।
मन के मुरझाये मधुबन में, ले आओ तुम पुनः बहार॥
तिनके आशा के जोड़ो, बस जाय फिर से उजड़ा नीड़।
पुल धैर्य का बाँधो, डुबा न पाये तूफानों की भीड़॥
जन-जन में उत्साह भरे वह, दिखे न कोई भी मुख म्लान॥

निशि बीते शँकाओं की, चमके विवेक का नया प्रभात।
भ्रम के बादल छटें दमकने, लगे उषा का स्वर्णिम गात॥
रुढ़िवाद की राख हटे, तो दहकें तथ्यों के अंगार।
करें सत्य,शिव,सुन्दर मिलकर, नव जीवन का नव श्रृंगार॥
मनुज-मनुज निभ्रांत हो सके, बाँटो सबको ऐसा ज्ञान॥

संवेदन का अमृत पिलाओ, कुंठित उर पा जायें प्राण।
बहे गंध उल्लास भरी बन, दो विषाद से सबको त्राण॥
स्वाति बूँद ममता की प्रेम का, खोलो सखे हृदय की सीप।
हो चहूँ ओर प्रकाश प्रेम का, जलता रहे स्नेह का दीप॥
मानस-मानस में जग जाये, औरों की पीड़ा का भान॥

हो व्यक्तित्व विकास

हो व्यक्तित्व विकास, इसलिए प्रेम प्रकाश करो॥

मानस में हो मंजुल संगम, विद्या और विनय का।
कर्म-धर्म का धवल ध्यान हो, हो विश्वास विजय का॥
अमर विश्व बन्धुत्व भावना, फैलाओ जन गण में।
औरों को सुख से जीने दो, चाहे स्वयं मरो॥

केवल स्वावलम्बन का बल हो, इस काया का सम्बल।
श्रम की गरिमा करती जाये, जीवन का मुद मंगल॥
जीने की आशा से हो, आलोकित अब जग सारा।
घृणित अमंगल के तम का विष, शिव बन शीघ्र हरो॥

संयम और नियम अपनाओ, नीति प्रीति हों मन में।
अपने को जानों ले जाओ, चिन्तन और मनन में॥
सुविचार सद्भावों का, हो जाए उत्सव प्रवाहित।
स्नेह, सौम्य सरिता लहराये, ऐसा भाव भरो॥

संगीत जीवन का रस है, जिससे हृदय के तार झंकृत होते हैं। अपने युग के अनुरूप युग संगीत व्यक्ति के आदर्शों, मर्यादाओं और मानवी पुरूषार्थ को जागृत करता है।

हम भारत के सच्चे सेवक

हम भारत के सच्चे सेवक, दुनियाँ नई बनायेंगे।
देश, धर्म नैतिक शिक्षा को, जीवन में अपनायेंगे॥

सेवा कर्म हमारा व्रत हो, तन का रोम-रोम पुलकित हो।
कदम बढ़े जिस ओर हमारा, आँधी तूफाँ करे किनारा॥
हमने जीवन ध्येय विचारा, युग निर्माण करायेंगे॥

झूठे दम्भ पाखण्ड नहीं हो, नहीं द्वेष दुःख द्वन्द कहीं हो।
छलकें सद्विचार पर निर्झर, शांति संयम हो घर-घर॥
युग ने हमें पुकारा आओ मिलकर हाथ बटायेंगे॥

ऋषियों की संतान हमीं है, गुरु गौरव की खान हमीं हैं।
हमने दानव दल संहारे सिंहों के भी दाँत उखारें॥
ठुकराकर सारी विपदायें आगे बढ़ते जायेंगे॥

बहती हृदय कर्म की धारा, युग ने सौ-सौ बार पुकारा।
आत्म शक्ति अभिमान हमारा, प्रगति पंथ से प्यारा॥
वेदों की पावन वाणी को, द्वार-द्वार पहुँचायेंगे॥

संगीत की स्वर लहरियों का जादू जीवन में उल्लास की अनोखी सृष्टि तक ही सीमित नहीं है, इसका स्पर्श रोग-निवारक भी है।

हे गुरुवर शक्ति हमें दो

हे गुरुवर शक्ति हमें दो, कार्य सतत् कर पाएँ हम।
और तुम्हारी ऋषिसत्ता के, अग्रदूत कहलाएँ हम॥

हम हैं ऐसे दीप कि जिसमें, स्नेह नहीं रूक पाता है।
देख स्वयं के छिद्र, ग्लानि से, मन व्याकुल हो जाता है॥
हममें हरदम जलते रहने की, उत्कृष्ट अभिलाषा है।
पर अपनी वक्रता देखकर, होती बहुत निराशा है॥
ऐसी दो पात्रता हमें प्रभु, जो सशक्त हो जाएँ हम॥

बहुत चाहते हैं पर होता, मन का कायाकल्प नहीं।
स्नेह रुका तो भी बाती, जैसा होता संकल्प नहीं॥
जलती तो है ज्योति किन्तु, आलोक न फैला पाती है।
मात्र निमिष भर को थोड़ी, ऊष्मा देकर बुझ जाती है॥
ऊर्ध्वगामिता वह दो हमको, जो सुस्थिर बन पाएँ हम॥

हम कर रहे साधना लेकिन, शक्ति हमे देते रहना।
निर्देशों के लिए गहन, अनुरक्ति हमें देते रहना॥
ध्यान तुम्हारा ध्रुवतारा सा, हमको मार्ग दिखाता है।
शब्द-शब्द गुरुदेव तुम्हारा, ज्योति पुञ्ज बन जाता है॥
दूर करो दुर्बलता मन की, जो संकल्प निभाएँ हम॥

कृपा करो साधना हमारी, प्रबल प्रखर बन ही जाये।
अंधकार की चाल भयंकर, हमें देख हिल ही जाये॥
हम हों ऐसे दीप-दीप से, दीप जलें जिससे अनगिन।
सब मिल-जुलकर फैलाएँ, आलोक धरित्री पर निशिदिन॥
घनी अमावस में कोने-कोने का, तिमिर मिटाएँ हम॥

हार बैठे अगर आप

हार बैठे अगर आप हर ओर से,
तो परम पूज्य गुरुदेव तब आइये।
घेर रक्खा तुम्हें घोर तम ने अगर,
तो दमकता दिवाकर यहाँ पाइये॥

नाव भवसिंधु में फँस गई हो अगर,
और तूफान मे घिर गई हो अगर।
पूज्य गुरुदेव के हाथ में सौंपिए,
देखते-देखते सिंधु तर जाइये॥

मन मानता आपका यदि कहा,
और धोखा सदा आपको दे रहा।
सौंपिए तो जरा पूज्य गुरुदेव को,
मन सा सच्चा न साथी कोई पाइये॥

आपको हैं शिकायत सभी से यही,
स्वार्थ के ही सगे है सभी के सभी।
आप ही स्वार्थ को छोड़कर देखिए,
फिर तो वो भी मिले जो नहीं चाहिए॥

पूज्य गुरुदेव का आम दरबार है,
और सबके लिए ही खुला द्वार है।
सहज स्वीकार है हर समर्पण यहाँ,
आइये और भी साथ में लाइये॥

हम तो अपना तजुर्बा बताते तुम्हें,
था गिना जा रहा पापियों में हमें।
उनके चरणों की गंगा में सब धुल गये,
आप कैसे भी हो आइये नहाइये॥

अब तो उनसे मिलन बहुत आसान है,
सुक्ष्म स्थूल से और बलवान है।
भाव विह्वल हृदय से पुकारें उन्हें,
वे चले आयेंगे मत कहीं जाइये॥

हम बदरी बन छायेंगी

हम बदरी बन छायेंगी, सबको आश लगेगी।
बूंद-बूंद छलकायेंगी, भूखी प्यास बुझेगी॥

हम सागर के संग तपेगीं, फिर सागर से पानी लेंगी।
जहाँ-जहाँ भी जायेंगी, क्षमता साथ चलेगी॥

जनपथ को शीतलता देंगी, प्यासे खेतों में बरसेंगी।
धरती को सरसायेंगी, सबको शान्ति मिलेगी॥

गुरु ने ज्ञान सिन्धु लहराया, अपना अनुभव ज्ञान पिलाया।
जन-जन तक पहुँचायेंगी, युग की पीर मिटेगी॥

हरकर नारी की जड़ताएँ, और जगा उनकी क्षमताएँ।
सरिता सा लहरायेंगी, जब नारियाँ जगेंगी॥

महिला जागृति शंख बजाकर, नवयुग संदेश सुनाकर।
युग निर्माण करायेंगी हम, युग को बदलेंगी॥

हम तुम्हारे लिए हैं

हम तुम्हारे लिए हैं, हमारी सभी साधनाएँ समर्पित तुम्हें पूज्यवर।
साधना के लिए जो विविध विध करीं, वे विधाएँ समर्पित तुम्हें पूज्यवर।

और अब कौन सा आसरा चाहिए,
जब तुम्हारी सबल बाँह हम पा गए।
कामना अब भला क्या करें जबकि हम,
कल्पतरु की वरद छाह में आ गए॥
रात-दिन जो विकल कर रही थी हमें, कामनाएँ समर्पित तुम्हें पूज्यवर।
हम तुम्हारे लिए हैं, हमारी सभी साधनाएँ समर्पित तुम्हें पूज्यवर।

प्रार्थना है प्रभो! शक्ति ऐसी मिले,
आपके मार्ग पर हम सबल हो सकें।
ध्वंस-आतंक को देखकर सामने,
धैर्य-विश्वास अपना न हम खो सकें॥
आज तक जो स्वयं के लिए कीं, सभी प्रार्थनाएँ समर्पित तुम्हें पूज्यवर।
हम तुम्हारे लिए हैं, हमारी सभी साधनाएँ समर्पित तुम्हें पूज्यवर।

स्नेह सान्निध्य पाकर प्रभो! आपका,
यह चपल मन सहज निर्विषय हो गया।
फिर अहं की उफनती हुई धार का,
आपके सिन्धु में ही विलय हो गया॥
एक है लक्ष्य अब, भ्रान्त भटकी हुई सब दिशाएँ समर्पित तुम्हें पूज्यवर।
हम तुम्हारे लिए हैं, हमारी सभी साधनाएँ समर्पित तुम्हें पूज्यवर।

एक है कामना, प्रार्थना, साधना,
काम पूरा करें हम तुम्हारा प्रभो!
हम सभी के समर्पित सुसंकल्प से,
देवंस्कृति बने विश्ववारा प्रभो!
आपने जो सिखाए सभी मंत्र और सब ऋचाएँ समर्पित तुम्हें पूज्यवर!
हम तुम्हारे लिए हैं, हमारी सभी साधनाएँ समर्पित तुम्हें पूज्यवर!

मुक्तक-

हमने सदा आपसे पाये जीवनभर अनुदान हैं।
आज समर्पित गुरु चरणों में तन-मन जीवन प्राण हैं।।

हे श्रीराम तपोनिष्ठ

हे श्रीराम तपोनिष्ठ, अग्रदूत गुरुदेव।
राखो शरण आये द्वार, तुम हो पतित के उद्धार॥
गायत्री के सपूत, निर्विकार विश्वाधार।
भगवती पति तप:पूत, नवयुग के सूत्राधार॥
पावनतम कलाकर, हम सबके प्राणाधार।
भक्त सब रहे पुकार, आपको रहे निहार॥
गंगा की विमल धार, हिमनग के तट कछार।
करते गुरुवर विहार, लीला करते अपार॥
करूणा की दिव्य दृष्टि, ममता की होय वृष्टि।
पावन कर दो ये सृष्टि, रह न पाये तम-तुषार॥
दुष्टों पर कर प्रहार, सज्जन लो अब उबार।
हम आये आज द्वार प्रभु, देना मत बिसार॥

हे प्रभो! मानव हृदय को

हे प्रभो! मानव हृदय को, गगन सा विस्तार दे दो।
मानवों को मानवों के प्रति, असीमित प्यार दे दो॥

सीख जायें कष्ट से रोते, हुए जन को हँसाना।
दीन-हीनों को उठाकर, प्यार से उर से लगाना॥
जो कभी खाली न हो, सद्भाव का भण्डार दे दो॥

भेद हम माने नहीं, छोटे बड़े, ऊँचे गिरे का।
साथ दें बढ़कर सदा, संकट मुसीबत में घिरे का॥
खोल दो समदृष्टि चिन्तन को, यही आधार दे दो॥

प्रेम के मृदु सूत्र में बँध जायें, धरती के निवासी।
हृदय में सबके खिली हो, भावना की पूर्णमासी॥
मेट दो सब दम्भ मन का, शील का उपहार दे दो॥

तोड़ दो संकीर्णता के बँध, जो मन पर लगे हैं।
मेट दो वह द्वेष ईर्ष्या, हम सभी जिसमें लगें हैं॥
मेटकर दुष्वृति की, दुनियाँ नया संसार दे दो॥

अस्त हो जाये घृणा की, दुःखद भीषण रात काली।
और उगे प्यार की, मंगलमयी सुप्रभात लाली॥
खिल उठे मन के कमल, हमको वही व्यवहार दे दो॥

हे श्रीराम तुम्हें प्रणाम

हे श्रीराम तुम्हें प्रणाम, हे गुणधाम तुम्हें प्रणाम।
वेदमूर्ति, हे तपोनिष्ठ ऋषि, हे युग सृष्टा तुम्हें प्रणाम॥

किया भागीरथ सा तप तुमने, लाभ अनोखा पाया जगने।
गायत्री के बन्धन काटे, दिव्य साधना के फल बाँटे॥
खुले प्रगति के नए आयाम, हे श्रीराम तुम्हें प्रणाम॥

तुम इस युग के व्यास बन गए, अद्भूत युग साहित्य रच गए।
दिव्य ज्ञान की ज्योति जगाई, वेदमूर्ति की पदवी पाई॥
भरी प्रेरणा आठों याम, हे श्रीराम तुम्हें प्रणाम॥

युग वशिष्ठ का फर्ज निभाया, नवयुग का आधार बनाये।
युग निर्माण योजना लाए, युग के विश्वामित्र कहाये॥
सृजन साधना की अविराम, हे श्रीराम तुम्हें प्रणाम॥

याज्ञवल्क्य का गौरव पाया, जग को जीवन यज्ञ सिखाया।
योगी, तपसी आप सरीखा, इस युग में तो सुना न दीखा॥
सबकी सेवा की निष्काम, हे श्रीराम तुम्हें प्रणाम॥

मुक्तक-

ले सविता का तेज आपने, तम काटा प्रकाश फैलाया।
ऋषियों की पावन परिपाटी को, फिर से सम्मान दिलाया॥

हम हैं संताने युगऋषि की

हम हैं संताने युगऋषि की, युग के संत महान की।
कभी न गिरने देंगे गौरव-गरिमा उनकी शान की॥

हम बिन पानी मेघ नहीं, बुझा न पाएँ प्यास जो।
निभा नहीं पाएँ मरुस्थल का, ऊसर का विश्वास जो॥
हम चिनगारी नहीं, धधकते हुए ज्वलित अंगार हैं।
भरे हुए हम सबमें ऋषि के क्रांतिबीज सुविचार हैं॥
हम प्रकाशवाही किरणें हैं दीप्तिमान दिनमान की॥

नव प्रभात की पूर्व दिशा के हम स्वर्णिम आकाश हैं।
हम उज्ज्वल भविष्य के वाहक, वर्तमान की आस हैं॥
उपयोगी हैं क्योंकि नहीं हम भूले हुए अतीत हैं।
गुरुसत्ता के महायज्ञ के हम ऋत्विज सुपुनीत हैं॥
लाज रखेंगे पग-पग पर हम इस पावन पहचान की॥

जन्मशताब्दी तक घर-घर पहुँचाना गुरु संदेश है।
नहीं उपेक्षित रहने देना कोई देश-प्रदेश है॥
गूँजे गाँव नगर युग ऋषि के अब प्रेरक संदेश से।
उनकी फैले गंध हमारे चिंतन, वाणी वेश से॥
जो भी मिले, करें हम उससे चर्चा युग निर्माण की॥

हम न पुरोहित या उपदेशक बनकर मिलें समाज से।
मात्र स्वयं सेवक का निकले स्वर अपनी आवाज से॥
उनको आवश्यकता है हर उत्साही, गुणवान की।
हर विभूति की, हर प्रतिभा की, हर निर्धन धनवान की॥
जामवंत, नल-नील, गिलहरी की, वानर हनुमान की॥

हो पूज्य गुरुदेव तुम हमारे

हो पूज्य गुरुदेव तुम हमारे, संदेह साकार पूर्ण भगवन्।
हमें ये विश्वास हो गया है, अनादि तुम हो, तुम्हीं चिरंतन॥

तुम्हीं हमारी हो प्रेरणा प्रभु, तुम्हीं हो प्राणी के प्राण प्रियतम।
तुम्हीं समुच्चय हो सद्‌गुणों के, उत्कृष्टता के तुम्हीं हो संगम॥
तुम्हीं से जीवंत है जगत यह,तुम्हीं से ज्योतित प्रत्येक कण-कण।।
हमें ये विश्वास हो गया है, अनादि तुम हो, तुम्हीं चिरंतन॥

है भोर दुपहर व शाम तुमसे, तुम्हीं ने ऋतुओं का क्रम बनाया।
प्रदीप्त पावक के ताप तुम हो, तुम्हीं से शीतल सुरम्य छाया॥
तुम्हीं से सुस्थिर है भूमि सागर, गगन पवन की तुम्हीं हो पुलकन।
हमें ये विश्वास हो गया है, अनादि तुम हो, तुम्हीं चिरंतन॥

तुम्हारे सानिध्य के सुफल है, पवित्र मंदिर व तीर्थ सारे।
तुम्हारी करुणा-कृपा जो मिलती, विनष्ट होते हैं अघ हमारे॥
मिले समर्पण से साधकों की, तुम्हीं में चारों ही धाम पावन।
हमें ये विश्वास हो गया है, अनादि तुम हो, तुम्हीं चिरंतन॥

विकल बहुत है यह विश्व वसुधा, प्रभो! इसे ऐसी शक्ति दे दो।
बने जो आस्था अचल हमारी, मनुष्य के यूँ भ्रमों को भेदो॥
प्रत्येक चिन्तन-चरित्र सुरभित, पवित्र मन हो, निरोग हो तन।
हमें ये विश्वास हो गया है, अनादि तुम हो, तुम्हीं चिरंतन॥

हर बहना को भाई की

हर बहना को भाई की है, याद अनोखी आई।
रक्षा–बन्धन तन मन में, आकर प्रीति जगाई॥

स्नेह अश्रु आँखों में, हाथों में पूजा की थाली।
रोली, अक्षत, पुष्प, मिठाई, राखी संग मंगवाली॥
मुख–मण्डल पर बहना के है, देता प्यार दिखाई॥

भाई और बहन का है, सम्बन्ध बड़ा ही पावन।
राखी के धागे से बनता, है अटूट मन भावन॥
बहन बिना रहती भाई की, सूनी सदा कलाई॥

भाई की आँखों में रहती, हर पल प्यारी बहना।
भाई देता है बहनों को, सद्भावों का गहना॥
कच्चे धागों में भावों की, सरिता सुखद समाई॥

मन के सुन्दर भाव पिरोकर, राखी बाँधे बहना।
यही कामना है भइया तुम, सुखी समुन्नत रहना॥
जीवन में हो नहीं तुम्हारे, कभी कष्ट कठिनाई॥

गीत, संगीत, नृत्य, गायन, वादन, साहित्य और कविता यह स्वस्थ मनोरंजन तथा मानसिक विकास के सर्वोत्तम साधन हैं।

(अखण्ड ज्योति नवम्बर–1991, पृष्ठ–18)

ज्ञानगंगा का हुआ अवतरण

ज्ञान-गंगा का हुआ अवतरण,
मनुजता अज्ञान शापित क्यों रहे।
सूर्य-संस्कृति-सुतों के रहते हुए,
मनुज की धरती तमस को क्यों सहे॥

ज्ञान की गंगोत्री है शान्तिकुञ्ज,
ज्ञान की गंगाजली आओ! भरें।
और तम के द्वार छलकने इसे,
आओ हम युगतीर्थ से लेकर चलें॥
ज्ञान से है शून्य जनमानस जहाँ,
वहाँ जाकर ज्ञान की गंगा बहे॥

ज्ञान गंगा में समाहित जो हुए,
उन्हें ज्ञानांजलि समर्पित हम करें।
उन्हीं का संदेश जन-जन को सुना,
उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित हम करें॥
करे अवगाहन मनुजता ज्ञान में,
ज्ञानगंगा-भगीरथ की जय कहें॥

चलो! युग साहित्य झोलों में भरें,
और जन-जन तक कि पहुँचाएँ उसे।
हो रहा संवेदना से शून्य जो,
जगा संवेदन कि छलकाएँ उसे॥
द्रवित होने लगे वह पीर से,
पीर हरने स्रोत-संवेदन झरे॥

ॐ है परम पिता का नाम

ॐ है परम पिता का नाम, भजले प्यारे ॐ का नाम।
चाहे सुबह हो चाहे शाम, भजले प्यारे ॐ का नाम॥

ॐ है वेदों का वरदान, ॐ का नाद है ब्रह्म समान।
ॐ है जीवन ॐ है प्राण, ॐ में रहते स्वयं भगवान॥
ॐ को सुमिरों आठोयाम, भजले प्यारे.............॥

ॐ की ध्वनि है अति पावन, ॐ का मंत्र है मनभावन।
ॐ का अक्षर है अनुपम, है सृष्टि का शब्द प्रथम॥
इसमें निछावर शब्द तमाम, भजले प्यारे...........॥

ॐ की महिमा अपरम्पार, ॐ करेगा बेड़ापार।
ॐ कहो ओंकार कहो, शब्द में बारम्बार कहो॥
गीतों में जीवन संग्राम, भजले प्यारे..............॥

मानुष जनम पाने वालो, जीवन धन्य बना डालो।
इत-उत नाहक मत दौड़ो, ॐ से निज नाता जोड़ो॥
निश्चय होगा शुभ परिणाम, भजले प्यारे.........॥

ॐ का नाम है प्रभु का नाम, ॐ है परमानंद का धाम।
ॐ का सुमिरन है अनमोल, ऋषि मुनियों ने देखा तोल॥
ॐ है चंचल चित्त की लगाम, भजले प्यारे.........॥

श्रद्धा प्रज्ञा निष्ठा से जो

श्रद्धा प्रज्ञा निष्ठा से जो, करता अपना काम है।
उसका ही जीवन इस जग में, धन्य-धन्य अभिराम है॥

आत्म मनोबल जिसका साथी, अंगद सा दृढ़ पाँव है।
भक्ति शक्ति की अलख जगाता,गली-गली हर ठाँव है॥
करता जो उपकार सभी का, आजीवन निष्काम है॥
जीवन तप संचित थाती से, जो देता अनुदान है॥
काँटे और फूल दोनों ही, जिसको एक समान है॥

नई रूढ़ियों का पोषक जो, शोषक नहीं गरीब का।
अपना दर्द समझता है जो, दुनियाँ के हर जीव का॥
मंजिल में चलते जाना ही, जिसका लक्ष्य महान है॥
मानवता का मान बढ़ाने, हो जाता बलिदान है।
जन सेवा ही व्रत है जिसका, सारी वसुधा धाम है॥

हँस-हँसकर जो लोहा लेता, आँधी से तूफान से॥
जान हथेली पर रखकर जो, भिड़ जाता शैतान से।
अपनी आत्म-चेतना से जो, करता युग निर्माण है॥
तम पहाड़ से जूझ-जूझकर, लाता नया विहान है॥
जिसे नाम की नहीं काम की, चिन्ता आठों याम है॥

श्री मन नारायण

श्री मन नारायण, नारायण हरि, हरि।
तेरी लीला जग से न्यारी न्यारी॥ हरि–हरि॥

दो अक्षर का नाम हरि का, लेकिन बड़ा सलोना।
तेरी लीला जग से न्यारी न्यारी॥ हरि–हरि॥

बद्री नारायण, नारायण हरि–हरि॥
श्री मन नारायण, नारायण हरि–हरि॥

लक्ष्मी नारायण, नारायण हरि–हरि।
श्री मन नारायण, नारायण हरि–हरि॥

हरि नाम का पारस जो छुले, वो हो जाये सोना।
तूने लाखों की विपदा टारी–टारी॥ हरि–हरि॥

श्रीराम आया है

श्रीराम आया है, युग की व्यथा मिटाने को।
जलाई ज्ञान की ज्योति, हमें जगाने को॥

भटक गई है मनुजता, अँधेरी राहों में।
चला है काल निगलने, दूषित विचारों को।।

तपा लिया है निज को, बिखर रही किरणें।
निकल पड़े हैं जो घर–घर अलख जगाने को।।

लुटा रहा वो ज्ञानामृत, बढ़ालो हाथ को बस।
पिया जहर भी वो, शिव तो हमें बचाने को।।

श्रद्धा और समर्पण

श्रद्धा और समर्पण का संसार है।
गुरु पूर्णिमा शिष्यों का त्यौहार है।।
शिष्यों के जीवन में छाई बहार है।।

पर्व अनूठा ऐसा जिसने, प्रखर विवेकानन्द बनाया।
जोड़ दिया जिसने समर्थ से, वीर शिवा गढ़कर दिखलाया।।
शिष्यों के हित गुरु का शक्ति प्रवाह है।
गुरु पूर्णिमा शिष्यों का त्यौहार है।।

अपनी कड़ी कसौटी से गुरु, शिष्यों को कसते जाते।
पास हुए उनकी कसौटी में, सबकी झोली भरते जाते।।
अनुदानों को पाने का त्यौहार है।
गुरु पूर्णिमा शिष्यों का त्यौहार है।।

बाहर ढूँढें नहीं गुरु को, अन्तर्मन में खोज निकालें।
जीवन बदलें गुरु कारज में, गुरु से जीवन साज सजालें।।
गुरु से ही जीवन है औ संसार है।
गुरु पूर्णिमा शिष्यों का त्यौहार है।।

मुक्तक– गुरुपूर्णिमा के आते ही छा जाती हरियाली।
कष्ट तपन मिटते शिष्यों के बढ़ जाती खुशहाली।।

ऋषियों की धरती यह

ऋषियों की धरती यह, इसका गौरव पुनः जगायेंगे।
दुनियाँ जिसका करे अनुगमन, ऐसा राष्ट्र बनायेंगे॥

इस धरती पर रामकृष्ण ने, अपना प्यार लुटाया था।
नफरत फैलाने वाले, असुरों को, मार भगाया था॥
हम उनकी पावन परिपाटी, को फिर से दुहरायेंगे॥

विष्णुगुप्त से ब्राह्मण जागे, फिर समर्थ से जागे संत।
दुष्टों के छल-बल प्रपंच का, हो जाये फिर जड़ से अंत॥
उनके प्रेरक पद्चिन्हों पर, चलकर पुनः दिखायेंगे॥

जागो दुर्गा, मीराबाई, जागो झाँसी की रानी।
तेज जगाकर, मातृ-शक्ति का, उस पर रखना है पानी॥
नारी को नव सृजन मार्ग पर, मिलकर पुनः बढ़ायेंगे॥

लवकुश, ध्रुव, प्रहलाद भरत से, बालक हो फिर इस भू पर।
सूर्यचन्द्र की तरह प्रतिष्ठित, होकर वे चमके नभ पर॥
देव संस्कृति विजय पताका, जग में फिर फहरायेंगे॥

मुक्तक-

लिखेंगे देश का गरिमामयी, इतिहास फिर से हम।
लिखायेंगे यहाँ पर महकता, मधुमास फिर से हम॥
जगेगा पूर्व गौरव नारियों, औ बाल वृद्धों में।
करायेंगे जगत को, जगत्गुरु आभास फिर से हम॥

श्रीराम के चरणों में

श्रीराम के चरणों में, वन्दन ये हमारा है।
अब कोई नहीं जग में, बस तेरा सहारा है॥

छाया इस जीवन में, चहूँ ओर अँधेरा है।
कर्मों ने हमें लूटा, विषयों ने घेरा है॥
पापों में सदा पलता, जीवन ये हमारा है॥

संसार के सागर में, जीवन की नैया है।
बिन तेरे गुरु मेरा, अब कौन सहारा है॥
मझधार में नाव रुके, और दूर किनारा है॥

हे नाथ अनाथों के, करुणा के सिन्धु हो।
निर्बल के बल तुम हो, दीनों के बन्धु हो॥
हम सेवक शरण तेरी, बस ध्यान तुम्हारा है॥

नई दिल्ली स्थित 'शक्ति विकास प्रकल्प' के संस्थापक व अध्यक्ष ई० कुमार का कहना है कि संगीत प्रकम्पनों से जटिलतम रोगों को ठीक किया जा सकता है और पागलपन की सीमा तक जा चुके रोगियों को भी स्वस्थ किया जा सकता है।

(अखण्ड ज्योति, जून-2000, पृष्ठ-11)

राधेश्याम तर्ज में गीत

लोभ-ः धन साधन भोजन जर

धन साधन भोजन जर जमीन, होता है लोभ पदार्थों का।
इनका सीमित उपयोग ठीक, है लोभ कुबीज अनर्थों का॥
लोभी की ये गति होती है, ज्यों मछली फँसती काँटे में।
जालों में पक्षी फँसते हैं, सब ही रहते हैं घाटे में॥

मोह-ः है मोह विकार प्रेम का ही

है मोह विकार प्रेम का ही, अपने पराये पर टिका हुआ।
है मोहग्रस्त यों दीन-दुःखी, जैसे ज्वारी हो बिका हुआ॥
यह बंधन इतना रोचक है, प्राणी सुख से बंध जाता है।
जन्मों-जन्मों तक कुढ़ता है, पर मुक्त नहीं हो पाता है॥

अहंता-ः है अहं भाव तो अन्दर का

है अहं भाव तो अंदर का, पर यह बेढब मायावी है।
यह लोभ मोह से मुक्त पुरुष, पर भी हो जाता हावी है॥
इसने जिसको जकड़ा उसको, साधक से राक्षस बना दिया।
आत्मिक-लौकिक उन्नति पाये, कितनों को नीचे गिरा दिया॥

दोहा- हीन स्वार्थ परता सदा, रचती क्लेश अनिष्ट।
लोभ, मोह अरू अहंता, इसके पुत्र बलिष्ट॥

जैसे चलनी में दूध लगा

जैसे चलनी में दूध लगा, मूरख खुद ही पछताता है।
बस उसी तरह, असंयमी भी, जीवन रस व्यर्थ बहाता है॥
फिर दीन दरिद्री बन करके, खुद ही दुर्भाग्य बुलाता है।
जीवन संपदा मिटाकर नर, अति दुखद पंथ अपनाता है॥

दोहा– कामधेनु गऊ के सदृश, जीवन ही अभिराम।
इस अमृत को पानकर, नर बनता सुखधाम॥

दूध दही के मंथन से

दूध दही के मंथन से, नवनीत विज्ञजन पाते हैं।
योगीजन प्राणों को मथकर, कुण्डलिनि शक्ति जगाते हैं॥
करते हैं अरणि मंथन तो, यज्ञाग्नि प्रकट हो जाती है।
जब चिंतन का मंथन चलता, तब बात समझ में आती है॥

दोहा–सागर मंथन जब हुआ, निकले रत्न अनेक।
मंथन कर सुविचार का, जागृत करो विवेक॥

यदि आत्मज्ञान को पाना है

यदि आत्मज्ञान को पाना है, तो कर्मशील बनना होगा।
ज्ञानयोग और भक्ति सूत्र को, एक रूप करना होगा॥
अन्यथा एकांगी ज्ञान सदा, बस अहंकार पनपाता है।
केवल ज्ञानी होकर कोई, नहीं ईश तत्व को पाता है॥

दोहा–सबसे बढ़-चढ़कर अरे, है बस आतम् ज्ञान।
जिसको पाकर मनुज ही, बनता है भगवान॥

संयम संतोष उन्हें भाता

संयम संतोष उन्हें भाता, जो ब्रह्मवृत्ति अपनाते हैं।
जो सदवृत्ति अपनाते हैं बस, वही साधु कहलाते हैं॥
संयम से बचे शक्ति साधन, जिनके जगहित लग जाते हैं।
है कल्पवृक्ष मानव ऐसे, यह मर्म वेद बतलाते हैं।।

दोहा– फलदायी सबसे अधिक, कल्पवृक्ष उद्यान।
उसके हित जो श्रम करे, वह है पुण्य महान॥

प्रभुता की चाह बड़ी भारी

प्रभुता की चाह बड़ी भारी, पर प्रभु से जुड़ा नहीं नाता।
देने से दुःख होता उनको, केवल समेटना ही भाता॥
वे दुर्विचार से प्रेरित हो, भीषण अनीति अपनाते हैं।
शोषण उत्पीड़न जीवन भर, करते पिशाच बन जाते हैं॥

दोहा– सुई नल जैसा कण्ठ है, मटके जैसा पेट।
होती नहीं पिशाच की, कभी तृप्ति से भेंट॥

जिनके चिंतन पुरूषार्थ

जिनके चिंतन पुरूषार्थ और, सद्भाव विश्व हित लगते हैं।
वे मानव भूसुर कहलाते, उन पर अनुदान बरसते हैं॥
मिलता अनुदान उन्हें ऐसा, जिनके आगे सब धन फीका।
सम्मान और सहकार सदा, मिलता है उसको जगती का॥

दोहा– लक्ष्य रहा जिनका सदा, जन–जन का कल्याण।
बरसाते हैं देवता, खुद उन पर वरदान॥

तजकर परमारथ ओछा नर

तजरक परमारथ ओछा नर, जब स्वार्थ सिद्धि में फँसता है।
नर पशु की श्रेणी में आकर, खोटे कर्मों में बंधता है॥
मिलती न कहीं भी कीर्ति उसे, सबसे धिक्कारा जाता है।
एकांकी जीवन जी करके, मूरख सौभाग्य गँवाता है॥

ईश्वर प्रदत्त सुविधायें

ईश्वर प्रदत्त सुविधायें तो, प्रायः समान ही होती है।
जिसने जैसा उपयोग किया, उसमें वे वैसी फलती है॥
सबको ही स्वस्थ शरीर मिला, सबको ही सारे अंग मिले।
जीवन यापन के शुचि साधन, सबको समान बहिरंग मिले॥

संगति से जिनकी नर पशु भी

संगति से जिनकी नर पशु भी, मानवीवृत्ति अपनाते हैं।
उनकी प्रतिभा से नर पिशाच, दब जाते या मिट जाते हैं॥
बस इसीलिए तो ऋषियों ने, यह श्रेष्ठ कर्म अपनाया था।
इसके ही फल से तो भारत, यह विश्ववंद्य कहलाया था॥

दोहा– परिपाटी यह फिर बने, करें यही संकल्प।
नवयुग के अवतरण का, दूजा नहीं विकल्प॥

सामान्य रूप से मानव में

सामान्य रूप से मानव में, कर्त्तव्य भाव ही होता है।
पर पड़कर वही असंयम में, निज शक्ति व्यर्थ ही खोता है॥
जब अशुभ असंयम छिद्रों से, शक्ति सभी बह जाती है।
तो फिर कर्त्तव्य पालने की, सामर्थ्य कहाँ रह जाती है
संतुष्टि न पाता असंयमी, तृष्णा बढ़ती ही जाती है॥
वह डायन मानव के सद्गुण, सुविचार नष्ट कर जाती है॥

है धर्म जगत में सर्वश्रेष्ठ

है धर्म जगत में सर्वश्रेष्ठ, कल्याण मार्ग बतलाता है।
जो जन इसको अपनाता है, वह ऊँचा गौरव पाता है॥
जो धर्म मार्ग को तज करके, विपरीत मार्ग अपनाते हैं।
वे मानो अमृत कलश छोड़, दारूण विष को पी जाते हैं॥

दोहा–

अनाचार को छोड़कर, लगे धर्म में प्रीति।
तो निश्चय ही होयेगी, मानवता की जीत॥

नारी को देवी कहा गया

नारी को देवी कहा गया, शास्त्रों ने महिमा गायी है।
परिवारों के विकास क्रम की, नारी ही धुरी कहायी है॥
माता-पत्नि भगिनी, कन्या, जिस किसी रूप में वह रहती।
परिवारों में सद्भावों को, संस्कारों को है भर सकती॥
यह लाभ तभी संभव है जब, नारी सुयोग्य शिक्षित होवे।
है पुरूषों का दायित्व प्रथम, नारी प्रसन्न विकसित होवे॥

दोहा- नारी को पुरूषों के सम ही, मिले उचित सम्मान।
तो निश्चित ही हर घर बने, बिल्कुल स्वर्ग समान॥

ऋषि धर्मतंत्र के प्रहरी

ऋषि धर्मतंत्र के प्रहरी बन, निशिदिन ही जागृत रहते थे।
मानवी समस्या समाधान, निज चिंतन से वे करते थे॥
शिव, पार्वती, शुक सनकादिक, नारद जैसे मुनिवर ज्ञानी।
सत्संग, गोष्ठियाँ करते थे, नर बनते थे गुण की खानी॥

दोहा-
बस इसीलिए तो ऋषियों ने, यह धर्म मार्ग अपनाया था।
इसके ही फल से तो भारत, यह विश्ववंद्य कहलाया था॥

जीवन प्रत्यक्ष देवता है

जीवन प्रत्यक्ष देवता है, सब कोई इसका वरण करें।
अंतर की शक्ति जगा करके, दु:ख, आदि-व्याधि का हरण करें॥
जो नहीं समझ पाता खुद को, निशदिन ही व्यर्थ भटकता है।
वह स्वयं आत्मघाती बनकर, दु:ख कष्टों बीच अटकता है॥

दोहा-जीवन को पूजें सदा, दें इसको सम्मान।
जीवन को पहचान कर, नर बनता भगवान॥

अपने किशोर वय में मानव

अपने किशोर वय में मानव, क्षमताएँ अर्जित करते हैं।
शिक्षा, संयम, अनुशासन का, अनुभव संपादित करते हैं॥
इस तरह सतत् विकसित होकर, निज को परिपक्व बनाते हैं।
फिर सद्कर्त्तव्य निभाने को, वे सद्गृहस्थ बन जाते हैं॥
बहुतों का श्रम सहयोग प्राप्त कर, मानव विकसित होता है।
उन मातु पिता औ समाज का, वह कर्ज चुकाना होता है॥

दोहा-वृद्धों को सम्मान दें, समवय को सहयोग।
छोटों को दें प्यार सब, यह गृहस्थ का योग॥

नर-नारी दोनों मिलकर

नर-नारी दोनों मिलकर, विकसित परिवार बनाते हैं।
पर नारी नर से वरिष्ठ है, यह धर्म शास्त्र बतलाते हैं॥
नारी ही है ऐसी खदान, जिससे नर रत्न निकलते हैं।
सब उसी कोख में ढलते हैं, सब उसी गोद में पलते हैं॥
नारी विकास के लिए अगर, नर साधन शक्ति लगायेंगे।
तो कई गुने अनुदान स्वयं, बदले में उनसे पायेंगे॥

नारी की क्षमता अद्भुत

नारी की क्षमता अद्भुत है, पर अनगढ़ पड़ी उपेक्षित है।
असली हीरा भी अनगढ़ हो, तो कीमत नहीं अपेक्षित है॥
नारी को रूप प्रधान समझ, उसको श्रृंगारित करते हैं।
पर वह है भावों की प्रतिमा, नर इसको नहीं समझते हैं॥
पहुँचे न चोट मृदु भावों को, सम्मान, प्रेम सहयोग मिले।
तो नारी सिद्ध कल्पतरु हो, वरदान मनोहर नित्य फलें॥

करना है नव निर्माण अगर

करना है नव निर्माण अगर, नारी को योग्य बनाना है।
उसको महान दायित्वों का, क्षमता का बोध कराना है॥
नारी हो शीलवती लेकिन, उसकी क्षमता का हो विकास।
बलशील रहे संकोच नहीं, उल्लसित रहे ना हो उदास॥
नारी दासी चौंकीदारिन, या रसोई दारिन मात्र नहीं।
गृह लक्ष्मी नहीं बना पायें, वे नर गौरव के पात्र नहीं॥

दोहा:- इसीलिए अनिवार्य है, नारी का उत्थान।
उसके ही सहयोग से, होगा नव निर्माण॥

दस सूत्र धर्म के होते हैं

दस सूत्र धर्म के होते हैं, ऐसा मुनि जन बतलाते हैं।
पूरक जोड़े यदि बनते हैं, तो पाँच युग्म कहलाते हैं॥
पहला है सत्य ,विवेक और, दूजा संयम कर्त्तव्य रहा।
अनुशासन अरु अनुबन्ध सदा से, मर्म धर्म का बना रहा॥

सौजन्य पराक्रम चौथा है, जो हम सबको अपनाना है।
सहकार और परमार्थ भाव को, युग्म पाँचवा माना है॥

पाँचो युग्मों में पंच कोष

पाँचों युग्मों में पंच कोष, पंचाग्नि और हैं पंच प्राण।
पाचों ही ऋद्धि और सिद्धि, पाचों तत्वों का समाधान॥
ये युग्म पाँच पाण्डव जैसे, पालन कर्ता के रक्षक हैं।
हैं पंचगण्य पंचामृत से, अन्तर्मन के संवर्धक हैं॥

बेटा बेटी में भेद

बेटा बेटी में भेद करें, समझो उसकी मति खोटी है।
सच्चे अर्थों में देखें तो, बेटे से बढ़कर बेटी है॥
यश एक वंश का बढ़ता है, बेटे यदि पुण्य कमाते हैं।
पर बेटी के शुभ चरित्र से, दो वंश धन्य हो जाते हैं॥

दोहाः– जनक और रघुकुल हुए, सीता से कृत कृत्य।
ले डूबे धृतराष्ट्र को, पुत्रों के दुष्कृत्य॥

जो दिखते आज मात्र पौधे

जो दिखते आज मात्र पौधे, कल वही वृक्ष बन जायेंगे।
बालक भी श्रेष्ठ राष्ट्र नायक, कुछ समय बाद कहलायेंगे॥
बस इसी तरह से सद्गृहस्थ, बच्चों को विकसित करते हैं।
पालन–पोषण के साथ–साथ, उनको संस्कारित करते हैं॥

आधी जन संख्या है नारी

आधी जन संख्या है नारी, अर्धांग उसे कहते आये।
पर उसकी हुई उपेक्षा से, हम स्वयं दण्ड सहते आये॥
जो भूल हुई है सदियों से, वह प्रायश्चित करना होगा।
दूने प्रयास से नारी के, उत्थान हेतु लगना होगा॥
अर्धांग ग्रस्त हो लकवे से, पूरा शरीर गिर जाता है।
नारी के पतन पराभव से, सारा समाज दुःख पाता है॥

दोहा– नारी को यदि दे सकें, समुचित हास विकास।
वह भर देगी विश्व में, स्वर्गोपम उल्लास॥

गृहस्थ धर्म का परिपालन

गृहस्थ धर्म का परिपालन, ऋषियों की बनी व्यवस्था है।
वह सच्चा योगी कहलाता, कर्त्तव्य धर्म रत रहता है॥
जो सद्गृहस्थ अनुशासन को, निष्ठा के संग निभाते हैं।
वे सुख संतोष, श्रेय, यश सब, अपने जीवन में पाते हैं॥

योगाभ्यासी सम दृढ़ रहकर

योगाभ्यासी सम दृढ़ रहकर, संयमी प्रखर जो बनता है।
वह ही गृहस्थ निज जीवन में, संतोष श्रेय सुख पाता है॥
उसके जीवन में सुख सुविधा के, सत्य पुण्य गति बढ़ते हैं।
वे सिद्ध योगियों तपस्वियों की, मंजिल तक जा बढ़ते हैं॥

दोहा– है सब धर्मों से अधिक, धर्म गृहस्थ महान।
राष्ट्र धर्म समृद्धि हित, बनते सभी विधान॥

जो परम्परायें कभी बनी थी

जो परम्परायें कभी बनी थी, चली लोकहित ले करके।
वे बन जाती हैं, अहित मूल, विकृतियों के संग पल करके॥
उनसे लिपटे जो रहते हैं, वे पतन और दु:ख पाते हैं।
जिनमें विवेक है थोड़ा भी, वे उनसे पिण्ड छुड़ाते हैं॥

परिवार राष्ट्र का लघु स्वरूप

परिवार राष्ट्र का लघु स्वरूप, समझाया है यह ऋषियों ने।
अभ्यास राष्ट्र संचालन का, हो सकता है घर से अपने॥
संस्कार चाहिए दोनों में, सहकार व्यवस्था समता का।
घर को आदर्श बनाने में, होता विकास इस क्षमता का॥

केवल शब्दों से नहीं शिक्षा

केवल शब्दों से नहीं यहाँ, होती शिक्षा आचारों से।
इससे होता सद्भाव प्रकट, वाणी में या व्यवहारों से॥
आचार निष्ठ शिक्षा रूचती, आबाल वृद्ध नर-नारी को।
था सभ्य बनाया ऋषियों ने, इस क्रम से पृथ्वी सारी को॥

संस्कार जगाने हेतु जिम्मेदारी

संस्कार जगाने हेतु बहुत, करनी होती है तैयारी।
आती है जनक-जननियों पर, इसकी पहली जिम्मेदारी॥
ऋषिगण प्रजनन से पूर्व श्रेष्ठ, जीवन आचार सिखाते हैं।
पक जाने पर वह बीज रूप, शिशुओं में भी आ जाते हैं॥
प्रजनन के पूर्व इसके कारण, तप साधन का क्रम निश्चित है।
कामातुर प्रजनन का क्रम तो, दैवी संस्कृति में वर्जित है॥

अनुभवी वृद्ध जन ही घर में

अनुभवी वृद्ध जन ही घर में, स्थान उच्च निज रखते हैं।
निज अनुभव जन्य उपायों से, घर का संचालन करते हैं॥
ज्यों ज्यों जब आयु बढ़ती है, परिपक्व बुद्धि हो जाती है।
फिर वही बुद्धि परमार्थ और, परमात्म कार्य करवाती है॥

दोहा- यदि बुजुर्ग निज धर्म की, करें स्वयं पहचान।
हो उनके कर्त्तव्य से, पृथ्वी स्वर्ग समान॥

वानप्रस्थ (संतान सुयोग हो जाने पर)

संतान सुयोग हो जाने पर, घर में रत रहना ठीक नहीं।
बूढ़ेपन में भी माया को, चिपकाना अपनी रीति नहीं॥
संस्कार कोष ही है अमूल्य, जो पुत्रों को दे जाना है।
केश स्वेत हो जाते ही, बस वानप्रस्थ अपनाना है।

जो नहीं कमा सकते पैसा

जो नहीं कमा सकते पैसा, वे दीन हीन रह जाते हैं।
धन दुरुपयोग करने वाले, नर बुद्धि हीन कहलाते हैं॥
इसलिए श्रेष्ठ मानव सदैव, होते स्वभाव से मित्तव्ययी।
है सद्विचार के साथ-साथ, ही सदा सादगी बनी रही॥
व्यसनों से फैशन कुरीतियों से, धन को बचा लिया जिसने।
परमार्थ श्रेष्ठ सत्कर्मों में, साधन का दान दिया उसने॥

जीवन में दीर्घ आयु पाकर (वसुधैव कुटुम्ब)

जीवन में दीर्घ आयु पाकर, दिल को भी दीर्घ बनाना है।
वसुधैव कुटुम्बकम् का स्वरूप, घर-घर में नित पहुँचाना है॥
जन-जन को ही अपना समझें, सन्मार्ग चरण नित बढ़ें रहें।
कर्त्तव्य कर्म पथ ध्यान रखें, अधिकार दूर ही पड़े रहें॥
दोहा- यदि ऐसी भर जायेगी, कर्म विद्या निष्काम।
तो समाज उत्थान भी, होगा अति अभिराम॥

यह जीव अनेक योनियों में

यह जीव अनेक योनियों में, अनुभव अभ्यास बनाता है।
लेकिन मानव की गरिमा से, वह सब ओछा पड़ जाता है॥
मानव गरिमा के योग्य नये, अभ्यास बनाने पड़ते हैं।
गुण, कर्म, आदि विकसित करके, संस्कार जगाने पड़ते हैं॥

ऋषियों ने चार आश्रमों में

ऋषियों ने चार आश्रमों में, मानव जीवन को बाँटा है।
इसके अनुरूप चले यदि तो, नर देव तुल्य हो जाता है॥
यह वर्णाश्रम का अनुशासन, धरती को स्वर्ग बनाता है।
पर विकृत हो जाने पर तो, बस रूढ़िवाद रह जाता है॥

संस्कार जगाने गढ़ने की

संस्कार जगाने गढ़ने की, विधि को ही विद्या कहते हैं।
बस इसीलिए सत्पुरुष सभी, विद्या को अमृत कहते हैं॥
शिक्षा भी है आवश्यक जो, मानव को योग्य बनाती है।
पर विद्या हीन शिक्षितों की भी, दुर्गति ही हो जाती है॥

दोहा– इसीलिए ऋषि गण सदा, करते रहे प्रयास।
शिक्षा का विद्या सहित, हो सम्यक अभ्यास॥

माहौल घरों का बच्चों पर (सच्चा शिक्षक)

माहौल घरों का बच्चों पर, करता है असर बड़ा भारी।
है वातावरण श्रेष्ठ घर का, यह है सबकी जिम्मेदारी॥
सच्चे शिक्षक विद्यालय में, पुस्तक ही नहीं पढ़ाता है।
अपने स्वभाव से चरित्र से, वह सद्व्यवहार सिखाता है॥
ऐसे शिक्षक खुद ही सुयोग्य, अभिभावक भी बन जाते हैं।
तब विद्यालय बनते गुरुकुल, शिक्षक गुरुजन कहलाते हैं॥

छोटे क्षेत्रों में ही विकास

छोटे क्षेत्रों में ही विकास, होता संस्कृति या संतों का।
पर सीमित वहाँ नहीं रहते, करते कल्याण विश्व भर का॥
यों देव संस्कृति ने अपनी, गरिमा भारत में पायी है।
पर दीर्घ काल तक दुनियाँ को, सुख शांति बहुत पहुँचायी है॥

मक्खी पड़ जाये दूध में यदि तो

मक्खी पड़ जाये दूध में यदि तो, वह अखाद्य बन जाता है।
विकृत चिंतन होने पर ही, आचरण भ्रष्ट बन जाता है॥
विकृत चिंतन से धर्म–कर्म, दकिया नूसी हो जाते हैं।
वरना तो वह इन्सानों को, परमेश्वर तक ले जाते हैं॥

आधार मित्रता का शाश्वत्

आधार मित्रता का शाश्वत्, है सहन शीलता उदारता।
पति-पत्नि में भी गहन प्रेम, और मित्र भाव इससे आता॥
सद्दाम्पत्य पूरी निष्ठा से, हो सदाचार के आराधक।
पति व्रत धारी होवे पत्नि, पति हो पत्नि व्रत का साधक॥

जो नहीं सोचने योग्य अरे

जो नहीं सोचने योग्य अरे, उस पर चिंतन चलता रहता।
बस इसीलिए तो मानव का, आचरण भ्रष्ट बनता रहता॥
चिंतन से बढ़ती चाह गलत, तो गलत कर्म करवाती है।
फिर कर्म भोग बनकर डसते, तब भूल समझ में आती है॥
लखकर संकट, भय, क्लेश कलह, मन व्याकुल होता मानव का।
दिखते हैं ये सब भिन्न-भिन्न, पर स्रोत एक ही है सबका॥

दोहा- करें श्रेष्ठ चिंतन सभी, होगा तब उद्धार।
मिला श्रेष्ठ अवसर यही, कर लें सोच विचार॥

संकीर्ण स्वार्थ परता को ही

संकीर्ण स्वार्थ परता को ही, कहते है असली भव बंधन।
इसमें बंधकर पीड़ित जन-जन, करते हैं सतत् करुण क्रन्दन॥
यह लोभ, मोह, अरु अंहकार, जैसे असुरों की माता है।
जो पड़ता इनके चक्कर में, वह पतन गर्त में जाता है॥

दोहा- इनसे बचना है यदि, करले श्रेष्ठ विचार।
मिला समय अनमोल यह, इसे न व्यर्थ बिगाड़॥

दैवी अनुदानों को सदैव (श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा)

दैवी अनुदानों को सदैव, मानव वरिष्ठ ही पाते हैं।
इस वरिष्ठता को पाने के, ऋषि तीन सूत्र बतलाते हैं॥
साधन सुविधाओं के बल पर, मिलती बढ़ती यह कभी नहीं।
शुभ श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा ही, बस इसके हैं आधार सही॥

दोहा–:श्रद्धा प्रज्ञा निष्ठा की, बहे त्रिवेणी धार।
जो जन इसमें डूबते, वे ही उतरे पार॥

अभिभावक अपने बच्चों को

अभिभावक अपने बच्चों को, यों लाड़ प्यार भी खूब करें।
पर हीन आचरण चिंतन से, बचने को प्रेरित किया करें॥
तस्कर चोरों की तरह दोष, दुर्गुण चुपके से आते हैं।
लख सावधान जागृत प्रहरी, वे दूर स्वयं हो जाते हैं॥
दुर्गुण रूपी विष वृक्षों से, जिसने बच्चों को बचा लिया।
समझों उसने अपना गौरव, सौभाग्य सभी का बढ़ा लिया॥

उपासना, साधना, आराधना
ईश्वर महान है, मानव

ईश्वर महान है, मानव को उससे महानता मिलती है।
उसके संग बैठे भाव जगत में, तो उपासना बनती है॥
तन, मन, चिंतन के भावों को, जो प्रभु अनुशासन देती है।
गुण विकसित कर दे दोष हटा, वह सही साधना होती है॥
जिसका है ऐसा भाव सदा, यह विश्व ईश का रूप महत।
यह अपने प्रभु की बगिया है, शुभ सुन्दर इसको रखें सतत्॥

दोहा–करता है इस भाव से, सेवा सदा उदार।
सच्चा आराधक वही, पाता प्रभु का प्यार॥

यह भी है रूप सत्य का

यह भी है रूप सत्य का ही, जैसा देखा सो बतलाया।
पर शब्दों तक सीमित माना तो, समझो सत्य नहीं आया॥
शब्दों के ताने-बाने तो, बुन लेते हैं अन्यायी भी।
चाहिए सत्य के साधक में तो, भावों की गहराई भी॥
हो सकता है शब्द सत्य पर, सत्य शब्द से बँधा नहीं।
जब श्रेय भावना सध जाये, तब जानो सचमुच सत्य यही॥

कोई जीवन को संयम से

कोई जीवन को संयम से, जीकर देवत्व वरण करता।
कोई इसे असंयम द्वारा, नर पिशाच भी है करता॥
शक्तियाँ वहाँ पहुँचा देती, वे जैसे पथ पर चलती है।
जिसने जैसे उपयोग किया, उसमें वे वैसे फलती हैं॥

रावण ने और विभीषण ने

रावण ने और विभीषण ने, था जन्म लिया पुलस्त्य कुल में।
कुछ कमीं नहीं थी रावण को, सुविधाओं में धन में बल में॥
पर उनके दुरुपयोगों ने, ब्राह्मण को राक्षस बना दिया।
बन गये विभीषण देव तुल्य, सुविधा साधन उपयोग किया॥
जीवन जीने की विधियाँ ही, राक्षस देवों को ढलती है।
जिसने जैसा उपयोग किया, उसमें वे वैसी फलती हैं॥

रावण ने अत्याचार किया

रावण ने अत्याचार किया, अपमान किया मां सीता का।
सोने की लंका खाक हुई, उपदेश यही है तुलसी का॥
द्वापर में दुःशासन नारी को, निर्वस्त्र बनाने वाला था।
हो गया महाभारत भारी, माँ शक्ति का ही उजाला था॥

अवतार परम्परा

जब जैसी स्थिति होती है

जब जैसी स्थिति होती है, आवश्यकता बन जाती है।
उसके अनुरूप रूप लेकर, अवतार चेतना आती है॥
मत्स्यावतार से बुद्ध तलक, जो भी अवतार कहाये हैं।
कर असुर नाश सुरस्थापन, सबने कर्तव्य निभाये हैं॥

इस युग का असुर अनास्था

इस युग का असुर अनास्था है, जो जन जीवन पर छाया है।
तो आदिशक्ति युग शक्ति, महा प्रज्ञावतार बन आया है॥
बुद्धावतार का पूरक यह, प्रज्ञावतार है निराकार॥
बनकर सुबुद्धि सद्कर्म प्रखर, इसकी लीला होगी उदार॥

दिखता तूफान नहीं लेकिन

दिखता तूफान नहीं लेकिन, सब धुआँधार कर जाता है।
हिलते वृक्षों के झोंको से, आभास सहज हो जाता है॥
प्रज्ञावतार की लीला का, अहसास तभी कर पायेंगे।
पर जागृत आत्मा ही उसका, वास्तविक संग दे पायेंगे॥

मानव ही क्या पशु पक्षी भी

मानव ही क्या पशु-पक्षी भी, स्तर उँचा कर सकते हैं।
वानर और गिद्ध, गिलहरी भी, इतिहास अमर कर सकते हैं॥
हम देव नहीं बन पाये तो, मानव होकर, पशु तो न बनें।
मानवता अरे कलंकित हो, ऐसा कुमार्ग तो नहीं चुनें॥
मनु का वंशज पशु बनता है, तो मनु की आँख छलकती है।
मानव बन बैठा नर पिशाच, मानवता अरे सिसकती है॥

ज्ञान कर्म और भक्ति का

ज्ञान कर्म और भक्ति का, संगम जीवन में जब होता।
पावन तीरथ या आत्मज्ञान, अन्तस में जागृत तब होता॥
जब तक होता न आत्मज्ञान, भवबंधन जकड़े रहता है।
पशुओं जैसा अज्ञानी बन, विषयों को पकड़े रहता है॥

दोहा–सबसे बढ़चढ़ कर अरे, है बस आतम ज्ञान।
जिसको पाकर मुनज ही बनता है भगवान॥

जैसे चन्दा सूरज नित ही

जैसे चंदा सूरज नित ही, सब पर प्रकाश फैलाते हैं।
वैसे ही धर्मशील मानव, समभाव हृदय में ध्याते हैं॥
आदर्श पूर्ण ऊँचा चरित्र, सद्गुण विकसित कर लेते हैं।
कर्त्तव्य परायण मानव ही, सद्धर्म सनातन सेते हैं॥

संतति के कर्म शुभाशुभ भी

संतति के कर्म शुभाशुभ भी, पितरों के हक में जाते हैं।
भागीदारी में पुण्य पाप, सद्गति दुर्गति दे जाते हैं॥
जो पितरों के हित धन श्रम से, कुछ श्रेष्ठ कर्म कर पाते हैं।
वे स्वयं पुण्य अर्जित करते, अनुदान पितर के पाते हैं॥

जागो भारत की बहनों

जागो भारत की बहनों अब, यह समय नहीं है सोने का।
माँ गायत्री की शरण चलो, अब गया जमाना रोने का॥
बतलादो मातृशक्ति अपनी, अन्यायी अत्याचारी को।
जो नारी का अपमान करे, लड़के वाले हत्यारों को॥

प्यार-सहकार

प्यार सहकार में वो करामात है जी।
अपना परिवार जन्नत बना लीजिए॥
एक जुट हो परिश्रम किया जाय तो।
अपने घर में चमन भी खिला लीजिए॥
प्यार सहकार से राष्ट्र निर्माण हो जी।
राष्ट्र को शक्तिशाली बना लीजिए॥
प्यार सहकार से प्रार्थना की गई।
पास भगवान को भी बुला लीजिए॥

जैसे ईटों से घर बनता

जैसे ईटों से घर बनता, धागे से बनता है कपड़ा।
सीखों से निर्मित है झाड़ू, दाँतों के मिलने पर जबड़ा॥
वैसे ही स्वजनों की सहशक्ति, निज घर को स्वर्ग बनाती है।
सहकार वृत्ति ही देवी सी, घर-घर में पूजी जाती है॥

दोहा:- अगर चाहते हैं सभी, घर का सुख विस्तार।
तो अपनायें परस्पर, शालीन भरा सहकार॥

पहली सीढ़ी जिससे मानव

पहली सीढ़ी जिससे मानव, पशु वृत्ति से बच जाता है।
यह क्रम स्थूल सभ्यता के, नियमों से भी सध जाता है॥
इससे आगे विकसित हो नर, ऋषि देवदूत बन जाते हैं।
वह संत सुधारक या शहीद, जैसा स्वभाव पा जाते हैं॥

इस हेतु देव संस्कृति ने है, संस्कारों का संचार किया।
पैदा होने के पहले से, मरणोत्तर तक विस्तार दिया॥

यह दृष्टि बनी है पदार्थ के

यह दृष्टि बनी है पदार्थ के, संग चेतन के मिल जाने से।
होता कल्याण इन्हीं दोनों के, अनुशासित हो जाने से॥
भौतिक विज्ञान सिखाता है, भौतिक उर्जा का संचालन।
विज्ञान आत्मिकी देता है, परमात्म चेतना अनुशासन॥
भौतिक उर्जा पर बना रहे, अनुशासन जीव चेतना का।
ये सूत्र परम हितकारी हैं, कहना है देव संस्कृति का॥

ले देव संस्कृति का प्रसाद

ले देव संस्कृति का प्रसाद, सारी दुनियाँ में जाते थे।
इसके सपूत निज चरित्र से, सबमें उल्लास जगाते थे॥
उनकी इस प्रखर साधना से, आत्मीय भाव बढ़ जाता था।
हर मानव में सारे जग में, परिवार भाव छा जाता था॥

आदर्श युक्त मर्यादायें

आदर्श युक्त मर्यादायें, अपना लेना अनुशासन है।
इससे परिवार समाज व्यक्ति, सबका होता हित साधन है॥
मानव के अंदर पैदा की, जो श्रेष्ठ वृत्तियाँ सृष्टा ने।
उनका विकास अनुबंध कहा है, मानव के हित दृष्टा ने॥

दोहा– अुनशासन अनुबंध का, मर्म लिया पहचान।
अपनाया जिसने इन्हें, वह बन गया महान॥

जो कुसंस्कारतिा में ढलकर

जो कुसंस्कारतिा में ढलकर, अनुशासन को ठुकराते हैं।
ऐसे ही सब अनगढ़ मनुष्य, खुद गिरते और गिराते हैं॥
होकर अनुशासन हीन मूढ़, बिखराव परस्पर करते हैं।
हो चाहे जितनी भी समृद्धि, वे पतन गर्त में गिरते हैं॥

राक्षस या देव बनाने में

राक्षस या देव बनाने में, मानव वृत्तियाँ उछलती है।
जिसने जैसा उपयोग किया, उसमें वे वैसी फलती है॥
प्रहलाद हिरण्यकश्यप दोनों में, पिता पुत्र का नाता था।
था एक पूर्व का राही तो, दूजा पश्चिम को जाता था।
था पिता अंह में चूर हुआ, मैं ही मैं हूँ यह कहता था।
था पुत्र प्रभु में लीन सदा, प्रभु ही सब कुछ यह कहता था॥

मानव में आयु बुद्धि के संग

मानव में आयु बुद्धि के संग, अनुभव संचित हो जाते हैं।
यह भी संपति अनोखी है, ऐसा ऋषिगढ़ बतलाते हैं॥
अनुभव को श्रेष्ठ संपदा का, दे सकते लाभ वृद्धजन है।
केवल अपना परिवार नहीं, उसका अधिकारी जन-जन है॥
जो नौजवान करते सेवा, अपनी मेहनत कर्मठता से।
उससे भी कहीं अधिक सेवा, हो सकती अनुभव क्षमता से॥

कामेच्छा प्रचलित परम्परा

कामेच्छा प्रचलित परम्परा, के कारण अधिक सताती है।
अन्यथा प्रकृति प्रेरित वह तो, नव तरंग देने आती है॥
करते विवाह की इच्छा हैं, इसके प्रभाव से नर-नारी।
इसको महान उद्देश्यों के हित, रहे मोड़ते नर-नारी॥

करना है उचित विवाह तभी

करना है उचित विवाह तभी, जब हो परिपक्व आयु जाये।
जो नहीं उपार्जित करता हो, वह इस दायित्व से बच जाये॥
गुण, कर्म और व्यवहार देख, जोड़ों के होते निर्धारण।
धन रूप मात्र पर आधारित, सम्बन्ध हुए दुःख का कारण॥

ऋषि बोले प्रजनन आवश्यक है

ऋषि बोले प्रजनन आवश्यक है, पीढ़ी नई बनाने को।
पर होते सभी समर्थ नहीं, संतति का भार उठाने को॥
दाम्पत्य सूत्र अनिवार्य नहीं, होता है लोक सेवकों को।
पर जन–जन का आधार वही, गढ़ता है लोक नायकों को॥

मन से, शरीर से, चरित्र से,

मन से, शरीर से, चरित्र से, जो हीन, पतित या रोगी हैं।
वह सन्तति पैदा नहीं करें, यह सूत्र बहुत उपयोगी है॥
यदि सन्तति में है संस्कार, वे सद्कर्त्तव्य निभाते हैं।
तो ही वे अपने पितरों को, सच्ची सद्गति दे पाते हैं॥

यदि वे कुमार्गगामी निकले

यदि वे कुमार्गगामी निकले, धरती का भार बढ़ाते हैं।
तो उनके साथ पितृगण भी, सब घोर नरक में जाते हैं॥
सुविवेकवान हैं जो जन वे, सीमित संतति ही जनते हैं।
संख्या को नहीं श्रेष्ठता को, वे अपना लक्ष्य समझते हैं॥

हर मानव को उस परम पिता ने

हर मानव को उस परम पिता ने, चार शक्ति दे डाली है।
ये महाशक्तियाँ ही नर का, सौभाग्य बनाने वाली है॥
इंद्रिय असंयम से मानव, अपनी स्फूर्ति गँवाता है।
जब जागरूक होता है तो, फिर समय न व्यर्थ गँवाता है॥
विचार शक्ति से प्ररित हो, मंथन से मोती पाता है।
साधन शक्ति का मूल्य समझ, उपयोगी उसे बनाता है॥

दोहा– तन से सेवा कीजिए, मन से भले विचार।
धन से इस संसार में, कीजिए यज्ञ प्रचार॥

सहकार वृत्ति की महाशक्ति

सहकारवृत्ति की महाशक्ति, सब लोगों ने पहचानी है।
परमार्थ भाव के बिना अरे, वह बन जाती नादानी है॥
हो दिशा शक्ति की सही तभी, वह जग का हित कर पाती है।
अन्यथा बहकती शक्ति अरे, सारा अनर्थ फैलाती है॥

दोहा– जुड़ा रहे परमार्थ के, संग सदा सहकार।
यही विश्व हित के लिये, है ऋषि पुण्य विचार॥

अभिभावक के धन से श्रम

अभिभावक के धन से श्रम से, बालक पोषित हो बड़े हुए।
आश्रय तब तक ही ले जब तक, अपने पैरों पर खड़े हुए॥
यदि उससे अधिक मिला कुछ तो, वह सभी श्राद्ध में लग जायें।
हो मुक्त पितृ ऋण से संतति, उसको समाज हित दे जायें॥

धन की ही तरह समय श्रम से, होते हैं श्राद्ध कर्म पावन।
शिक्षा, विद्या, सेवा विकास, वृक्षारोपण हो मन भावन॥

हो पुत्र या कि पुत्री (श्राद्ध अधिकारी)

हो पुत्र या कि पुत्री दोनों, पितरों से पोषित होते हैं।
इसलिए श्राद्ध करने के भी, दोनों अधिकारी होते हैं॥
जिनकी श्रद्धा जिन पर भी हो, कर सकते श्राद्ध सभी उसका।
दोनो पाते हैं आत्म शांति, शुभ पुण्य कमाते जीवन का॥

मरणोत्तर जीवन क्रम नर को, आत्मिक विकास दे जाता है।
परलोक लोक ब्रह्माण्ड सभी, परिवार परिधि में आता है॥

है मेरूदण्ड इस संस्कृति का

है मेरूदण्ड इस संस्कृति का, वर्णाश्रम युक्त व्यवस्था में।
रहता समाज इससे स्थित, विकसित आदर्श व्यवस्था में॥
अपनी रूचि क्षमता कौशल के, अनुरूप कर्म नर चुनता है।
कर्त्तव्यों के अनुरूप सदा, यह वर्ण विभाजन चलता है॥
अपने पैतृक संस्कारों से, यह वर्ण सहज मिल जाता है।
उसका विकास बचपन से ही, बस अनायास हो जाता है।।

दोहा–परिपाटी यह फिर बने, करें यही सकंल्प।
नवयुग के अवतरण का, दूजा नहीं विकल्प॥

अपने पैतृक संस्कारों से

अपने पैतृक संस्कारों से, यह वर्ण सहज मिल जाता है।
उसका विकास बचपन से ही, बस अनायास हो जाता है॥
इसका महत्व है कर्मों से, है जन्म मात्र आधार नहीं।
है बाँझ वृक्ष वह नर जिसको, कर्त्तव्य रूप स्वीकार नही॥

दोहा–धर्म सूत्र को आचरहिं, उपजहिं महि नर रत्न।
ऋषि मुनि सब तेहि नित, करहि पुनीत प्रयत्न॥

मानव को उच्च बनाना है

मानव को उच्च बनाना है, ऐसा सद्गुण है अनुशासन।
इसकी मर्यादा में ढलकर, काया बन जाती है कचंन॥
अनुशासन प्रखर बनता है, तप मय हो जाता है जीवन।
मर्यादाओं में बंधकर ही, तन मन हो जाता है कुदंन॥

दोहा–बच्चों को बाँधे अगर अुनशासन की डोर।
तो निश्चित मिट जाएगा कुसंस्कार का शोर॥

विद्यालय में पढ़कर बच्चे

विद्यालय में पढ़कर बच्चे, बस ज्ञान किताबी पाते हैं।
अभिभावक ही शुभ लोक नीति, या लोकाचार सिखाते हैं॥
चर्चाएँ हों शुभ प्रसंग की, जिज्ञासा उनकी शांत करें।
कहकर कहानियाँ श्रेष्ठ सरस, बच्चों में नव उल्लास भरें॥

बच्चों को यह सुविधाएँ दें, खेलें कूदें परिभ्रमण करें।
पर रखें सावधानी पूरी, वे कुसंग से बस बचें रहे॥

जो भी है आस्थाहीन (अनास्था का दैत्य)

जो भी है आस्थाहीन अरे, उनकी सद्गति कब सम्भव है।
पशुता पर अंकुश लगे बिना, मानव की प्रगति असम्भव है॥
ईश्वर, आदर्श, धर्म, शुचिता, नैतिकता, आत्मा, पुनर्जन्म।
आस्था सब पर से टूट चुकी, मानव से कैसे हों सुकर्म॥

आदर्शहीन जन-जीवन में, अपराध विलास बढ़ रहा है।
दुर्मति से दैत्य अनास्था का, दुर्गति की राह गढ़ रहा है॥

आदर्शहीन जन जीवन में

आदर्शहीन जन जीवन में, अपराध विकास बढ़ रहा है।
दुर्मति से दैत्य अनास्था का, दुर्गति की राह गढ़ रहा है॥
इस महादैत्य से मुक्ति हेतु, संस्कृति को सबल बनाना है।
चिंतन चरित्र से आस्थाएँ, जन-जन में पुन: जगाना है॥

अब महाकाल दुर्मति दुर्गति, के नाश हेतु संकल्पित है।
प्रज्ञा अभियान तूफान बना, युगधर्म हेतु अनुबंधित है॥

परिपक्व आयु जब हो जाए

परिपक्व आयु जब हो जाए, सध जाये शील स्वावलम्बन।
करना विवाह है तभी उचित, वरना होगा अनुचित बंधन॥
उनका व्यक्तित्व समुन्नत हो, तो बनता है भविष्य उज्ज्वल।
दें वातावरण श्रेष्ठ जिससे वे, बने लोकसेवी निश्च्छल॥
दोहा– अभिभावक जिनको, रहे इन सूत्रों का ध्यान।
वो दे जाते जगत को, मानव रत्न महान॥

बनते विवाह शुभ संस्कार (दहेज)

बनते विवाह शुभ संस्कार, सात्विक उमंग के प्रयोग से।
हो जाते यही आसुरी हैं, अति व्यय दहेज के कुयोग से॥
जो मूल प्रेम व्यवहार श्रेष्ठ, बस धूम-धाम में खो जाते।
अति व्यय से कमर टूट जाती, घोर नरक कुण्ड में घिर जाते॥

व्यवसाय और विज्ञान आदि

व्यवसाय और विज्ञान आदि, शिक्षण सुविधाएँ पाते हैं।
जाने अनजाने अगणित जन, यह सब हम तक पहुँचाते हैं॥
इसलिए देवऋण सब पर है, सबको ही इसे चुकाना है।
अपनी प्रतिभा क्षमता साधन, जनहित में हमें लगाना है॥

दोहा– सदगृहस्थ जो भी बनें, उसको हो यह ध्यान।
इस ऋण से जो उऋण हों, बनते वही महान॥

सेवक साथी अध्यापक

सेवक साथी अध्यापक या, हों अन्य लोक परिचित जो भी।
है कौन कौन संपर्क योग्य, अभिभावक ध्यान रखें यह भी॥
कच्ची मिट्टी होते बालक, उन पर पड़ता सबका प्रभाव।
जैसा मिलता संपर्क उन्हें, बन जाता वैसा ही स्वभाव॥

है काम क्रोध अरु लोभ

है काम, क्रोध अरु लोभ मोह, यह तीन नरक के द्वार सदा।
मानव के बैरी हैं निश्चय, इससे यह तीनों त्याज्य सदा॥
इन तीन नरक के द्वारों से, जो पुरुष मुक्त हो जाता है।
चलकर कल्याण पंथ पर तो, वह धीर परम गति पाता है॥

है प्रथम पितृऋण जिसमें

है प्रथम पितृऋण जिसमें, निज दायित्व पारिवारिक आते।
पालन-पोषण और सुसंस्कार, देने से उऋण कहे जाते॥
इससे भी आगे समाज के, अनुदानों का ऋण होता है।
है यही देवऋण मानव पर, इसको भी भरना होता है॥

हे तात पराक्रम करना है

हे तात पराक्रम करना है, तो शालीन बनना होगा।
सज्जनता को कर्मठता के संग, एक रूप करना होगा॥
अन्यथा वीरता एकाकी, आसुरी वृत्ति बन जाती है।
कल्याण मार्ग पर उसे सदा, सज्जनता ही ला पाती है॥
विकृत फोड़ों की चीर फाड़, हित शल्य क्रिया की जाती है।
सज्जनता शौर्य पराक्रम को, बस इसी तरह अपनाती है॥

जिनमें है दूर दृष्टि पावन

जिनमें है दूर दृष्टि पावन, वे ही विवेक से मण्डित हैं।
जो है विवेक से हीन मनुज, वे सत्य धर्म से वंचित हैं॥
है श्रेष्ठ धर्म इस जीवन का, हम सद्विवेक को अपनायें।
निष्पक्ष न्याय में रत रहकर, हम सहज देवता बन जायें॥

मक्खी मच्छर की तरह अरे

मक्खी मच्छर की तरह अरे, विकृत्तियाँ बढ़ती जाती है।
नैतिक बौद्धिक परिवार सभी, क्षेत्रों में घुसती जाती है॥
आहार, विहार उपार्जन में, व्यवहारों में जब प्रचलन में।
बनकर विलास आकर्षण वे, छा जाती है जब जीवन में॥

कर्त्तव्य भाव के पालन हित

कर्त्तव्य भाव के पालन हित, जो संयम व्रत अपनाते हैं।
ऐसे जन विनयशील होकर ही, कर्मशील बन जाते हैं॥
अहं और लिप्सा में रत नर, दिवा स्वप्न में खोते हैं।
झंझावातों में पड़ करके, आवेश ग्रस्त से होते हैं॥

यदि आत्मज्ञान का है अभाव

यदि आत्मज्ञान का है अभाव, तो मानव पशु बन जाता है।
वह आत्मज्ञान ही होता है, नर में देवत्व बढ़ाता है॥
भीतर के शक्ति केन्द्रों को, जागृत करता है आत्मज्ञान।
इस दुर्लभ अमृत को पीकर, मानव बन जाता है महान॥
जो जकड़े हैं भवबन्धन में, चेतना उनमें भरना है।
इसलिए आज इस चिंतन से, जन-जन को अवगत करना है॥

दोहा-ऋषियों का अद्भूत यह, आतमज्ञान महान।
जिमि पारस स्पर्श कर, लोहा स्वर्ण समान॥

जाके प्रिय न राम वैदेही

तजिए ताहि कोटी बैरी सम, यद्यपि परम सनेही।।
तज्यो पिता प्रह्लाद, विभीषण बन्धु, भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज वनितहि, भये मुद मंगलकारी।।
नाते नेह राम के मनियत, सुहृद सुसेव्य जहाँ लौं।
अंजन कहाँ आँख जेहि फूटे, बहुतक कहौं कहाँ लौं।।
तुलसी सो सब भाँति परमहित पूज्य प्राण ते प्यारो।
जासों होय सनेह राम पद, एतो मतो हमारो॥

है सद्‌गृहस्थ के लिए उचित

है सद्‌गृहस्थ के लिए उचित, धन का अर्ज़न पर्याप्त करे।
पर अर्थलोभ में पड़ करके, वह पतन गर्त में नहीं गिरे॥
श्रंगार अपव्यय आडम्बर, व्यसनों में नहीं बड़प्पन है।
सादा जीवन ऊँचे विचार, यह गौरव नित्य सनातन है॥

हैं लाभ अनेक असाधारण

हैं लाभ अनेक असाधारण, संयुक्त परिवार प्रणाली में।
यदि परिजन हैं कर्मठ उदार, तो सब रहते खुशहाली में॥
कर्त्तव्य और दायित्व श्रेष्ठ, सबको अपनाने पड़ते हैं।
जो नहीं निभा पाते उनको, वे कलह मचाते लड़ते हैं॥
इस झगड़े से तो अच्छा है, छोटी इकाई में बँट जायें।
यदि वह आदर्श नहीं सधता, तो विडम्बना से बच जायें॥

भिन्नता प्राणियों की जन

भिन्नता प्राणियों की जन जब, एकस्थ ईश में पाता है।
संकल्प मात्र से सृष्टि जान, वह प्रभु में लय हो जाता है॥
सर्वत्र समान भाव से वह, सबमें ही प्रभु को पाता है।
नश्वर तन, आत्मा मान अमर, वह श्रेष्ठ परम गति पाता है॥

वानप्रस्थ

डाली पर कभी न रुकता

डाली पर कभी न रुकता है, तरुवर पर फल पक जाने पर।
तो वयोवृद्ध से वानप्रस्थ, चल पड़ता है सेवा पथ पर॥
यह है अतिश्रेष्ठ नियम शाश्वत्, भारत की देवसंस्कृति का।
इससे बनता आधार सबल, दोनों लोकों की सद्गति का॥

दैवी संस्कृति का अनुशासन

दैवी संस्कृति का अनुशासन, दो लाभ एक संग देता है।
शुभ आत्मा प्रगति के साथ–साथ, कल्याण विश्व का होता है॥
जब–जब अनुशासन किया इसका, हम देवतुल्य कहलाये हैं।
इस परम्परा से सतयुग का, सम्मान श्रेय हम पाये हैं॥
आत्मा परमात्मा दोनों को, इससे प्रसन्नता मिलती है।
सुख वैभव की कलियाँ निशिदिन, फिर जन जीवन में खिलती॥

संतान श्रेष्ठ जब हो समर्थ

सन्तान श्रेष्ठ जब हो समर्थ, घर की कर ले जब देख भाल।
तो सद्गृहस्थ कुछ आगे बढ़, निज कर्त्तव्यों को लें संभाल॥
सारी दुनिया ही अपनी है, इसका भी कुछ अहसास करें।
जो दीन–हीन कहलाते हैं, उनमें भी नव विश्वास भरें॥
घर से निकलें तो बेटों के, सिर बोझ नहीं फिर कहलायें।
बहुओं के उन अपमान भरे, गाली–गलौज से बच जायें॥

दोहा– वानप्रस्थ शुभ पन्थ को, लें जीवन में धार।
ऋषियों का यह मनुज को, है अमूल्य उपहार॥

कुछ कर्म तुरत फल देते हैं

कुछ कर्म तुरत फल देते हैं, फल तोड़ा खाया सुख पाया।
पर कुछ फलते कालान्तर में, यह सत्य गया है समझाया।।
जिस फल को बीज बना बोया, उसको पहले गलना होगा।
विकसित हो वृक्ष बनेगा जब, तब ही उसका फलना होगा।।
जीवन का अंत मृत्यु ही है, जो इस भ्रम में पड़ जाते हैं।
वे भूल कर्म का अनुशासन, स्वार्थी नास्तिक हो जाते हैं।।

सुनकर मधुर वचन ये श्री हरि के

सुनकर मधुर वचन ये श्री हरि के, नारद जी ने कर जोड़ कहा।
हे देव विवेक न मुझमें है, मुझको है इतना बोध कहाँ॥
अब तक के सभी पुराणों में, अवतार कथा ही आती है।
प्रज्ञा पुराण की कथा नाथ, कुछ नहीं समझ में आती है॥
प्रज्ञा पुराण में हे भगवन, अवतार कथा किसकी होगी।
क्या रूप धरेंगे आप प्रभो, जग में चर्चा जिसकी होगी॥
दोहा- नाथ पाप के बोझ से, धरती व्याकुल आज।
दूर करो संकट सभी, पूर्ण करो सब काज॥

यह विचार कर देवऋषि

दोहाः- यह विचार कर देवर्षि पहुँचे बैकुण्ठ धाम।
श्री नारायण को किया, श्रद्धा सहित प्रणाम॥
हँसकर पूछा तब श्री हरि ने, कहिये ऋषि कैसे आये हैं।
है कहाँ कहाँ पर भ्रमण किया, और क्या संदेशा लाये हैं॥
कारण जो भी हो प्रकट करें, यात्रा का कष्ट उठाने का।
कहिये अब क्या कुछ काम पड़ा, बैकुण्ठ लोक में आने का॥
कुछ दुःखी दिखाई देते हो, मुख मंडल क्यों मुरझाया है।
क्या कहीं स्वयंवर में जाकर, शादी का मन ललचाया है॥
दोहाः- नारद जी कहने लगे, हे हरि! दया निधान।
अन्तर्यामी आप हैं, क्यों बनते हो अनजान॥

विषयानुसार गीतों की सूची

गुरु वन्दना-

अवतरण हो गया
आपके अवतरण को हुए
आँखे निहारती है गुरुवर
आज की प्यारी शाम
आपकी चेतना में सदा
इस योग्य हम कहाँ हैं
ओ सविता देवता
ऐसी लगन लगाये
कुछ कहा ना सुना
करें पात्रता विकसित
क्या न इतनी कृपा
कण-कण में समाये हो
गुरु की नज़रें करम का
गुरुवर अब थामों पतवार
गुरु चरणन की लगन
गुरु चरणों को नमन
गुरुवर तुमने दिया हमें
गुरु ने बाँह हमारी थामी
गुरुवर अपनी नाँव बिठा लो
गुरुदेव जब पास खड़े
गुरुवर कोई नहीं है
गुरु तेरे चरणों में
गुरु चरण में जब
गुरुवर के अनुपम अनुदानों
गुरु का शक्ति-प्रवाह बह
गुरुदेव नये युग का
गुरुवर का चिंतन छाया
गुरुवर चरणों में मन मेरे
गुरु चरणन मन भाये
गुरुदेव नये युग का
चिंतन जिनका अतिशय पावन
जिसने जीवन ज्योति जलाई
जब की हम भटके हुए थे
तुम हमारे थे दयानिधि
तुम्हारे हैं हम तुम्हारे
तुम करूणा सागर हो
तपकर तुम्हीं दोबारा
तुम तो यहीं कहीं
तुम्हारे शरण में आये
थे सामने तो लखकर
दीजिए गुरुवर हमें निज
दरबार में सच्चे सद्गुरु
नवयुग के गीता के गायक
प्राणी आजा शरण गुरु की
प्रभु अब दो ऐसा वरदान
पीर की बेचैनियों में
प्रभु चरण तुम्हारे पड़े जहाँ
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण
प्यार लुटाया तुमने गुरुवर
मन के गहरे अंधियारे में
युगों-युगों से तार रहा जग
सदा मन हमारा रहे
सागर से भी गहरा वन्दे

सबमें अंश तुम्हारा
सब भाव पूर्ण आज
हम मोड़ने चले हैं युग की
हुआ समर्पण मिटी चाह
हे मेरे गुरुदेव कृपा सागर
हार बैठे अगर आप
हे गुरुवर शक्ति हमे दो
हम तुम्हारे लिए हैं
हे श्रीराम तुम्हें प्रणाम
हो पूज्य गुरुदेव तुम हमारे
श्रीराम के चरणों में

गुरु महिमा-

आया देवदूत धरती पर
आप आये विभा फूटने
आप हिम्मत बँधाकर हमें
उन चरणों को पूजो
उमड़ी है विश्व भर में
कैसे बिसरायें उनको
गुरुजी की महिमा अपरम्पार
गुरु अपना तप देकर
जिसकी तरफ निहारा
जन्म लिया फिर भागीरथ ने
तुम्हारे सूत्र जीवन में
द्रवित जब पीर से उर
धन्य आपका जन्म दिवस
याद आ रही है हर क्षण
भरी भीड़ में एकाकी हम
मेरा परिचय क्या पूछ रहे

महाकाल के अवतारी तुम
लोकमंगल के लिए खुद

मातृ वन्दना-

आज कर दो कृपा मातु
आप ही माँ धड़कन हैं
कृपा दृष्टि अब कहाँ मिलेगी
कण-कण में छा रही
चैन आता नहीं प्यार
झन झना दे चेतना के
प्यार तुम्हारा ही तो माँ
माँ शरण में आये हैं
मंगलमयी गायत्री माता
माँ पीड़ित बच्चों ने
माँ जीवन संगीत सुनादे
माँ हमें शक्ति दो वह
माँ हृदय में बस तुम्हारे
युग-युग पूजित गायत्री माँ
लागी है लगन माता
वन्दना के इन स्वरों में
वीणा वादिनी वर दे
सद्ज्ञान की खान हो
हे माँ ऐसी आत्मशक्ति दो

गायत्री महिमा-

अगर चाहते हो निज रक्षा
करते जिसका ध्यान रातदिन
गंगा गायत्री दोनों का
गंगाजल बहता उतर से
गायत्री गुरु मंत्र सनातन

जय जय जय गायत्री माता
नाम है तेरा माँ गायत्री
गायत्री की पुण्य जयन्ती
नव प्रभात है नव प्रकाश है
पाप हारिणी दु:ख निवारिणी
मुखरित गायत्री हर स्वर में
माँ प्रज्ञा अवतरित हुई
विश्व की सत्प्रेरणा
ज्ञान गंगा का हुआ अवतरण

देशभक्ति/युवाओं-

अपना देश बनाने वाले
अपने आजाद भारत की
आज कमर कसकर आये
आओ मिलकर भारत को
इस देश को न हिन्दू
इस धरती के फूलों में
उठो जवान देश के
उठो तरूणाई! अब जौहर
करें छात्र निर्माण धरा को
कोटि-कोटि नवयुवक
कीमत हमने बहुत चुकाई
खुन के सरहदों पर
जागो भारत विश्व राष्ट्र
जय जय राष्ट्र महान
जब-जब जाग उठी
देव-संस्कृति विश्व विद्यालय
देश की ग़मगीन हालत
देश धर्म जाति का गौरव
देश हमारा सबसे प्यारा
धरती से ऊँचा पर्वत है
नौजवानों उठो अब करो
नौजवानों भारत की तकदीर
पुकार प्राण-प्राण को
भारत माता प्रश्न पूछती है
बनों एक सब मिल
बुला रही है भारत माता
मन करता है इस धरती पर
ये वक्त न ठहरा है
राष्ट्र घिरा हो विपदाओं से
राष्ट्र देवता ने भेजा है
सुनों यह छात्र जीवन
स्वर्ग लोक के गीत नहीं
हे भगवान हमारे देश को
हम भारत के सच्चे सेवक
ऋषियों की धरती यह

शांतिकुंज परिचय-

इस आँवलखेड़ा की रज
तपोभूमि की तप ऊर्जा को
युग-युग से इतिहास बताता
शांतिकुंज बन गया छावनी
धन्यभूमि है यह पुण्य

प्रेरणाप्रद गीत-

अगर अभाव मिटाना है
अपने दु:ख में रोने वाले
अपने अन्तर की कथा
आज मेरा मन तुम्हारे

आज करें साकार कल्पना
इतना चिन्तन किया तुम्हारा
इन्सान कहाने वालों क्यों
गँवा दिया हमने जीवन में
द्वार सफलता आती है
पैसे के बदले सदाचार
लोकरंजन के समर्पित
समय ही होता है बलवान
समय की पुकार है
संकल्पना सँवर कर

नारी जागरण-

अपने पैरो पर खड़ी हो
आँखे खोलो समय आ गया
उमा रमा ब्रह्माणी तू ही
ओ नारी महतारी तू
करना है जग का सुधार
जागो जागो भारत नारी
तुमने बंधन क्यों स्वीकारा
तीस वर्ष की क्वाँरी कन्या
बहनों अपनी शक्ति
भारत का भाग्य जगायेंगी
मातृ स्वरूपा नारी है
माँ गायत्री रही पुकार
यह कन्या रूपी रत्न तुम्हें
ये दहेज का दानव
युग ने आज पुकारा
राम फिर से ले लो अवतार
लेना कभी मत दहेज
शक्ति साधना बिना बनता
सुनों नारियों भारतमाता
सावधान युग बदल रहा है
सुधरे हमारा परिवार
सत्शिव सुन्दर भावों की
हे सृजन शक्ति नारी

मानव जीवन की गरिमा-

अपना सर्वस्व लुटा साथी
इस विराट जीवन पथ
इतने अमूल्य मानव
इन्सान से यदि मिल पाय
ऐसा जीवन जीयें
इसी में मानव का कल्याण
ओ मानव तेरे जीवन का
कर रहा मनुज पाप
क्यों करता अभिमान
चुभन सहकर भी उगाने
जीवन के देवता का
जिन्दगी चार दिन की
जो औरों के लिए जिन्दगी
दर्द का पीकर हलाहल
दिव्य अनुदान देने खड़े
ध्वँस में लग गई यदि
नर तन मिलता कभी-कभी
प्यार तो है हमें जिन्दगी
पगले दृष्टि बदल यदि
बुने रे मन क्यों ताना बाना

भगवान का अमर सुत
भटक रहा है जनम-जनम से
मानव जीवन की गरिमा को
ये नर तन तुझे जो मिला है
समय बड़ा बलवान रे

महाकाल से साझेदारी-

अब युग बदल रहा है
अंगार दहकते लाये हैं
असुर तत्व हावी है
उठ पड़े हाथ लेकर मशाल
करते जो सहकार
करेंगे प्रज्ञा से सहकार
क्या हो गया प्रकाश पुत्र को
कोई मत दे साथ तुम्हारा
क्रांति के तेवर अरे
कालचक्र बढ़ता जाता है
कुटिल चाल कलिकाल
गुरुवर महान गुरुवर सुजान
जिसने मरना सिख लिया है
जिन्हें देखकर जग सहज
जो जुड़ गये हैं प्रभु से
देव मानवों उठो तुम्हीं पर
नक्षत्रों के बीच चाँद से
निर्धन या धनवानों की
प्रतिभाओं तुमको क्रांति
प्रभु से साझेदारी करलो
प्रतिष्ठा महाकाल की
भीड़ की तो कमी है कहाँ
महाकाल के अब तो दोनों
महाक्रांति अनिवार्य हो चुकी
यह परीक्षा की घड़ी है
हम युग संदेश सुनाते हैं
हुये विकारों से शापित

प्रज्ञा पुराण गीत-

आरती अति पावन पुराण की
आईये सुने लगाकर ध्यान
आओ सब मिल सुने
आनन्द मंगल करूँ आरती
कथा प्रज्ञा पुराण की सुनो
ध्यान से सुनलो प्रज्ञा पुराण
प्रज्ञा पुराण पावन (अ ब स)
प्रज्ञा पुराण सुनिये
प्रज्ञा ये पुराण पूज्य गुरुजी
युग दृष्टा की सिद्ध लेखनी
विषयों से नहीं फुरसत
सुनों कथा प्रज्ञा पुराण की
सुनो कथा यह कान लगाकर
सुनो हृदय पट खोल
सभी के दिल दिमाग
स्वीकार करेगा तू एक दिन
हमें सद्गुणों का खजाना
श्री मन नारायण

सत्संग गीत-

जहाँ सत्संग होता है
सत्संग की सुधा से जीवन

सत्संग वो गंगा है
सत्संग है ज्ञान सरोवर
सत्संग की गंगा बहती है
सत्संग ने कई का जीवन
नित सत्संग करो मेरे भइया
सत्संगति अति प्यारी

कार्यकर्त्ता गोष्ठी-

अपने जीवन से लिख देंगे
आखरी वक्त है करलें
आत्म दीपक यह प्रभो
ईश के सन्तान सोते न रहा
ओ ईश्वर के अंश आत्मा
काम जब तुम्हारा अधूरा
काँच न हैं हम जो टूटेंगे
गायत्री की पुण्य जयन्ती
गुरुवर ऐसी शक्ति हमें दो
जियेंगे न अब हम अपने
जब-जब भी प्रबुद्ध जन
जनहित के लिए समर्पित
ज्योति पुञ्ज की ही प्रतिमा
तेरी करूण कराह हमारे
जीवन अर्पण का तुमको डर
जितना तुमने दिया ना उतना
तुम मुझे दे दो सरस
तोड़े हम आगे बढ़कर
तूफान आ रहे हैं तेवर
दर्शन बहुत किये गुरु के
दुःख निराशा के समय
धर्म की स्वर ध्वजायें
धधक उठी तन-मन में
नीव के पत्थरों से यह
नवयुग की निर्माण
नवयुग आना है, आना है
न कोई दे पाये साथ
पत्थर मत मारो
पिछले युग की बातें
पीड़ा पुकारती है
फुट पड़े यदि हृदय से
बिछड़े हुए मिलायें
मिलकर करें प्रयास
माँग रही है देवसंस्कृति
माँ की सेवा को निकले
माँ ने आज निमन्त्रण भेजा
युग के विश्वामित्र नमन
ये क्या कर रहे
युग का तो परिवर्तन होगा
यह घड़ी है निर्माताओं की
यह राग, द्वेष का समय नहीं
यूँ घबराओ नहीं कि तुम
युगऋषि की जीवनशैली
बहुत विकल देखे नरनारी
विश्व मंदिर में विराजी
विमल भावना भर भाषा में
शूरवीर उठो जागकर
समय से कदम मिलाओ
सुनों-सुनों बहिन-भाईयों
समय विषम है डगर

हृदय-हृदय को भरे पुलक
हम हैं संताने युग ऋषि की
श्रद्धा और समर्पण का

कीर्तन /अन्य गीत-

आज मेरा मन तुम्हारे
इतना प्यार करेगा कौन
उठ जाग मुसाफिर भोर भई
क्या तन माँजता है रे
कल्याण हमारे जीवन का
करले युग निर्माण
कर्म सभी का जन्म सिद्ध
कर्म जैसे करोगे फल
काँच न हैं हम जो टूटेंगे
गँवाओ व्यर्थ मत होता
चारो दिशा में फैलाय दियो रे
चलनी में दूध लगाता है
चोट पर चोट अब और
छाती तोड़ महान परिश्रम
जगत में चिन्ता मिटी है
जिसको सुनकर बने राह
जाग पहरूबे सुहानी भोर है
जो बोले सो हो जाये अभय
जिसको प्रभु से सद्बुद्धि
जागरण देखो नयन उघार
जिसने भी जीवन में
जो भी सद्गुण को अपनाता
जल में थल में जड़चेतन में
जय-जय मंगलकारी
जो बनाता अखिल विश्व का
तुमने अमृत दिया है
तप तपाकर निज
थोड़ी सी साँसें पायी है
थाली भर मैं लाई रे खींचड़ो
दुसरों की बहुत बात करते
दुनियाँ बिगड़ गयी है
दुर्भाव बढ़े दुष्कर्म बढ़े
धर्म से हम नहीं रख सके
नहालो चाहे सारे तीर्थ
निराशा हो कभी मन में
नहीं माँगते राज्य स्वर्ग सुख
पास रहता हूँ तेरे
प्रेम से जपलो प्रभु का नाम
प्रेमी भर तु प्रेम में
परमार्थ है जहाँ पर
प्रभु का ही दर्शन हो
पुरूषार्थ की कहानी
फैल रहा अज्ञान
बुढ़ापा आ गया कैसे
बात कोरी न केवल करो
बीती विषयों में उमरिया
भजले प्यारे शाम सबेरे
मेरा मेरी करते-करते
मन तू राम नाम गुण गाले
मन का मैल अगर ज्यों
मन मंदिर में सदा विराजे
याचकों की भीड़ है
यह न समझो की ज्योति

युग के राम विकल है
यही है कामना अपनी
यदि स्वर्ग है कहीं पर
युग की पीर बुलाये
रघुनन्दन राघव, राम हरे
लो संकल्प करो निर्माण
ले चला सन्त बन
विश्व धर्म का झण्डा लहरा
विश्व सोया रहा
शांति और संतोष छोड़
शुद्ध किया भगवन ने
संसार के लोगों से
सर पे तेरे घड़ा है
सफल हुआ है उन्हीं का
सृजन हम करें
सारी जगती जन्मभूमि
सबसे करना प्रेम जगत
सुबह का बचपन हँसते देखा
समता मैत्री भाई चारा
स्वार्थ का ही सगा है
सबसे अच्छा सबसे प्यारा
स्वागतम् स्वागतम्
हम सब बालक हैं
हे प्रभु हम सबसे प्रेम करें
हमें परखने का तरीका
हे माता भगवती तुम्हारी
हम धनी न चाहें हों
हो व्यक्तित्व विकास
हम बदरी बन छायेंगी
हे प्रभु मानव हृदय को
हे श्रीराम तपोनिष्ठ
ॐ है परम पिता का नाम
श्रद्धा प्रज्ञा निष्ठा से जो
श्री राम आया है

रक्षा बन्धन गीत-

अगर तुम्हें ठीक लगे
चलें शहीदों के पथ हम
राखी के हर धागे में-A
राखी के हर धागे में-B
राखी का त्यौहार सुहावन
राखी बँधवालो भइया
रक्षा बन्धन विमल स्नेह
बोल रहे राखी के धागे
बोल हर धागे में आये
युगऋषि का साथ निभाने
मन में कुछ उमड़ा
हर बहना को भाई की

यज्ञ/दीपयज्ञ गीत-

एक समिधा जली मैं
एक दीपक से तमस हटाओ
चलो गुरु ज्ञान का दीपक
चलो रे भाई दीपक
जिसने दीप जलाये जग में
जब हम दीप जलायेंगे
टिकेगा कहाँ के धरा पर
दीप चाहिए ऐसे जो
दीप मन को जलाओ

दीपकों की कमी कुछ
दीपयज्ञ की दीप ज्योति सा
बहिनों दीपयज्ञ है आज
यज्ञ हुआ प्रारम्भ भाईयों
रहे न नाम निशान
विश्व व्यापी सघनतम
सूर्य की पहली किरण
सारे जग के जीवन प्राण
हर तरफ अँधेरा है

साधनापरक गीत-

चलना सिखा दिया है
तप के बल आ जाते हैं
त्याग और तप के बल पर
बरस रहे अनुदान साधकों
बल प्राण प्रकाश सभी
मैंने जीवन त्याग तितिक्षा
मैं तुम्हारी साधना का
रह न साधना जाय अधूरी
व्यक्तित्व को हमारे
सोना नहीं तपा तो
समय को साधने वाले
सूर्यदेव आप अनवरत
साधक वह है जिसके
साधना से शक्ति का

नशा एवं रूढ़िवाद-

क्यों मोह है उन्हीं से.
छोड़ दो छोड़ दो वासना
तु नहीं पीता बीड़ी
दुनियाँ हो गई पुरानी
देश तो लूट गया शराब
दोष-दुर्गुणों को जब
नशा नशावै तन मन धन
नशा न करना मानलो कहना
फैली है दुनियाँ में बिमारी
रहन सहन में खान पान में
व्यसन हमारी सभी शक्तियाँ
सच्ची राहें खोजना है यदि

संस्करपरक गीत-

करो संकल्प कुछ बढ़कर
जन्म दिन है हमने मनाया
देव-संस्कृति संदेशों को
पथ के कष्ट सहकर
मधुर मंगलमय तुम्हारा
सभी जन्म से शुद्र किन्तु
स्वीकारिये शुभ कामनायें
संस्कार की परम्परा
संस्कार शुभ अन्नप्राशन

श्रद्धांजलि गीत-

खोलो मन की द्वार
तुम्हीं हो प्राण हम सबके
तुम्हारा हर निमिष का साथ
तुम न घबराओ
देव पुरूष आया तब
नम है आँखे आज याद में
प्रेम का अमृत पिया जो
भर-भर आये नयन हमारे

विदाई गीत-

एक बेटी विदा हो रही

जा बेटी ससुराल में जाके
लो साथ हमारा छूट रहा
सुनों परावाणी गुरुवर की
हम तो छोड़ चले घरबार

बसन्तपर्व/
जन्मशताब्दी

ओ बासन्ती पवन
जन्म शताब्दी का उपहार
शंख घंटियाँ गूँज रही है

राधेश्याम तर्ज-
प्रज्ञापुराण

अपने किशोर वय में मानव
अनुभवी वृद्धजन ही घर में
अभिभावक अपने बच्चों को
अभिभावक के धन से श्रम
अर्धांग ग्रस्त हो लकवे से
अनुभव का श्रेष्ठ सम्पदा का
अपनी रुचि क्षमता कौशल
अपने पैतृक संस्कारों
आधी जन संख्या नारी है
आदर्शयुक्त मर्यादायें
आधार मित्रता का शाश्वत्
इस युग का असुर अनास्था
ईश्वर प्रदत्त सुविधायें
ईश्वर महान है मानव का
करना है उचित विवाह तभी
करना है नवनिर्माण अगर
कोई जीवन को संयम से
केवल शब्दों से नहीं यहाँ
कर्त्तव्य भाव के पालन हित
कुछ कर्म तुरंत फल देते हैं
गृहस्थ धर्म का परिपालन
छोटे क्षेत्रों में विकास
जो भी है आस्थाहीन अरे
जो कुसंस्कारिता में ढलकर
जैसे चलनी में दूध
जिनके चिन्तन पुरूषार्थ
जैसे चन्दा सूरज नित ही
जीवन प्रत्यक्ष देवता है
जो दिखते आज मात्र पौधे
जो परम्परायें कभी बनी थी
जो नहीं कमा सकते पैसा
जीवन में दीर्घ आयु पाकर
जो नहीं सोचने योग्य अरे
जब जैसी स्थिति होती है
जागो भारत की बहनों
जैसे ईंटों से घर बनता है
जिनमें है दूर दृष्टि पावन
तजकर परमारथ ओछा नर
दूध दही के मंथन से
दस सूत्र धर्म के होते हैं
दैवी अनुदानों को सदैव
धन साधन भोजन,जर जमीन
नारी को दैवी कहा गया
नर–नारी दोनो मिलकर
नारी की क्षमता अद्‌भुत है
प्रह्लाद हिरण्य कश्यप दोनों में

प्रभुता की चाह बड़ी भारी
पाँचो युग्मों में पंच कोष
परिवार राष्ट्र का लघु स्वरूप
प्यार सहकार में करामात है
पहली सीढ़ी जिससे मानव
परिपक्व आयु जब हो जाये
बनते विवाह शुभ संस्कार
बेटा-बेटी में भेद करे
भिन्नता प्राणियों के जन-जन
मानव को उच्च बनाना है
माहौल घरो का बच्चो पर
मक्खी पड़ जाये दूध में यदि
मानव ही क्या पशु-पक्षी भी
मानव में आयु बुद्धि के संग
मक्खी मच्छर की तरह
मानव को उच्च बनाना है
यह विचार कर देवषि
यदि आत्मज्ञान को पाना है
योगाभ्यासी समदृढ़ रहकर
यह जीवन अनेक योनियों में
यह भी है रूप सत्य का ही
यह दृष्टि बनी है पदार्थ के
राक्षस या देव बनाने में
लोभी की ये गति होती है
लोभ, मोह अरु अहंकार
लखकर संकट भय क्लेश
ले देव-संस्कृति का प्रसाद
विद्यालय में पढ़कर बच्चे
सुनकर मधुर वचन श्रीहरि

सद्ज्ञान कर्म,अरु भक्ति
सम्मान चाहिए वृद्धों को
सच्चे शिक्षक विद्यालय में
संस्कार गरिमा (मानस से)
संतान श्रेष्ठ जब हों समर्थ
संतान सुयोग हो जाने पर
संयम, संतोष उन्हें भाता
संगति से जिनकी नर पशु
सामान्य रूप से मानव में
संस्कार जगाने हेतु जिम्मेदारी
संस्कार जगाने गढ़ने की
संकीर्ण स्वार्थ परता
सहकार वृत्ति की महाशक्ति
संतानों के संग पितरों का
संतति के कर्म शुभाशुभ भी
सेवक साथी अध्यापक
है प्रथम पितृऋण जिसमें
है मोह विकार प्रेम का ही
है अहंभाव तो अंदर का
है धर्म जगत में सर्वश्रेष्ठ
हे तात पराक्रम करना है
है मानव को उस परम पिता
है मेरूदण्ड इस संस्कृति का
हर साधक दैवी संस्कृति का
है पुत्र या पुत्री
ज्ञान कर्म और भक्ति का
ऋषि बोले प्रजनन आश्यक
ऋषियों ने मानव जीवन को
ऋषि धर्म तंत्र के प्रहरी
ऋषियों ने चार आश्रमों में

हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

- ✸ हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
- ✸ शरीर को भगवान् का मंदिर समझकर आत्म-संयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
- ✸ मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
- ✸ इंद्रिय-संयम, अर्थ-संयम, समय-संयम और विचार-संयम का सतत् अभ्यास करेंगे।
- ✸ अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
- ✸ मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
- ✸ समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
- ✸ चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
- ✸ अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
- ✸ मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
- ✸ दूसरों के साथ वह व्यवहार न करेंगे, जो हमें अपने लिए पसन्द नहीं।
- ✸ नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
- ✸ संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
- ✸ परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
- ✸ सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
- ✸ राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान् रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
- ✸ मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है, इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
- ✸ हम बदलेंगे-युग बदलेगा, हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड) 249411 **फोनः**- 01334- 260602, **फैक्सः**-260866
Email : shantikunj@awgp.org   Website : www.awgp.org